वह कौन थी ?

वह कौन थी ?

[उपन्यास]

ऋषभचरण जैन

लखनऊ
अशोक प्रकाशन
१९५५

निवेदन

श्री ऋषभचरण जैन हिन्दी के माने हुए उपन्यासकार हैं। आपने मौलिक उपन्यासों के अतिरिक्त फ्रैंच उपन्यासकार अलेक्जेंडर ड्यूमा की कई कृतियों का बड़ा सफल हिन्दी रूपान्तर किया है। प्रस्तुत पुस्तक भी उन्हीं में से एक है। भाषा पर इनको इतना अधिकार है कि अनुवाद भी मौलिक जान पड़ते हैं। यह उपन्यास बहुत रोचक है और आशा है कि पाठकों का मनोरंजन करने में काफ़ी सफल होगा।

—प्रकाशक

लखनऊ
१४-४-५५

वह कौन थी ?

१

सन् १५५१ की ५ मई का दिन था। अठारह वर्ष का एक युवक और चालीस वर्ष की एक अधेड़ स्त्री मॉण्टगॉमरी गाँव के एक घर में से निकले। युवक किसी ऊँचे ख़ान्दान का जान पड़ता था। बाल उसके सुनहरे थे, आँखें नीली, दाँत सफ़ेद, होंठ गुलाबी, और रूप-रङ्ग में स्त्रियों की-सी मृदुलता थी। लेकिन, इतने पर भी उसकी चाल-ढाल और शक्ल-सूरत से शान और बहादुरी टपकती थी। चमचमाती हुई बेलदार पोशाक उसके तन पर थी, घुटने तक चढ़नेवाले काले चमड़े के जूते पैरों में, और रेशमी कपड़े की एक ख़ुशनुमा टोपी अजब बाँकपन से उसके सिर पर अपनी बहार दिखा रही थी। टोपी का यह बाँकपन उसके मृदु स्वभाव का परिचय दे रहा था। उसके साथ ही उसका घोड़ा भी था। उसकी साथिन नौकरानियों के-से कपड़े पहने हुए थी। ऐसा प्रकट होता था, कि उसका सम्बन्ध समाज की निम्न श्रेणी से है। किन्तु उसकी पोशाक सादी और सस्ती होने पर भी स्वच्छ थी।

दोनों गाँव में से गुज़रने लगे, तो जिसने देखा, वही नवयुवक का अभिवादन करने लगा। उसने भी मित्र-भाव से सिर हिलाकर सब का जवाब दिया। ऐसा जान पड़ता था, कि देखनेवाले उसे अपना बड़ा मानते हैं, पर उसे ख़ुद अपने इस बड़प्पन का ज्ञान नहीं।

गाँव से बाहर निकलकर वे उस रास्ते पर पहुँचे, जो पहाड़ की चोटी की तरफ़ जाता था, और इतना सकरा था, जिस पर दो

आदमी साथ-साथ मुश्किल से चल सकते थे। युवक ने स्त्री को आगे चलने की आज्ञा दी; क्योंकि उसके घोड़े के कारण उसका पीछे-पीछे आना ख़तरनाक साबित हो सकता था। वह आगे हो गई, और दोनों-ही चुपचाप चलने लगे। मानों दोनों ही किसी गहरे विचार में डूबे हुए थे। उनका रुख़ एक पुराने दुर्ग की तरफ़ था, जिसका निर्माण चार सौ वर्ष पहले हुआ था। इस दीर्घकाल में दसों पुरुष-पुङ्गवों ने इस दुर्ग पर शासन किया, और सभी ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उसमें परिवर्तन-परिवर्द्धन किया। ड्यूक ऑफ़ नॉरमण्डी ने इसमें एक चौकोर गुम्बद बनवाया था और लुई बारहवें के शासन-काल में इसमें एक लम्बी बारहदरी की वृद्धि हुई, जिसमें रङ्ग-बिरङ्गी खिड़कियाँ बनवाई गईं।

आख़िर दोनों दुर्ग के विशाल द्वार पर पहुँचे। यह आश्चर्य की बात है, कि पिछले पन्द्रह वर्ष से इस राजभवन का दावेदार कोई भी नहीं हुआ था, और इसीलिये वह सुनसान-सा पड़ा रहता था। सिर्फ़ एक गुमाश्ता आसपास से किराया वग़ैरा उगाहता रहता, और नौकर-चाकर—जो अब बूढ़े हो चले थे, और इस स्थान को छोड़ना गवारा न करते थे,—रोज़ उसे खोलते, कमरों-वग़ैरा की सफ़ाई करते, और रोज ही मालिक के आगमन की प्रतीक्षा किया करते थे।

गुमाश्ते ने दोनों का स्वागत किया। स्त्री के साथ तो उसका व्यवहार मित्रतापूर्ण था, पर युवक के साथ सम्मान और भक्ति का। स्त्री ने कहा—"भाई इलियर, मैं दुर्ग में जाना चाहती हूँ। मुझे प्यारे जैब्री से कुछ कहना है, जो सिर्फ़ दरबार के कमरे में ही कहा जा सकता है।"

"जाओ, बहन एलोई," उसने जवाब दिया—"जहाँ तुम्हारी इच्छा हो, जाकर कहो। तुम्हें मालूम है, कि तुम्हारी बात में बाधा डालने के लिये, कोई वहाँ नहीं आ सकता।"

वे हॉल से निकलकर आगे बढ़े। यहाँ हमेशा बारह सशस्त्र आदमी नियुक्त रहते थे। उनमें से सात अब तक मर चुके थे, जिनकी जगह दूसरे आदमियों की नियुक्ति नहीं की गई थी। पाँच बचे थे, और स्वर्गीय काऊएट के समय में जो काम उनके सुपुर्द था; उसे अब तक वे उसी मुस्तैदी और तैनाती के साथ पूरा किया करते थे। तब दोनों ने ड्राँइङ्ग-रूम में प्रवेश किया। वह अब तक उसी दशा में था, जिसमें काऊएट उसे छोड़कर गये थे। इस कमरे में जहाँ फ्रान्स के प्राचीन गौरव की झलक अब तक विद्यमान थी, गत पन्द्रह वर्षों से, नौकरों के अतिरिक्त किसी ने प्रवेश नहीं किया था। इस कमरे में आकर जैब्री का मन किसी अभूतपूर्व भाव से भर उठा। परन्तु इस भाव ने उसके मन पर इतना प्रबल प्रभाव उत्पन्न नहीं किया, कि वह अपने मन की बात भूल जाता; क्योंकि जैसे ही दर्वाज़ा बन्द हुआ, उसने कहा—"हाँ तो, मेरी जाँनिसार दाई, अब वह बात मुझे बताओ, जिसका वायदा तुम कर चुकी हो। मैं देखता हूँ, कि इस कमरे में आकर तुम्हारा हृदय मुझसे भी ज्यादा प्रभावित हुआ है, किन्तु मैं अपनी जिज्ञासा को दबा रखने में अब असमर्थ हो गया हूँ। कृपा करके तुरन्त वह बात मुझे बताओ। मैंने बहुत धीरज रक्खा, पर सदा तुम्हारी आज्ञा मानकर चुप रहा। जब-जब मैंने अपने नाम, अपने परिवार और अपने माँ-बाप के विषय में तुमसे प्रश्न किया, तभी-तब तुमने उत्तर दिया—'जैब्री, जब तुम अठारह वर्ष के हो जाओगे, और तुम्हें तलवार रखने का अधिकार हो जायगा, तब मैं सब बात तुम्हें बता दूँगी।' अब, आज पाँचवीं मई है, और मैं अठारह वर्ष का हो गया। मेरे पूछने पर तुमने यह बहाना भी बनाया, कि 'मुझ ग़रीबनी के टूटे-फूटे घर में वह बात कहनी उचित नहीं; उसे मैं तुम को मॉण्ट-गॉमरी-पर्वत के राज-दुर्ग में बताऊँगी। अब हम यहाँ भी आ पहुँचे—अब बोलो।"

"बैठ जाओ जैब्री.......तुम मुझे एक बार इस नाम से सम्बोधित करने की आज्ञा दो।"

युवक ने अत्यन्त प्रेम-भाव से उसका हाथ थाम लिया। वह बोली—"बैठो।.......इस कुर्सी पर नहीं,—उस पर भी नहीं।"

"तब फिर कहाँ ?"

"उस पवित्र वेदी के नीचे बैठो," आपने गम्भीर स्वर में कहा—'और तब मेरी बात सुनो।'

"लेकिन तुम भी तो बैठो।"

"तुम मुझे अनुमति देते हो ?"

"तुम दिल्लगी करती हो क्या ?"

वह भलीमानस वेदी की सीढ़ियों पर, युवक के चरणों के समीप, बैठ गई, और कहने लगी—

जैब्री, तुम मुश्किल से छः वर्ष के होगे, जब तुम्हारे पिता और मेरे पति का एक-साथ देहान्त हो गया। तुम्हारा लालन-पालन शुरू से ही मेरे सुपुर्द था; क्योंकि तुम्हारी माता तुम्हारे प्रसव-काल में ही स्वर्गवासिनी हो गई थीं। तब से, मैंने, तुम्हारी माँ की धर्म बहन ने, अपने सगे बेटे से ज्यादा तुम्हें प्यार किया, मुझ विधवा ने अनाथ बालक पर अपने प्यार की समस्त बिभूति न्यौछावर कर दी! मैंने अपने दूध में अपना हृदय घोलकर तुम्हें पिलाया है। मुझे विश्वास है, कि अगर तुमसे इन्साफ की बात पूछी जाय, तो तुम मेरे प्रेम की शिकायत नहीं करोगे।"

"प्यारी एलोई," युवक ने कहा—"जो कुछ तुमने मेरे लिये किया, उतना—शायद बहुत-थोड़ी मातायें अपने पुत्र के लिये कर सकती थीं, और मुझे विश्वास है, उससे ज्यादा कर सकना तो जगत् में किसी भी माँ के लिये असम्भव है।"

"खैर," एलोई ने फिर कहना शुरू किया—"सभी लोग तुम्हारे लिये सब-कुछ करने को तैयार थे। डॉम जैनेट डि क्रॉसिन, इस

राज-भवन का धर्म-गुरु, जिसकी मृत्यु अभी तीन महीने पहले ही हुई है, पूरे ध्यान से तुम्हें शिक्षा-दीक्षा देता रहा, और उसने तुम्हें इस योग बना दिया, कि आज फ्रान्स-भर में कोई आदमी साहित्य और इतिहास में तुम्हारा मुकाबिला नहीं कर सकता। एन्कराँ लोरैं, मेरे पति का घनिष्ट मित्र, सदा तुम्हें युद्ध-विद्या की ऊँचे दर्जे की शिक्षा देने में रत रहा, और तुम्हें तलवार-बर्छे के कामों में, घुड़सवारी के कर्तव्यों में, तथा वीरता के सभी लक्षणों में पारङ्गत बना गया है। दो वर्ष पहले ही, जब हमारे बादशाह द्वितीय हेनरी राजगद्दी पर बैठे, और उनका विवाह हुआ, तुमने अपने कर्त्तव्यों से दर्शकों को हैरत में डाल दिया था। मैं तो सिर्फ तुम्हें प्यार कर सकती थी, या ईश्वर-भक्ति का पाठ पढ़ा सकती थी। वही मैंने किया है। माँ मरियम ने मेरी मदद की। आज, अठारह वर्ष की उम्र में तुम एक धार्मिक विद्वान और योद्धा हो—और इन सभी विषयों में तुमने पूर्ण योग्यता प्राप्त की है। मुझे विश्वास है, कि ईश्वर की कृपा से तुम अपने पूर्वजों के गौरव को वृद्धिगत करोगे। अतएव आज महाराज जैब्री-महोदय, मण्टगॉमरी के काऊण्ट, मैं आपका अभिनन्दन करती हूँ।"

जैब्री के मुँह से एक चीख निकली, और वह खड़ा होकर बोला—"मॉण्टगॉमरी का काऊण्ट—मैं ? ठीक है, मुझे भी ऐसा ही सन्देह था। तुम्हें याद है, एलोई, एक बार लड़कपन की उमङ्ग में मैंने अपनी डायना से यह बात कही भी थी। हैं! मगर यह तुम क्या कर रही हो ?—मेरे चरणों पर तुम क्यों लेटी हुई हो ? एलोई, मेरी प्यारी अम्माँ, आओ—मेरे सीने से लग जाओ। अगर मैं मॉण्टगॉमरी का काऊण्ट हो गया, तो क्या तुम्हारा बच्चा नहीं रहा ?" उसने गद्गद् होकर कहा—"क्या मैं फ्रान्स के अत्यन्त गौरवशील महापुरुषों की सन्तान हूँ ?—हाँ, डॉम जैनेट ने मेरे पूर्व पुरुषों का इतिहास मुझे पढ़ाया था। अपने पूर्वजों के प्रत्येक

वीर पुरुष की जीवनी मेरे कण्ठस्थ है। एलोई, मुझे फिर आशीर्वाद दो। ओह! डायना इस खबर को सुनकर क्या कहेगी? क्या वे सिंह-जननी ऐतिहासिक वीराङ्गनायें मेरे ही खान्दान से सम्बन्ध रखती थीं? जिन अतुल शौर्यशाली वीरों ने जान पर खेल कर युद्ध के मोरचे जीते, क्या वे मेरे ही दादा-परदादा थे? तो क्या इङ्गलैंड और फ्रान्स के राज-परिवार से मेरा भाईचारे का सम्बन्ध है?"—कहते-कहते अकस्मात् उसका स्वर धीमा हो गया, और वह बोला—"लेकिन अफसोस, एलोई, मैं इस दुनियाँ में अकेला रह गया हूँ—गौरवशील वीरात्माओं का प्रतिनिधि आज अनाथ है! हाय, मेरे पिता! हाय, मेरी माता! तुम काल-कवलित हो गये—दोनों ही स्वर्ग को चले गये! ओह! एलोई, मुझे उनकी कहानी सुनाओ, ताकि मुझे उनकी असलियत का पता लग सके, और मुझे मालूम हो कि मैं कैसे पिता की सन्तान हूँ। पहले मेरे पिता की बात बताओ। उनका महाप्रस्थान किस प्रकार हुआ?"

एलोई चुप रही। जैक्री ने चकित होकर उसे देखा, और कहा—"मेरी प्यारी अम्माँ, मैंने पूछा—मेरे पिता का स्वर्गवास किस प्रकार हुआ?"

"मोशिये, इस विषय में ईश्वर ही ठीक उत्तर दे सकता है। आपके पिता एक दिन पेरिस में अपने महल से निकलकर कहीं गये थे, और फिर कभी नहीं लौटे। उनके दोस्त-मित्रों और नातेदारों में उनकी बहुतेरी खोज की, परन्तु उनका पता न लगना था, न लगा। अगर उनकी हत्या की गई, तो मालूम होता है, हत्याकारी बड़े धूर्त थे; जिन्होंने कहीं कोई निशान बाकी न छोड़ा। अब यों आप पिताहीन हैं, लेकिन आपके पिता की समाधि आपके अन्य पूर्वजों के साथ मौजूद नहीं है; क्योंकि वे जीवित या मृत कहीं भी नहीं मिल सके।"

"हाय! उनका पता लगानेवालों में उनका बेटा नहीं था।"

जैब्री ने रोते हुए कहा—"हाय अम्मा ! तुमने अब तक यह भेद मुझसे गुप्त क्यों रक्खा ?—क्या इसलिये कि मुझे अपने पिता की मृत्यु का बदला लेना है ?—या इसलिये, कि मुझे उनका उद्धार करना है ?"

"नहीं, बल्कि इसलिये कि मुझे आपकी रक्षा करनी थी, मोशिये। आपको मालूम है, मेरे पति पीरट ट्रेविनी का अन्तिम आदेश क्या था ? 'मेरी नेक बीबी', उन्होंने अन्तिम साँस लेने के कुछ ही समय पूर्व कहा था—जैसे ही मेरी आँखें बन्द हों, तुम इस बच्चे को लेकर पेरिस के बाहर चली जाना। सीधी मॉण्टगॉमरी पहुँचना; महल में नहीं, गाँव के उस घर में जो काऊण्ट महोदय ने हमें प्रदान किया था। वहाँ रहकर मालिक के इस उत्तराधिकारी का लालन-पालन करना। लोगों से इस बात को चाहे मत छुपाना, पर वह जब तक अठारह वर्ष का न हो जाय, उसे उसकी असलियत मत बताना। जमींदारी के स्वामि-भक्त निवासी तुम्हें धोखा न देंगे, पर उसे अपनी स्थिति का पता लग गया, तो वह चुप न रह सकेगा। उसे केवल यही बताना, कि उसका सम्बन्ध किसी ऊँचे खान्दान से है; जिससे वह अपने आत्म-सम्मान और गौरव को अक्षुण्ण रख सके। अठारह वर्ष की उम्र में उसमें स्वाभाविक गम्भीरता और अच्छे-बुरे की समझ आ जायगी। सावधान ! अगर यह बात दुश्मनों को मालूम हो गई, तो वे अपनी करतूतों से बाज न आयेंगे, और पिता के साथ जो व्यवहार उन्होंने किया, वही पुत्र के साथ करते तनिक भी न हिचकेंगे।'

"यह आदेश करके वे तो स्वर्गगामी हुए, और मैं मोशिये, तुम्हें छः वर्ष के अबोध बालक को, लेकर इस गाँव में चली आई। काउण्ट के सहसा गायब होने का समाचार चारों ओर फैल गया था, और यह निश्चित था, कि उसके वारिस के साथ भी काऊण्ट के दुश्मन क्रूरता करने से बाज़ न आयेंगे। गाँववालों ने तुम्हें मेरे

साथ देखा और पहचान भी लिया, लेकिन किसी अज्ञात कारण से न किसी ने कभी मुझसे कोई प्रश्न किया, और न तुम्हारे यहाँ रहने की बात किसी ने बाहर निकाली। इसके कुछ ही दिन बाद, मेरा इकलौता बेटा, तुम्हारा दूध-भाई भी इस संसार से कूच कर गया। ईश्वर ने यही उचित समझा कि मेरा सारा स्नेह तुम पर ही केन्द्रित हो। इधर सबने यही प्रकट किया, कि मृत बालक मेरा पुत्र नहीं, तुम थे। इस प्रकार गाँव के स्वामि-भक्त निवासियों ने दुश्मनों के दिल से तुम्हारे जीवित रहने का सन्देह धीरे-धीरे मिटा दिया। लेकिन मन-ही-मन सब लोग तुम पर भक्ति-भाव रखते थे। तुम्हारी सूरत और आदतें अपने पिता से मिलती-जुलती थीं; शेर का बच्चा शेर-मर्द ही सिद्ध हो रहा था! ऐसा प्रकट होता था, जैसे तुम दुनियाँ पर हुक्म चलाने के लिये ही पैदा हुये हो। आस-पास के सब बच्चे तुम्हारा आधिपत्य मानने लगे थे, और लोग आप ही आप अपने खेतों से अनेक प्रकार की वस्तुयें मेरे घर भेज देते थे। महल के नौकर-चाकर सदा तुम्हारी देख-भाल करते थे, और तुम सदा उनकी आँखों के नीचे स्वच्छन्द फिरा करते थे।

"आखिर वह समय आ पहुँचा। अब मैं तुम्हारी समझ और बहादुरी पर विश्वास कर सकती थी। अब मुझे सब बात खोल देने का अधिकार था।—और वही मैंने किया। मुझे हर्ष है, कि मेरी बात सुनकर तुम्हारे मुँह से पहले-पहल जो शब्द निकले, वे बदले और भावी उच्चाकांक्षाओं के द्योतक थे।"

"हाँ, सबसे पहले बदला—उसके बाद उच्चाकांक्षाएँ," जैब्री ने कहा—"तो क्या तुम्हें विश्वास है, कि मेरे पिता के दुश्मन अभी तक जीवित हैं ?"

"मोशिये, मेरी ऐसी धारणा है। लेकिन धीरज रक्खो। बिना मदद के कोई काम सिद्ध नहीं होता। अगर आज तुम अकेले बादशाह के दरबार में जाओ, और कोई तुम्हारा साथ देने वाला

न हो, तो तुम अपने दुश्मनों का नाम तक नहीं जान सकोगे, और वे तुम पर अपना वार कर जायेंगे। नतीजा यह होगा, कि न केवल तुम अपने पिता का बदला नहीं ले सकोगे, बल्कि स्वयं भी विपत्ति में पड़ जाओगे।"

"इसीलिये तो एलोई, मुझे अफ़सोस है, कि अपने मित्र और साथी जोड़ने का मौका मुझे नहीं मिला। न-ही दुश्मनों पर धाक जमाने की नौबत आने पाई। हाय ! अगर मुझे सिर्फ दो वर्ष पहले ही मालूम हो जाता ! लेकिन कोई चिन्ता नहीं; थोड़ी देर ही तो हुई है—मैं शीघ्र ही देर की कसर निकाल लूँगा। एलोई, मैं अभी पेरिस जाऊँगा, और यह भी नहीं छिपाऊँगा, कि मैं किसी ऊँचे खान्दान से सम्बन्ध रखता हूँ। अलबत्ता यह बात मैं जाहिर न करूँगा कि मैं काऊण्ट जैक का पुत्र हूँ। हमारे परिवार में अनेक शाखा-प्रशाखायें हैं, इसलिए कोई मुझे पहचान सकेगा, इसकी सम्भावना नहीं। मैं अपना नाम विस्काउण्ट एक्सेम रक्खूँगा, और इस प्रकार मैं न अपने रुतबे को छुपाऊँगा, और न प्रकट ही करूँगा। मुझे अपने परिवार का इतिहास भली-भाँति ज्ञात है। मैं जाकर ड्यूक-डि-गाई से मिलूँगा। वह एक बहादुर आदमी है। उसके पास रहकर मैं ख्याति प्राप्त करूँगा, और उसी की छत्र-छाया में अपने लिये कार्य-क्षेत्र तैयार करूँगा।"

"मोशिये, मुझे एक बात और कहने की अनुमति दें। स्वामि-भक्त इलियट ने अपने स्वामी के उत्तराधिकारी के लिये बहुत-सा रुपया जमा करके रख छोड़ा है। आप राजकुमार की तरह रह सकते हैं, और आपके सब साथी, जिन्हें आपने लड़ने-भिड़ने की शिक्षा दी है, आपके सिपाही बनने में अपना गौरव मानेंगे। आप यह स्वयं ही समझते हैं, कि आप उनसे अपनी सेवा लेने के अधिकारी हैं !"

"एलोई, मैं उनका उपयोग करूँगा।"

"क्या अब आप अपने नौकर-चाकरों को नये रूप में दर्शन देंगे, जो एक मुद्दत से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?"

"अभी नहीं, एलोईं, सबसे पहले मुझे एक खास जगह जाना है।"

"कहाँ—एन्कराँ के पास ?"

"हाँ। क्या मैं उनके भार से कम दबा हुआ हूँ ?"

"और एन्कराँ का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद क्या आप उस छोटी लड़की डायना से भी भेंट करेंगे ?"

"वाह !" जैब्री ने हँसते हुए कहा—"यह छोटी लड़की तो मेरी पत्नी है। मैं तो गत तीन वर्ष से उसका पति हूँ—जब वह सिर्फ नौ वर्ष की थी।"

एलोईं ने चिन्ता-मग्न होकर कहा—"मोशिये, मैं जानती हूँ, आप बहुत होनहार और समझदार हैं। इसीलिये आपसे एक निवेदन करती हूँ। डायना के असली माता-पिता के विषय में कोई कुछ नहीं जानता है। एक बार एन्कराँ की गृहणी घर से बाहर गई थी। जब वह वापस लौटी, तो कमरे में उसने एक नवजात शिशु को पड़े हुये पाया। पास ही मेज पर सोने की मोहरों से भरी हुई एक थैली रक्खी थी। उस थैली में एक अँगूठी का अर्द्धांश और एक कागज पर लिखा हुआ शब्द 'डायना'—यह दो वस्तुएँ भी मिलीं। एन्कराँ की स्त्री बर्था निस्सन्तान थी, इसलिये उसने यह भार सहर्ष स्वीकार कर लिया। लेकिन शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई, और बच्ची का भार तब एन्कराँ पर आ पड़ा। तब से मैंने इस लड़की की देख-भाल शुरू की, और उसने आपको योग्य बनाना आरम्भ किया। लेकिन अनेक प्रमाणों से आपके परिवार की महानता सिद्ध की जा सकती है, पर डायना के विषय में अभी तक कुछ मालूम नहीं हो पाया है। मुझे यह मालूम है, कि आप उसे दिल से चाहते हैं, परन्तु अभी यह चाह लड़कपन की चाह है। एक दिन आयेगा, जब डायना बड़ी होगी, और इसमें संदेह

नहीं, कि अनिन्द्य सुन्दरी होगी। उस अवस्था में यदि उसके माँ-बाप का पता न चला, तो उससे विवाह करना आपको शोभा न देगा। इसलिए आप पहले ही सावधान रहें।"

"लेकिन अम्माँ, फिलहाल तो मैं उसे छोड़कर जा ही रहा हूँ।"

"ठीक है। इस बुढ़िया की मूर्खता के लिए क्षमा कीजिये। अब आप जा सकते हैं, परन्तु याद रखिये, यहाँ हम लोग आँखें फाड़ कर आपकी राह देखेंगे।"

"मैं बहुत जल्द लौटूँगा। मुझे एक बार फिर आशीर्वाद दो, प्यारी अम्माँ! मुझे सदा अपना बच्चा समझना, मैं कभी तुम्हारा उपकार न भूलूँगा।"

"मेरे प्यारे बच्चे—मेरे मालिक, तुम चिरंजीवी हो!"

२

जैब्री का मन होता था, कि वह हवा पर चढ़कर चल सके, पर घोड़े की चाल उसने मामूली से ज्यादे नहीं की। अनेक प्रकार के विचार उसके मन में उठने लगे। इनमें से कुछ ने उसके मन में हर्ष उत्पन्न किया, और कुछ ने विषाद। जब उसे अपने माँण्ट-गॉमरी का काऊण्ट होने का ख्याल आया, तो वह खुशी के मारे घोड़े की पीठ पर ही उछल-उठने को हुआ, पर जैसे ही उसे याद आया, कि उसके माता-पिता का शरीरान्त हो चुका है, त्यों ही उसका यह भाव दूर हो गया, और विषाद के कारण घोड़े की लगाम तक उसके हाथ से छूट गई। तब उसने सोचना शुरू किया—कि वह लड़ाई पर जा रहा है, वीरता के कार्यक्षेत्र में प्रवेश कर रहा है, तो उसका मस्तक गर्व से उन्नत हो उठा। साथ ही जब उसे विचार हुआ, कि अब उसकी बचपन की साथिन डायना उससे अलग हो जायगी, तो उसके जी में कसक-सी उठ खड़ी हुई।

जब वह घर के द्वार पर पहुँचा, तो प्रसन्नता के भाव दुःखित

भावनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके थे। बाग की छोटी चारदीवारी के परे पेड़ों के झुरमुट में उसे डायना की पोशाक साफ दिखाई दे रही थी। शीघ्र ही वह उसके निकट जा खड़ा हुआ।

"मेरी प्यारी पत्नी," जैब्री ने कहा—"क्या हो रहा है ? यह चेहरे पर उदासी क्यों है ? एन्कराँ ने डाँटा तो नहीं ?—क्या कपड़े मैले कर डाले थे ?—या सबक़ याद नहीं किया ? किसी ने तुम्हारा गुड़िया तो नहीं चुरा ली ? मेरी सुन्दर डायना, तुम्हारा हितैषी वीर खड़ा हुआ तुमसे प्रार्थना करता है, अपने दिल का हाल कहो।"

"हाय जैब्री ! अब तुम 'मेरे' हितैषी वीर नहीं हो सकते ? इसीलिए मैं रो रही थी।"

जैब्री ने सोचा, एन्कराँ ने उसे उसका असली परिचय दिया है, इसीलिये वह अपने और उसके बीच में भेद की दीवार का अनुभव करने लगी है। अतएव वह बोला—

"चाहे वह बात अच्छी है, या बुरी, लेकिन यह तो सोचो, भला आज से पहले मैं अपने-आपको इतना बड़ा आदमी समझता था, जितना अब हूँ ?"

डायना की समझ में ख़ाक न आया। बेचारी लड़की फूट-फूटकर रोने लगी, और जैब्री की छाती में सिर छुपाकर बोली—जैब्री, जैब्री! अब हम एक-दूसरे को देख नहीं सकेंगे !"

"कौन हमें रोकने वाला है ?" कहकर जैब्री ने उसे चूम लिया।

"ओह !" उसने चीख़कर कहा—"मुझे ऐसा करने की भी मनाई कर दी गई है।"

"एन्कराँ ने इससे क्या कह दिया है ?" मन-ही-मन यह सोचकर जैब्री ने कहा—"क्यों ?—क्या तुम मुझे प्यार नहीं करतीं ?"

"मैं—और तुम्हें प्यार न करूँ ?" उसने रोकर कहा—"तुम्हारे मन में ऐसा भाव कैसे आया जैब्री ? तुमने सदा मुझे हर काम में सहायता दी। जब मैं थक जाती थी, तो तुम मुझे कन्धे पर चढ़ा

लेते थे; जब मुझे सबक याद नहीं होता था, तो तुम याद करा देते थे। तुम सदा मेरे दोषों को छिपाते थे, और मेरे लिये ख़ुद मिटने को तैयार रहते थे। तुमने मुझे फूलों के बहुत-से गुच्छे भेंट किये, मेरे लिये बहुत-सी चीज़ें ख़रीद दीं। ओह जैबी! भला मैं तुम्हें कैसे प्यार न करूँगी ? परन्तु हम और तुम अब एक-दूसरे को देख न सकेंगे।"

"लेकिन भला क्यों ?"

उसने सिर नीचा कर लिया, और धीरे-से कहा—"क्योंकि अब मैं दूसरे की हो चुकी हूँ।"

जैबी का विनोद-भाव दूर हो गया। उसका हृदय डूब-सा गया, और उसने पूछा—"तुम्हारा क्या अभिप्राय है डायना ?"

"अब मैं," डायना बोली—"डचेज़ डि कैस्ट्रो हूँ ; और मेरे पति का नाम हॉरेस फ़र्नी ड्यूक डि कैस्ट्रो है।" उस अबोध बची की आँसू-भरी आँखों में भी 'पति' और 'डचेज़' का शब्द कहते हुये मुसकान की झलक दिखाई दी, लेकिन जब उसकी दृष्टि जैबी के चेहरे पर पड़ी, तो यह मुसकान लुप्त हो गई।

"मज़ाक करती हो क्या ?" वह बोला।

नहीं, मज़ाक नहीं, यह बड़ा खेद-पूर्ण सत्य है। क्या एन्करौं से तुम नहीं मिले ? वह अभी आध घण्टे पहले मॉण्टगॉमरी की तरफ गये हैं।"

"मैं पहाड़ पर से आ रहा हूँ," उसने कहा—"लेकिन तुम सच बताओ·······।"

"हाय जैबी! तुम चार दिन से इधर क्यों नहीं आये ? इन्हीं चार दिनों में हम पर विपत्ति का आसमान टूट पड़ा। परसों मैं बहुत ही बेचैन हो गई थी; दो दिन से तुम्हें देखा नहीं था। मैंने एन्करौं से यह वायदा ले लिया था, कि अगर तुम कल भी नहीं आये, तो वह मुझे मॉण्टगॉमरी ले चलेगा। अगले दिन मुझे उठने में जरा देर हो गई, सो उठते ही मैंने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने,

और नीचे जाने ही वाली थी, कि अपनी खिड़की के नीचे मुझे कुछ आवाज सुनाई दी। मैंने झाँककर नीचे देखा। बहुत-से घुड़सवार जर्क़-बर्क़ पोशाक पहने, चले आ रहे थे, उनके पीछे अनेक उच्च-पदस्थ राज-कर्मचारी थे, और सब के बाद सूरज की रोशनी में चमचमाती हुई एक गाड़ी थी। मैं उधर देखकर आश्चर्य कर ही रही थी, कि एएटोई ने आकर द्वार खटखटाया, और कहा—'एन्कराँ ने तुम्हें तुरन्त नीचे बुलाया है।' मैं भयभीत हो गई, और धीरे-धीरे नीचे आई। जब मैंने कमरे में प्रवेश किया, तो सारा कमरा उन्हीं उच्च-पदस्थ राज-कर्मचारियों से भरा हुआ था, और मेरा मन ऐसे भय से भर उठा, जिसका अनुभव मैंने जीवन में कभी न किया था। उपस्थित लोगों में-से एक ऊँचे सरदार ने आकर मेरा हाथ पकड़ लिया और एक दूसरे सरदार के सम्मुख ले जाकर बोला—'महाराज, ड्यूक डि कैस्ट्रो महोदय, मैं आपकी पत्नी को श्रीमान् की भेंट करता हूँ। बेटी,' तब उसने मुझसे कहा—'आपका नाम हॉरेस फ़र्नी है, और ये तुम्हारे पति हैं।'

"ड्यूक मुस्कराया, पर मैं भय-विह्वल होकर एन्कराँ की ओर दौड़ी, जो एक कोने में अलग बैठा हुआ था, और उसकी गोद में मुँह छुपाकर बोली—'एन्कराँ, यह आदमी मेरा पति नहीं है। जैब्री के अतिरिक्त दुनियाँ में कोई मेरा पति नहीं हो सकता; तुम यह बात इन सब लोगों को बता दो।' जिस आदमी ने मुझे ड्यूक की भेंट किया था, उसने माथा चढ़ाकर कहा—'यह क्या वाहियात बात है।' एन्कराँ ने उत्तर दिया—'कुछ नहीं, हुज़ूर, बचपन है।' कहते कहते उसका चेहरा जर्द पड़ गया। तब उसने मेरे कान में कहा—'डायना, तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें बुलाया है; तुम्हें उनकी आज्ञा माननी चाहिये।' मैंने ज़ोर-से पूछा—'कौन हैं, मेरे माँ-बाप ?' तब उस सरदार ने उत्तर दिया—'देवी, उन्हीं के भेजे हुये हम लोग आये हैं। मैं उनका प्रतिनिधि हूँ। अगर आपको विश्वास न हो, तो

यह बादशाह के हाथ का प्रमाण-पत्र मौजूद है।'—कहकर उसने मुझे लाल मोहर-लगा एक कागज पकड़ा दिया। उस पर 'हेनरी' के हस्ताक्षर थे।

"मैं वज्राहत हो गई। मेरे मुँह से बोल न निकल सका। होश-हवास गुम हो गये। नौकरों ने मुझे छोड़ दिया। मेरे माता-पिता और बादशाह के हस्ताक्षर……! जैक्री, तुम नहीं थे,—तुम वहाँ होते, तो मैं शायद हिम्मत न छोड़ती, लेकिन जब उस पुरुष ने कहा—'बस, बहुत देर हो चुकी; हमें गिर्जाघर जाना है; मैडन डि कैस्ट्रो, चलिये'—तो मेरा साहस छूट गया, और हत-ज्ञान होकर उनके पीछे पीछे चल दी।

"बाहर बहुत-सी स्त्रियाँ मूल्यवान् गहने-कपड़ों से सजी-बजी उपस्थित थीं। मुझे उनके सुपुर्द कर दिया गया। वे मेरे कमरे में लाईं, और तभी लाये हुए एक बक्स में-से रेशमी पोशाक निकालकर मुझे पहनाई गई। इसके बाद एक जड़ाऊ हार और कर्णफूल की जोड़ी मुझे पहना दी गई। मैं बराबर फूट-फूटकर रोती रही, लेकिन वे सिर्फ़ रह-रहकर हँस देती थीं। जब मेरा पहनना-ओढ़ना समाप्त हुआ, उन्होंने मेरी सुन्दरता की प्रशंसा की। पर इस पर मैं और भी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। वे मुझे लेकर नीचे आईं, वहाँ उसी सरदार ने मेरा हाथ पकड़ा, और मुझे मख़मली गद्दों-वाली उस बहुमूल्य गाड़ी में बैठा दिया।

"ड्यूक डि कैस्ट्रो घोड़े पर सवार होकर मेरे साथ-साथ चल रहा था। हम लोग गिर्जाघर पहुँचे। पादरी भी मौजूद था। उन लोगों ने कुछ अएट-शएट कहा-सुनी, जो मेरी समझ में ख़ाक न आया। तब उन्होंने मेरी उँगली में एक अँगूठी पहना दी। इसके बाद हम बाहर निकल आये, और सब स्त्री-पुरुष 'मैडम ला डचेज' कहकर मुझे बधाइयाँ देने लगे। इस प्रकार जैक्री, मेरा विवाह हो गया।"

जैक्री ने एक भीषण अट्टहास से इसका जवाब दिया।

"जब हम वापस आये," डायना ने कहना शुरू किया—"तो मेरे होश-हवास कुछ ठिकाने आये तब मैंने अपने पति की तरफ भी ध्यान न दिया। जैब्री, वह तुम्हारे जितना सुन्दर नहीं है। उसके मुँह पर कठोरता का भाव झलकता है, और उसकी लाल रँग की दाढ़ी बड़ी ही डरावनी है। हाय! इस प्रकार मेरा तो बलिदान ही कर दिया गया! वह मेरे मन ज़रा भी न भाया। पर घर आकर वह मेरे पास पहुँचा, और मुस्कराते हुए बोला—"मैडम ला डचेज़, मुझे दुःख है, कि मैं बहुत-ही शीघ्र तुम्हें छोड़कर चला जाऊँगा। तुम शायद जानती हो कि आजकल स्पेन से हमारी लड़ाई हो रही है, और मुझे वहाँ तुरन्त जाना है। तुम अब शीघ्र ही राज-दरबार जाओगी। मुझे आशा है, मैं बहुत जल्द लड़ाई से वापस आकर तुमसे भेंट करूँगा। मैं तुम्हें कुछ उपहार भेंट करना चाहता हूँ। आशा है, तुम उन्हें स्वीकार करोगी। तब तक के लिये, मैडम, मेरा अभिवादन स्वीकार करो। मैं यही चाहता हूँ, कि तुम ख़ूब खेलो और खुश रहो।"—कहकर उसने मेरा माथा चूम लिया। ऐसा करते समय उसकी दाढ़ी मेरे मुँह पर चुभ गई, और मुझे बड़ा कष्ट हुआ। तब समस्त उपस्थित नर-नारियों ने मेरा अभिवादन किया, और मुझे एन्कराँ के साथ ही छोड़कर सब चले गये।

"इस घटना के विषय में उसे भी कुछ ज्यादा मालूम न था। मेरी अपेक्षा उसे इतना पता और था, कि मैडम डि-लेविस्टन, जो मुझे कपड़े पहनाने के लिये ऊपर ले गई थी, शीघ्र ही आकर मुझे राज-भवन ले जायगी।

"जब मैं अपने कमरे में पहुँची, तो मैंने एक बड़े सन्दूक में—जानते हो, क्या देखा?—एक बेशक़ीमत गुड़िया, जिसे रेशमी कपड़े पहनाये हुए थे, और तीन प्रकार की भिन्न-भिन्न पोशाकें जिसके पास ही सजी हुई रखी थीं। जरा सोचो तो, जैब्री, कैसे शर्म की बात है!—उन्हों ने अब तक मुझे बच्ची ही समझा! लेकिन लाल रंग

की पोशाक में गुड़िया बहुत सजती है। और उसके छोटे-छोटे जूते तो बेहद............"

"हाँ, तुम वास्तव में अभी बच्ची ही हो," बात काटकर जैनी ने खेद-पूर्ण मुद्रा से कहा—"लेकिन किया क्या जाय ! तुम्हारी उम्र तो अभी बारह वर्ष की है; उतनी ही तो समझ होगी। मुझे अपने-आप अफसोस है कि क्यों मैंने इस खबर पर इतना क्लेश माना ! यह मैं ही जानता हूँ, तुम्हें मैं कितना चाहता हूँ। लेकिन अब क्या हो सकता है ? अगर तुम दृढ़ता से काम लेतीं, और उस अन्याय पूर्ण आज्ञा को मानने से इन्कार कर देतीं, तो शायद हम दोनों ही सुखी हो सकते ; क्योंकि अब यह प्रकट हो गया है, कि तुम भी एक उच्च कुल की सन्तान हो।

"डायना, मैं भी तुम्हें एक ऐसा भेद बताने आया था जो मुझ पर आज ही प्रकट हुआ है। लेकिन अब बताना बेकार है, समय बीत चुका ; तुम्हारी निर्बलता ने सब-कुछ मटियामेट कर दिया। इस जीवन में मैं सदा तुम्हें स्मरण रक्खूँगा। परन्तु अपना मुझे विश्वास है, कि राज-महल की तड़क-भड़क में तुम मुझे शीघ्र ही भूल जाओगी।"

"हरगिज नहीं।" डायना ने कड़ककर कहा—"सुनो जैनी, तुम आ गये हो, इसलिये मेरी हिम्मत अब बँध गई है। मैं राज-महल में जाने से साफ इन्कार कर दूँगी, और तुम्हारे साथ ही रहूँगी।"

"धन्यवाद प्यारी डायना ! लेकिन भगवान् की साक्षी में तुम अब दूसरे की हो चुकीं। अब हम दोनों को अपने-अपने रास्ते लगना चाहिये;— तुम जाओ, राज-महल की शान-शौकत में, और मैं जाऊं लड़ाई के मैदान में ! ईश्वर ने चाहा, तो एक दिन हम दोनों फिर मिलेंगे।"

"ओह, जैनी ! ज़रूर मिलूँगी; मैं सदा तुम्हें प्यार करती

रहूँगी ।" बेचारी डायना ने रोकर जैब्री की गोद में मुँह छिपाते हुए कहा । ठीक उसी समय मैडम डि लविस्टन के साथ एन्करौं वहाँ उपस्थित हुआ ।

"यह रहो मैडम," उसने डायना की ओर संकेत करते हुये मैडम लविस्टन से कहा—"अरे तुम हो, जैब्री ? मैं तो तुमसे मिलने मॉण्टगॉमरी जा रहा था । रास्ते में मैडम डि लविस्टन से भेंट हो गई, और मुझे वापिस लौटना पड़ा ।"

"मैडम," मैडम लविस्टन ने डायना से कहा—"बादशाह आपको देखने के लिये बेताब हैं । मेरा विचार है, कि हम तुरन्त यहाँ से रवाना हो जाँय । आपको तैयारी करने में अधिक देर तो नहीं लगेगी ।"

डायना ने जैब्री की ओर देखा ।

"हिम्मत रक्खो !" उसने कहा ।

"आप अगर चाहेंगी," मैडम लवेस्टन ने कहा—" तो अगले पड़ाव पर एन्करौं आकर हम से मिल जायेंगे, और तब हमारे साथ पेरिस तक चले चलेंगे ।"

"ओह !"डायना ने रोते-रोते कहा—"मेरे पिता तो वहीं हैं; मैं और किसी को नहीं जानती ।" कहकर उसने अपना हाथ एन्करौं के आगे फैला दिया । उसने हाथ थामकर उसके अनेक चुम्बन ले डाले । उधर वह बराबर जैब्री की तरफ देखती रही, जो उदास चेहरा बनाये पास ही खड़ा था ।

"अच्छा" मैडम लवेस्टिन ने कहा—"अब जल्दी कीजिये । हमें तुरन्त चल देना है ।"

डायना, हिचकियों के मारे जिसका बोल न निकलता था, दौड़ कर अपने कमरे की तरफ चली गई, और थोड़ी ही देर में यात्रा के लिये तैयार होकर आ पहुँची । उसने एक बार पुनः बाग का पूरा चक्कर लगा आने की इच्छा प्रकट की । एन्करौं और जैब्री

उसके साथ-साथ चले। उसने गुलाब के दो फूल तोड़े; एक अपने पास रक्खा, और दूसरा जैब्री को दे दिया। तभी जैब्री ने अनुभव किया, कि उसने एक कागज की पुड़िया भी उसको चुपके-से दे दी है इसके बाद वह उससे लिपट गई, और जब उसने कहा—"एड्यू*" तो उसने उत्तर दिया—"नहीं, ओं रिवॉयां†"

जब वह गाड़ी में बैठ गई, तो हिचकियां लेते-लेते उसके यह शब्द जैब्री ने सुने—"मेरी गुड़िया रख ली गई, कि नहीं ?"

जब वे लोग चले गये, तो जैब्री ने पुड़िया खोली। उसमें बालों की एक लट रक्खी हुई थी।

इसके एक महीने बाद वह पेरिस पहुँचा, और डि गाई के महल में उपस्थित होकर विस्काउण्ट डि एक्सेम के नाम से अपना परिचय दिया।

३

"हाँ, सज्जनो!" ड्यूक डि-गाई ने अपने तम्बू में घुसते ही उपस्थित सरदारों को लक्ष्य करके कहा—"आज २४ अप्रैल १५५७ ई० का दिन है। हमने सिविटला के गिर्द घेरा डाल दिया है। पहली मई को हम उस पर कब्जा कर लेंगे, और आकिला पर धावा बोलने के लिए बढ़ेंगे। इसके बाद कापू का नम्बर आयेगा, और सज्जनो, अगर ईश्वर ने चाहा, तो फिर नेपल्स हमसे ज्यादे दूर नहीं रहेगा।"

"लेकिन भाई साहब," ड्यूक डि-ऑमे ने कहा—"पोप महोदय तो हमें साफ धोखा दे गये। उन्होंने वादा किया था, कि अपनी सेना हमारी सहायता के लिये भेजेंगे। अब तो सिर्फ हमें अपने ही बिरते पर सब काम करना होगा। और मेरा ख्याल है,

* Adieu—सदा के लिए बिदा।
† Aurevoir—दोबारा भेंट होने तक लिए के बिदा।

कि हमारी सेना शक्तिशाली नहीं है, कि हम दुश्मन के मुल्क में इतनी दूर तक घुस सकें।"

फ्रैंकोई डि-गाई ने उत्तर दिया—"मालूम होता है, उन्हें हमारी शक्ति पर बेहद भरोसा है; इसीलिए शायद उन्होंने अपनी सेना भेजने की जरूरत न समझी। भाई, तुम्हें शायद यह मालूम नहीं, कि पार्टीजन लोग विद्रोह के लिए उठ रहे हैं ?"

"नहीं, वे बिल्कुल खामोश हैं।"

"तो उन्हें हमारी तोपें शीघ्र ही उठा देंगी।" ड्यूक ने कहा—"मोशिये एल्बो, रसद की कोई ख़बर अभी तक मिली, या नहीं ?"

"नहीं, श्रीमान्, खेद की बात है........"

"मालूम होता है, देर हो गई है—और कुछ नहीं," ड्यूक ने बीच ही में कहा—"कैम्पली पर हमने कब्जा कर ही लिया है। कोई चिन्ता नहीं। मेरा ख्याल है, खाने-पीने की इतनी सामग्री हमारे पास मौजूद है, कि आप लोग चाहें, तो खूब पेट भरकर हफ्तों तक खा सकते हैं। मैं समझता हूँ, यहाँ से जाते ही आप अपने-अपने डेरों में किसी खूबसूरत साक़ी के साथ शराब ढालते नज़र आयेंगे।"

सब लोग हँसते-हँसते उठ खड़े हुये, और अपने डेरों में चले गये। इधर काऊण्ट जब अकेले रह गये, तो दोनों हाथों से सिर थामकर चिन्ता-मग्न हो गये। सहसा पीछे किसी का पद सुनकर उन्होंने क्रोधपूर्वक सिर घुमाया। पर आगन्तुक को देखते ही उनका वह क्रोध-भाव काफ़ूर हो गया, और हाथ बढ़ाते हुये उन्होंने कहा—"आओ, प्यारे जैब्री, कहो, कोई नई खबर है क्या ?"

जैब्री ने उत्तर दिया—"जी हाँ; फ्रान्स से एक सवार आया है, और शायद आपके भाई साहब कार्डिनल डिलौरें के पास से कोई पत्र लाया है।"

"उस पत्र को तुम यहाँ ले आओ।"

जैब्री गया, और शीघ्र ही एक मोहर किया हुआ पैकेट लेकर वापस लौटा। हमारे दोस्त जैब्री को ड्यूक डि-गाई के पास रहते छः वर्ष बीत गये हैं, परन्तु उसमें कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता। इसमें सन्देह नहीं, कि अब उसकी चाल-ढाल में प्रौढ़ता आ गई है, किन्तु उसकी भाव-भंगी में स्वच्छन्दता, दयालुता और मृदुलता दिखाई देती है। ड्यूक की अवस्था सैंतीस वर्ष की थी। यद्यपि मुद्दत से लड़ाई के मैदान में रहने और दिन-रात खून-खराबी देखते रहने से उनकी कोमल भावनायें कुण्ठित हो गई थीं, तो भी वह जैब्री की वीरता और साहसिकता पर वह हृदय से मुग्ध थे, और इस नवयुवक के प्रति उनके हृदय में गहन सहानुभूति और स्नेह का भाव घर कर गया था।

उन्होंने पत्र निकालकर पढ़ने की आज्ञा दी। लेकिन जैब्री ने उस पर एक नजर डालकर उन्हें लौटा दिया, और कहा—"क्षमा कीजियेगा श्रीमान्, यह पत्र किसी विचित्र वर्णमाला में लिखा हुआ है। मैं इसे नहीं पढ़ सकता।"

"अच्छा, तो कोई गुप्त पत्र है!" कहते हुये ड्यूक ने एक सन्दूक में से संकेत-चिह्नों की कुञ्जी निकाल कर जैब्री को दी, और कहा—"लो, अब पढ़ो।"

जैब्री अब भी ठिठका। लेकिन ड्यूक ने प्यार से उसका हाथ दबाते हुये कहा—"पढ़ो, मित्र; डरो मत।"

जैब्री ने पढ़ना शुरू किया—

"मोशिये, मेरे सम्भ्रान्त और आदरणीय भ्राता, वह समय कब आयेगा, जब मैं आपको 'बादशाह' कहकर पुकारूँगा........" यहाँ तक पढ़कर जैब्री फिर रुक गया।

ड्यूक ने मुस्कराकर कहा—"क्यों? हैरत में पड़ गये? देखना, मेरी नीयत पर शक न कर बैठना। याद रक्खो, मैं कोई ऐरा-गैरा साधारण आदमी नहीं हूँ। भगवान् हमारे बादशाह को चिरायु

कर; लेकिन क्या फ्रान्स के अतिरिक्त और किसी देश का बादशाह होता ही नहीं ? संयोगवश तुम मेरे अत्यन्त विश्वास-पात्र बन गये हो, इसलिये मैं तुमसे कुछ भी न छिपाऊँगा।" कहकर ड्यूक अपने आसन से उठे, और तम्बू में इधर-उधर घूमने लगे।

"हमारा घराना, जैब्री," उन्होंने कहना शुरू किया—"बड़े-से बड़े सम्मान की कल्पना कर सकता है! हमारी बहन स्कॉटलैण्ड की रानी है; हमारी भांजी मैरी स्टुअर्ट, शीघ्र ही राजकुमार के साथ विवाही जानेवाली है। हमारा भतीजा ड्यूक डि-लॉरें बादशाह का दामाद है। अब हमारा उद्देश्य नेपल्स और फ्लोरेन्स की बादशाहत करना है। फिलहाल नेपल्स पर ही कब्जा करना होगा। यहाँ के तख्त पर किसी स्पेनवासी के बजाय फ्रान्सीसी का बैठाना क्या अच्छा नहीं होगा ? फेरारा का ड्यूक हमसे मिल गया है, कैराफा लोग भी हमारा साथ देंगे। पॉल चतुर्थ वृद्ध हो गया है—मेरा भाई कॉर्डिनल उसे कब्जे में कर लेगा। नेपल्स का तख्त इस समय लड़-खड़ा रहा है, मैं उसे सम्हाल लूँगा। मेरा यह सुख-स्वप्न है तो बड़ा आकर्षक, लेकिन मुझे भय है, कि कहीं अन्त में यह केवल स्वप्न ही न रह जाय। जैब्री, जब मैं आल्पस-पर्वत पार करके रवाना हुआ था, तो मेरे साथ बारह हजार आदमी थे। फेरारा के ड्यूक ने सात हजार सिपाही देने का वादा किया था। पर यह कुमक अभी तक नहीं आई। पॉल चतुर्थ, और कैराफा-वालों ने यह, डींग हाँकी थी, कि वे नेपल्स में भीषण विद्रोह खड़ा कर देंगे, और उन्होंने आदमियों की भर्ती और धन एकत्रित करना आरम्भ कर दिया था। लेकिन उन गधों न अभी-तक न एक आदमी भेजा है, न गोला-बारूद और न एक पैसा नकद। यह सब होने पर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी है। मैं इस जमीन की बादशाहत पाने के लिये कुछ भी उठा नहीं रक्खूँगा, और तभी लौटने का विचार करूँगा, जब हालत मुझे बिल्कुल मजबूर कर देंगे।"

"मान्यवर," जैक्री ने कहा—"आपकी इन महत्वा-कांक्षाओं में अति-क्षुद्र सहयोग देकर भी मुझे महान् गौरव का अनुभव होता है।"

"अच्छा," ड्यूक ने कहा—"अब तुम सारी बात समझ गये। अब यह पत्र पढ़ने में तुम्हें दिक़्क़त नहीं होगी।"

जैक्री ने पत्र आगे पढ़ना शुरू किया—"मुझे आपको एक अच्छी और दो बुरी ख़बरें सुनानी हैं। अच्छी ख़बर यह है, कि भतीजी मेरी स्टुअर्ट की शादी अगले महीने २० तारीख को निश्चित हो गई है। दोनों बुरी खबरों में से एक यह है, कि स्पेन का फिलिप द्वितीय इस समय इँग्लैण्ड में मौजूद है। वह अपनी आज्ञाकारिणी पत्नी मेरी ट्यूडर को फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध घोषणा करने के लिये भड़का रहा है। यह भी खबर आई कि एक मजबूत फौज तैयार कर ली गई है, जो ड्यूक फिलीबर्ट अमानुएल के नेतृत्व में स्पेन के सीमा-प्रान्त पर आ जमी है। प्यारे भाई, यहाँ फौज की बेहद कमी है, इसलिये मालूम होता है, बादशाह आपको इटली से शीघ्र ही वापस बुला लेगें। तब हमारे सभी मनसूबे धरे रह जायेंगे। लेकिन याद रखना फ्रैङ्कोई, जल्दबाजी मत करना; मनसूबों को कुछ समय के लिये स्थगित करना; बिल्कुल नष्ट करने की अपेक्षा अच्छा है।"

"ठीक है," ड्यूक ने जोर-से मेज़ पर मुक्का मारते हुए कहा—"मेरे भाई का अनुमान बिल्कुल ठीक है। मेरी जरूर अपने पति की आज्ञा मानेगी; और मैं भी खुल्लम-खुल्ला बादशाह की आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं कर सकता। अगर उसने सेना को वापस बुलाया, तो मुझे जाना ही पड़ेगा। सो मेरी अभागी महत्त्वकांक्षा में यह एक नई बाधा खड़ी हुई! सचमुच मेरी आकांक्षा अभागी ही है। क्यों जैक्री, है—या नहीं? सच बताओ, तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"श्रीमान्! मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो कमजोरी की बातें

करके किसी को निरुत्साहित करते हैं, लेकिन अगर आप मुझे सच-सच कहने की आज्ञा दें·······"

"मैं समझ गया जैब्री, अवस्था ऐसी है, कि मेरी राय भी तुमसे मिलती-जुलती ही है। लेकिन याद रक्खो, हमारे-तुम्हारे जौहर जाहिर होने का अवसर सदा के लिये दूर नहीं हो गया, बल्कि केवल कुछ समय के लिये स्थगित हुआ है।···खैर, आगे पढ़ो। मेरा खयाल है, अभी एक बुरी खबर और है।"

जैब्री फिर पढ़ने लगा—"दूसरी बुरी खबर अधिक निजी और गुप्त है। जब से आप गये हैं, मॉण्टमॉरेन्सी की ईर्ष्या दिन-दिन बढ़ती जा रही है, और हमारे परिवार पर बादशाह की विशेष कृपा देखकर उसका कलेजा जलता रहता है। भतीजी की शादी राजकुमार के साथ होनी उसे एक-आँख नहीं सुहाती। इसका कारण यह है, कि इस रिश्ते के कारण बादशाह का झुकाव स्वाभाविकतया ही हमारी तरफ ज्यादे हो गया है। आखिर बूढ़े ने इस भेद को मिटाने का एक उपाय निकाला है। वह है, उसके पुत्र फ्रैंक्वोई का विवाह·······" जैब्री अकस्मात् पढ़ते-पढ़ते रुक गया। उसके मुँह से आवाज निकलनी बन्द हो गई, और चेहरे पर मौत की-सी जर्दी छा गई।

"क्यों ?—क्या हुआ जैब्री ?" ड्यूक ने चिल्लाकर पूछा।

"कुछ नहीं मोशिये,···हाँ, कहाँ तक पढ़ा था ? सुनिये···"

"···फ्रैंक्वोई का विवाह बादशाह की कन्या डायना से करा देना। आपको याद होगा, कि वह तेरह वर्ष की उम्र में विधवा हो गई थी ; —उसका पति स्पेन की लड़ाई में काम आया था— और गत पाँच वर्षों से वह पेरिस के एक कन्वेण्ट में रहती है। मॉण्टमॉरेन्सी के प्रस्ताव पर बादशाह ने राजकुमारी को कन्वेण्ट

से राज-महल में बुलवाया है। मैं आपसे क्या कहूँ, भाई साहब, लड़की क्या है—मोती का दाना है! आप जानते हैं, मैं सौन्दर्य का असल पारखी हूँ। उसके सौन्दर्य से सभी प्रभावित हुए हैं। बादशाह तो उसे देखकर फूले नहीं समाते। उनके ऊपर उसका ऐसा प्रभाव पड़ा है, कि उसे आये पूरे पन्द्रह दिन भी नहीं हुए, कि बादशाह ने राज्य के कई बड़े-बड़े इलाके उसके नाम कर दिये हैं।"

"अलबत्ता, एक बात आश्चर्य्य की है। लड़की की माँ न-जाने क्यों उस पर प्यार नहीं रखती, और बादशाह का इतना स्नेह उस पर देखकर उससे जलने लगी है। हम और आप अच्छी तरह जानते हैं, कि डायना डी पोतेई (बादशाह की रखैल) इस बूढ़े की किसी बात से इन्कार नहीं कर सकती। इसलिये यह नाशकारी विवाह होना पक्का ही समझिये।"

"जैब्री, तुम बड़े बदहवास दिखाई देते हो।" ड्यूक ने कहा—"जाओ, आराम करो; इस पत्र का शेषांश मैं पढ़ लूँगा। बड़ी ही भीषण खबरें हैं; अगर यह शादी हो गई, तो मॉण्टमॉरेन्सी की पाँचों घी में हो जायेंगी। क्या बताऊँ, मेरा तो खयाल था, उसके छोकरे की सगाई कहीं और पक्की हो चुकी है। लाओ; जरा देखूँ तो, आगे क्या है।"

"नहीं, मैं ही पढ़े देता हूँ, मेरे सिर में यों ही चक्कर सा आ गया था," कह कर जैब्री ने पढ़ना शुरू किया—"अब हमारे लिये सिर्फ एक मौक़ा है। मादमाज़ेल डिफ़ीन के साथ फ्रैङ्कोई का विवाह गुप्त रूप से हो चुका है। फ्रैङ्कोई उसे तलाक़ देने के लिये पोप के पास रोम जा रहा है। अब यह आपका काम होगा, कि आप उससे पहले ही पोप के पास पहुँच जायँ, अपना और कराफ़ा लोगों का पूरा जोर लगाकर ऐसा प्रबन्ध करें, कि पोप उसकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दे। यह आप याद रक्खें, कि फ्रैङ्कोई बादशाह

की एक सिफारिशी चिट्ठी अपने साथ लायेगा । आपको अपनी सम्मान रक्षा के लिये सब कुछ करना होगा। और इधर मैं अपनी करनी में कसर न रक्खूँगा । बस । भगवान से प्रार्थना है, कि वह आपको चिरायु करे ।—आपका भाई, जी० कार्डिनल डि-लारें । पेरिस, १२ अप्रैल १५५७ ई० ।"

"चलो, अभी कुछ नहीं बिगडा !" जब जैब्री पत्र समाप्त कर चुका, तो ड्यूक ने कहा—"पोप ने सेना तो नहीं भेजी, मगर इतने-से काम के लिये कभी इन्कार नहीं करेगा ।"

"तो," जैब्री ने काँपते हुए कहा—"आपका ख़याल है, पोप तलाक की आज्ञा नहीं देंगे ?"

"हाँ, मेरा यही विश्वास है । लेकिन भाई, तुम इतने व्यग्र क्यों हो ? प्यारे जैब्री, तुम्हें हमारे तो सब भेद मालूम हो गये—अब तुम भी तो अपनी कथा कहो । अब निकट भविष्य में चूँकि तुम्हारे जौहरों की ज़रूरत मुझे नहीं पड़ेगी, इसलिए मैं चाहता हूँ, कि अब मैं अपने ऋण से उऋण होना शुरू कर दूँ । बोलो, मैं तुम्हारी क्या सहायता करूँ ? क्या मैं किसी काम में तुम्हारे लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ ? बोलो—साफ़-साफ़ कहो ।"

"ओह ! आप बड़े दयालु हैं, मुझे शब्द नहीं मिलते..........।"

"पूरे पाँच वर्ष," ड्यूक ने कहा—"तुमने वीरतापूर्वक मेरे लिये युद्ध किया, और बदले में कभी मुझसे एक पाई न ली । रुपये की ज़रूरत तुम्हें पड़ती ही होगी—क्यों ? दुनियाँ में हरेक आदमी को रुपये की ज़रूरत पड़ती है । याद रक्खो, तुम्हारी सेवायें मैं भूला नहीं हूँ; और मुझ पर तुम्हारा बड़ा भारी बोझ है । रुपया आयगा, जब इस बोझ को मैं उतारूँगा । तुम्हें मालूम है, कि इन दिनों हमारी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं है ।............"

"मान्यवर, मैं इस बात को खूब समझता हूँ, और मुझे रुपये की इतनी थोड़ी आवश्यकता रहती है, कि अनेक बार मेरी इच्छा

हुई, कि मैं दस-बीस हज़ार रुपया आपकी भेंट कर दूँ, जिससे सेना का ख़र्च आसानी से चल सके ; क्योंकि मेरे पास बहुत-सा रुपया फ़ालतू पड़ा हुआ है।"

"तुम्हारी यह भेंट मैं बड़ी ख़ुशी के साथ स्वीकार करूँगा ; क्योंकि सिपाही लोग धीरे-धीरे अनमने होते जा रहे हैं। लेकिन ओ स्वार्थ-त्यागी नवयुवक ! क्या मैं तुम्हारी कोई भी सेवा नहीं कर सकता ?—क्या तुम्हें उच्च पद की अभिलाषा है ?"

"धन्यवाद महोदय, मैं अपनी बहादुरी की प्रशंसा तो अवश्य चाहता हूँ, थोथे सम्मान की भूख मुझे नहीं है। मेरी इच्छा केवल यही है, कि उन झण्डों को लेकर मुझे पेरिस भेज दें, जो अपने विजित प्रान्तों से हस्तगत किये हैं, और मुझे आज्ञा दें, कि मैं आपकी भतीजी के विवाह-अवसर पर उन्हें बादशाह की भेंट करूँ। और अगर आप बादशाह के नाम यह पत्र लिख दें, कि इनमें से कई झण्डे ख़ुद मैंने पहुँचकर उतारे थे, जिनके लिये मुझे अनेक बार प्राण हथेली पर रखने पड़े थे, तो बहुत अच्छा हो।"

"वाह ! यह तो ज़रा-सी बात है; और वास्तव में तुम इस सम्मान के अधिकारी भी हो। यद्यपि तुम्हारे विछोह से मुझे मार्मिक कष्ट होगा, तो भी मुझे विश्वास है, तुम शीघ्र ही मुझसे मिलोगे; क्योंकि अगर फ्लैण्डर्स में लड़ाई आरम्भ हुई, तो तुम ज़रूर ही वहाँ आओगे।"

"मैं वहाँ आपकी कमान में लड़कर परम गौरवान्वित होऊँगा।"

"अच्छा, तो तुम कब जाना चाहते हो ?"

"जल्दी-से-जल्दी। शादी तो २० तारीख़ की है न ?"

"हाँ। तुम कल चले जाओ। मैं बादशाह के नाम पत्र लिख दूँगा। भाई के पत्र का उत्तर भी तुम्हें हो दे दूँगा। और तुम कह देना, कि पोप के मामले में मुझे अवश्य सफलता मिलेगी।"

"श्रीमान्! मैं यह भी कहना चाहता हूँ, कि मेरा पेरिस में रहना भी सम्भवत: आपकी उद्देश्य-प्राप्ति में सहायक होगा।"

"तुम बड़े ही रहस्य-पूर्ण व्यक्ति हो विस्काऊण्ट एक्सेम! लेकिन खैर, मैं तुम्हारी इन रहस्यमयी बातों का अभ्यस्त हो गया हूँ। अच्छा, नमस्कार!"

"मैं सुबह, गजरदम आकर आपसे पत्र-इत्यादि ले जाऊँगा। अपने साथियों को मैं यहीं छोड़ जाऊँगा। सिर्फ़ अपने दोस्त मार्टिन गेर को ले जाने की मैं अनुमति चाहता हूँ। वह मुझे बहुत प्यार करता है, और बड़ा ही वीर लड़का है। दुनियाँ में अपनी स्त्री और अपने भूत के अतिरिक्त वह किसी चीज़ से नहीं डरता।"

"यह कैसे?" ड्यूक ने हँसते हुए पूछा।

"जी, वह अपनी स्त्री से इतना डरता है, कि उससे छुटकारा पाने के लिये घर से निकल पड़ा, और मेरे साथ मिल गया। जब से वह इधर आया है, तो न-जाने उसे क्या ख़ब्त सवार हुआ है, कि अक्सर कहा करता है, कि उसकी ही सूरत बनाये हुये उसका भूत उसे मिला था। बस, इसीसे वह भड़कता है। यों आदमी बड़े काम का है। दो बार उसने मेरी जान बचाई है।"

"अच्छी बात है, इस डरपोक बहादुर को तुम अपने साथ ले जाओ। सुबह मैं तुम्हें पत्र दे दूँगा।"

जैब्री रात-भर सो न सका। अगले दिन, २५ अप्रैल को, मार्टिन गेर के साथ, काउण्ट से बिदा लेकर वह सुबह ६: बजे ही रोम के रास्ते पेरिस को रवाना हो गया।

४

२० मई का दिन था। पेरिस के राजमहल में फ्रान्स के बादशाह हेनरी द्वितीय रखैल-रानी डायना डि पोतेई के साथ खड़े थे।

दीवारों की सजावट से अटाटूट ऐश्वर्य्य टपकता था। एक-एक चीज़ में शान और सौन्दर्य्य की झलक दिखाई देती थी।

बादशाह एक बहादुर और ख़ूबसूरत आदमी था। दैनिक व्यायाम और लड़ने-भिड़ने की रुचि रखने के कारण उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट हो गया था। चेहरे का रँग उसका पक्का था, बाल काले, और दाढ़ी सीधी और सियाह। उसकी पोशाक बेहद क़ीमती थी, और टोपी पर हीरे-जवाहरात जड़े हुये थे।

डायना के तन पर गुलाबी रँग की साड़ी और महीन पोशाक थी उसका ठीक-ठीक चित्रण कठिन करना है। उसके गालों की गुलाबी आभा, और अनोखे नाज़-अन्दाज उसके अद्वितीय सौन्दर्य्य को चार चाँद लगा देते थे। उसकी उम्र का ठीक-ठीक अन्दाज़ा लगाना असम्भव है। वास्तव में वह बादशाह की ही प्रणयिनी होने के योग्य थी।

"जी," अकस्मात् वह बोली—"शादी का वक़्त आ ही पहुँचा है। आप तो पोशाक बदल ही चुके, मैं भी बदल लूँ।"

"हाँ," बादशाह ने कहा—"मुझे भी किसी से मिलना है; तब तक मैं भी निबट लूँ।"

"मिलना है ?—किससे मिलना है ?"

"अपनी पुत्री डायना से।"

डायना ने कहा—"आप इस नाम को बार-बार मेरे सामने लेते हैं। याद है, हमने यह निश्चय किया था, कि मैडम लि-कैस्ट्रो दूसरे की सन्तान बनकर रहे ?"

"तो क्या तुम उसे प्यार नहीं करतीं ?"

"करती हूँ—इसलिये कि तुम उसे चाहते हो ?"

"ओह ! मैं वास्तव में उसे चाहता हूँ; ख़ासकर इसलिये कि उसकी सूरत देखकर मुझे अपनी जवानी की याद आ जाती है, जबकि मैं तुम्हारे प्रेम में पागल रहता था।"

यह कह कर बादशाह कई मिनट तक स्तब्ध रहे। तब सहसा बोले—"क्यों डायना, भला तुमने उस मॉण्टगोमरी को भी कभी प्यार किया था ?"

"कैसा प्रश्न है !" रानी ने ग्लानिपूर्ण मुसकान के साथ कहा—"बीस साल बीत गये, मगर आप की ईर्ष्या न गई।"

"बेशक रानी, मेरी ईर्ष्या कभी नहीं जायेगी। लेकिन यह बताओ, वह भी तुम्हे प्यार करता था, या नहीं ?"

"करता भी, तो क्या था ?—मैं तो सब तरह आपकी थी। और अब तो उसे मरे बीस साल बीत चुके।"

"हाँ, मरे बीस साल बीत चुके।" बादशाह ने कुछ भारी स्वर में कहा।

"अच्छा, अब इस प्रकार की बातें इस मौके पर नहीं होनी चाहिये।....हाँ, आपने मैरी और फ्रैङ्कोई को देखा ? दोनों बड़े प्रसन्न हैं। मेरा खयाल है, गाई-परिवार में तो आज कल खुशी की बधाइयां दी जा रही होंगी।"

"और मेरे दोस्त बूढ़े मॉण्टमॉरेन्सी पर विषाद का बादल घहरा रहा है। मेरा खयाल है, शीघ्र ही उसका विषाद भीषण क्रोध में परिणत हो जायगा; क्यों कि मेरा खयाल है, पुत्री डायना उसके लड़के से विवाह करना स्वीकार न करेगी।"

"लेकिन आपने तो वचन दे दिया है ?"

"मगर डायना इस सम्बन्ध के विरुद्ध है ?"

"अट्ठारह बरस की छोकरी !—भला क्यों विरुद्ध है ?"

"वह आज मुझे बताने का उसने वादा किया है।"

अच्छा तो आप पूछ आइये; मैं तब तक कपड़े बदलूँ।

बादशाह के जाते ही, दूसरी तरफ का पर्दा हटा, और एक चोर-दर्वाजे से निकल कर बूढ़े मॉण्टमॉरेन्सी ने कमरे में प्रवेश किया। आते ही उसने सख्ती से कहा—क्यों ?—आज तो खूब बातें हुई !"

"मित्र," डायना ने कहा—"मैं तो उसे टालने की शुरू से कोशिश कर रही थी।"

"खैर—यह तो बताओ, कि तुम्हारी कन्या और मेरे लड़के के निश्चित विवाह सम्बन्ध में यह क्या नई अड़चन आ पड़ी? मैं कहे देता हूँ, कि यह विवाह होकर रहेगा। सुनती हो डायना? तुम्हें यह काम कराना होगा।"

डायना ने भयभीत कण्ठ से कहा—"बहुत अच्छा।"

डायना डि-कैस्ट्रो, जिसे हमने बचपन में देखा था, इस समय अठारह बरस की मदमाती सुन्दरी युवती है। तेरह बरस की उम्र में ही वह विधवा हो गई थी। विवाह के बाद उसने अपने पति की सूरत न देखी। पाँच साल कन्वेण्ट (कुमारियों का आश्रम) में रह-कर वह बादशाह की आज्ञा से पुनः राजमहल में आयी थी।

"हाँ," जब वह कमरे में आई, तो बादशाह ने पूछा—"अब कहो बेटी; मैं तुम्हारी बात सुनने को व्यग्र हूँ।"

"आप बड़े अच्छे हैं!"

"प्यारी बेटी, मैं एक पिता की तरह तुम्हें प्यार करता हूँ, और तुम्हारा मोह मुझे अकसर अपना राजकीय कर्तव्य भी भुला देता है।....हाँ, देखो, तुम्हारे कथनानुसार तुम्हारी आश्रम की सखी को मैंने क्वेरिटन के आश्रम की प्रधाना बना दिया है।"

"आपका धन्यवाद है।"

"लेकिन बेटी, मैं देखता हूँ, रह-रहकर तुम चिन्तित और व्यग्र हो जाती हो। इसका क्या कारण है? क्या तुम्हें कोई दुःख है?"

"पिताजी!" डायना ने उत्तर दिया—"आपके इस स्वर्गीय स्नेह के सम्मुख मुझे कैसे कोई दुःख हो सकता है? मगर

मेरी यह इच्छा है, कि मैं सदा इसी अवस्था में रहूँ, जैसी अब हूँ।"

"इसी अवस्था में रहो !—तुम जानती हो, मैंने तुम्हारा विवाह करने के लिये तुम्हें आश्रम से बुलाया है। तुम्हारे लिये योग्य वर भी तलाश कर लिया गया है। लेकिन तुम उसे पसन्द नहीं करती। ऐसा क्यों डायना ?"

"प्यारे पिताजी, मैं आपसे कुछ नहीं छिपाऊँगी। पहली बात तो यह है, कि मैंने सुना है, कि फ्रैङ्कोई का विवाह किसी दूसरी स्त्री से हो चुका है।"

"यही बात है ! तो इसका उत्तर यह है, कि उक्त विवाह गुप्त रीति से हुआ था; न उसमें मेरी सम्मति ली गई थी, न लड़के के बाप की; इसलिये वह नाजायज है। इसलिये उस स्त्री को तलाक दे देना निश्चित हुआ है; और इस तलाक के लिये पोप का आज्ञा-पत्र प्राप्त करने की चेष्टा की जा रही है। अगर पोप ने आज्ञा दे दी, तो मेरे खयाल में तुम्हें कोई सङ्कोच न होना चाहिये। सो यह कारण......"

"नहीं, पिताजी, और कारण भी है।"

"वह क्या ?"

डायना ने बादशाह की छाती में मुँह छिपाकर कहा—"वह यह, कि मैं किसी दूसरे व्यक्ति को प्यार करती हूँ।"

"दूसरे को प्यार करती हो ?—किसको ?"

"जैब्री को।"

"कौन जैब्री ?"

"मैं सारी बात आपसे कहूँगी। वह मेरा बचपन का साथी था। हम हर रोज साथ खेलते थे। वह बड़ा वीर, बड़ा सुन्दर और बड़ा बुद्धिमान् है। वह मुझे अपनी पत्नी कहा करता था। पिताजी, हँसिये नहीं; उसी समय हम दोनो के हृदय गम्भीर

प्रेम-सूत्र में आबद्ध हो गये थे। क्यूक डि-कैस्ट्रो के साथ मेरा विवाह बेशक हो गया, लेकिन मेरी समझ में यह तक न आया, कि मैं कर क्या रही हूँ। तभी से मैं अनुभव करती आ रही हूँ, कि मैंने जैब्री के साथ विश्वासघात किया।"

वह कहती रही—"पिताजी, जितने दिन मैं आश्रम में रही, उसे भुला न सकी। यहाँ आपके दरबार में भी कोई उसके जोड़ का नहीं है; इस पाजी फ़ैंक्वोई की तो उसके आगे बिसात ही क्या है!.........हाय, बेचारा जैब्री! मेरे विच्छेद पर वह न रोया, न चिल्लाया; सिर्फ़ एक पत्थर की मूरत की तरह खड़ा रह गया!"

"अच्छा, अब वह है कहाँ ?"

"अफ़सोस! जब से मैं यहाँ आई, उसे कभी नहीं देखा।"

"उसकी कोई ख़बर मिली है ?"

"कोई नहीं।"

"उसके परिवारवाले कहाँ रहते हैं ?"

"उसका परिवार ही नहीं है। वह अकेला एलोई के साथ मॉण्ट-गॉमरी में रहता था।"

"मॉण्टगॉमरी!—क्या वह मॉण्टगॉमरी-परिवार का था ?"

"जी नहीं; अगर वह मॉण्टगॉमरी-परिवार का होता, तो दुर्ग में रहता; वह तो एक ग़रीब स्त्री के साथ गाँव में रहा करता था।... लेकिन आप मॉण्टगॉमरी-नाम से इतना क्यों चौंकते हैं ? क्या वे आपके दुश्मन थे ? मैंने तो हर जगह उनकी राज-भक्ति और वीरता की प्रशंसा सुनी है!"

"ठीक है," बादशाह ने घृणापूर्वक हँसकर कहा—"उन लोगों ने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा। और भला मॉण्टगॉमरी लोग वैलुई-परिवार का बिगाड़ भी क्या सकते हैं ? हाँ तो, यह जैब्री कौन था—क्या इसका और कोई नाम भी था ?"

"मुझे नहीं मालूम। मैंने तो केवल यही सुना था, कि वह अनाथ है, और उसके माँ-बाप का नाम किसी को मालूम नहीं।"

बादशाह ने कहा—"डायना, अगर वह यहाँ मौजूद होता, और मैं उसके ख़ान्दान से परिचित हो जाता, तो उसके साथ तुम्हारा विवाह करने में मुझे कोई आपत्ति न होती। अलबत्ता उसके जन्म के सम्बन्ध में........."

"मेरे जन्म में भी तो लोग टीका-टिप्पणी करते हैं।"

"तुम्हारे सिर पर मेरा साया है। तुम्हारे प्रतापी वंश का जीता-जागता सुबूत मैं हूँ; और इस जैब्री का............खैर, इस समय तो यह प्रश्न उठता ही नहीं—क्योंकि छः वर्ष उसका कोई पता नहीं। सम्भव है, वह किसी और के प्रेम में पड़ गया हो।"

"पिताजी, जैब्री ऐसा आदमी नहीं था।"

"बेटी, तुम अभी नादान हो; सारी दुनियां को अपने जैसा समझती हो। खैर, इस समय प्रश्न दूसरा है। मैं सारी परिस्थिति तुम्हारे सामने रक्खे देता हूँ। एक तरफ तो तुम्हारी लड़कपन की मुहब्बत है; और वह भी ऐसे व्यक्ति से; जिसका न कोई नाम-निशान है, और जो छः वर्ष से लापता है। दूसरी तरफ मेरी परेशानी है। मगर तुमने इस विवाह से इनकार कर दिया, तो मॉण्टमॉरेन्सी मुझसे बिगड़ कर अलग हो जायगा। तब फ्रान्स का शासक मैं नहीं रहूँगा; देश की बागडोर गाई-परिवार के हाथ में आ जायगी। शासन के सभी उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर इस परिवार के लोग नियुक्त हैं। अगर मॉण्टमॉरेन्सी का प्रभाव मैंने नहीं बढ़ाया, तो मुझपर भीषण विपत्ति आ सकती है। मेरी प्यारी बेटी, मैं बादशाह की हैसियत से नहीं, पिता की हैसियत से विनय करता हूँ, कि तुम मेरी परिस्थिति पर विचार करो, और यह विवाह स्वीकार कर लो!'

डायना ने गम्भीरतापूर्ण स्वर में कहा—"महामना, आपकी आज्ञा

की उपेक्षा आप की विनय सहस्र-गुनी शक्ति रखती है; मैं आपकी स्वार्थ-रक्षा के लिए अपना बलिदान करने को तैयार हूँ। परन्तु मेरी एक शर्त है ?

"वह क्या ?"

"विवाह तीन महीने बाद होगा। इस बीच में मैं एलोई के पास आदमी भेज कर जैब्री का हाल-चाल मगाऊँगी। अगर उसका देहान्त हो गया होगा, तो मुझे मालूम हो जायगा; अगर वह जीता होगा, तो उसे बुलाकर मैं अपना वचन वापस ले लूँगी।"

"सहर्ष स्वीकार!" बादशाह ने कहा—"उसकी खोज करने में मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। ठीक तीन महीने बाद फ्रैङ्कोइ के साथ तुम्हारा विवाह कर दिया जायगा—चाहे तुम्हारा यह युवक प्रेमी जीवित हो, या नहीं।"

डायना ने विषाद-भरे स्वर में आप-ही-आप कहा—"अब मैं क्या करूँ ?—उसके जीवन की कामना करूँ, या मौत की ?"

६

उसी दिन तीसरे पहर काउन्ट मॉण्टमॉरेन्सी डायना पोतेई के निजी कमरे में अपने एक जासूस से बातें कर रहा था। इस जासूस का कद ठिगना, रँग पक्का, और बाल और नेत्र काले सियाह थे। उसकी सूरत जैब्री के स्वामिभक्त सखा मार्टिन गेर से हू-ब-हू मिलती थी। जान पड़ता था, जैसे दोनों जोलड़े भाई हैं।

जासूस ने एक मुहर बन्द लिफाफा काउण्ट के हाथ में दिया, और कहा—मैंने रात के अँधेरे में पत्र-वाहक का काम-तमाम कर दिया, और यह लिफाफा हस्तगत किया है।"

"शाबाश! ऑर्नल्ड, ख़ूब किया!—अच्छा, इस तरह खोलो कि मोहर टूटने न पाये।"

ऑर्नल्ड ने जेब से एक विचित्र बनावट की कैंची निकालकर धीरे से मोहर के चारों तरफ फेरी, और लिफाफा खोलकर पत्र

निकाल लिया। सब से पहले उसने प्रेषक का नाम पढ़कर सुनाया—'मोशिये कैराफ़,' और कहा—"देखा आपने ?—मैंने आपको ठीक चीज़ लाकर दी है। देखिये, इस पत्र का पानेवाला है—कॉर्डिनल डि-गाई !"

"अच्छा तो, फ़ौरन् इसे पढ़कर सुनाओ।"

ऑर्नल्ड ने पढ़ना शुरू किया—

"महोदय, तीन आवश्यक सूचनायें देनी हैं। पहली, तो यह, कि पोप-महोदय तलाक़ के मामले में आपके कथनानुसार ही कार्य करेंगे, और मॉण्टमॉरेन्सी के पुत्र को निराश लौटा देंगे।"

"दूसरी, आपके भाई साहब ने कैम्पली पर क़ब्ज़ा करने के बाद सिविटला पर घेरा डाल रक्खा है, और उन्होंने हमें सन्देश भेजा है, कि हम अपने कथनानुसार सेना और रसद देकर उनकी सहायता करें। हमें इसके उत्तर में यह कहना है, कि यह सहायता इसी शर्त पर दी जा सकती है, कि आप उन्हें फ्लैण्डर्स की लड़ाई के लिये वापस न बुलवायें; क्योंकि आप फ्रान्स के सेनापति हैं, और बादशाह की आज्ञा पर शायद आपको ऐसा करना पड़े। अगर हमें यह विश्वास हो जाय, कि आपके भाई बराबर यहीं डटे रहेंगे, तो पोप-महोदय उनकी पूरी मदद करने को तैयार हैं। तीसरे, मैं आपको विस्काउण्ट एक्सेम-नामक एक बहादुर सेना-नायक के पेरिस पहुँचने की ख़बर देता हूँ। आपके भाई साहब ने विजित पताकाएँ देकर इसे बादशाह की सेवा में भेजा है। मेरा विश्वास है, कि वह आपकी उद्देश्य-प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।"

पत्र सुनकर मॉण्टमॉरेन्सी ने दाँत पीसते हुए कहा—"मैं इस आगन्तुक बहादुर की अच्छी तरह ख़बर लूँगा। क्यों ऑर्नल्ड, पत्र समाप्त हो गया ?"

"जी हाँ, बस, नीचे प्रेषक का हस्ताक्षर और तारीख है।"

"अच्छा, सुनो ; तुम्हें अब बहुत कुछ करना पड़ेगा।"

"कोई चिन्ता नहीं ; रुपये के ज़ोर पर सब हो सकता है।"

"यह लो, सौ ड्यूकट* हैं। तुमसे कोई काम लेने से पहले आदमी को थैली-भर रुपये पास रखने चाहिये!"

"मगर मैं तो अधिकतर रुपया आप ही के काम में ख़र्च करता हूँ।"

"अजी नहीं, तुम बड़े व्यसनी आदमी हो। मौज-मजे में तुम बड़ा रुपया उड़ा देते हो।"

"अफसोस! आपने मुझे अभी तक नहीं समझा! मेरी यह सब से बड़ी अभिलाषा है, कि मैं किसी गाँव में अपने बीबी-बच्चों के साथ सुख और शान्ति का जीवन बिताऊँ।"

"भावना तो बुरी नहीं है। अगर मेरा कहा मानो, तो थोड़ा-थोड़ा रुपया बचाते जाओ, और अपनी आदतें सुधारो। फिर शादी करके अपनी अभिलाषा पूरी करो।''''हाँ, इस पत्र को फिर उसी तरह बन्द कर दो, और वेश बदलकर कार्डिनल के पास जाओ। कहना''''''''"

"बस, बस, वह सब-कुछ मैं कर लूँगा।"

"उसी समय एक नौकर ने कमरे में आकर कहा—"श्रीमान् मुझे क्षमा करें—एक आदमी मोशिये डि-गाई के पास से आया है, और बादशाह सलामत से मिलना चाहता है। मैंने पहले आपको खबर देना ठीक समझा। नाम उसका विस्काँउण्ट एक्सेम है।"

"तुमने बड़ी बुद्धिमानी की, गिलम,—जाओ, उसे ले आओ और तुम ऑर्नल्ड, तब तक इस चोर-दर्वाजे में छिप जाओ। इस आदमी को अच्छी तरह पहचान लेना, मैं इसी लिये उसे यहाँ बुला रहा हूँ।"

---

*फ्रान्स का एक प्राचीन सिक्का ; लगभग सात रुपये के मूल्य का।

"जी, मैंने जरूर उसे पहले भी देख लिया होगा। लेकिन फिर भी, एक बार शक रफा कर लेना बुरा नहीं।"

जासूस चोर-दर्वाजे में गायब हुआ, और जैब्री ने प्रवेश किया। उसने आते ही झुककर कहा—"क्या मैं जान सकता हूँ, मैं किन के सामने उपस्थित हूँ ?"

"मेरा नाम कॉन्सटेबल डि-मॉण्टमारेन्सी है। कहिये, आप क्या चाहते हैं ?"

"क्षमा कीजिये; मैं बादशाह से भेंट करने आया हूँ।"

"बादशाह-सलामत राज-महल में उपस्थित नहीं हैं; उनकी अनुपस्थिति में........"

जैब्री ने बात काटकर कहा—"तो मुझे उन्हीं के पास भिजवा दीजिये; या कहें, तो मैं उनकी प्रतीक्षा करता रहूँ।"

"बादशाह-सलामत तुर्नेई के खेलों में शरीक होने गये हैं, और सन्ध्या से पहले नहीं लौटेंगे। शायद तुम्हें पता नहीं, आज राज-कुमार का विवाह हुआ है ?"

"जी, मैं सुन चुका हूँ।.......क्या मैं सेनापति लॉरें से भेंट कर सकता हूँ ? मैं वास्तव में उन्हीं के पास आया था—पता नहीं, आपके पास मुझे क्यों भेज दिया गया ?"

"सेनापति लॉरें," मॉण्टमॉरेन्सी ने कहा—"शान्ति-प्रिय व्यक्ति होने के कारण बनावटी लड़ाई पसन्द करते हैं; इसलिये वे तुर्नेई गये हैं। मैं युद्ध-प्रिय व्यक्ति हूँ, और असली लड़ाई में ही मेरा मन लगता है, इसलिये मैं यहाँ ठहर गया हूँ।"

"तो मैं उनसे मिलने वहीं जाऊँगा।"

"तुम इटली से आ रहे हो ?"

"जी हाँ।"

"शायद ड्यूक डि-गाईज के पास से ? क्या कर रहे हैं वे ?"

"महोदय, मुझे बादशाह तक पहुँचने की जल्दी है; आशा है, आप क्षमा करेंगे ।"

उसके जाते ही मॉण्टमॉरेन्सी ने क्रोध में भर कर हाथ फेंकते हुये कहना शुरू किया—"पाजी ! उसे अपनी गुस्ताखी का मजा चखना पड़ेगा ! ऑर्नल्ड !····अरे ! कहाँ गया ? अच्छा, वह भी चल दिया ? खैर ।"

उधर जैब्री महल के बाहर निकला । अहाते में मार्टिन गेर खड़ा हुआ था । जैब्री को देखते ही उसने काँपते हुये कहा—"मोशिये, मैंने अभी-अभी उसे फिर देखा ।"

"किसे ?"

"उसी—शैतान को; और किसे ? वही मेरी स्त्री का भूत—मेरी सूरत का पिशाच ।"

"फिर वही खब्त ! कहीं सपना तो नहीं देखते हो ?"

"जी नहीं, सपना नहीं; वह यहाँ आया, और हँस कर कहने लगा—'हम अभी तक विस्काउण्ड एक्सेम की सेवा में हैं ।' ("मोशिये, जरा 'हम'-शब्द पर तो ध्यान दीजिये") मोशिये डि-गाई के पास से हम विजित पताकाएँ लाये हैं । तब आप की आज्ञा सुनकर वह यह कहता-कहता जाने कहाँ गायब हो गया, कि 'मार्टिन गेर, हम फिर मिलेंगे ।' "

"दोस्त, हम दूर की मंजिल मारे आ रहे हैं; इससे तुम्हारा दिमाग फिर गया मालूम होता है । जाओ, पताकाओं को अपने साथ लेकर सेण्ट कैथेराइन बाजार के नुक्कड़ पर मेरी प्रतीक्षा करो । समझे ?—जल्दी करो ।"

७

उस जमाने में तलवारबाजी के खेल हर-रोज की चीज थे । बादशाह हेनरी द्वितीय भी राज्य के इन खेलों में अक्सर शरीक होते थे । इन खेलों के कई प्रकार के रूप थे, जो विजयी होता था,

उसे बादशाह और रानी की तरफ से भिन्न-भिन्न प्रकार के पारितोषक मिलते थे।

उस दिन, राजकुमार के विवाहोपलक्ष्य में ऐसे ही खेल की योजना की गई थी। राज्य-भर के प्रसिद्ध तलवारबाज इकट्ठे हुए थे। बहुत देर तक अनेक प्रकार के जौहर दिखाये जाते रहे। अन्त में जिरह-बख्तर लगाकर बादशाह भी मैदान में जा कूदा, और अपने साथ नेजाबाजी करने के लिये बहादुरों को ललकारा। नेजाबाजी में कोई बादशाह की शानी नहीं रखता था। फिर भी एक-एक करके कई बहादुर खेत में आये, और हार मान कर पीछे हट गये। नेजाबाजी का पुरस्कार रानी ने रक्खा था; छः बजे तक का समय था। बादशाह एक-एक करके सबको जीतने के बाद दर्शकों की तरफ मुँह फेर कर चिल्लाया—"और कोई बहादुर आता है ?"

कोई नहीं आया। बादशाह की नेजाबाजी से सब कोई डरते थे। यह देखकर बादशाह को क्षोभ हुआ। धीरे-धीरे उसका धैर्य लोप होने लगा। उसने फिर चिल्लाकर कहा—"कोई नहीं आता ? मैं घोषणा करता हूँ, कि सबको आगे आने की स्वतन्त्रता है।—कोई डरे-हिचके नहीं।"

उसी समय एक सशस्त्र घुड़सवार ने मैदान में प्रवेश किया। उसके हाथ में तना हुआ नेजा था। हेनरी ने यह भी नहीं देखा, कि आगन्तुक कौन है, और आगे बढ़ गया। दोनों ने दोनों पर वार किया, और दोनों के नेजे टूट गये। परन्तु हेनरी घोड़े पर जोर से लड़खड़ा पड़ा; उसका प्रतिद्वन्द्वी निश्चल भाव से शान्त खड़ा रहा। सहसा तभी छः का घण्टा बजा। हेनरी की हार हुई। बादशाह आनन्दित होकर घोड़े से कूद पड़ा, और अपने प्रतिद्वन्द्वी का हाथ थाम कर रानी के पास पहुँचा। परन्तु यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, कि इस व्यक्ति का चेहरा उसने आज से पहले कभी नहीं देखा था। हृष्ट-पुष्ट नवयुवक था। रानी ने पारितोषक-स्वरूप

एक कीमती माला उसके गले में डालते हुये उसकी प्रशन्सा की। युवक ने घुटने टेक कर रानी के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया, और मैडम डि कैस्ट्रो के सम्मुख जाकर वह माला उसे भेंट कर दी। तभी दोनों के मुँह से 'जैब्री' और 'डायना' के शब्द अस्पष्ट रूप में निकल गये। पर किसी ने उन्हें सुना नहीं, और इसलिये किसी को कुछ सन्देह न हुआ।

बादशाह ने सम्मानपूर्ण स्वर में उससे कहा—"महाशय, मुझे याद नहीं पड़ता, कि मैंने आज से पहले आप को कहीं देखा हो। परन्तु आज आपने मुझे छका कर जिस बहादुरी का परिचय दिया है, उससे प्रसन्न होकर मैं आपका विशेष परिचय जानने का उत्सुक हूँ।"

"श्रीमान् ! मुझे भी आप के दर्शनों का सौभाग्य पहले पहल ही प्राप्त हुआ है। मैं अब तक फौज में था, और अभी-अभी इटली से चला आ रहा हूँ। नाम मेरा विस्काऊण्ट एक्सेम है।"—कहते हुए उसने पास ही खड़े दो आदमियों को संकेत से पास बुलाया, और उनके हाथ से विजित पताकायें लेकर बादशाह के चरणों पर रखते हुए बोला—"महामना, ये पताकाएँ, आप की सेना ने इटली के विभिन्न स्थानों से जीती हैं, और मोसिये ड्यूक डि-गाईं ने आप के पास भिजवाई हैं। इसके अतिरिक्त यह पत्र भी आप के लिये दिये हैं।"

बादशाह ने पत्र ले लिये, और पढ़कर कहा—"धन्यवाद, मौसिये एक्सेम, इन पत्रों से मैंने आप का उचित परिचय पा लिया तो इन पताकाओं में से चार खुद आपने जीती हैं ? भ्राता गाईं ने लिखा है, कि आप उनके सर्वोत्कृष्ट अधिकानायकों में से हैं। अच्छा, अब कहिये, मैं आप के किसी काम आ सकता हूँ ?"

"श्रीमान् ! आपने मुझ पर अत्यन्त कृपा दिखाई है। मैं इससे

गौरवान्वित हुआ। मुझे इससे अधिक और किसी वस्तु कीआकांक्षा नहीं है।"

"आप सेना-नायक रहे हैं। अगर आपको मैं अपनी पुलिस का नायक बना दूँ, तो ठीक होगा ? मैं आपकी योग्यता और वीरता का बेहद कायल हूँ।"

"श्रीमान् !......"

"स्वीकार ? अच्छी बात है। तो अब हम महल जाते हैं। वहीं चलकर आपसे युद्ध की और खबरें सुनूँगा।"

जैब्री झुक गया। बादशाह ने रवानगी का हुक्म दिया, और दर्शकों की भीड़ हर्ष-ध्वनि के साथ तितर-बितर होने लगी।

डायना क्षण-भर के लिये जैब्री के निकट आ गई, और धीमे स्वर में बोली—"कल—रानी के आमोद-गृह में !" तब अपने दिलवर के दिल में मधुर आशाओं का समूह छोड़कर आगे बढ़ गई !

८

रानी के आमोद-गृह में अगले दिन शाम को जाना था। जैब्री को सूचना मिली, कि पुलिस-नायक की हैसियत से उसे वहाँ मौजूद रहना पड़ेगा। जैब्री को बड़ा खेद था, कि प्यारी डायना की सूरत पूरे चौबीस घण्टे बाद दिखाई देगी ! अब उनका सबसे पहला काम था—मार्टिन गेर के साथ जाकर रहने-सहने के लिये उचित स्थान का प्रबन्ध करना। शीघ्र ही उसने एक सुन्दर स्थान ले लिया, और रात को सोया, तो आज की नींद में उसे स्वर्गीय सुख प्राप्त हुआ। वह इतनी जल्दी बहुत ऊँचे पद पर पहुँच गया, जहाँ से अपना उद्देश्य प्राप्त करने में उसे बहुत ही आसानी हो गई। अपने शत्रुओं का पता लगाने और उनसे बदला लेने की सुविधायें भी अब उसे अधिक सरलता से मिलेंगी।

अब उसे एलोई को बुलवाना होगा।

अगले दिन सुबह ही जैब्री की ड्यूटी थी—जेल में जाकर कैदियों

का निरीक्षण करना। महीने में एक बार उसे यह ड्यूटी पूरी करनी होती थी। जेल के गवर्नर ने उसे कैदियों की सूची दी, जो मर गये थे, या दूसरे जेलों में बदल दिये गये थे, अथवा छूट गये थे, उनका निर्देश किया, और तब जैब्री शेष कैदियों का निरीक्षण करने चला।

जब सब कैदियों को देख चुका, तो गवर्नर ने एक दूसरा पृष्ठ खोला। उस पर लिखा था—"नं० २१, गुप्त कैदी। अगर गवर्नर या पुलीस-कमान के आने पर यह व्यक्ति बोलने की चेष्टा करे, तो उसे जमींदोज कैदखाने में डाल दिया जाय।"

"यह भीषण क़ैदी कौन है ?" जैब्री ने जेल के गवर्नर सेलबासन से पूछा।

"मुझे पता नहीं," उसने जवाब दिया—"मैंने अपने से पहले जेल-अधिकारी से इसका चार्ज लिया था, और उसने उससे पहले से आप देखते हैं, इसकी प्रवेश-तिथि का खाना खाली है। शायद बादशाह फ्रान्सिस प्रथम के समय में इसे कैद किया गया हो। मैंने सुना है कि इसने दो बार बोलने की कोशिश की है, और पहली बार तो उसकी कोठरी पर सीखचेदार किवाड़ जड़ दिया गया, तथा दूसरी बार तहखाने की काल-कोठरी में बन्द कर दिया गया।

"अब सिर्फ सबसे नीचे का तहखाना बाकी है। उसे तो साक्षात् मृत्यु ही समझिये! अबकी बार बोलने पर उसे इसी तहखाने में बन्द कर दिया जायगा। आठों पहर उसके हाथ-पैर हथकड़ी-बेड़ियों से जकड़े रहते हैं, फिर भी उसे बच निकलने का मौका न देने के लिये एक सिपाही पांच-पांच मिनट बाद उसकी कोठरी का निरीक्षण कर आता है।"

"लेकिन अगर वह इस सिपाही से ही बात-चीत करना शुरू कर दे ?"

"जी, यह सिपाही बज्र-बहरा और गूंगा है। उसका जन्म कैद-खाने में ही हुआ था, और तब से यहीं रहता है।"

जैक्री के रोंगटे खड़े हो गये। संसार से बिल्कुल पृथक् कर दिये जाने पर भी जो आदमी जीवित है, और जिसकी विचार-शक्ति नष्ट नहीं हुई है—उसे देखने के लिये उसका मन आकस्मिक रूप से उद्विग्न हो उठा। मन ही मन उसने सोचा—"यह अभागा व्यक्ति किसी आधार पर जीवित है, और क्यों नहीं अब तक कोठरी की दीवार से सिर टकराकर मर गया ? वह क्या भाव है, जो अब तक जीवन के साथ उसे संयुक्त रक्खे हुए है ?—आशा, या प्रतिहिंसा ?"

जब वह सीढ़ियों से उतर रहा था, तो उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। कई अँधेरे और नम दार जीने पार करके गवर्नर आखिर एक लोहे के दर्वाजे के सामने जाकर खड़ा हो गया, और बोला—"इसमें है।" कहकर उसने दर्वाजा खोल दिया। जैक्री ने एक रोमान्चकारी दृश्य देखा—जैसे नींद में कोई दुःस्वप्न देख रहा हो। कोठरी में चारो तरफ पत्थर जड़े हुये थे, और हर जगह कलौंस, काई और नमी थी; क्योंकि स्थान 'सीन' (नदी) के तल से नीचा था। नदी के चढ़ाव पर होने से कोठरी के आधे भाग में पानी भर गया था। दीवारों पर भीषण आकार के कीड़े-मकोड़े रेंग रहे थे। और छत से पानी चूने के अतिरिक्त सब तरफ मौत का-सा सन्नाटा छाया हुआ था।

इस जगह दो व्यक्तियों का निवास था; एक रक्षक था, दूसरा रक्षित। दोनों ही दुनियाँ से बेख़बर थे, और दोनों ही में जीवन की ज्योति टिमटिमा-सी रही थी। सिपाही, क़रीब-क़रीब जानवर, पर राक्षस की तरह विशालकाय, दीवार से लगा हुआ, भावहीन आँखों से क़ैदी की तरफ़ ताक रहा था। क़ैदी, कोठरी के एक कोने में फूस के बिछौने पर पड़ा हुआ था। उसके हाथ-पैरों में लोहे की जंजीर

बँधी हुई थी, जिसका दूसरा सिरा दीवार के साथ लगा था। क़ैदी सफ़ेद-झक दाढ़ी-मूँछवाला वृद्ध पुरुष था।

जब इन दोनों ने कोठरी में प्रवेश किया, तो क़ैदी सो रहा था; ऐसा जान पड़ता था, मानो कोई अस्थि-पंजर पड़ा है। पर आज्ञा पाते ही वह उठकर सीधा बैठ गया, और जैब्री की तरफ़ ताकने लगा। उसे बोलने की मनाई थी, पर उसकी मार्मिक चितवन ने जिह्वा से अधिक काम किया। गवर्नर ने घूम-घूमकर कोठरी के प्रत्येक कोने का निरीक्षण किया, पर जैब्री अपनी जगह पर स्थिर खड़ा रहा। वह बराबर क़ैदी की जलती हुई आँखों को ताकता रहा, और उसका हृदय क़ैदी के प्रति प्रबल दया के भावों से भर गया। क़ैदी ने एक बार कुछ बोलने का प्रयत्न किया, पर गवर्नर ने पलटकर कह दिया, कि ज़बान खोलते ही उसकी क्या दुर्दशा होगी। इस पर उसने एक कड़वी मुसकान के साथ आँखें बन्द कर लीं, और अपनी पाषाण-शय्या पर लुढ़क गया।

"उफ़! चलिये, चलें," जैब्री ने व्यग्र होकर कहा—"भयानक!"

दोनों वापस खुली हवा में आये। पर जैब्री तब तक इस क़ैदी की याद न भुला सका, जब तक उसकी दिलरुबा उसकी आँखों-आगे आई।

९

हफ्ते में कम-से-कम तीन बार बादशाह और राजदरबार के समस्त अमीर-उमरा, सपत्नीक, रानी के आमोद-गृह में एकत्रित हुआ करते थे। इस जगह सब को सब तरह की बात-चीत करने की स्वतन्त्रता थी। इस बात-चीत में अकसर अनेक व्यक्तिगत और विचित्र बातें प्रकट हो जाती थीं। अनेक बार, इस मौक़े पर नाटक और नृत्य भी हुआ करते थे।

ऐसे ही एक अवसर पर जैब्री को उपस्थित रहना था। डायना को

देखकर और उस पर नज़र पड़ते ही उसकी तबियत बाग़-बाग़ हो गई। अब तक वह कार्डिनल के पत्र की बात भूले हुए था—पर अब अकस्मात् उसे याद आ गई। क्या डायना इस विवाह को स्वीकार कर लेगी ? क्या इस मॉण्टमॉरेन्सी के लड़के से उसे प्रेम हो सकता है ?

मॉर्टिन गेर ने उसे बताया था, कि आम तौर पर हरेक आदमी का खयाल है, कि वह उसे प्यार नहीं करता। इस वफादार नौकर ने अपने मालिक की शान बढ़ाने के लिए झटपट एक खाकी रँग को कीमती पोशाक सिलवा ली थी और उसी को पहन कर आमोद-ग्रह में उपस्थित हुआ था। जिस दर्जी के यहाँ उसने पोशाक तैयार कराई थी, उसे दाम देकर जब आया, तो आधा ही घण्टे बाद उसकी सूरत का एक व्यक्ति दूसरी पोशाक में वहाँ आ पहुँचा। दर्जी अपने गाहक को इतनी जल्दी लौटता देख कर आश्चर्य्य में पड़ गया, पर उसने कहा कि शाम हो जाने के कारण उसने भारी कपड़े पहन लिये हैं, और वह पोशाक उसे इतनी पसन्द आई है, कि ठीक वैसा ही एक जोड़ा वह तुरन्त तैयार कराना चाहता है।

दर्जी ने यह कहा भी, कि दो जोड़े पोशाक में थोड़ा बहुत परिवर्तन जरूर होना चाहिये, लेकिन उसने एक न मानी, और उससे वादा ले लिया, कि पहली पोशाक से इसमें बाल बराबर फर्क भी पड़ने न देगा।

जैब्री ने आमोद-ग्रह में प्रवेश करते ही डायना को देखा। वह रानी-बहू (मैरी स्टुअर्ट) के पास बैठी हुई थी। सहसा उसकी ओर आकृष्ट हो जाना कुछ अनुचित होता, इसलिये उसने उचित समय की प्रतीक्षा की। थोड़ी देर बाद ही बादशाह की आज्ञानुसार एक छोटा-सा नाटक खेलना स्थिर हुआ। रानी-बहू (मैरी स्टुअर्ट) ने भी इसमें योग दिया, और डायना अकेली बैठी रह गई। जैब्री भी

इस नाटक में शरीक नहीं हुआ, और वह अवसर पाकर डायना के पास की सीट पर बैठ गया।

अब प्रेमी-युगल को वार्त्तालाप करने का अवसर मिल गया। दोनों के मुँह से 'जैब्री!' और 'डायना' का सम्बोधन हुआ, तब जैब्री ने कहा—"तो क्या फ्रैङ्कोई डि-मॉण्टमॉरेन्सी से विवाह करने का तुमने इरादा कर लिया है?"

डायना ने उत्तर दिया—"बादशाह की यही इच्छा है।"

"और तुम्हारी डायना?"

"मोशिये डि-एक्सेम," डायना ने बनावटी सख्ती से कहा—"मेरा नाम मैडम डि-कैस्ट्रो है।"

"लेकिन अब तो तुम विधवा हो—स्वतन्त्र हो।"

"स्वतन्त्र हूँ—हाय!"

"क्यों, डायना, क्या तुम्हें बहुत दुःख है? क्या हमारी बचपन की मोहब्बत का निशान तुम्हारे दिल पर बाकी नहीं है? डरो मत, हमारी बात चीत कोई नहीं सुनता—सब अपनी-अपनी चुहल में मगन हैं। डायना, मेरी तरफ देखकर एक बार हँस तो दो, और कह दो, कि तुम मुझे प्यार करती हो।"

"क्यों—भला मैं ऐसा क्यों कहूँ?" उस छल-छन्दी छोकरी ने कहा।

"सुनो डायना! पिछले छः साल में, जबकि मैं तुमसे जुदा रहा, मैं सदा तुम्हें याद करता रहा। उस दिन की घटना के एक महीने बाद, जब मैं पेरिस पहुँचा, तो मुझे मालूम हुआ, कि तुम बादशाह की कन्या हो। लेकिन इससे मुझको निराशा नहीं हुई। मुझे तो निराशा हुई, तुम्हारे मैडम डि-कैस्ट्रो नाम से। फिर भी न-जाने किस अज्ञात प्रेरणा ने मुझे नाम पैदा करने में संलग्न रक्खा। न-जाने किस कारण से मैं तुम्हारी आशा त्याग न सका। मैं ड्यूक-डि-गाईज के पास गया, और उनके साथ युद्ध करके बहुत

ख्याति प्राप्त की। युद्ध-भूमि में ही एक दिन तुम्हारे पति का मृत्यु समाचार मुझे मिला। युद्ध से मैं किस प्रकार जान हथेली पर रखकर लड़ा, इसका पता डि-गाई से लग सकता है। मैंने सुना, तुम आश्रम में चली गई हो, और मैं ड्यूक के साथ इटली की तरफ चला गया। सिविटला में कार्डिनल लॉरें का एक पत्र उनके भाई डि-गाई-महोदय को मिला था। उसी से मुझे तुम्हारे विवाह का हाल मालूम हुआ। तब मैं ड्यूक से आज्ञा लेकर फ्रान्स लौट आया। यहाँ आने से मेरा उद्देश्य यह जानना था, कि तुम इस विवाह से सन्तुष्ट हो, या नहीं।"

"जैब्री," डायना ने मृदु-स्वर में कहा—"मेरा उत्तर सुनो। जब मैं यहाँ पहुँची, तो मेरी उम्र कुल बारह वर्ष की थी। राज-भवन की चकाचौंध में कुछ दिन रहने पर ही मेरी आत्मा व्याकुल हो उठी, और मुझे मॉण्टगॉमरी के जङ्गलों की हुड़क सताने लगी। रात होने पर मैं रोज सोने की चेष्टा करती, परन्तु नींद आने का नाम न लेती। मेरे पिता बादशाह-सलामत मुझ पर अनन्त कृपा रखते थे, और मैं भी शिष्टाचार और मनुष्यत्व के नाम पर उनका आदर करती थी, पर आठों पहर मुझे अपने गत स्वच्छन्द जीवन की स्मृति कष्ट देती रहती। एलोई की याद सदा मुझे सताती रहती। बादशाह से मैं रोज नहीं मिलती थी, और रानी सदा मेरी उपेक्षा किया करती थी। जैब्री, मैं तो प्रेम की भूखी थी।—इसीलिये मेरे कुछ दिन बड़े कष्ट में कटे।"

"ओफ् डायना....!" जैब्री बोल उठा।

"इस प्रकार," वह कहती रही—"उधर तुम लड़ाई लड़ रहे थे, इधर मैं वियोग की घड़ियाँ गिन रही थी। दुनिया का यही नियम है। आदमी काम करता है, औरत राह देखती है; और काम करने की अपेक्षा राह देखना बहुत कठिन है। जब ड्यूक डि-कैस्ट्रो लड़ाई में काम आये, तो मेरे पिता ने मुझे आश्रम में भेज दिया।

आश्रम का वातावरण राज-महल के कोलाहल और षड्यन्त्रों की अपेक्षा मुझे अधिक पसन्द आया। इसलिये मैंने बादशाह से वहाँ रहने की स्थायी अनुमति ले ली।

"पाँच वर्ष वहाँ रहते-रहते बीत गये। मुझे इतने समय में कोई दुःख न रहा। हाँ, मेरे मेहरबान एन्करों का देहान्त ज़रूर बड़ा कष्टदायक था। आख़िर, अभी हाल में, बादशाह ने मुझे वहाँ से बुला लिया, और कहा कि वे मेरा विवाह मॉण्टमॉरेन्सी के पुत्र से करना चाहते हैं। मैंने इस प्रस्ताव का प्रतिवाद किया। लेकिन मेरे पिता ने मुझसे विनय की, कि यह विवाह उनकी स्वार्थ-सिद्धि के लिये आवश्यक है। तुम्हारा ज़िक्र आने पर उन्होंने मुझसे कहा, कि तुम मुझे भूल गये होगे। तुम्हारा पता कहीं था नहीं। अतएव कल उन्होंने मुझ पर यहाँ तक ज़ोर डाला, कि आख़िर मैंने उनकी बात मानने का वादा कर लिया। हाँ, मैंने तुम्हारा पता लगाने के लिये उनसे तीन महीने की मोहलत माँग ली है।"

"तो तुमने वादा कर लिया?" जैब्री ने ज़र्द होकर पूछा।

"हाँ, लेकिन तुम तो थे नहीं; और न ही मुझे यह पता था, कि तुम ऐन उसी दिन आ पहुँचोगे। हाय! अब मुझे अनुभव हो रहा है, कि मेरा यह वादा कौड़ी काम का नहीं था, और मैं तुम्हें प्यार करना नहीं छोड़ सकती।"

"ओह! डायना, तुम तो साक्षात् देवी हो!"

"लेकिन जैब्री, अब, जबकि भाग्य ने हम दोनों को मिला दिया है, हमें उन बाधाओं पर विचार करना चाहिये, जिनके विरुद्ध हमें प्रयत्न करना है। बादशाह उच्च परिवार में मेरा विवाह करना चाहते हैं......"

"तुम इस विषय में निश्चिन्त रहो। मेरा सम्बन्ध जिस ख़ान्दान से है, वह बहुत ही उच्च और प्रतिष्ठित है। हमारे घराने का सम्बन्ध बादशाही ख़ान्दान से अनेक बार हो चुका है।"

"ओहो ! यह तो बड़े आनन्द का समाचार है। पर मुझे एक्सेम परिवार का प्राचीन परिचय मालूम नहीं है। यदि तुम्हारा सम्बन्ध मॉण्टगॉमरी-परिवार से नहीं है........"

"क्यों नहीं ?"

"इस घराने के किसी व्यक्ति ने कोई भूल की है; क्योंकि बादशाह इस नाम से ही घृणा करते हैं।"

"अच्छा !" जेबी ने डूबते हुए हृदय से कहा—"मगर यह तो बताओ, इस घराने ने बादशाह का कोई अपराध किया है, या बादशाह ने ही इस घराने के किसी व्यक्ति से दुर्व्यवहार किया ?"

"मेरे पिता किसी से दुर्व्यवहार नहीं कर सकते।"

"तुम तो ऐसा समझती हो; पर उनके दुश्मन भी ऐसा समझें, तब न ?"

"हाँ, दुश्मनों के साथ तो वे बड़ी कड़ाई से पेश आते हैं। पर हमें इस झगड़े से क्या मतलब ?—मॉण्टगॉमरी हमारे क्या लगते हैं ?"

"क्यों—अगर मैं इसी घराने से सम्बन्ध रखता होऊँ ?"

"छी: !—ऐसी बात मत बोलो।"

"लेकिन अगर सचमुच होऊँ ?"

"अगर ऐसा हो, और तुम्हारे और बादशाह के बीच मुझे एक तरफ निर्णय देना पड़े, तो मैं कष्ट-प्राप्त पक्ष की शरण में जाऊँगी, चाहे वह कोई हो—और मैं तुमसे या अपने पिता से एक-दूसरे को क्षमा कर देने की प्रार्थना करूँगी।"

"और तुम्हारी आवाज में वह जोर है, कि हम लोग क्षमा का आदान-प्रदान कर लेंगे। हाँ, अगर किसी ने किसी पक्ष का खून बहाया है, तो खून ही उसका बदला दे सकता है।"

"उफ् ! तुम्हारी बातों से तो मुझे डर लगता है ! लेकिन तुम शायद सिर्फ मेरी परीक्षा ले रहे हो। क्यों ?"

"हाँ, और कोई बात नहीं है।"

"तो तुम्हारे और बादशाह के बीच घृणा के भाव नहीं हैं ?"

"मेरा विश्वास है—नहीं। डायना, तुम्हें दुखी करने में मुझे तुमसे ज्यादे दुःख होगा।"

"तो जैब्री, मैं पिता जी से कहकर इस शादी को हर्गिज न होने दूँगी। बादशाह के हाथ में अपरिमित शक्तियाँ हैं, वे किसी और उपाय से मॉण्टमॉरेन्सी-परिवार को सन्तुष्ट कर सकते हैं।"

"नहीं, डायना, बादशाह का सारा राज्य और सारा खजाना भी तुम्हारे सामने बे-कीमत है।"

"यह तो तुम्हारा खयाल है जैब्री, लेकिन मॉण्टमॉरेन्सी का लड़का यह नहीं सोचता। डायना की बजाय एक साधारण अफसरी मिल जाय, तो वह ज्यादे प्रसन्न होगा। अरे! वह देखो, नाटक शायद समाप्त हो गया!"

× × × ×

जैब्री जब डेरे पर पहुँचा, तो उसने सबसे पहले एलोई को यह पत्र लिखा—

"प्यारी अम्माँ एलोई,

डायना मुझे प्यार करती है; लेकिन यह बात सबसे पहले लिखने की नहीं है। तुम फौरन यहाँ चली आओ। छः वर्ष के प्रवास के पश्चात् मैं यहाँ बुलाकर पुनः तुम्हारा अभिनन्दन करना चाहता हूँ। मैं अब राजधानी की पुलीस का कप्तान हूँ—जो एक बहुत ऊँचा पद है। मैंने यहाँ आकर जैसी ख्याति प्राप्त की है, उससे मैं सम्भवतः बहुत शीघ्र अपने पूर्वजों का गौरव प्राप्त करने में समर्थ हो सकूँगा। मैं चाहता हूँ, कि तुम भी मेरे आनन्द में हिस्सा बटाओ; क्योंकि डायना—मेरी प्यारी डायना, मेरी बचपन की साथिन—भी तुम्हें अभी भूल नहीं सकी है। बादशाह की लड़की होने पर भी

डायना अपने पुराने मित्रों को याद करती है। उसने स्वयं मुझसे अभी-अभी बताया है। उसकी मीठी आवाज अभी तक मेरे कानों में गूँज रही है।"

१०

७ जून को बादशाह ने एक कौंसिल की। विस्काउण्ट एक्सेस, पुलीस-कप्तान की हैसियत में, नंगी तलवार हाथ में लिये दर्वाजे पर तैनात था। इस मौके पर गाई और मॉण्टमॉरेन्सी परिवार के प्रतिनिधि कार्डिनल डि-लॉरें और बूढ़े कॉन्सटेबल मॉण्टमॉरेन्सी के बीच चोंचें हो रही थीं। सभी उपस्थित-जनों का ध्यान उधर लगा हुआ था।

"महाराज," कॉर्डिनल ने कहा—"खतरा सिर पर है। दुश्मन दर्वाजे पर आ पहुँचा है। फ्लैण्डर्स में एक मजबूत फौज तैयार हो गई है, और इंग्लैण्ड की रानी फिलिप मैरी किसी समय भी हमारे विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर सकती है। महाराज, इस समय आपको एक नौजवान, फुर्तीले, बहादुर सेनापति की आवश्यकता है। वही इस स्थिति से हमारी रक्षा कर सकता है, और वही स्पेनवासियों को छका सकता है।"

"जी हाँ; आपके बिरादर-बुजर्गवार जैसा !" कॉन्सटेबल ने मुँह बिचकाकर कहा।

"हाँ, मेरे बिरादर-बुजर्गवार जैसा !" कार्डिनल ने सीना तानकर कहा—"जिसने बड़े-बड़े मोरचे जीते हैं। महाराज, मेरी राय में आप मेरे भाई साहब ड्यूक डि-गाइ महोदय को तुरन्त वापस बुलवा लें। इटली में उन्होंने रसद और मदद काफी न मिलने के कारण सिविटला पर से घेरा उठा लिया है। ऐसे समय में उनकी सहायता अत्यन्त मूल्यवान् सिद्ध होगी।"

"महाराज," कॉन्सटेबिल ने कहा—"आपकी इच्छा हो, तो सेना को अवश्य वापस बुला लीजिये; क्योंकि इटली का युद्ध समाप्त

हो चुका है। मैंने आपसे पहले ही निवेदन किया था, युद्ध एक बच्चों का खेल है। लेकिन किसी सेनानायक की आवश्यकता आपको बिल्कुल नहीं है। इस समय चारों तरफ पूर्ण शान्ति है, और आप चाहें, तो यह शान्ति चिरस्थायी रह सकती है। इस मौके पर आपको किसी लड़ाकू सेनापति की नहीं, किसी विचारशील मन्त्री की आवश्यकता है।"

"जी हाँ; ठीक आपकी तरह !" कार्डिनल ने चीखकर कहा।

"हाँ, मेरी ही तरह।" कॉन्सटेबल डि-मॉण्टमॉरेन्सी ने अभिमानपूर्वक कहा—"और मैं बादशाह-सलामत को राय देता हूँ, कि वे युद्ध की कल्पना भी न करें; क्योंकि युद्धाग्नि का प्रज्ज्वलन और उसकी शान्ति उनके ही हाथ में है। फिलिप द्वितीय उनका नाम सुनकर थर-थर काँपता है, और उसकी पत्नी बिल्कुल चुप है। मेरी समझ में इस समय बादशाह को सारा ध्यान अपने देश की भलाई की तरफ लगा देना चाहिये। जो लोग ऐसी भावनायें रखते हैं, मैं खूंख्वार सेनापतियों की अपेक्षा उन्हें हजार दर्जे श्रेष्ठ समझता हूँ।"

"और इसीलिये वे हजार-गुना इनाम पाने के अधिकारी हैं।" बादशाह ने कहा।

"महाराज ने मेरे मन की बात कह दी, और मैं अपने परिश्रम के फलस्वरूप उनसे उचित इनाम पाने की आशा करता हूँ।"

"वह क्या ?"

"महाराज, चाहता हूँ, महाराज अपने इस विचार की घोषणा सर्व-साधारण में कर दें कि आप राजकुमारी का पाणिग्रहण मेरे पुत्र के साथ करना स्वीकार करते हैं।"

जैब्री का रँग ज़र्द हो गया ! पर कार्डिनल का जवाब सुनकर उसका चित्त कुछ सँभला—"इस विवाह के पहले महाराजा पोप

की जिस आज्ञा की आवश्यकता थी, वह अभी तक नहीं पहुँची; और क्या पता, पहुँचेगी भी—या नहीं।"

"न पहुँचेगी, तो न सही," कॉन्सटेबल ने कहा—"तलाक़ की आज्ञा बादशाह भी दे सकता है। मैं महाराज से ऐसी आज्ञा पाने की प्रार्थना करता हूँ, जिससे मुझे मेरी सेवाओं का उचित पुरस्कार मिले, और मैं अपने विरोधियों के दाँत खट्टे कर सकूँ।"

"हाँ, मैं ऐसी आज्ञा दे दूँगा।" बादशाह ने कहा। ऐसी जोशीली आवाज के सामने उनके चरित्र की दुर्बलता ने सिर झुका लिया।

कॉन्सटेबल की बाँछें खिल गईं। पर इसी समय बाहर से किसी विदेशी ताशे के बजने की आवाज आई, और सर एडवर्ड फ्लैमिङ्ग-नामक एक अँग्रेज दूत ने दरबार में प्रवेश किया।

दूत ने बादशाह के सम्मुख उचित रीति से झुककर नम्र स्वर में कहना शुरू किया—इँग्लैंड, फ्रान्स और आयर्लैण्ड की महारानी ने फ्रान्स के महाराज को सन्देश भेजा है। हमारे धर्म और राज्य के शत्रु प्रॉटेस्टेण्ट लोगों को आश्रय देने, और हमारे दूतों से उनकी रक्षा करने के कारण फ्रान्स, इँग्लैण्ड और आयर्लैण्ड की महारानी मैरी फ्रान्स के राज हेनरी के विरुद्ध जल और थल की युद्ध-घोषणा करती हैं। इस विग्रह के चिह्न-स्वरूप मैं, एडवर्ड फ्लैमिङ्ग, अपने दस्ताने फेंकता हूँ।"

बादशाह के संकेत पर विस्काउण्ट एक्सेम ने दस्ताने उठा लिये। तब हेनरी ने गम्भीर और विषण्ण भाव से कहा—"धन्यवाद; अब आप जा सकते हैं।

दूत फिर झुका, और चला गया। अँग्रेजी ताशे की आवाज एक बार फिर सुनाई दी, और तब सब शान्त हो गया

आख़िर बादशाह ने निस्तब्धता भङ्ग की—"भाई मॉण्टमॉरेन्सी महोदय, मालूम होता है, आपने जिस सर्वव्यापिनी शान्ति की

घोषणा अभी-अभी की थी, उस पर अधिक विचार नहीं किया था। रानी मैरी की सद्भावनाओं की कल्पना करने में भी आपने भूल खाई। प्रॉटेस्टेण्ट-लोगों के आश्रय को बात तो कोरा बहाना है; मगर कुछ भी हो, फ्रान्स का महीपति युद्ध से डरेगा नहीं। अगर फ्लैण्डर्स की तरफ़ से कुछ दिनों के लिये हमारी चिन्ता मिट जाय—क्यों, क्या है ? अब की बार कौन आया ?"

"पृथ्वीनाथ," चोबदार ने कहा—"पिकारडी के गवर्नर के पास से एक सवार कोई ख़ास सन्देश लेकर आया है।"

"जाइये, मोशिये कार्डिनल, ज़रा देखिये तो, क्या ख़बर है!"

कार्डिनल गये, और शीघ्र ही वापस लौट आये। उनके हाथ में सन्देश-पत्र था, जिसे उन्होंने बादशाह के सम्मुख रख दिया। बादशाह ने उसे पढ़कर कहा—"सज्जनों! यह नई ख़बर है! फ़िलिप द्वितीय की फ़ौजें जिवेट के समीप एकत्रित हो रही हैं। मोशिये डि-कॉलिनी ने लिखा है, कि 'ड्यूक ऑफ़ सेवॉय' इन सेनाओं का नेतृत्व कर रहा है। यह दुश्मन जबर्दस्त है। मोशिये मॉण्टमॉरेन्सी, आपके भतीजे साहब फ़रमाते हैं, स्पेन की सेनाएँ धावा करने ही वाली हैं; उनके मुक़ाबले के लिये कुमुक की तुरन्त आवश्यकता है, जिससे वह ख़तरे की जगहों पर कड़ी देखभाल रक्खे और दुश्मनों से पूरा मोरचा लेने को तैयार रहे। अभी आप कह रहे थे, कि इँग्लैण्ड की रानी मैरी स्तब्ध है, फ़िलिप द्वितीय हमसे भयभीत है, और सीमा प्रान्तों में पूरी शान्ति है। मोशिये डि-लॉरें, अपने भाई को तुरन्त लौट आने के लिये लिखो। रहीं, पारिवारिक झमेलों की बात, उसे हम आने के लिये स्थगित किये देते हैं। तब तक पोप महोदय का उत्तर भी आ जायेगा। फ़िलहाल दरबार बर्ख़ास्त होता है। सज्जनो, रात में फिर दरबार लगेगा। तब तक के लिये विदा। भगवान् फ्रांस की रक्षा करें!"

११

कॉन्सटेबल बुरा मुँह बनाये अपने घर लौटा। आते ही जासूस अर्नाल्डसे उसकी भेंट हुई।

"अर्नाल्ड, इस समय मैं तुमसे बातें नहीं कर सकता!"

"जी हाँ, सरकार, मैं समझता हूं; शादी में झमेला पड़ जाने के कारण ही आपकी तबियत नासाज़ है। लेकिन आप जानते ही हैं, बादशाह का स्वभाव क्षण-क्षण में बदलता है। हाँ, एक नई कठिनाई और आ पड़ी।"

"क्यों—क्या हुआ?"

"आपके ख़याल में मेरा इतना समय कहाँ और कैसे ख़र्च हुआ?"

"हाँ; इधर हफ्तों से तुम्हारी सूरत दिखाई नहीं दी। पहले तो हर रोज़ किसी-न-किसी मुसीबत में गिरफ्तार होकर तुम मेरे पास पहुँचते थे, और रोज तुम्हारा कोई-न-कोई काला कारनामा कान में पड़ जाता था।"

"मगर जनाब, अब मेरी बुराई कोई नहीं करता; मेरी सब बुराइयाँ अब मार्टिन गेर पर लाद दी गई हैं। एक दिन रात को किसी सिपाही ने उसे ही शराब के नशे में बेहोश पड़े हुए पाया था, और दूसरे दिन, एक दर्जी की औरत को उड़ाने का प्रयत्न करने का अपराध भी उसी के सिर मढ़ा गया था।"

"हाँ, मैंने भी सुना था," कॉन्सटेबल ने हँसते हुए कहा—"और उसका मालिक सदा उसकी हिमायत करता है। कहता है, कि उसका नौकर बड़ा नेक आदमी है।"

"वह नौकर—महाशय समझते हैं, कि उन पर भूत का आसेब है।"

"लेकिन वह कठिनाई की कौन-सी बात कह रहे थे?"

"जी हाँ; मुझे बस एक खाकी सूट पहनना पड़ता है, और

विस्काउण्ट एक्सेम अपनी दिल की सब बातें निस्संकोच भाव से मेरे आगे प्रकट कर देता है। सरकार, आप जानते हैं—यह विस्काउण्ट-महोदय हैं कौन ?"

"क्यों ? गाई-परिवार का एक पृष्ठपोषक है—और कौन ?"

"इससे भी अधिक; वह राजकुमारी का प्रेमी है।"

"क्या कहा ? इस विषय में तुम्हें और क्या मालूम है ?"

"मैंने आपसे कहा न, कि मैं उसका विश्वासपात्र हूँ। मैं ही आधी रात को राजकुमारी के पास पत्र ले जाता हूँ। उसकी दासी से मेरी मोहब्बत हो गई है। वह बेचारी इस बात पर बड़ी आश्चर्यित होती है, कि एक दिन तो उसका प्रेमी उसके साथ घुल-घुलकर मिलता है, और दूसरे दिन अनजानों का-सा आचरण करता है। विस्काउण्ट और राजकुमारी रानी के विनोद-गृह में प्रति सप्ताह तीन बार भेंट करते हैं। सच्ची बात यह है, कि उनकी सच्ची मोहब्बत से मैं इतना प्रभावित हुआ हूँ, कि अगर मुझे अपने पेट का ख्याल न होता, तो मैं उनकी पूरी मदद करता; परन्तु आपकी थैली, सदा मेरे मुँह और पेट पर शासन करती है।"

"अच्छा, अब जाओ; अपने परिश्रम के लिए तुम उचित पुरस्कार पाओगे।"

१२

उस दिन की बात है। जैब्री ने मार्टिन गेर को बुलाकर कहा—"इस पत्र को राजकुमारी के पास पहुँचाओ, और तुरन्त इस का उत्तर लेकर आओ।"

"बहुत अच्छा; लेकिन मेरी प्रार्थना है, कि आप किसी आदमी को मेरे साथ कर दें।"

"क्यों—यह क्या नई हिमाकत ? किसका डर है ?"

"खुद अपना ही मौसिये," मार्टिन ने दयार्द्र स्वर में कहा—"ऐसा जान पड़ता है, कि मैं एकदम से पियक्कड़ और जुआरी बन

गया हूँ; और उधर कल एक नई खबर उड़ी है, कि मैंने रात में मोशिये गॉर्ज् दर्जी की औरत को उड़ाने की कोशिश की।"

"मार्टिन, तुम्हें ख्वाब तो नहीं आते—या सचमुच तुमने यह हरकत की है ?"

"कैसा ख्वाब मोशिये, यह खबर तो चारों तरफ फैल चुकी है। मैं तो सुन-सुनकर शर्म के मारे मरा जा रहा हूँ। पहले मेरा यह खयाल था, कि मुझ पर जिस भूत का आसेब है, वही मेरी सूरत बनाकर यह सब शरारतें करता है, लेकिन आपने कहा--यह असम्भव है। इसलिये अब मेरा खयाल होता जा रहा है, कि मुझ पर ही कभी-कभी किसी प्रेत की कृपा-दृष्टि हो जाती है।"

"नहीं, प्यारे भाई," जैन्नी ने कहा—"तुम शायद कभी-कभी जरा ज्यादे पी लेते हो; उसी की यह सब करामात है।"

"लेकिन मोशिये, पीने के नाम तो मैं सिवा पानी के किसी वस्तु का व्यवहार नहीं करता।"

"लेकिन उस दिन जो शराब के नशे में तुम सड़क पर पड़े पाये गये थे!"

"मोशिये, उस दिन तो मैं बहुत जल्दी सो गया था। प्रार्थना करने के बाद जो मैंने आँखें मूंदीं, तो सुबह ही खोली थीं, और सुबह के बाद ही मुझे अपनी रात की करनी का पता लगा।"

"खैर, तुम्हारे साथ जाने के लिये मैं कोई आदमी नहीं दे सकता; क्योंकि तुम्हारे अतिरिक्त कोई इस भेद को नहीं जानता।"

"खैर, तो मैं जो कुछ हो सकेगा; करूँगा—लेकिन अपने कार्य का मैं जिम्मेवार नहीं हूँ।"

"छी: ! जाओ—याद रक्खो, मेरा सुख-दुख इसी रुक्के पर निर्भर है।"

मार्टिन ने जवाब में एक आह भरी, और चल दिया। दो घण्टे बाद जवाब लिये वह आ मौजूद हुआ। जैन्नी ने लिफाफा खोलकर

पत्र पढ़ा—"जैब्री, ईश्वर का धन्यवाद है, कि बादशाह आखिर मान गये। अब हमें खुशी नसीब होगी। तुम्हें इँग्लैण्ड के दूत और फ्लैण्डर्स के चिन्तनीय समाचारों की बात मालूम ही होगी। यह घटनायें हमारे पक्ष में हैं; क्योंकि इनसे गाई-परिवार की शक्ति-वृद्धि होगी, और मॉण्टमॉरेन्सी-परिवार का प्रताप घटेगा। बादशाह ने आनाकानी तो बहुत की, लेकिन मैंने हा-हा खाकर उनसे आज्ञा ले ही ली, और तुम्हारा नाम बता भी दिया। बादशाह ने यद्यपि निश्चित् वचन नहीं दिया, तो भी इतना कहा, कि वे विचार करेंगे, और चूंकि राज्य-काज की दुर्घटनाओं से वे विशेष व्यथित हैं इसलिये दुखी करना उन्हें मंजूर नहीं है। उन्होंने यह भी विचार किया है, कि मॉण्टमॉरेन्सी के लड़के को कोई ऊँचा पद देकर वे उन्हें सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करेंगे। यद्यपि उन्होंने साफ वादा नहीं किया; लेकिन मेरा विश्वास है, कि वे मेरी प्रार्थना कबूल कर लेंगे। ओह! जैब्री, तुम भी मेरी ही तरह उनसे प्रेम करो। मेरे अच्छे पिता हमारे समस्त भविष्य-स्वप्नों की कल्पना करते हैं। मुझे तुमसे बहुत-सी बातें कहनी हैं, लेकिन उनके लिये शब्द नहीं मिलते! आज शाम को छः बजे तुम आओगे ही।'--तब पूरे एक घण्टे हम लोग बात-चीत कर सकेंगे। हाँ, मेरा विश्वास है, कि तुम्हें आगामी युद्ध में योग देना पड़ेगा। अफसोस! मुझे प्राप्त करने के लिये उन्हें मेरे पिता के हुक्म पर लड़ने जाना ही होगा! आह! मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ!—इसे छुपाने से क्या लाभ? तो आज आना, मैं देखूंगी कि तुम भी अपनी प्यारी डायना की तरह ही प्रसन्न हो—या नहीं।"

"बहुत प्रसन्न! अब मेरी प्रसन्नता में क्या कसर रही?" जैब्री ने आनन्दातिरेक से चिल्लाकर कहा।

"बेशक! अब क्या कसर रही—अब तो तुम्हारी बूढ़ी अम्माँ

भी आ पहुँची !" इसी समय एलोई ने देहात से आकर कमरे में प्रवेश करते हुये कहा।

"एलोई !" जैब्री दौड़कर उसकी छाती से चिपट गया, और बोला—"मेरी अम्माँ ! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था ! कहो, कैसी रहीं ? तुम तो वैसी-की वैसी हो; मैं भी वैसा ही हूँ। कम-से-कम दिल तो वैसा ही है। लेकिन, तुमने आने में इतनी देर क्यों कर दी ?"

"मोशिये, वर्षा के कारण सब राह-बाट रुक गई हैं; लेकिन तुम्हारे पत्र ने मुझे दस गुनी हिम्मत देदी थी।"

"ठीक है, एलोई, मुझे इस प्रसन्नता में हिस्सा बटानेवाले किसी हितैषी की जरूरत भी थी। यह पत्र देखा ? यह डायना के पास से आया है—तुम्हारे दूसरे बच्चे के पास से ! वह लिखती है, कि हमारी शादी के बीच की सारी बाधायें मिट गईं, और वह मुझे प्यार करती है ! क्यों—अब मेरे आनन्द का भला क्या ठिकाना ?"

"लेकिन मोशिये, अगर डायना को छोड़ना ही पड़े—तो ?" एलोई ने गम्भीर और दुःख-पूर्ण स्वर में कहा।

"असम्भव ! एलोई, अब कोई बाधा शेष नहीं है।"

"दुनियाँ की बाधायें तो जीती जा सकती हैं, पर दैवी बाधाएँ नहीं," एलोई ने जवाब दिया—"तुम जानते हो, मैं तुम्हें जान से ज्यादा चाहती हूँ। लेकिन अगर मैं तुमसे यह कहूँ—कि तुम डायना से प्रेम करना छोड़ दो, उसका ख्याल दिल से निकाल दो, उसकी सूरत देखना बन्द कर दो,—और इस विनय का कारण मुझ से न पूछो; अगर तुम्हारे चरणों पर सिर रखकर मैं तुमसे यह प्रेरणा करूँ, तो मोशिये, भला तुम क्या करो ?"

"एलोई, अगर तुम मेरा प्राण माँगतीं, तो मैं सहर्ष दे देता, लेकिन यह प्रेम मेरी शक्ति के बाहर हो गया है। लेकिन तुम्हारी बात

से मैं भयभीत हो उठा हूँ। कृपा करके इस संशय से मुझे निकालो, और सब बात साफ-साफ कहो।"

"तुम्हारी ऐसी इच्छा है ? क्या वह भेद मैं तुम्हें बता दूँ—जिसे सदा गुप्त रखने की मैंने शपथ खाई थी ? जान पड़ता है, भगवान की यही इच्छा है। लेकिन मोशिये, डायना के प्रति अपने प्रेम में आपको आत्म-प्रवंचना से काम लेना तो नहीं पड़ा ?"

"नहीं एलोई, कदापि नहीं; और उसकी सुन्दरता........।"

"प्रेम तो तुम्हें जरूर ही होगा; क्योंकि डायना सम्भवतः तुम्हारी बहन है।"

"डायना—मेरी बहन ?" जैब्री ने आश्चर्य से उछल कर कहा—"बादशाह की बेटी, महारानी मैडम डि-वैलेण्टिनोई की गर्भ-प्रसूता मेरी बहन कैसे हुई ?"

"मोशिये, डायना का जन्म १५३९ सन् के मई मास में हुआ था। इसी वर्ष के जनवरी मास में आपके पिता अन्तर्द्धान हुए थे। आपको मालूम है, उन पर क्या अपराध लगाया गया था ? डायना डि पोतेई (बादशाह की वर्तमान चहेती) से प्रेम करने का, और वर्तमान बादशाह के प्रतिद्वन्द्वी होने का। अब आप तारीखों का मिलान कर लें।"

"हे भगवान !" जैब्री के मुँह से निकला, तब कुछ सम्हलकर उसने कहा—"मेरे पिता अपराधी थे कसे। उनके गायब होने के पाँच महीने बाद डायना का जन्म हुआ था। लेकिन इस बात का क्या प्रमाण है, कि वह बादशाह की सन्तान नहीं है। बादशाह तो उसे सगे बाप की तरह प्यार करते हैं।"

"तुम्हारा सन्देह सत्य हो सकता है। मैंने यह नहीं कहा, कि डायना वास्तव में तुम्हारी बहन है; मैंने कहा, कि ऐसी सम्भावना है। जैब्री, अपना सन्देह तुम्हें बता देना मेरा कठोर कर्तव्य था।

क्यों ? मेरे यह कहे बिना तुम कभी उसकी तरफ से चित्त न हटाते; अब तुम्हारा हृदय खुद फैसला कर लेगा।"

"ओह, तुम्हारा यह संदेह मेरे दुर्भाग्य से भी हजार गुना कड़ा है। हे भगवान ! मुझे सच्ची बात कौन बताये ?"

"यह भेद दुनियाँ में दो-ही आदमियों को मालूम है। एक तुम्हारे पिता को, और दूसरे स्वयं महारानी को; लेकिन यह कभी स्वीकार न करेगी, कि उसने बादशाह को इतना बड़ा धोखा दिया,—और डायना उसके औरस से नहीं है।"

"लेकिन अगर डायना मेरी बहन नहीं है, तो भी वह मेरे पिता के घातक की कन्या है। क्यों—वर्तमान बादशाह, तब राजकुमार, ने मेरे पिता की हत्या की थी न ?"

"भगवान जाने !"

हर बात में संदेह, भ्रम, भयङ्करता !" जैब्री ने चीखकर कहा—"ओह ! मैं पागल हो जाऊँगा—लेकिन ठहरो, मैं अभी महारानी के पास जाता हूँ। मैं उससे कसम खाकर कहूँगा, कि उसका भेद कभी प्रकट न होगा। फिर मैं डायना के पास अपने मानसिक भावों का परीक्षण करूँगा।"

"हाय बच्चे !" एलोई ने दुःखी होकर कहा।

"अब एक क्षण भी नहीं खो सकता," उसने उठते हुये कहा—"सम्भवतः मैं सब गुंजलट को सुलझाकर ही लौटूँगा।"

"मुझे कुछ काम सौंपते हो ?" एलोई ने पूछा।

"मेरी बेहतरी के लिये प्रार्थना करो, बस।"

१३

कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी और रानी डायना एकान्त कमरे में खड़े थे। वह बड़े रूखे स्वर में बातें कर रहा था, और रानी के उत्तर अत्यन्त मृदु और मधुर होते थे।

"खैर, मुझे कुछ मतलब नहीं;" वह सहसा चिल्लाया—"वह तुम्हारी

कन्या है, तुम्हें भी उस पर हक है। तुम्हें यह शादी करनी होगी।"

"लेकिन, मित्र, हम दोनों आपस में कैसे फिरण्ट हैं, यह आप भी जानते हैं। मुद्दत तक हमारी देखा-देखी तक नहीं होती। फिर बादशाह पर उसका इतना प्रभाव है, कि मेरी कुछ भी चलनी दुशवार है। आप कृपा करके इस विवाह का विचार त्याग दीजिये; मैं बादशाह से कहकर छोटी राजकुमारी मार्गरेट का विवाह आप के पुत्र के साथ करा दूँगी।"

"मेरा पुत्र दूध पीता बच्चा नहीं है," उसने जवाब दिया—"तुम्हारी छोटी कन्या, जिसे ठीक-ठीक बोलना भी नहीं आता, मेरे भाग्य-विधान में तनिक भी सहायक नहीं हो सकती। डायना के साथ अपने पुत्र का विवाह मैं इसीलिये करना चाहता हूँ, कि बादशाह पर उसका प्रभाव है। और चाहे जो कुछ हो, यह विवाह होकर ही रहेगा।"

"ख़ैर, मैं अपनी करनी में कुछ उठा न रक्खूंगी; पर आप मेरे साथ ज़रा सुन्दर व्यवहार किया करें।"

उसी समय दरबान ने विस्काउण्ट डि-एक्सेम के आने की सूचना दी।

"वह आ गये, प्रेमी महाशय!" कॉन्सटेबल ने मुँह बिगाड़ कर कहा—"क्या हज़रत तुम्हारी कन्या के पाणिग्रहण की आज्ञा लेने आये हैं?"

"आपकी क्या राय है?—उसे आने दूँ?" महारानी ने भयभीत स्वर में पूछा।

"आने दो, मगर याद रक्खो, उसकी कोई बात भी स्वीकार न करना।" कहकर कॉन्सटेबल बाहर निकल गया, और जैब्री ने प्रवेश किया।

"मैडम" उसने आते ही कहा—"आपके पास इस समय उपस्थित होने का कारण इतना गम्भीर और भयानक है, कि मैं

अपने-आपको भूल-सा गया हूँ। इसलिये अपनी किसी मूर्खता के लिये मैं पहले ही माफ़ी माँग लेता हूँ।"

मैडम डि-वैलेण्टिनोई ने कोई भाव प्रकट न किया। वह अपने गाल पर सिर रक्खे, शून्य दृष्टि से जैक्री की तरफ़ ताकती रही।

"मैडम," उसने फिर कहा—"शायद आपको मालूम है, कि मैं मैडम डि-कैस्ट्रो से प्रेम करता हूँ....।"

डायना ने विचित्र भाव से मुसकरा दिया।

"मैंने अपने प्रेम की बात इसलिये कही," उसने फिर कहना शुरू किया—"कि प्रेम मेरे सम्मुख एक अत्यन्त पवित्र वस्तु है। यदि मैडम डि-कैस्ट्रो के पति जीवित होते, तो भी मैं उन्हें समान रूप से ही प्रम करता; क्योंकि विवाह का प्रबन्ध किसी के सच्चे प्रेम का दमन नहीं कर सकता। आप ही की बात कहता हूँ। संसार के एक अति वैभवशाली राजा की प्रेम-पात्री होकर भी आप यह नहीं कह सकतीं, कि और किसी व्यक्ति के प्रति आपका प्रेम नहीं है। संसार में मान-प्रतिष्ठा ही सदा किसी के प्रेम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकती। मतलब यह, कि अगर डायना पोतेई, बादशाह की पत्नी होकर भी काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी को प्यार करती थी, तो मेरे निकट उसने कोई पाप नहीं किया।"

डायना सिहरकर बोली—"तुम्हारे पास इसका क्या प्रमाण है?"

"क़ानूनी नहीं; नैतिक।"

"ख़ैर, अगर मैंने उसे कभी प्यार किया—तो इस से क्या?"

"मेरा विश्वास है, आप अब तक उसकी याद में प्रेम-विह्वल हो जाती होंगी। सिर्फ़ आप ही के कारण उन्हें दुनियाँ से ग़ायब होना पड़ा। मैं इस समय उन्हीं के नाम पर आप से एक धृष्टतापूर्ण प्रश्न करने के लिये उपस्थित हुआ हूँ। इस प्रश्न के उत्तर पर ही मेरा जीवन निर्भर है। अगर आप ने उसका उत्तर दिया, तो मैं आजीवन आपका ऋणी रहूँगा।"

"कहिये, वह क्या प्रश्न है ?"

जैब्री ने उसके सन्मुख घुटने टेककर कहा—"मैडम, सन १५३८ में आप काउण्ट मॉण्टगॉमरी से प्रेम किया करती थीं ?"

"शायद—फिर ?"

"जनवरी १५३९ में वे ग़ायब हुए और मई में मैडम डि-कैस्ट्रो का जन्म हुआ।"

"फिर ?"

"मैडम, इसी प्रश्न के प्रत्युत्तर पर मेरा भविष्य निर्भर है—क्या काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी ही मैडम डि-कैस्ट्रो के पिता थे ?"

"हा ! हा !" डायना ने विरक्ति-पूर्ण स्वर में कहा—"आपका प्रश्न वास्तव में धृष्टतापूर्ण है ! —परन्तु मेरे मन में आपके प्रति स्वाभाविक उत्सुकता उत्पन्न हो गई है। हाँ, बताइये तो—आपको इस प्रकार प्रश्नोत्तर से क्या मतलब है ?"

"बड़ा गहरा मतलब है मैडम, परन्तु मेरी प्रार्थना है, कि आप उसे पूछें नहीं।"

"अच्छा ! मेरे भेद तो आप मालूम कर लें, और अपनी बात मुझे बतायें नहीं—यह अच्छा सौदा रहा !"

जैब्री ने पीछे लटकते हुए हाथी-दाँत के पवित्र चिह्न को डायना के सन्मुख लेजाते हुए कहा—"मैडम, आप इसे स्पर्श करके शपथ लें, कि जो भेद मैं आपसे कहूँगा, उसे आप कदापि प्रकट न करेंगी, और न कभी मेरे विरुद्ध उसका प्रयोग करेंगी।"

"ऐसी भीषण शपथ !"

"हाँ, मैडम, तभी मुझे विश्वास होगा, कि आप उसे प्रकट न करेंगी।"

"और अगर मैं अस्वीकार करूँ ?"

"तो मैं चुप रहूँगा, और मेरी जान लेने का पाप आप के मत्थे पड़ेगा।"

"मोशिये, आपकी बातों से मेरी स्त्री-सुलभ उत्सुकता जाग उठी है, और इसी लिए मैं शपथ लेना स्वीकार करती हूँ।"

रानी के शपथ ले चुकने पर जैब्री ने कहा—"मैडम, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मेरे इस कथन से आपकी उत्सुकता शान्त हो जायगी—कि मैं काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी का पुत्र हूँ।"

"उसके पुत्र ?"

"जी हाँ: तो अगर मेरी प्रेमिका उसके औरस से उत्पन्न हुई, तो वह मेरी बहन हुई।"

"आह !" डायना ने मन-ही मन कहा—"अब कॉन्सटेबल की बन आई।"

"अब मैडम, क्या आप शपथ-पूर्वक कहेंगी, कि मैडम डि-कैस्ट्रो किसकी पुत्री हैं ? क्यों—आप जवाब नहीं देतीं ?"

"नहीं, मैं इस विषय में शपथ नहीं ले सकती।"

"हे भगवान् ! तो क्या सचमुच वह मेरी बहन है ?" जैब्री चिल्लाया।

"नहीं, मोशिये; मैं कभी यह नहीं कहूँगी—कि वह बादशाह के सिवा और किसी की पुत्री है।"

"बहुत ठीक, मैडम; लेकिन आप यही बात शपथ-पूर्वक कह दें; आपकी बच्ची आपकी आजीवन कृतज्ञ रहेगी।"

"मोशिये, मैं शपथ नहीं ले सकती।"

"अच्छा, अगर मैंने उससे विवाह कर लिया, और वह मेरी बहन निकली, तो इसका पाप क्या आपके सिर नहीं चढ़ेगा ?"

"कदापि नहीं;—क्योंकि मैंने किसी बात की शपथ नहीं खाई।"

"हाय ! हाय !" जैब्री ने बिलखकर कहा—"लेकिन, मैडम याद रक्खो, मैं आपके और काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी के अनुचित प्रेम का ढिंढोरा पीट दूँगा, जिससे बादशाह के प्रति आपके छल का पता सब को लग जायगा।"

"इसका सुबूत क्या ?" उसने कुटिलता पूर्वक मुस्कराकर कहा—"मैं इसका प्रतिवाद करूँगी। मोशिये, आप की बात पर विश्वास कौन करेगा ?...............अच्छा, अब आप कृपा करके विदा हों।"—कहकर उसने घण्टी बजाई।

"यह भयानक नीचता है!" जैब्री ने क्रोध से उबलकर कहा—"ओह! अफ़सोस, तुम औरत हो! मगर याद रक्खो, मेरी जान लेकर तुम सुखी नहीं हो सकतीं। भगवान् तुम्हें इसका दण्ड देगा।"

"आपका यही विचार है,"—रानी ने विद्रूप करके कहा। इसी समय दरबान ने कमरे में प्रवेश किया, और वह तीक्ष्ण श्लेष से मुसकराती हुई चली गई।

क्रोध और क्षोभ से पागल हुआ जैब्री बाहर निकला।

१४

"रोगी के प्राण-नाश की आशङ्का अब नहीं है, श्रीमती एलोई, लेकिन इसमें सन्देह नहीं, कि अवस्था बड़ी भयङ्कर थी, और आराम धीरे-धीरे होगा। रोगी की शारीरिक और मानसिक अवस्था बहुत ही शोचनीय हो गई है। लेकिन विश्वास रक्खो, जान पर अब कोई ख़तरा नहीं है। भगवान् का धन्यवाद है, कि मानसिक दुर्बलता के कारण उस भीषण धक्के का प्रभाव भी हल्का पड़ गया है, जो इनके हृदय पर लगा था। यह इस प्रकार का घाव है, जिसका कोई दवा हमारे पास नहीं।"

जिस आदमी ने उपरोक्त शब्द कहे, उसका क़द लम्बा और नेत्र चमकीले थे। उम्र उसकी कोई पचास वर्ष की थी, और नाम था—नॉस्त्रादम।

"लेकिन, देखिये तो," एलोई ने कहा—"आज २ जुलाई है, और ७ जून से इन्हें होश नहीं है। इस दीर्घ काल में न तो इन्होंने एक शब्द कहा, और न मुझे एक बार पहचाना। उनकी दशा

क़रीब-क़रीब मृतकों की सी हो गई है। कोई उनका शरीर छूता है, तो उन्हें अनुभव तक नहीं होता।"

"यह अवस्था अच्छी ही है। मैं उन्हें अधिक से अधिक समय तक बेहोश रखना चाहता हूँ, जिससे उस मानसिक आघात की स्मृति अधिक-से-अधिक क्षीण हो जाय। अगर एक महीना ये और इसी अवस्था में रह जायँ, जैसा कि मुझे विश्वास है, रहेंगे—तो समझ लेना—उन्हें बिल्कुल आराम हो गया। इस समय वे ख़तरे से बाहर हैं, इसलिये वह जो युवती दासी रोज़ इनका हाल पूछने आती है, उस से यह बात कह देना। मुझे विश्वास है, कि इनके हृदय पर ज़रूर किसी प्रेमिका के सम्बन्ध में कोई गहरा आघात लगा है। क्यों ?"

"हाँ, ऐसा ही है।"

"तो इनके होश आने पर तुम कोई ऐसी बात न कहना, जिससे इनके दुखी या निराश होने की सम्भावना हो; अन्यथा उनके हृदय का घाव फिर हरा हो जायगा।"

एक हफ्ता बीत गया। जैब्री अपने इर्द-गिर्द के आदमियों को पहचानने की कोशिश सी करने लगा। दूसरे हफ्ते में उसके मुँह से अस्पष्ट से शब्द निकलने लगे। तब क्रमशः उसने एलोई और मार्टिन को पहचाना, और एक दिन सुबह अकस्मात् उसने कहा—"एलोई, लड़ाई की क्या ख़बर है ?"

"कैसी लड़ाई—मोशिये ?"

"इङ्गलैण्ड और स्पेन के साथ होने वाली लड़ाई !"

"मोशिये, ख़बरें अच्छी नहीं हैं। सुनते हैं, १२००० अङ्गरेज़ों के साथ स्पेन की सेना ने पिकार्डी में प्रवेश कर लिया है।"

"चलो, यहाँ तक भी अच्छा है !"

एलोई ने उसके अन्तिम वाक्य को बेहोशी का बड़ समझा।

लेकिन अगले दिन ही उसने फिर कहा—"कल मैं यह पूछना भूल गया कि ड्यूक डि-गाइ अभी आये हैं, या नहीं ?"

"आये तो नहीं, मगर आ रहे हैं !"

"आज कौन-सी तारीख है ?"

"४ अगस्त।"

"तो ७ तारीख को मुझे यहाँ पड़े हुए दो मास हो जायेंगे।"

"अरे !" एलोई ने काँपकर कहा—"क्या आपको याद है ?"

"सब बातें याद हैं, एलोई—लेकिन दुनिया शायद मुझे भूल गई है ; क्योंकि कोई मेरी खबर लेने नहीं आता।"

"मोशिये, यह आपका भ्रम है," एलोई ने ध्यान से अपने प्रत्येक शब्द का प्रभाव देखते हुए कहा—"राजकुमारी डायना की दासी जैसिन्थ हर रोज सुबह-शाम आकर आपका कुशल-वृत्त पूछ जाती थी। लेकिन पिछले दिनों से आपकी तबियत सँभल गई है, इसलिये १५ दिन से उसका आना नहीं होता।"

"अब वह नहीं आता—भला क्यों ?"

"मोशिये, अब उसकी मालिकिन बादशाह से आज्ञा लेकर पुन: आश्रम में चली गई हैं।"

"सचमुच !" जैब्री ने मधुर विषादमयी मुसकान के साथ कहा, जिसके साथ ही आँसू का एक बूँद उसके गाल पर ढलक आया और मुँह से निकला—"प्यारी डायना !"

"ओहो !" एलोई ने उछलकर कहा—"मोशिये ने अत्यन्त धैर्यपूर्वक उसका नाम ले लिया ; अब उनकी जान पर कोई खतरा नहीं— वे बच गये।"

"हाँ, बच तो गया एलोई, लेकिन मैं ज्यादे दिन जिंदा न रह सकूँगा।" "यह क्यों ?" एलोई ने काँपकर पूछा।

"मेरा शरीर उस घाव को सह गया, पर मेरी आत्मा निर्जीव हो गई है। यह खुशी की बात है, कि फ्रान्स इस समय युद्ध में प्रवृत्त

है, मेरा कर्त्तव्य मेरे सामने है, मैं युद्ध में भाग लूँगा। शीघ्र-ही मैं युद्ध-क्षेत्र में पहुँचूँगा, और जहाँ तक हुआ, वापस न लौटूँगा।"

"तो क्या जान दे दोगे,—यह क्यों ?"

"क्यों ? इसलिये, कि मैडम वैलेंटिनोई जबान खोलेंगी नहीं—इसलिये कि डायना सम्भवतः मेरी बहन है—इसलिये कि बादशाह ने शायद मेरे पिता की हत्या की है;—यद्यपि आखिरी बात का मुझे निश्चय नहीं। अब चूँकि न तो मैं अपने प्रेम की देवी से विवाह कर सकता हूँ, न अपने पिता की मौत का बदला ले सकता हूँ, इसलिये इस दुनियाँ में मेरा जिन्दा रहना बेकार है।"

"नहीं, मोशिये, आपका विचार गलत है। अभी आपके सम्मुख एक भीषण कर्त्तव्य पूरा करने के लिये पड़ा है। पर उसे मैं उस दिन बताऊँगी, जब मोशिये नॉस्ट्रादम मुझे विश्वास दिला देंगे, कि आप में उसे सहन करने लायक शक्ति विद्यमान है।"

अगले सप्ताह में ही वह दिन आ पहुँचा। जैशी अब उठकर चलने-फिरने लगा था। तब एलोई ने कहा—"मोशिये, क्या आप अपने निश्चय पर दृढ़ हैं ?"

"बेशक !"

"लेकिन अगर वह भेद मालूम होने की आशा हो ?"

"तुमने तो कहा था, कि वह भेद या तो रानी को पता है, या मेरे पिता को—जो अब जीवित नहीं हैं।"

"लेकिन अगर वे जीवित हों।"

"मेरे पिता जीवित हैं !—तुम्हें पक्का पता है एलोई ?"

"नहीं; मेरा केवल अनुमान है।"

"तो पता कैसे लगेगा ?"

"वह बड़ी भयानक कथा है मोशिये, मैंने अपने पति से शपथ ली थी, कि कभी आप से वह भेद नहीं बताऊँगी; क्योंकि उसे बताने पर आप खतरे में पड़ सकते हैं, और आप के विरुद्ध बड़े

शक्तिशाली शत्रुओं का कोप हो सकता है। लेकिन निश्चित मृत्यु की अपेक्षा खतरे की सम्भावना अच्छी है। मैं आप के स्वभाव से परिचित हूँ, इसलिये वह कथा आपको सुनाये देती हूँ।"

१५

पाठकों की सुविधा के लिये हम उस कहानी का विस्तृत वर्णन करना उचित समझते हैं, जिसे एलोईं ने जैब्री को सुनाया।

जैक डि-मॉण्टगॉमरी, जैब्री का पिता, अपने पूर्व-पुरुषों की भाँति-ही अत्यन्त वीर और साहसी पुरुष था। फ्रांसिस प्रथम के शासन-काल में उसने अनेक वीरतापूर्ण युद्ध किये, और राजदरबार तथा सेना में सर्वोच्च पद प्राप्त किया। सन् १५६० में उसने विवाह किया, और तीन वर्ष बाद ही जैब्री को गोद में छोड़ कर ही उसकी पत्नी का देहान्त हो गया। इसके कुछ ही दिन बाद जैक डायना डि-पोतेई के प्रेम में पड़ गया। लगातार तीन महीने तक वह उसके आस-पास मँड़राता रहा, पर उससे एक शब्द कहने का साहस उसे न हुआ। लेकिन डायना उसके नेत्रों से ही उसके मन का भाव ताड़ गई, और उसने उसके इस अनुराग का यथावसर उपयोग करने की ठान ली। अवसर आने में भी देर न लगी। डायना और मैडम डि-एटम—दोनों—फ्रांसिस प्रथम की प्रेमिकायें थीं; पर शीघ्र ही फ्रान्सिस ने डायना की उपेक्षा करनी शुरू कर दी, और मैडम डि-एटम की तरफ अधिक आकृष्ट होने लगा।

डायना ने यह रङ्ग-ढङ्ग देखे, तो मॉण्टगॉमरी के प्रति उसका व्यवहार कृपा-पूर्ण होने लगा। बादशाह फ्रान्सिस के सामने ही वह अब जैक पर अपना अनुराग प्रकट करने लगी। इससे उसका उद्देश्य बादशाह के हृदय में ईर्ष्या की आग भड़का कर उसे अपने प्रति आकर्षित करना था। पर उसकी इच्छा पूरी न हुई, और बादशाह ने इस पर कोई आपत्ति न की। जब उसने काऊण्ट से विवाह कर लेने की इच्छा प्रकट की, तो बादशाह ने न-सिर्फ कोई विरोध नहीं

किया, वरन् उसके विवाह में सहर्ष योग देना स्वीकार किया। डायना ने इस पर पेच-ताव तो बहुत खाये, लेकिन चूँकि बात मुँह से निकल चुकी थी, इस लिये तीन महीने बाद काऊण्ट के साथ उसका विवाह होने की खबर शीघ्र ही सर्व-साधारण में फैल गई।

धीरे-धीरे तीन महीने बीत गये। काऊण्ट का अनुराग दिन-दिन बढ़ता ही गया, लेकिन लोक-श्रुति यह थी, कि डायना के मन में काऊण्ट के प्रति उस प्रेम-भाव का चिह्न भी नहीं है, जो विवाह के पूर्व एक प्रेमिका में होना चाहिये। उधर डायना किसी-न-किसी बहाने से विवाह तिथि को स्थगित करती जाती थी—इस बात ने लोगों की उक्त धारणा की पुष्टि दी।

इसका कारण यह था, कि बादशाह से पृथक् होने के कुछ ही दिन बाद डायना ने देखा—युवक राजकुमार उसके रूप पर भ्रमर की भाँति मँडराने लगा है। इस पर उसके हृदय में एक नई महत्वाकाँक्षा का उदय हुआ। काउण्टेस बनना आनन्द की बात जरूर थी, परन्तु राज-रानी का पद गौरव का कारण था। मैडम डि-पटस उसकी अपेक्षा वयस्का थी, इसलिये वह अगर आज बादशाह की रखेल बनकर गौरवान्वित है, तो राजकुमार को हाथ में करके, और उसकी कच्ची उम्र से लाभ उठाकर वह अपना भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल बना सकती है। किसी दिन हेनरी बादशाह होगा, और वह बनेगी रानी!

हेनरी की आयु उस समय कुल उन्नीस वर्ष की थी, और चार वर्ष पहले ही उसका विवाह कैथेराइन डि मैडिसिस-नाम की एक उच्च वंश की कन्या से हो गया था, परन्तु 'प्रेम' किसे कहते हैं—बात उसे तब मालूम हुई, जब सुन्दरी डायना के रूप ने उसे अपनी तरफ आकृष्ट किया। पहले तो डायना नये प्रेम-सम्बन्ध से डरी; क्योंकि एक तरफ बादशाह का कोप था, दूसरी तरफ जैक का क्षोभ। लेकिन जब बादशाह को मालूम हुआ, तो उसने उसके इस प्रेम

सम्बन्ध पर कोई टीका-टिप्पणी नहीं की। अतएव उसका भय दूर हो गया, और उसने राजकुमार हेनरी से दिल-खोल मुहब्बत शुरू कर दी। उधर मॉण्टगॉमरी उसके प्रेम में अन्धा हो रहा था, उसे इन बातों का पता तब न था। जब सारे राज-दरबार में डायना और राजकुमार की चर्चा होती थी, तो जैक हर रोज शाम को डायना के साथ रङ्गरेलियाँ मनाता; दुनियाँ की बात सुनने का न उसे होश था, न समय।

इसके बाद की कहानी हम एलोई के शब्दों में ही पाठकों को सुनायँगे—

"काउण्ट का स्वाभाविक सेवक, मेरा पती, भी इन खबरों से अनजान न था। लेकिन उसने तब तक अपने स्वामी से कुछ कहा नहीं। ७ जनवरी १५३९ के दिन, शाम के वक्त, हम सब मकान पर थे। काउण्ट हर रोज शाम को डायना के पास जाया करते थे, पर उस दिन उसने कहला भेजा था, कि उसकी तबियत खराब है, और वह उनसे भेंट न कर सकेगी। सहसा काउण्ट के कुछ दरबारी-मित्र आ पहुँचे, और उन्होंने हँसते-हँसते खबर सुनाई—कि, डायना उस रात में राजकुमार की अङ्क-शायिनी बनेगी। काउण्ट तो यह सुनकर वज्राहत-से रह गये, और जब उनके मित्र हँसते-हँसते चले गये, तो मेरे पास आकर बोले—'एलोई, जरा बच्चे को लाना।' उन्होंने अन्तिम बार तुम्हारा चुम्बन किया, और तलवार हाथ में लेकर डायना के मकान की तरफ चल दिये। पीछे-पीछे मेरे पति पीरा भी रवाना हो गये।

"मैं बहुत रात तक दोनों की प्रतीक्षा करती रही। रात के चौथे-पहर में मेरे पति रक्त में लथपथ रेंगते हुए आये, और उन्होंने जो हाल मुझे सुनाया, उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गये। काउण्ट जब डायना के डेरे पर पहुँचे, तो दासियों ने उन्हें रोकने

की कोशिश की, परन्तु वे बल-पूर्वक भीतर घुस गये। मेरे पति भी आँख बचाकर भीतर पहुँच गये। जब डायना को इसकी खबर लगी, तो वह गुस्से से भरी हुई उनके पास आई। काउण्ट ने जो खबर सुनी थी—वह उसे सुनाई, और क्रोध में भरकर उसे डाँटना शुरू किया। इतने में खुद हेनरी वहाँ आ मौजूद हुआ, और तब तू-तू मैं-मैं के बाद दोनों ने तलवारें निकाल लीं। इतने में कॉन्सटेबल मॉण्टमॉरेन्सी ने, जो उस समय बादशाह की नाक का बाल बना हुआ था, कमरे में प्रवेश किया, और राजकुमार को पीछे हटाकर सिपाहियों की मदद से काउण्ट को कैद कर लिया! यद्यपि हेनरी गुप्त-रूप से डायना के पास गया था, परन्तु यह खबर चारों तरफ फैल चुकी थी, और कुछ सिपाहियों के साथ मॉण्टमॉरेन्सी इस इरादे से वहाँ आया था, कि राजकुमार की रक्षा का बहाना भी हो जाय, और डायना के साथ हेनरी का प्रेम-सम्बन्ध सर्व-साधारण में प्रचारित भी हो जाय। यह कार्रवाई डायना की दुश्मन मैडम डि-एटम के सङ्केत से ही हुई थी।

"मेरे पति छुपे हुए यह सब वारदात देखते रहे। पर इतने आदमियों के मुकाबले में अकेले कुछ न कर सकते थे, इसलिए चुप खड़े हुए उचित अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। जब काउण्ट को रस्सियों से बाँधकर मजबूर कर दिया गया, तो कॉन्सटेबल ने उनको हत्या कर डालने का प्रस्ताव किया। परन्तु हेनरी ने इसे स्वीकार न किया इस पर कॉन्सटेबल ने उन्हें जन्म-भर कैद रखने की अनुमति ले ली। कैदी को कुछ सिपाहियों की सुपुर्दगी में वहीं छोड़ कर जब कॉन्सटेबल और हेनरी चले गये, और कह गये, कि कैदी को लेने उनका खास आदमी आयेगा; तो मेरे पति ने लड़-भिड़कर काउण्ट को छुड़ा लेने का अन्तिम प्रयास किया। परन्तु अफसोस! उन्हें सफलता न मिली और व आहत होकर गिर पड़े।

"जब मेरे पति को होश आया, तो उन्होंने अपने—आपको एक सुनसान गली में पड़े पाया। कॉन्सटेबल के आदमी शायद उन्हें मरा जानकर वहाँ डाल गये थे। होश में आने पर वे किसी प्रकार रेंगते-रेंगते घर तक आ पहुँचे, और मुझे यह सब हाल सुनाकर उन्होंने अगले दिन दो पहर को दम तोड़ दिया।

"मरने से पहले उन्होंने मुझसे शपथ ली कि जो बातें उन्होंने मुझे बताईं; वे मैं कभी तुमसे न कहूँ। और कहा—'जब मैं मर जाऊँ, तो तुम इस घर को बन्द कर के मालिक की रियासत में चली जाना। यहाँ के सब नौकरों को छुट्टी दे देना। रियासत में जाकर महल में मत ठहरना; इस बच्चे को अपने घर में रखकर चुपचाप पालना, जिस से दुश्मन उसे बिल्कुल भूल जायें। महल का गुमाश्ता और गाँव का मुखिया तुम्हें पूरी मदद देगा।' इसके बाद उन्होंने मुझे बताया, कि कॉन्सटेबल और उसके साथी उन्हें मरा हुआ समझते हैं, इसलिये उनके वहाँ तक आने की खबर किसी को कानों-कान मालूम न हो। अतएव उनके मरने के बाद मैंने रात के अँधेरे में उन्हें चुपचाप कब्रिस्तान में ले जाकर दफना दिया।

"इसके बाद मैं इन दुर्घटनाओं के कारण कुछ दिनों के लिये बीमार पड़ गई, और अच्छी होते ही अपने पति के आदेशानुसार आपको लेकर गाँव चली गई। थोड़े दिन तो काउण्ट मॉण्टगॉमरी और मेरे पति के एकाएक गायब हो जाने की बड़ी चर्चा रही, पर धीरे-धीरे सब लोग इस घटना को भूल गये।"

"लेकिन——" सारी कथा सुनकर जैक्री ने कहा—"सारी बात से भी तो यह मालूम नहीं हुआ, कि डायना वास्तव में

किसकी कन्या है !.........लेकिन हाँ, अगर मेरे पिता जीवित हैं, तो मैं उनका पता लगाने की पूरी कोशिश करूँगा। इस समय मैं पुत्र और प्रेमी की आँखों से उन्हें खोजूँगा। परन्तु क्या तुम बता सकती हो, उनके कहाँ कैद होने की सम्भावना है ?"

"हाँ, मेरे पति ने मुझे बताया था, कि कॉन्सटेबल ने हेनरी से बात करते समय कहा था, कि राज्य के सब से बड़े जेलखाने का गवर्नर उसका दोस्त है, इसलिये वह कैदी को वहीं भेज देगा।"

जैब्री के मुँह से एक चीख निकल गई, और आँखों से आँसू बहने लगे। सहसा बिजली की तरह उसकी आँखों-आगे उस बुड्ढे कैदी का चेहरा घूम गया, जिसे उसने जेल का निरीक्षण करते समय उस भयङ्कर कोठरी में देखा था।

१६

अगले दिन जैब्री, स्थिर गति और शान्त भाव से राजमहल की तरफ रवाना हुआ था। वह इस समय बादशाह से भेंट करना चाहता था। खूब सोच-विचार कर वह इस परिणाम पर पहुँचा था, कि बादशाह के विरुद्ध किसी प्रकार का विद्रोह करना उसके लिए लाभप्रद सिद्ध न होगा, इसलिये उसने शान्ति से काम लेने का निश्चय किया था।

रास्ते में उसकी भेंट मोशिये कार्डिनल डि-ज़ोरें से हो गई। कार्डिनल उसके साथ मित्र-भाव से पेश आया, और पूछने लगा—"किधर को ?" जब जैब्री ने जवाब दिया, कि वह बादशाह के पास जा रहा है, तो कार्डिनल बोला—"मैं भी उधर ही चल रहा हूँ।" तब दोनों साथ-साथ चल दिये।

कार्डिनल ने कहा—"बादशाह इन दिनों बहुत ही व्यस्त हैं।

मेरा ख्याल है, वे दुःखद समाचार आपको भी मिल गये होंगे ?"

"नहीं तो—कौन-से ?"

"अच्छा—कल हमारे योद्धा कॉन्सटेबिल मौंरटमौरेन्सी ने जिवरकोर्ट के मैदान में स्पेन की सेना से मोरचा लिया, और साथ में भारी सेना रहने पर भी जबर्दस्त हार खाई। खुद भी हजरत घायल हुए, और कैद हो गये। साथ में और भी बहुत-से अफसर लोग कैद हुये हैं।"

"हे भगवान!" अपने व्यक्तिगत क्लेश को भूल कर जैब्री ने मर्माहत भाव से कहा—"और सेराट क्वेरिटन की क्या खबर है ?"

"वह तो अभी तक अपने हाथ में है। सेना-नायक मोशिये डि-कौलिनी जान हथेली पर रख कर दुश्मनों का सामना कर रहे हैं। खबर है, कि उसने आत्म-समर्पण न करके जान दे देना निश्चित् किया है।"

"लेकिन सेराट क्वेरिटन हाथ से चला गया, तो फिर देश की क्या अवस्था होगी ?"

"भगवान् जाने।"

दोनों बादशाह के सामने उपस्थित हुए; डायना पोतेई भी वहीं मौजूद थी।

"ओह! मोशिये लोरें," बादशाह ने इन्हें देखते ही कहा—"कैसी भयङ्कर दुर्घटना हुई है। हमने तो स्वप्न में भी इसकी कल्पना नहीं की थी। आपके भाई तो आ रहे हैं न ?"

"जी हाँ; वे ल्यान् तक आ पहुँचे हैं।" कार्डिनल ने कहा।

"ओफ़्! अगर इस समय वह यहाँ आ पहुँचते, तो बड़ा अच्छा होता। उनके और आपके हाथों में मैं फ्रान्स की इज्जत सौंपकर निश्चिन्त हो जाता। मोशिये लोरें, आप फौरन् उन्हें पत्र लिखिये, और यहाँ की भीषण परिस्थिति का हाल साफ-साफ बता दीजिये।

याद रखिये, जो-कुछ मेरे पास है, सब आप ही का है। नीचे सवार तैयार खड़ा है, आप फौरन् पत्र लिखिये।"

"महाराज, मुझे आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि मेरे भाई सदा आपकी सेवा के लिये तैयार हैं। जो कुछ उनके बस में होगा, वे उठा न रक्खेंगे।"

"कार्डिनल पत्र लिखने चला गया, और जैब्री वहीं खड़ा रहा। फ्रान्स की दुर्दशा देखकर उसका हृदय भीतर-ही-भीतर दग्ध हुआ जा रहा था। जब बादशाह ने चिल्ला कर कहा—"हाय! अगर मेरा प्यारा शहर सेण्ट-क्वेण्टिन किसी प्रकार आठ दिन दुश्मनों के हाथ में पड़ने न पाये, तो सेनापति डि गाई यहाँ पहुँच जायेंगे। उसके बाद कोई चिन्ता नहीं। पर यदि सेण्ट क्वेण्टिन इससे पहले दुश्मनों के हाथ पड़ गया, तो स्पेन की सेना तुरन्त पेरिस आ पहुँचेगी। ओह! मैं इस समय सेण्ट क्वेण्टिन की एक-एक ईंट के लिये एक-एक हीरा दे सकता हूँ.........ओह!'

"महाराज, उस पर आठ दिन से भी ज्यादा देर तक दुश्मन का अधिकार न हो पायेगा।"

"मोशिये डि-एक्सेम! कहिये, आपका आना कैसे हुआ?"

"श्रीमान्! मैं कार्डिनल-महोदय के साथ आया था।"

"अच्छा, ठीक! मगर आपने अभी जो कुछ कहा—इससे आपका तात्पर्य क्या था?"

"महाराज, अगर कोई आदमी इस शहर की रक्षा करने में अपनी जान लड़ा दे, और उसके निवासियों को बढ़ावा देकर दुश्मनों को नाकों-चने चबा दे, तो आप उसे क्या इनाम दें?"

बादशाह ने खुशी-भरे स्वर में कहा—"जो कुछ मेरी ताकत में होगा।"

"महाराज, मैं अपने इस सौदे के लिये पहली ही क्षमा चाहता

हूँ; क्योंकि उसमें न तो रुपये-पैसे की इच्छा है, न मान-मर्यादा की कामना।"

"लेकिन वह आदमी कौन है?"

"मैं हूँ श्रीमान्! मैं आपकी पुलिस का एक क्षुद्र नायक हूँ, लेकिन मुझे अपने बाहुओं पर बेहद भरोसा है। मुझे विश्वास है, कि इस युद्ध में मैं और भी उत्साह से काम करूँगा; क्योंकि इससे मेरे देश और मेरे पिता की रक्षा ही होगी।"

"आपके पिता कौन—मोशिये डि-एक्सेम।"

"जी, मेरा नाम डि-एक्सेम नहीं; जैब्री डि-माएटगॉ मरी है। मैं जैक डि-माएटगॉ मरी का पुत्र हूँ, जिन्हें आप जानते होंगे।"

बादशाह और मैडम डि-पोतेई, दोनों की रङ्गत बदल गई।

"जी," जैब्री ने फिर कहा—"तो मैं आठ दिन तक सेएट क्वेन्टिन को दुश्मनों के प्रवेश से बचाये रखने के बदले में अपने पिता की स्वतन्त्रता चाहता हूँ।"

"मोशिये, आपके पिता, मुद्दत हुई, गायब हो चुके हैं—और इस समय शायद जीवित नहीं हैं।"

"नहीं, महाराज! मैं जानता हूँ मेरे पिता गत अठारह वर्ष से राज्य के बड़े कैदखाने में सड़ रहे हैं। मुझे नहीं मालूम, किस अपराध पर उन्हें यह कठोर दण्ड दिया गया है, परन्तु चाहे जो हो, अब उन्हें काफी से ज्यादा सजा मिल चुकी। जब उन्हें जेल भेजा गया, तो वे नवयुवक थे, और अब वे निर्बल और अतिशय वृद्ध होकर बाहर निकलेंगे। ऐसी अवस्था में उनसे किसी को हानि पहुँचने की सम्भावना नहीं। महाराज, उस अभागे कैदी पर दया कीजिये। स्मरण रखिये, जो आदमी औरों को क्षमा कर सकता है, उसे भगवान् भी क्षमा कर देते हैं।"

बादशाह और मैडम पोतेई ने भयभीत-नेत्रों से एक-दसरे

को ताका—मानो, आँखों-ही-आँखों में दोनों ने परस्पर प्रश्न-विनिमय किया ।

"महाराज, आप इस पर भी विचार करें," जैब्री ने फिर कहा—"कि न तो मैंने इस बात की शिकायत की है, कि उन्हें ग़ैर-कानूनी तौर से चुपचाप कैद कर लिया गया, और न ही मैंने अपनी सहायता के लिये फ्रॉन्स के बड़े-बड़े आदमियों की शरण ली है । मैं फ्रान्स के राज्य-चिन्ह की प्रतिष्ठा करता हूँ, और गड़े मुर्दों को उखाड़ना भी नहीं चाहता; बल्कि अभीष्ट समय तक सेण्ट क्वेन्टिन की रक्षा का भार भी अपने ऊपर लेता हूँ । श्रीमान् ! मेरी समझ में इतना सब कुछ एक वृद्ध पुरुष की स्वतन्त्रता के मुकाबले में कम नहीं है । मेरा विश्वास है, मैं अपने वचन का पालन अवश्य ही कर सकूँगा; क्योंकि मेरी भावनायें पवित्र हैं, निश्चय दृढ़ हैं और मैं भगवान् को अपनी मदद पर देखता हूँ । अगर आप शर्त करना चाहें, तो मैं दुश्मन से एक शहर छीनने तक का वचन दे सकता हूँ ।"

मैडम पोतेई ने श्लेष से मुसकुरा दिया ।

"मैडम, मैं आपकी मुसकान का तात्पर्य्य समझता हूँ । आपका खयाल है, अपना वचन पालन करने के पहले मेरा काम तमाम हो जायगा । सम्भव है, ऐसा ही हो । मेरा अनुमान गलत हो सकता है । लेकिन अगर दुश्मनों के कदम आठ दिन से पहले शहर की चहार-दीवारी के भीतर पड़ गये, तो मैं लड़ता-लड़ता अपने प्राण दे दूँगा । ऐसी अवस्था में हमारा सौदा कैन्सल समझा जायगा—मैं युद्ध-क्षेत्र में प्राण दे दूँगा और मेरे पिता उस अँधेरी कोठरी में ।"

"बात तो ठीक है ।" डायना ने बादशाह के कान में कहा ।

"लेकिन मोशिये, अगर दुर्भाग्यवश आपको अपने काम में सफलता नहीं मिली, तो मेरे पास इस बात का क्या प्रमाण

है, कि यह भेद जानकर और कोई मुझसे कुछ लाभ उठाने की चेष्टा न करेगा ?"

"महाराज, मैं शपथ-पूर्वक कहता हूँ कि अगर मैं मारा गया, तो यह भेद भी मेरे साथ ही चला जायगा। और भविष्य में कभी कोई इसका जिक्र आपसे न करेगा।"

हेनरी, जो कभी कोई निश्चय न कर पाता था, जिज्ञासु नेत्रों से डायना की तरफ देखने लगा।

"महाराज," डायना ने कहा—"अगर आप मेरी राय माँगते हैं, तो मोशिये डि-ऐक्सेम की शर्त मान लेना आप का कर्तव्य है।"

"लेकिन मोशिये, यह सब बातें आपको मालूम कैसे हुईं ?" बादशाह ने पूछा।

"श्रीमान् !" जैब्री ने गम्भीरता-पूर्वक कहा—"मेरे पिता का एक पुराना नौकर पीरा ट्रेविग्नी अपनी कब्र से उठकर सब बातें मुझे बता गया।"

"यह सुनकर तो मानो बादशाह के होश उड़ गये और डायना तो सिर से पैर तक काँप उठी। उस जमाने में प्रेतात्माओं के इधर-उधर फिरने का विश्वास सर्व-साधारण में जोरों से फैला हुआ था, और इन दोनों के गुनहगार दिल ने तुरन्त इस बात पर विश्वास कर लिया।"

"बहुत हुआ, मोशिये," हेनरी ने कहा—"मुझे आपकी शर्त्त मंजूर है; अब आप जा सकते हैं।"

बादशाह के पास से चलकर जैब्री मैडम डि-कैस्ट्रो के कमरे में पहुँचा। उसे आशा थी, कि वहाँ किसी से उसके विषय में कुछ समाचार मिल सकेगा। जैसिन्थ तो अपनी मालिकन के साथ चली गई थी, डेनी थी। जैब्री को देखते ही वह बोल

उठी—"आहा ! मोशिये डि/एक्सेम, क्या आप मेरी मालिकन की कोई खबर लाये हैं ?"

"वाह ! मैं भला कैसे लाता ?"

"आपको पता नहीं—वह कहाँ हैं ? वह सेण्ट क्वेण्टिन के आश्रम में हैं, जिसके चारों तरफ स्पेन की सेना घेरा डाले पड़ी है।"

"ठीक है।" सुनकर जैक्री ने कहा—"इस सारे घटनाचक्र में भगवान् का हाथ है। वह पुत्र की नाई मुझे प्यार करता है, और सदा मेरे मनोभावों पर ध्यान रखता है। डेनी, सुनो, और खुश होओ, कि मैं तुम्हारी मालिकन की रक्षा के लिए जा रहा हूँ।"

तब वह दौड़ता हुआ महल से नीचे उतरा, जहाँ मार्टिन गेर खड़ा हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जाते ही बोला—"मार्टिन, हम लड़ाई पर चल रहे हैं—सेन्ट क्वेण्टिन !"

"बहुत ठीक !" मार्टिन ने कहा—"दुनियाँ के कथनानुसार मैं चाहे शराबी बन गया हूं, चाहे जुआरी—मगर कायर अभी तक किसी दशा में नहीं बना हूँ।"

१७

सेना के समस्त अधिनायक और शहर के समस्त गण्यमान्य सज्जन सेण्ट क्वेण्टिन के टाऊन हॉल में जमा थे। शहर पर अब तक दुश्मनों का कब्जा नहीं हुआ था, लेकिन सबके जी छूटे हुये थे। सबकी जबान पर यही वाक्य था, कि शहर एक या दो दिन शत्रु-पक्ष के अधीन हो जायगा, इसलिये आत्म-समर्पण करके अधिक कष्टों से छुटकारा पाना ही उचित है।' गेस्पर्ड डि-कॉलिनी, सेना का साहसी नायक, भिन्न विचार रखता था। उसका ख्याल था, कि जितनी देर होगी, उतनी ही शायद देश की रक्षा का कारण बन जाय। लेकिन जॉन पिकॉय-नामक एक प्रतिष्ठित नागरिक के

सभी की गिरफ्तारी के कारण हृदय निरुत्साहित हो रहे थे। घण्टों बहस होती रही। सारे शहर के आगे दो आदमियों की क्या चलती ? कॉलिनी ने अनेक जोशीले वाक्य कह-कहकर लोगों को उत्तेजित करना चाहा, पर किसी का सिर ऊपर न उठा। आख़िर तङ्ग आकर कॉलिनी ने कहा—"अगर आप लोगों की यही इच्छा है, तो मैं कहता हूँ, कि अधिक बलिदान व्यर्थ होगा; आत्म-समर्पण करना............"

सहसा किसी ने बीच ही में चिल्लाकर कहा—"क्यों सेनापति कॉलिनी, क्या आप भी आत्म-समर्पण का विचार करने लगे ?"

"कौन है ?"

"मैं," किसानों के कपड़े पहने हुए एक आदमी ने आगे आकर कहा—"मेरा नाम विस्काऊण्ट डि-एक्सेम है। मैं राजधानी की पुलीस का कप्तान हूँ, और बादशाह की आज्ञानुसार यहाँ आया हूँ।"

"बादशाह की आज्ञा से !" बहुत सी आवाज़ें एक साथ निकलीं।

"हाँ, बादशाह की आज्ञा से—जिन्होंने अपने प्यारे क्वेण्टिनवासियों को भुलाया नहीं है। मैं तीन घण्टे पहले यहाँ पहुँचा था। इतने समय में मैंने आपकी सेना का निरीक्षण कर लिया है, और आपका वर्तमान विचार-विनिमय भी सुन लिया है। लेकिन मैंने जो कुछ देखा है—सुना उसके अनुकूल नहीं। भला आप लोगों में यह मुर्दादिली क्यों आ गई? आपने तो औरतों और बच्चों को भी मात कर दिया। सीना तान लीजिये, और हिम्मत न छोड़िये, और इसके बाद अगर आप हार भी जायँ, तो कोई चिन्ता नहीं—यह हार जीत से भी ज़्यादे शानदार रहनी चाहिये। मैंने शहर की चहारदीवारी को ध्यान-पूर्वक देखा है, और मैं कह सकता हूँ, कि आप में अभी दो सप्ताह तक अड़े रहने की शक्ति

है। उधर बादशाह चाहते हैं, कि किसी प्रकार एक सप्ताह तक यह शहर दुश्मनों के हाथ में न पड़ने पाये—उसके बाद हमारा देश सङ्कट से बच जायगा।

"मैं आपकी पूरी मदद करूँगा," वह कहता रहा—"आप में से एक सज्जन ने कहा था, कि दुश्मनों ने चार जगह से चारदीवारी तोड़ दी है, और उनकी तोपों के गोले हमारी कारीगरों को मरम्मत नहीं करने देते। इसके उत्तर में मैं आपके सन्मुख एक अत्यन्त सरल उपाय पेश करता हूँ, जिसे मैंने सिविटला के घेरे के समय देखा था। पुरानी नावों में रेत भरकर हम अस्थायी रूप से गोलों की मार से बच सकेंगे। गोले रेत में धँसकर रह जायेंगे, उधर हमारे कारीगर झटपट टूटा हुआ भाग तैयार कर देंगे। शेष तीन स्थानों में से एक पर कोई ख़तरा नहीं है; दुश्मन उधर से हमला नहीं कर सकते। रही दो जगहें, उनकी रक्षा के लिये पचास-पचास आदमी काफ़ी होंगे। आप कहेंगे, कि यह सौ आदमी कहाँ से आयेंगे ? तो उन्हें मैं आपको दूँगा।"

चारों तरफ़ आशा और आनन्द की लहर दौड़ गई।

"यहाँ से थोड़ी ही दूर परे," जैब्री ने फिर शुरू किया—"बैरन डि-बल्पर्ग अपने तीन सौ आदमियों सहित जंगल में छुपा हुआ तैयार खड़ा है। मैं चालाकी के साथ उन तीन सौ आदमियों को यहाँ लाने की कोशिश करूँगा। अगर सब नहीं आ सके, तो इसका मैं विश्वास दिला सकता हूँ, कि एक सौ आदमी ज़रूर क़िले के भीतर आ जायेंगे।"

सब के हृदय उत्साह से भर उठे और जैब्री के प्रभावशाली वक्तव्य का प्रभाव सभी ने अनुभव किया।

जीन पिकॉय ने हर्षोन्मत्त होकर कहा—"वाह! अब तो हमारे जीतने में कोई सन्देह नहीं ?"

जैब्री ने कहा—"अपनी जान लड़ा देना हमारा कर्त्तव्य है—

हार-जीत हमारे हाथ में नहीं है। मुझे तो आपसे यही कहना है, कि बादशाह आप लोगों को भूले नहीं हैं। और आपको भी अपनी करनी में कसर न रखनी चाहिए। बहुत सम्भव है, कि दुश्मनों की साठ हज़ार फ़ौज अन्त में आप पर विजय प्राप्त कर ले, लेकिन यह मत सोचिये, कि अधिक-से-अधिक समय तक दुश्मनों को शहर पर क़ब्ज़ा करने न देना आपके लिये अन्त में हानिकर सिद्ध होगा। दुश्मन की फ़ौज का नायक फ़िल्बर्ट एमानुएल एक वीर पुरुष है, और वीरता की क़द्र करता है। आपकी हिम्मत के लिये वह आपको दण्ड नहीं देगा। उधर यदि आपने दस-बारह दिन शत्रु-पक्ष को छकाये रक्खा, तो सेनापति डि-गाईं पेरिस पहुँच जायेंगे, और समस्त देश पर विपत्ति के बादल घहराने से रह जायेंगे। एक दिन ऐसा आयेगा, जब आपकी सन्तान आपकी देश-भक्ति पर गौरव का अनुभव करेगी। इसलिये दोस्तो, बोलो—फ्रान्स चिरंजीवी हो!"

"फ्रांस चिरंजीवी हो!" सैकड़ों आवाज़ें एक साथ निकलीं!

"बस अब सब चहारदीवारी पर पहुँच जायँ। सुबह से पहले कम-से-कम सौ आदमी आपकी सहायता के लिए और आ पहुँचेंगे।"

"चारदीवारी पर! चहारदीवारी पर!" चिल्लाते हुए सब लोग रवाना हो गये।

बहादुर गैस्पर्ड डि-कॉलिनी जैब्री की सारी बातें मुग्धभाव से सुनता रहा था। अब आगे बढ़कर उसने कहा—"धन्यवाद मोशिये; आपने सेण्ट क्वेण्टिन को और मुझे शर्म से बचा लिया, और फ्रांस और बादशाह को नष्ट होने से रक्षा कर ली।"

"मोशिये, अभी कुछ नहीं हुआ है! अभी मुझे बल्पर्ग के पास जाना होगा। ईश्वर जाने, मैं आदमियों के साथ राज़ी-ख़ुशी यहाँ लौट सकूँगा—या नहीं।"

१८

जैब्री और कॉलिनी कुछ देर तक बातें करते रहे, और दोनों ने बाहर के आदमियों को भीतर लाने का एक उपाय निश्चित कर लिया।

अब जैब्री को डायना का हाल-चाल जानने की इच्छा हुई। उसने आश्रम की संचालिका का नाम पहले ही मालूम कर लिया था। पता लगाकर वह उसके पास पहुँचा। उसका नाम ला मैरी मॉनिक था, और वह युद्ध में आहत सिपाहियों की सेवा-शुश्रूषा में व्यस्त थी। जैब्री के साथ वह बहुत अच्छी तरह पेश आई। जब उसने जाकर कहा, कि वह बादशाह के पास से आया है, और उसकी कन्या से भेंट करना चाहता है, तो मैरी मॉनिक ने जवाब दिया—"मोशिये डि-एक्सेम, वह यहाँ बड़े आराम से है। आज मैंने उसे कुछ विश्राम लेने के लिये आश्रम ही में ठहरने को कह दिया है। यहाँ उसने जितना परिश्रम किया है, उसकी तुलना हम में से कोई भी नहीं कर सकती। हर काम में मदद देने के लिये वह सदा तैयार रहती है। वह फ्रांस की सच्ची सेविका है। उसकी इच्छा थी, कि कोई उसका असली परिचय प्राप्त न कर सके, इसलिये यहाँ वह देवी बेनी के नाम से विख्यात है।"

"अगर मैं लौट आया, तो क्या कल उनसे भेंट हो सकेगी ?" जैब्री ने पूछा।

"आप अवश्य ही लौटेंगे, भाई साहब, और जहाँ सब से ज़्यादे चीख़-कराहट सुनें, वहीं आप देवी बेनी का दर्शन कर सकेंगे।"

हृदय में नई आशा और नया उत्साह लिये जैब्री चला।

रात अँधेरी थी। मार्टिन और वह, चुपचाप शहर से बाहर निकलकर खुले मैदानों में आये। सामने ही दुश्मनों की फ़ौजें पड़ी हुई थीं, और चारों तरफ़ पहरेदार घूम रहे थे। चलते-चलते दोनों ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ से दो तरफ़ को सड़कें गई थीं।

"मार्टिन," जैब्री ने कहा—"यह दोनों ही सड़कें हमारे गन्तव्य स्थान पर पहुँचती हैं। अगर दोनों साथ रहें, तो शायद दोनों पकड़े जायँ। इसलिये मैं एक रास्ते पर जाता हूँ, तुम दूसरे पर जाओ। मेरा रास्ता सीधा और अधिक ख़तरे का है, तुम्हारा चक्करदार, पर कम ख़तरनाक है। लेकिन याद रखना, तुम्हारा मार्ग भी दुश्मनों की आँख से बचा नहीं है। उसी तरफ़ कॉन्सटेबल डि-मॉण्टमॉरेन्सी और उसके साथियों को क़ैद किया हुआ है। इसलिये ख़ूब सम्हल कर जाना, और हर क़दम पर मुसीबत के लिये तैयार रहना।"

"आप निश्चिन्त रहिये मोशिये, मैं अपने काम में कसर न रक्खूँगा।"

"मैं," जैब्री ने कहा—"इस रास्ते से जाऊँगा। यह सड़क सीधी पेरिस को जाती है, और बेहद ख़तरनाक है। सम्भव है, मैं बीच ही में पकड़ा जाऊँ। परन्तु तुम लोग आध घण्टे से ज्यादे मेरी बाट न देखना। जो कुछ करना है—तुम्हें मालूम ही है। बस, अब विदा—भगवान् तुम्हारी रक्षा करें।"

इस प्रकार दोनों अपनी-अपनी बाट चले। मार्टिन महाशय कुछ दूर तो राज़ी-ख़ुशी चले गये, पर ज्यों ही पड़ाव के निकट पहुँचे, तो चारों तरफ़ पहरेदार-ही-पहरेदार देखकर कुछ सहम गये। सहसा मार्टिन ने अपने-आपको कई पैदल और घुड़सवार सिपाहियों के बीच में घिरा हुआ पाया। उसी समय चारों तरफ़ से आवाजें आने लगीं—"कौन है ? ख़बरदार !"

मार्टिन समझ गया, अब ख़ैर नहीं। पर उसने हिम्मत न छोड़ी, और उच्च स्वर से एक गीत गाने लगा।

"कौन जा रहा है ?" एक आवाज़ ने पूछा।

"कोई नहीं बाबा, एक ग़रीब किसान है !" मार्टिन ने लापर्वाही के स्वर में जवाब दिया, और फिर गीत गाने लगा।

"बन्द करो यह रेंकना—ठहरो ।" उसी आवाज़ ने कहा ।

मार्टिन ने सोचा, चीं-चपड़ की, और धरे गये—इसलिये ठहर गया । कहने लगा—"तोबा है बाबा ! अरे भाई, क्यों एक ग़रीब किसान को दिक़ करते रहो—पहले ही बेचारे की रात हराम कर दी गई है—मेरे बीबी-बच्चे बैठे राह देखते होंगे ।"

"क्या पता, तुम कौन हो ! शायद कोई जासूस ही हो । तुम्हें हमारे साथ नायक के पास चलना होगा ।"

"नायक के पास—अच्छी बात है, तुम भी क्या कहोगे दोस्त, मैं तुम्हारे नायक को वह खरी-खरी सुनाऊँगा, कि होश ठिकाने आ जायेंगे । मैं तो तुम्हारे ही साथियों को पड़ाव के उस तरफ रसद देकर आया—और तुम मुझे अकेला देखकर तङ्ग करते हो ! अब अगर यह काम करूँ—तो मुझे अपनी जान की क़सम; तुम्हारी फौज चाहे भूखों मर जाय, मेरी बला से । चलो तुम्हारे नायक से ही दो-दो बातें करूंगा । देख लेना पट्ठो, बन्दे को इनाम मिलेगा, और तुम्हारी खबर ली जायेगी ।"

"भाई साहब !" दूसरी आवाज ने पहली से कहा—"मेरा खयाल है, यह सच बोल रहा है ।"

"अजी, बातें तो मुझे भी धोखे में डाल रही हैं, लेकिन मुझे इसकी सूरत पहचानी हुई-सी मालूम होती है । जरा तम्बू में चलो, वहाँ तेज रोशनी में उसकी सूरत देखेंगे ।" तब मार्टिन दो सिपाहियों के घेरे में उनके साथ चला ।

ज्यों ही लैम्प की रोशनी उसके चेहरे पर पड़ी, उस पहली आवाज वाले सिपाही ने चिल्लाकर कहा—"वाह वा ! मेरा अनुमान ठीक निकला ! वही बदमाश है ! क्यों दोस्तो, आपने इसे नहीं पहचाना ?"

"हाँ, हाँ—वही है !" औरों ने भी कहा ।

"तुम लोग मुझे कैसे पहचानते हो ?" मार्टिन ने भयभीत होकर

कहा—"मैं मार्टिन कार्नेई हूँ, मैं पास के गाँव में रहता हूँ—मुझे छोड़ दो बाबा !"

तुझे छोड़ दूं—बदमाश कहीं के ।"

"तुम मुझे कौन समझते हो ?"

"अर्नाल्ड-डु-थिल !" कई आवाजें एक साथ निकलीं ।

"अर्नाल्ड-डु-थिल कौन ?"

"अच्छा, अब बातें बनाता है ।" पहली आवाज ने कहा—"तूने ही तो कहा था, कि तेरे बदले में बहुत सा रुपया मिलेगा, और मैंने इसी लालच में तुझे खूब खिलाया-पिलाया ! बदमाश, तू कल रात को मेरी आँखों में धूल झोंककर भाग गया, साथ में मेरा सारा रुपया-पैसा और मेरी प्यारी गुण्डुल को भी उड़ा ले गया !" बता, गुंडुल कहाँ है ?"

"मुझे क्या पता—कौन गुण्डुल !" बेचारे मार्टिन ने परेशान हो कर कहा—"हे भगवान् ! मेरा भूत क्या फिर मुझ पर कुपित हो गया है । भाइयो, मुझे कुछ नहीं पता—आप जो चाहें, सो करें ।"

इसके बाद उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला और उन्होंने उसे कैद कर लिया ।

१९

जब जैब्री, छुपता-छुपाता थमता-ठहरता किसी प्रकार उस जङ्गल में पहुँचा, जहाँ बैरन डि-बल्पर्ग उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो सब से पहले जो व्यक्ति उसके सामने आया, वह मार्टिन गेर था ।

"अच्छा—मार्टिन, तुम आ गये ?" उसने पूछा ।

"जी हाँ ।"

"तुम्हें आये कितनी देर हुई ?"

"करीब एक घण्टा ।"

"सचमुच—तुमने तो पोशाक भी बदल डाली है ।"

"जी हाँ ।"

"रास्ते में कोई आफत तो नहीं आई ?"

"जी नहीं !"

"अजी, आफत कैसी," बैरन डि-बल्पर्ग ने कहा—"यह हजरत तो एक खूबसूरत छोकरी को उड़ा लाये हैं। बेचारी फूट-फूटकर रो रही थी, पर इन हजरत ने पत्थर दिल होकर उसे दूसरी जगह भेज दिया !"

"क्यों जनाब, मार्टिन महाशय ! अब तो आपका पुराना रङ्ग फिर जोर पकड़ने लगा !"

"पुराना नहीं, मोशिये—नया कहिये।" उसने जवाब दिया—"लेकिन क्षमा कीजियेगा, इस समय आपको बड़ा जरूरी काम निबटाना है, मेरी फिक्र तो पीछे भी होती रहेगी।"

"जी मेरी सलाह यह है", बैरन ने कहा—"कि हम लोग आध घण्टे और रवाना न हों। अभी बारह नहीं बजा, और मैं तीन बजे से पहले सेण्ट क्वेण्टिन पहुँचना नहीं चाहता। ऐसे कामों के लिये यही समय ठीक है।"

"बिल्कुल ठीक मोशिये, यही राय सेनापति कॉलिनी की भी थी। हम अगर पहुँचे, तो तीन ही बजे वहाँ पहुँचेंगे।"

"मोशिये, हम राजी-खुशी वहाँ पहुँच जायेंगे।" अर्नाल्ड ने कहा—"मैं दुश्मन के तम्बुओं में होता हुआ आया हूँ, और मैंने एक गुप्त रास्ते का पता लगा लिया है।"

"वाह मार्टिन, शाबाश ! इतने थोड़े समय में तुमने इतना काम कर डाला !"

अब हम अर्नाल्ड-डु-थिल के कारनामों का वर्णन करेंगे।

वह अपनी नई प्रेमिका की मदद से दुश्मन की क़ैद से भाग निकला था, और एक रात और एक दिन जंगल में छिपता फिरा। दूसरे दिन रात को उसे फ्रान्सीसी सिपाहियों का एक जत्था (बैरन की सेना का) मिल गया, और तब उसने गुन्डुल को वापस खदेड़

दिया। बैरन के आदमियों ने मार्टिन गेर समझ कर उसका स्वागत किया, और उसके मालिक काऊण्ट डि-एक्सेम का हाल-चाल पूछा। पहले तो वह घबड़ाया, पर शीघ्र ही स्थिति उसकी समझ में आ गई, और अपने भाग्य पर भरोसा रखकर जिस प्रकार चाल चली, वह पाठक पढ़ चुके हैं।

निश्चित-समय पर, बैरन की सेना-सहित जैब्री ने सेण्ट क्वेण्टिन में प्रवेश किया।

२०

दिन-भर की कड़ी मेहनत ने जैब्री को थका दिया था, अतएव अगले दिन वह बहुत दिन चढ़ जाने तक सोता रहा। स्वयं सेनापति कॉलिनी ने आकर उसे जगाया, और उससे थोड़ी देर बाद होनेवाली मीटिंग में शामिल होने की प्रार्थना की।

"मैं जरा अपने आदमी से कुछ बातें कर लूँ—तब फौरन् आता हूँ।" कहकर जैब्री ने उसे विदा किया, और अर्नाल्ड को बुलाकर कहा—"प्यारे मार्टिन, आश्रम की सञ्चालिका-महोदया से कहो, कि काऊण्ट डि-एक्सेम एक घण्टे बाद देवी बेनी से भेंट करने आयेंगे।"

"बहुत अच्छा," कहकर अर्नाल्ड चल दिया। आश्रम में पहुँचकर उसने सञ्चालिका से कहा—"ओहो! माताजी, आपके दर्शन पाकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ; क्योंकि यदि आप न मिलतीं, तो आपके और मैडम डि-कैस्ट्रो के मन की मन में रह जाती, और मेरे मालिक बड़े दुःखी होते।"

"कौन हैं तुम्हारे मालिक ?"

"मेरे मालिक विस्काऊण्ट डि-एक्सेम हैं। आप तो उन्हें अच्छी तरह जानती हैं।"

"हाँ, अपने बहादुर रक्षक को मैं जानती हूँ। हमने आश्रम

में उनकी मंगल-कामना की है। लेकिन वे तो स्वयं यहाँ आनेवाले थे।"

"जी हाँ, आ तो वे स्वयं ही रहे थे, पर सेनापति कॉलिनी ने उन्हें रोक लिया है। वे चूँकि बहुत अधीर थे, इसलिये मेरे हाथ मैडम डि-कैस्ट्रो के नाम उन्होंने एक सन्देश भेजा है। अचरज न कीजिये, मैडम, मैं उनका बहुत पुराना नौकर हूँ, और उनके गुप्त भेद मुझसे छुपे हुए नहीं हैं।"

"खैर," मैरी मॉनिक ने कहा—"देवी बेनी उनके मुँह से अपने पिता का प्रेम-सन्देश सुनने को बहुत उत्सुक हैं।"

"जी हाँ," अर्नाल्ड ने जान-बूझकर शोहदों की तरह हँसते हुये कहा—"पिताजी का प्रेम-सन्देश सुनाने आयेंगे!"

"तुम्हारा क्या मतलब है?"

"ओह, मैडम! मुझे बड़ा हर्ष है, कि आपने मेरे मालिक और मैडम डि-कैस्ट्रो की प्रेम-भेंट करा दी।"

"कैसी प्रेम-भेंट?"

"वाह! क्या मैडम डि-कैस्ट्रो ने सारा हाल आपको नहीं बताया? जी हाँ, आपकी स्त्री-सुलभ लज्जा आपकी जबान रोकती है। परन्तु मैं आपके इस भाव की कद्र करता हूँ। भेद इसी तरह छुपा करते हैं। अगर बादशाह पर इस भेंट का हाल खुल गया, तो उनका क्रोध न-जाने क्या कर डाले।"

"हे भगवान्!" सञ्चालिका ने भयभीत भाव से हाथ मलते हुए कहा—"ऐसे आदमी को धोखा दिया गया—जो पिता है, और बादशाह भी है।—और मेरा नाम इस षडयन्त्र में शामिल किया गया!"

"लीजिये, अपनी प्रेमिका डायना से मिलने स्वयं मेरे मालिक-महोदय ही आ पहुँचे।"

जैसे ही जैब्री आगे बढ़ा, और सञ्चालिका से बोलने का उपक्रम किया, वह कड़ककर बोल उठी—"मोशिये विस्काऊण्ट, आप एक शब्द बोले बिना वापस चले जायँ। जान गई, आप किसी इरादे से यहाँ आये हैं। सावधान! यह आशा न रखिये, कि मैं किसी ऐसे काम में सहायता दूँगी, जो सौजन्य और मनुष्यत्व के विरुद्ध है। मैं अपने भरसक देवी बेनी को आपसे मिलने न दूँगी। मुझे मालूम है, कि वह बाकायदा शपथ लेकर आश्रम में दाखिल नहीं हुई है, लेकिन मैं उसकी इज्जत पर धब्बा न लगने दूँगी।" तब रुखाई से झुककर वह चल दी।

"यह क्या हुआ ?" जैब्री ने चकित होकर कहा।

"पता नहीं मोशिये, सञ्चालिका-महोदया मेरे साथ बड़ी बुरी तरह पेश आईं, और कहने लगीं—'बस, मुझे सब मालूम हो गया है, और मैं तुम्हारा विरोध करूँगी। मैडम डि-कैस्ट्रो अब काऊण्ट को बिलकुल प्यार नहीं करती।"

"डायना मुझे प्यार नहीं करती! अच्छी बात है, मैं खुद उससे मिलूँगा, और अपनी सचाई सिद्ध कर दूँगा। मार्टिन, उससे भेंट करने में तुम मुझे सहायता देना।"

छद्म-वेशी मार्टिन ने कहा—"मैं आपका अनुगत दास हूँ।"

२१

उस घटना को आठ दिन बीत गये। अर्नाल्ड की शरारत और मैरी मॉनिक की सतर्कता के बावजूद भी जैब्री ने डायना से भेंट कर ली। डायना से उसने वचन ले लिया, कि वह युद्ध की समाप्ति पर आश्रम छोड़कर पेरिस लौट चलेगी, और उससे विवाह करना स्वीकार करेगी। बादशाह के वादे की बात भी उसने कह दी। डायना ने सहर्ष उसका अनुरोध स्वीकार किया, और इस नवीन आशा से उत्साहित होकर वह सौ-गुने जोश से लड़ाई में योग देने लगा।

दुश्मनों की तरफ से हमले-पर-हमले होते थे, पर कॉलिनी की रण-नीति और जैब्री की हिम्मत उनकी दाल न गलने देती थी। जब आठ दिन बीत गये, और बादशाह से किया हुआ वादा पूरा हो गया, तो जैब्री के आनन्द की सीमा न रही। उसने अपने पिता की स्वतन्त्रता और डायना को प्राप्त कर लिया!

आठवें दिन की लड़ाई में उसे कई घाव लग गये थे। जब लड़ाई थमी, तो अधिक रक्त बहने के कारण वह बदहवास हो गया। लोगों ने यह देख, उसे हाथों-हाथ उठाकर आरामगाह में पहुँचाया। थोड़ी देर में उसकी तबियत सँभली, तो कॉलिनी को बिछौने के पास खड़ा देखकर उसने कहा—"सेनापति, आज का धावा बड़ा ही भीषण था; ईश्वर को धन्यवाद है, कि हमने उसे विफल कर दिया।"

"हाँ मित्र, इसका अधिकांश श्रेय आप ही को प्राप्त है।"

"ईश्वर को धन्यवाद है, कि बादशाह से वादा किये हुए आठ दिन बीत गये।"

"जी हाँ; मैंने सुना है कि मोशिये डि-गाई अपनी सेना सहित पीडमौण्ट से पेरिस पहुँच गये हैं। सेण्ट क्वेण्टिन की अब ईंट-ईंट हिलने लगी है, इसलिये हम अब अधिक देर तक दुश्मन को रोक नहीं सकते। लेकिन हमारा काम हो गया, और हमने देश को बचा लिया। जब दुश्मन हमारे साथ निपटेगा, दुःख की बात है कि इसमें अधिक देर नहीं है, तो उसके मुकाबले के लिये बहुत बड़ी शक्ति तैयार मिलेगी।"

"मोशिये, आपके शब्दों से मुझे अपार हर्ष हुआ है। लेकिन सच बताइये—अहंकारवश नहीं, सच्चे दिल से पूछता हूँ—क्या मेरा यहाँ आना आपके लिये उपयोगी सिद्ध हुआ है?"

"सब कुछ आप ही के कारण हो सका है," सेनापति ने उदार-भाव से कहा—"जिस दिन आप पहुँचे, आपको याद होगा, लोगों

के दिल टूटे हुये देखकर मैं आत्म समर्पण की राय देने ही वाला था, कि आपकी ऐन वक्त की सहायता ने हमारी सेना के दिल थाम लिये। यों तो आपने शुरू से अब तक हर काम में हिम्मत और बहादुरी की हद कर दी है, पर आज की लड़ाई में तो आपने वह जौहर दिखलाये हैं, कि मुझे भी दाँतों-उँगली काटनी पड़ी।"

सेनापति, आपके इन शब्दों के लिये अनेक धन्यवाद! पर क्या आप इन्हीं को बादशाह के सामने भी दोहरा सकेंगे?"

"वाह! यह तो मेरा कर्तव्य ही है।"

"आपकी इस बात ने मुझे अत्यन्त आनन्दित किया मोशिये, और मेरी सारी थकान और निर्बलता दूर हो गई है। आइये, अब हम अपने मनोरंजन के लिये दुश्मन को तब तक रोके रक्खें, जब तक सम्भव हो।"

उस दिन की असफलता के बाद दुश्मन तीन दिन तक प्रतीक्षा करते रहे, और गोला-बारी से चहारदीवारी को जगह-जगह से तोड़ते रहे। २६ अगस्त के दिन चहारदीवारी छिन्न-भिन्न हो गई, और शहर के मकानात साफ-साफ बाहर दिखाई देने लगे। अब उन्हें रोकना असम्भव था, और सेण्ट-क्वेण्टिन के गली-कूचे शीघ्र ही दुश्मनों के सिपाहियों से भर गये। लेकिन इस शहर ने सत्रह-दिन तक दुश्मन को रोके रक्खा, जिसमें बारह दिन का सामना जैन्नी के कारण हो सका।

२२

पहले-पहल तो शहर में बड़ी हू-हा और भगदड़ मची, परन्तु बाद में फिल्बर्ट एमानुएल के कड़े हुक्म से दुश्मन के सिपाही नगर-निवासियों पर किसी प्रकार का अत्याचार न कर सके। उसने सेनापति कॉलिनी को बुलाकर कहा—

"मैं बहादुरी के लिये दण्ड नहीं दे सकता; अगर आप शुरू में ही आत्म-समर्पण कर देते, उसकी अपेक्षा अब आपसे अधिक कड़ाई नहीं की जायगी।"

उसने बहुत उदारता दिखाई। सेण्ट-क्वेण्टिन पर स्पेन का झंडा गाड़ दिया गया, लेकिन जिन निवासियों ने शहर छोड़कर जाना चाहा, उन्हें अनुमति दे दी गई। सारे शहर में से पचास गण्य-मान्य व्यक्ति चुनने थे, जिनसे सेना का खर्चा वसूल करना था। कॉलिनी ने यह शर्त मंजूर कर ली।

लॉर्ड ग्रे-नामक एक अँग्रेज सेनानायक को जुर्माने की वसूली का हुक्म हुआ। विस्काऊण्ट डि-एक्सेस और जीन पिकॉय भी पकड़कर उसके सामने पेश किये गये। जैब्री को देखते ही लॉर्ड ग्रे ने कहा—"अच्छा—आप हैं, महाशय! आपने हम लोगों को इतना हैरान किया है, कि हर्जाने के बदले हम आपसे आधा फ्रान्स माँग लें, तो भी अनुचित न होगा।"

"हाँ, मुझसे जो हो सका, मैंने किया।" जैब्री ने जवाब दिया।

"खैर, अब स्थिति बदल गई है, और आप और आपका तेग़ा अब मेरे कब्जे में आ गये हैं। हाँ, अभी तो उसे अपने ही पास रखिये·····! जैब्री ने तलवार उसे देने के लिये म्यान से निकाली, तो उसने कहा, "लेकिन इसे पुनः उपयोग में लाने का अधिकार आपको खरीदना पड़ेगा। कहिये, आप क्या दे सकेंगे? पाँच-हजार क्राउन? कहिये, अनुचित तो नहीं?"

"हर्गिज नहीं।"

"नहीं; क्या ज्यादा हैं? अच्छा—चार हजार सही।"

"यह काफी नहीं है, जनाब।"

"क्या कहा!"

"आपने मेरा मतलब उल्टा समझा जनाब! आपने पाँच हजार की बात कही; इसके उत्तर में 'नहीं' कहने से मेरा अभिप्राय यह था, कि आपने कम माँगा। मेरी पोजीशन इससे दुगुना देने की है।"

"तब तो और भी अच्छा है! कहिये, यह रक़म आप कब अदा करेंगे?"

"आप स्वयं ही विचार कर सकते हैं, कि इतना रुपया साथ लेकर कौन चलता है ! हाँ, अगर आप मुझे किसी को पेरिस भेजने का समय दें........"

"अच्छी बात है, तो तब तक क्या आप कैले में रहना पसन्द करेंगे ? मेरे बहनोई लॉर्ड वेएटवर्थ वहाँ के गवर्नर हैं। मैं कुछ और व्यक्तियों को भी उन्हीं के पास भेज रहा हूँ।"

"अच्छी बात है," जैब्री ने अप्रतिभ भाव से कहा—"और अगर आप मुझे आज्ञा दें, तो मैं अपने आदमी को तुरन्त पेरिस रवाना कर दूँ, जिससे मैं जल्द-से-जल्द कैद से छूट जाऊँ।"

"अवश्य; और आदमी के लौटने तक आपके साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया जायगा, तथा आपको किसी प्रकार का कष्ट न होने दिया जायगा। मेरे बहनोई रहन-सहन और व्यभिचार में पूरे ऐय्याश हैं, वे आपको कष्ट न देंगे। पर मेरी बहन का देहान्त हो चुका है, इसलिये मुझे इन बातों से कोई सरोकार नहीं।"

जैब्री ने शिष्टाचारपूर्वक अभिवादन किया।

"आप कहिये मोशिये," लार्ड ग्रे ने जीन पिकॉय से कहा—"आप तो उन धनवान नागरिकों में से हैं, जिन्हें पकड़ने की मुझे खासतौर से हिदायत की गई है।"

"जी, मेरा नाम जीन पिकॉय है।"

"अच्छा हजरत, कहिये, आप क्या देंगे ?"

"कुछ नहीं जनाब।"

"छी: ! बोलो, सौ क्राउन भी दोगे ?"

"एकदम सौ क्राऊन ! खैर, मंजूर है; पर आप तो रुपया नकद नहीं चाहते न ?"

"तो क्या इतना रुपया भी तुम्हारे पास नहीं है ?"

"जी, था तो बहुत-सा, लेकिन लड़ाई के वक्त सबका सब मैंने गरीबों में बाँट दिया।"

"अच्छा, यहाँ कोई तुम्हारा दोस्त या रिश्तेदार नहीं है ?"

'जनाब, दुनियाँ में कोई किसी का दोस्त नहीं है। रही रिश्तेदार की बात, सो न मेरे औरत है, न बच्चे। अलबत्ता मेरा एक चचेरा भाई जरूर है, जो मुझे इतना रुपया उधार दे सकता है। परन्तु वह कैले में रहता है, और वहाँ तीस बरस से जिरह-बख्तर वगैरा का काम करता है।"

"अच्छी बात है, तो कल हम लोग सब कैले की तरफ चलेंगे, तब तक आप लोग शहर में चाहे जहाँ घूम-फिर लीजिये।"

चलते समय जैब्री ने जीन से कहा—"आपका क्या अभिप्राय है? क्या आपके पास सौ क्राउन भी नहीं हैं ?"

"छीः ! चुप रहिये। यह बताइये, कि आपका आदमी विश्वस्त है ?"

"हाँ-हाँ।"

"तो उसे पेरिस न भेजकर, कैले ले चलिये। हमारे जितने आदमी उस जगह को देख लें, अच्छा है। मेरा भाई वर्षों से वहाँ रहता है, और हमारे हर एक षड्यन्त्र में सहायता देगा।"

"मैं आपका मतलब समझ गया; लेकिन याद रखिये—और सब कामों से पहले मुझे अपना कर्तव्य पूरा करना है।"

"खैर, तो भी उस जगह को देख लीजिये, तब अपना यह कर्तव्य समाप्त करके, आपको सेण्ट क्वेण्टिन का बदला लेना होगा।"

२३

इसके तीन दिन बाद जैब्री, जीन पिकॉय और डायना—तीनों कैदियों को लॉर्ड ग्रे के हाथ से सम्हालकर लॉर्ड वेण्टवर्थ ने उसे बिदा किया। कैदियों को इस प्रकार लाया गया, कि न जैब्री को यह पता लगा कि डायना भी उसके साथ है, न डायना यह जान सकी कि उसका प्रेमी इतने पास मौजूद है।

लॉर्ड वेएटवर्थ एक खूबसूरत व्यक्ति था। यद्यपि उसकी काली जुल्फों में जहाँ-तहाँ दो-चार भूरे बाल दिखाई देने लगे थे, तो भी उसकी सूरत से अभी तक नौजवानी के लक्षण प्रकट होते थे। उसने अपने कैदियों का स्वागत अत्यन्त सहृदयतापूर्वक किया।

"मोशिये डि एक्सेम, आपने मेरे घर आकर बड़ी कृपा की," उसने कहा—"और आपको यहाँ भेजने के लिये मैं अपने साले-साहब का बड़ा कृतज्ञ हूँ। क्षमा कीजियेगा; इस जगह अच्छे आदमियों से मिलने-जुलनेवालों की इतनी कमी है कि आपको देखकर मेरी यह इच्छा होती है, आपके छुटकारे का रुपया आने में देर हो जाय।"

"जी हाँ, महाशय, देर ही लगती मालूम होती है; क्योंकि मेरा वह आदमी, जिसे मैं रुपया लेने के लिये भेजनेवाला था, यहाँ एक सिपाही से लड़ बैठा, जिससे उसके सिर में चोट आ गई है और इसके फलस्वरूप उसे कैले में काफी दिन तक रुकना पड़ेगा।"

"उसके लिये बुरा हुआ—मेरे लिये अच्छा।"

"आप बड़े ही अच्छे आदमी हैं" जैब्री ने मुस्करा कर कहा।

"मेरी सब से ज्यादा अच्छाई तो तब होती, जब मैं आपको आप पर विश्वास करके पेरिस चला जाने देता; परन्तु लार्ड ने मुझ से वचन ले लिया है, कि जब तक रुपया न आ जाय, मैं आपको यहीं रक्खूं। फिर भी अगर आप मुझे यह वचन दें कि आप भागने की कोशिश न करेंगे, तो मैं आपको कैले में चाहे जहाँ घूमने की इजाजत दे सकता हूँ। इतना ही नहीं, यदि यहाँ की बजाय और किसी जगह आपको अधिक आराम मिल सके, तो वहीं ठहर सकते हैं।

"अजी विस्काऊन्ट-महोदय! जीन पिर्कॉय ने कहा—"अगर आप कृपा करके मेरे भाई के घर ठहरना स्वीकार करें, तो हमें बड़े आनन्द और गौरव का अनुभव होगा।"

"मित्र, मैं आपकी कृपा का बड़ा आभारी हूँ, परन्तु मेरी समझ

में लार्ड ग्रे की उदारता का उपयोग करना, उसका अनुचित लाभ उठाना होगा।"

"जी नहीं; मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ," लार्ड वेएटवर्थ ने कहा—"आप खुशी से महाशय पिकाँय का निमन्त्रण स्वीकार कर सकते हैं। उनके भाई पीर पिकाय धनी आदमी हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ, और अनेक बार उनसे जिरह-बख्तर खरीदकर लाया हूँ। उनकी एक सुन्दरी बहन भी है। मेरी राय में आप वहाँ चले जायँ।"

"जैब्री ने अनुभव किया—और ठीक किया—कि लार्ड वेएटवर्थ किसी कारणवश उसे वहाँ से हटाना चाहता है। अतएव उसने जाने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

जब दोनों चले गये, तो लार्ड वेएटवर्थ ने अपनी खास दासी को बुलाकर कहा—"जेन, क्या तुमने उस युवती का मनोरञ्जन करने की चेष्टा की ?"

"जी हाँ।"

"अब वह कैसी है ?"

"पहले-जैसी दुःखी; लेकिन अब वह धैर्य पूर्वक, परन्तु दृढ़ स्वर में—बात चीत करती है।"

"उसने भोजन भी किया ?"

"उसने कुछ नहीं खाया।"

"अच्छा, जाकर कहो—कि लार्ड ग्रे, जिसके हाथों में लार्ड वेएटवर्थ ने उसे सौंपा है, उससे भेंट करना चाहते हैं।"

कुछ ही देर में जेन ने लौटकर कहा, कि वह उनसे भेंट करने को तैयार है।

२४

डायना बड़े साहस के साथ लार्ड वेएटवर्थ से मिली। मन की समस्त अशान्ति और व्यग्रता उसने मन में ही छिपा ली।

"आपही शायद कैले के गवर्नर लार्ड वेण्टवर्थ हैं ?" उसके प्रवेश करते ही वह बोली।

"हाँ, मैं ही हूँ, आपका अनुगत लार्ड वेण्टवर्थ, कहिये मेरे लिये आज्ञा है ?"

"आज्ञा ! आप तो मेरी दिल्लगी उड़ाते हैं। अगर मेरी आज्ञा न मान कर विनय ही स्वीकार की जाती, तो मैं यहाँ न होती। महाशय, आप मेरा परिचय जानते हैं ?"

"जी हाँ, जानता हूँ—आप बादशाह हेनरी द्वितीय की कन्या मैडम डि कैस्ट्रो हैं।"

"तब मुझे क्यों कैद रक्खा गया है ?"

"सिर्फ इसीलिये, कि आप बादशाह की कन्या हैं, और यह आशा की जाती है, कि आपके छुटकारे की बहुत-बड़ी रकम मिल सकेगी।"

"लेकिन आप लोगों को यह खबर कैसे लगी, कि मैं सेण्ट क्वेण्टिन के आश्रम में हूँ। केवल आश्रम की सञ्चालिका और एक अन्य व्यक्ति ही इस भेद से परिचित थे ?"

"उसी अन्य व्यक्ति ने आपसे विश्वाघात किया होगा।"

"नहीं, नहीं—कभी नहीं !" डायना ने ऐसे जोश के साथ जवाब दिया, कि लार्ड वेण्टवर्थ का मन न-जाने क्यों ईर्ष्या से भर उठा।

वह उसी सिल्सिले में कहती रही—"मुझे इस प्रकार गिरफ्तार करने से क्या मुराद थी ? अकेली औरत को पकड़ने के लिये तीन-तीन सिपाही भेजे गये। मैंने सेनापति कॉलिनी, या लार्ड ग्रे से भेंट करने की आज्ञा माँगी, तो वह भी ठुकरा दी गई, और कहा गया, कि मैं अब क़ैदी हूँ, और अपने छुटकारे का रुपया आजाने तक कैले में नजरबन्द रहूंगी। भला मुझसे उन लोगों से क्यों नहीं मिलने दिया गया, जो मेरे यहाँ होने की सूचना बादशाह तक पहुँचा सकते

थे, जिससे वे तुरन्त रुपया भेज कर मुझे छुड़ा सकते ? मेरे सम्बन्ध में लार्ड ग्रे की असली इच्छाएँ क्या हैं ?"

"मैडम, उनकी इच्छा तो आपके द्वारा अधिक-से-अधिक रुपया वसूल करने की थी। पहले तो उनके इस लालच पर मैंने उन्हें फटकारा, पर जब तुम्हें देखा, तो यह खूबसूरती देखकर हैरान रह गया। तब, मुझे शर्म के साथ स्वीकार करना चाहिये, मैंने आपके सम्बन्ध में उन्हें दूसरी राय दी, और कहा, कि युद्ध के वर्तमान वातावरण में आपका क़ैद रखना बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है, और समय आने पर आपके बदले में एक पूरा शहर भी माँगा जा सकता है, इसलिये कुछ फ्राङ्कों के बदले में आपको देने की सलाह मैंने उन्हें न दी।"

"ओह, मोशिये—आप बड़े निर्दय हैं ! आपने मेरी मुक्ति का विरोध क्यों किया ? आपने मुझे अच्छी तरह देखा भी नहीं—फिर मेरे प्रति आपकी घृणा का क्या कारण ?"

"हाँ, मैडम, मैंने आपको जरा ही देर देखा, और मैं आप पर मर मिटा !"

डायना भय से काँप गई।

मैडम, मुझसे डरिये नहीं," लार्ड वेण्टवर्थ ने कहा—"मैं एक भला आदमी हूँ, और अपने प्रेम की बात साफ-साफ आपसे कह देना मेरा कर्त्तव्य था। यह सच है, कि आप इस समय मेरे कब्जे में हैं, पर सच्ची बात यह है, मेरा दिल आपने अपनी मुट्ठी में कर लिया है। इसलिये मैडम, मैं तुम्हारा क़ैदी हूँ, तुम मेरी रानी हो—तुम मुझ पर अपना हुक्म चलाओ रानी !"

"तो मोशिये, मुझे तुरन्त पेरिस भिजवा दीजिये, वहाँ से जितना रुपया आप कहें, मैं भिजवा दूँगी।"

"मैडम, इसके अतिरिक्त आप मुझ से जो चाहें, करा लें। जब मैं कहता हूँ, कि केवल एक बार आपको देखकर ही मेरा हृदय

आपके साथ बँध गया है, तो इतना महान् त्याग करना मेरे लिये सम्भव नहीं। मैंने आज से पहले आपके जैसी सुन्दरी युवती नहीं देखी। कहने को, आप से मिले जरा ही देर हुई, पर मुझे ऐसा जान पड़ता है, कि मैं जन्म-जन्मान्तर से आपको प्रेम करता आ रहा हूँ।"

"लेकिन महोदय, आप मुझसे चाहते क्या हैं?"

"आपको देखना—आपकी उपस्थिति का लुत्फ उठाना। आप को यहाँ रखने का मुझे अधिकार है, और मैं उसका उपयोग करना चाहता हूँ।"

"और आपका खयाल है, कि आपकी यह जबर्दस्ती मेरा प्रेम प्राप्त कर सकेगी?"

"हर्गिज नहीं मैडम; लेकिन हर रोज मुझे दुःख और विषाद से घिरा हुआ देखकर सम्भव है, अन्त में आपको दया आ जाय।"

"तब—?"

"तब लार्ड वेण्टवर्थ, जो इङ्गलैंड के एक वंश से सम्बन्ध रखता है, आपके चरणों में अपना नाम और जीवन उत्सर्ग कर देगा।"

"तो, माई लार्ड!" डायना ने कहा—"इसका उत्तर एक वाक्य में है। वह यह कि मैं किसी दूसरे को प्यार करती हूँ।"

"तो क्या मैं अपने प्रतिद्वन्दी के उपभोग के लिये आपको छोड़ दूँगा? हर्गिज नहीं, जैसे मैं सदा जलूँगा—वैसे ही वह भी जीवन भर जलेगा। मैं आपको यहाँ से जाने न दूँगा।" कहते हुए लार्ड वेण्टवर्थ चला गया, और डायना भय और आशङ्का से काँपती हुई रह गई।

२५

तीन हफ्ते बीत गये, और तीनों कैदियों की अवस्था में कोई अन्तर न पड़ा। जीन पिकॉय अलबत्ता सौ क्राउन देकर मुक्त हो चुका था और उसने अब कैले में ही व्यवसाय करने का इरादा किया था। यद्यपि उसे इसकी जल्दी नहीं मालूम होती थी। सारे दिन

वह शहर की चहारदीवारी के आस-पास चक्कर लगाया करता था, और पहरेदारों और सिपाहियों से बात-चीत करने में समय बिता देता ।

पर जैब्री दिन-दिन अधिक उदास होता जाता था । पेरिस से उड़ती हुई सी खबरें आती थीं । फ्रांस अब संभल गया था और स्पेन की फौजों को मुँह तोड़ जवाब दिया जा रहा था । इन समाचारों से उसे परम हर्ष प्राप्त होता था, क्योंकि इनमें बहुत हद तक उसका हाथ था, लेकिन अपने पिता का और डायना का विचार उसे सदा चिन्तित रखता था । उसका मन अब इतना उदास रहने लगा कि गवर्नर के मित्रता-पूर्ण वाक्य भी विष-से मालूम पड़ते थे । गवर्नर उसे हफ्ते में तीन बार अपने यहाँ बुलाकर भोजन कराता था, और अकसर उससे मिलने पीर पिकॉय के घर आता था, परन्तु जैब्री समझता था, कि यह उसकी चौकीदारी करने का एक सौजन्यपूर्ण ढंग है । वह व्यग्र भाव से अपने आदमी (छद्मवेशी मार्टिन गेर) के अच्छा होने की बाट देख रहा था, पर अभी कुछ कसर थी । जैब्री हर रोज उसे जाने की प्रेरणा करता था, पर पीर पिकॉय की बहन बैबेट सदा ही आँसू-भरे नेत्रों से उसके पास आती और कहती कि अभी उसकी दशा अच्छी नहीं है, इसलिये इस दशा में सफर करने पर अवश्य ही उसकी मृत्यु हो जायगी । इस नये प्रणय पर मन-ही-मन मुस्कराते हुए जैब्री को उसकी प्रार्थना स्वीकार करनी पड़ती थी ।

आखिर एक दिन अर्नाल्ड का जाना स्थिर हो गया ।

जिस दिन वह जाने वाला था, उससे पहिली सन्ध्या की बात है ! जैब्री नियमानुसार लार्ड वराटवर्थ के यहाँ भोजन करने को गया था । जैसे ही वह वापस आ रहा था, एक औरत उसके पास आई और उङ्गलियों में छिपाया हुआ एक कागज उसने उसके हाथ में दिया ।

जैक्री बड़ा चकित हुआ, पर आस-पास किसी को न देखकर उसने कागज खोला। उसमें लिखा था—

"मोशिये, मैं आपको नहीं जानती; अब तक आपसे साक्षात् नहीं कर सकी हूँ, लेकिन मेरी एक परिचारिका ने मुझे बताया है कि कि आप फ्रान्सीसी हैं, और मेरी ही तरह यहाँ नजरबन्द हैं। इस बात ने मुझे आप तक अपनी प्रार्थना पहुँचाने का साहस दिया है। आपने तो शायद अपने छुटारे का रुपया मँगाने का इन्तजाम कर लिया होगा, और आप शीघ्र ही पेरिस जाने वाले होंगे; आपको मेरे बहुत से मित्र मिलेंगे, जो यह भी नहीं जानते कि मैं कहाँ पर हूँ। आप कृपा करके मेरा पता दे देवें, कि मैं यहाँ पर हूँ, और लार्ड वेएटवर्थ मुझे किसी से बात-बीत करने का मौका नहीं देता। वह रुपया लेकर मुझे छुटकारा देने को तैयार नहीं है, और मेरी बेकसी से अनुचित लाभ उठाकर मुझ पर अपना प्रेम प्रकट करने यहाँ आया करता है। उसके अभिनय से मैं डर के मारे मरी जाती हूँ। न जाने कब वह बदी पर उतर आये। मुझे आशा है कि आप एक सज्जन पुरुष हैं, और मेरे देशवासी हैं; इसलिये अवश्य मेरी सहायता करेंगे। अब मैं आपको अपना परिचय देती........"लेकिन यहाँ आकर मजमून सहसा समाप्त हो गया था, जैसे कोई बीच में आ पड़ा हो, और पत्र को बिल्कुल न देने की अपेक्षा इसी अवस्था में दे देना उचित समझा गया हो।

इसे पढ़कर जैक्री का दिल हिल उठा। वह वहीं खड़ा कुछ सोच ही रहा था, कि लार्ड वेएटवर्थ ने प्रवेश किया।

"अच्छा! अभी आप यहीं हैं—जैक्री महाशय!" उसने कहा—"क्यों—क्या हुआ?"

उत्तर में जैक्री ने वह पुर्जा उसके हाथ में दे दिया।

"तोबा! फिर रोग का दौरा आ गया!" पढ़कर उसने कहा।

जैब्री ने पूछा—"माई लार्ड, यह क़ैदी कौन है, जिसे आप उसकी इच्छा के विरुद्ध यहाँ टिकाये हुए हैं ?"

"उसकी इच्छा के विरुद्ध ! ठीक ही है। बात यह है, कि वह मेरी पत्नी के दूर के रिश्ते की मासी है। उसका दिमाग खराब हो गया है। उसके और कोई था नहीं, इसलिये उसका भार जबर्दस्ती मेरे सिर पड़ गया है। अब आपको जब हमारा यह घरू भेद मालूम ही हो गया है, तो सारी बातें ही बता देनी चाहिये। उसका नाम लेडी-हाक है, और प्रेम-सम्बन्धी किस्से-कहानियाँ पढ़ते-पढ़ते वह पागल हो गई है; अब उसके दिमाग में सिर्फ़ यही विचार घूमता रहता है, कि वह अत्याचार का शिकार बनी हुई एक नायिका है; और इस-लिये वह जिस नवयुवक को यहाँ देखती है, उसी को अपनी तरफ आकृष्ट करना चाहती है।"

"अजाब कहानी है!" जैब्री ने कुछ अविश्वास के स्वर में कहा—"मगर वह अपने-आपको फ्रान्सीसी क्यों बताती है ?"

लार्ड वेस्टवर्थ ने जबर्दस्ती मुस्कराकर कहा—"आपको प्रभावित करने के लिये।"

"लेकिन यह प्रेम की बात—जिसके लिये वह कहती है, आप उस पर प्रकट करते हैं ?"

लार्ड वेस्टवर्थ ने उपेक्षा के भाव से कहा—"पागलपन के दुस्स्वप्नमात्र हैं !"

"लेकिन आप उन्हें गुप्त क्यों रखते हैं ?"

"मोशिये जैब्री, मैं तो समझता था, आप में यह खोज-बीन की गन्दी आदत नहीं है। खैर, देखिये—पौने नौ बज चुके हैं, और आपको कर्फ्यू का घण्टा बजने से पहले अपने डेरे पर पहुँच जाना चाहिये। अगर लेडी हाक के विषय में आपको इतनी दिलचस्पी है, तो मैं कल और बहुत-सी उनकी बातें आपको सुनाऊँगा।"

जैब्री डेरे पर लौटा, लेकिन पत्र पढ़कर जो सन्देह उसके मन में पैदा हो गया था, वे एकबारगी दूर न हो सका। परन्तु उसने लार्ड वेएटवर्थ से फिर कभी इस विषय में जिक्र न करने का निश्चय कर लिया, और स्वयं ही पता लगाने का मौका ढूँढ़ने लगा। अगले दिन अर्नाल्ड चल पड़ा। जाते-जाते जैब्री ने उसे जल्द से जल्द रुपया लेकर लौटने की ताकीद कर दी। यह ठीक नहीं कहा जा सकता, कि उसके जल्दी लौटने के लिये जैब्री ज्यादा उत्सुक था, या बैबिट; लेकिन दोनों ही को एक मुद्दत तक प्रतीक्षा करनी थी!

२६

रास्ते में अर्नाल्ड को इङ्गलैंड और स्पेन के अनेक फौजी दस्ते मिले, जिन्होंने उसे रोका। पर लार्ड वेएटवर्थ के पत्र के आधार पर किसी ने उसका कुछ न किया। फिर भी इस रोक-थाम ने उसे इतना उत्तेजित किया, कि अगले दिन उसने जङ्गल-जङ्गल जाना स्थिर किया। थोड़ी दूर आगे बढ़कर उसे सहसा एक आदमी दिखाई दिया, जो पलक-मारते कूदकर एक गड्ढे में छिप गया।

अँधेरा हो गया था। अर्नाल्ड ने उसे कोई चोर या डाकू समझ कर अपनी चाल तेज की, पर जब उधर से किसी को आते न देखा, तो उ । उत्सुकता हुई, और वह गड्ढे की तरफ बढ़ा। सहसा वह आदमी उछलकर बाहर आ गया, और अर्नाल्ड की टाँग पकड़कर उसने इतने जोर का झटका दिया, कि वह अपने घोड़े से लुढ़ककर दूर जा पड़ा। तब आततायी झपटकर उसकी छाती पर सवार हो गया, और कहने लगा —"बता—तू कौन है ?"

"कृपा करके मुझे छोड़ दो। मैं हूँ तो फ्रान्सीसी, मगर मेरे पास कैले के गवर्नर लार्ड वेएटवर्थ का 'पास' मौजूद है।"

"अगर तुम फ्रान्सीसी हो, तो मुझे पास देखने की जरूरत नहीं। लेकिन यह बताओ, तुम मेरी तरफ क्यों आये थे ?"

"मैंने आपको गड्ढे में गिरता हुआ सा देखा, और इसलिये उधर आया, कि आपको सहायता की आवश्यकता तो नहीं है।"

"यह बात!—तब तो आपकी सद्भावनाओं के लिये अनेक धन्यवाद।" उसने कहा—"इसमें सन्देह नहीं, कि मैंने आपके साथ ज्यादती की है, परन्तु मेरी मनस्थिति इस समय अच्छी नहीं है, इसलिये आप मुझे क्षमा करें। आप मेरे देशवासी हैं, और अवश्य मेरी सहायता करेंगे। मेरा नाम मार्टिन गेर है—आपका ?"

"मेरा—मेरा है बर्ट्रंण्ड!" अर्नाल्ड मन-ही-मन काँपते हुए उस व्यक्ति के निकट अपने-आपको पाकर, जिसके साथ उसने बेहद बदी की थी, कहा। उसके सौभाग्य से इस समय अँधेरा काफी बढ़ चुका था, और वह अपनी आवाज बदलकर बोल रहा था, इसलिये मार्टिन गेर उसे पहचान न सका।

"अच्छा, तो महाशय बर्ट्रंण्ड, सुनिये," मार्टिन गेर ने कहा—"मेरी दास्तान सुनिये। मुझे स्पेन वालों ने कैद कर लिया था। मैं आज दूसरी बार उनके फन्दे से छूटकर भागा हूं। एक महीने से वे लोग मुझे तङ्ग किये हुए थे। गुडुल नाम की किसी लड़की को उड़ा ले जाने का इल्जाम वे मुझ पर लगाते थे। आखिर एक दिन मैं भाग निकला, पर उन्होंने पकड़ लिया, और मुझे खूब मारा, और धमकी दी, कि अगर फिर भागने की कोशिश की, तो वे मुझे फाँसी पर लटका देंगे। लेकिन उनकी धमकी के बावजूद भी मैं फिर निकल भागा, और कल से अब तक दुश्मनों की निगाह से बचता हुआ, भूखा-प्यासा, फिर रहा हूँ।"

"अभी-अभी तो आपमें भूख की कमजोरी का कोई लक्षण था नहीं!"

"तो अब आप मेरी कुछ मदद करेंगे ?"

अर्नाल्ड ने क्षण-भर कुछ सोचा; क्योंकि वह न तो यह चाहता था, कि मार्टिन उसे पहचाने, और न ही उसे यह अभीष्ट था,

कि वह उसके साथ-साथ पेरिस तक पहुँचे, जिसके फल-स्वरूप उसकी शरारत का भण्डा-फोड़ हो जाय। सोचकर वह बोला—"मैं आपको रास्ता बता दूँगा। आपके साथ थोड़ी दूर चल कर मैं आपको एक ऐसी सड़क पर डाल दूँगा, जो सीधी पेरिस पहुँच जाती है।"

"धन्यवाद; पर क्या आप मुझे कुछ खाने को नहीं दे सकते—क्योंकि मैं भूख के मारे मरा जा रहा हूँ।"

"अफसोस! खाने को मेरे पास कुछ नहीं है। हाँ, शराब की एक बोतल जरूर है; सो हाजिर है।"

"हाँ, हाँ; थोड़ी-सी शराब पीने से मेरी कमजोरी दूर हो जायगी।"

"तो लीजिये," कहकर अर्नाल्ड ने बोतल दे दी।

मार्टिन ने खूब छककर पी, और खाली पेट पर शराब ने तुरन्त अपना असर दिखाया। मजे में आकर कहने लगा—"वाह वा! आपकी क्लैरेट तो बड़ी पुर-लुत्फ़ है!"

"नहीं जनाब, यह उतनी तेज नहीं है। इसको तो मैं दो बोतल एक दफा में चढ़ा जाता हूँ। अच्छा, अब थोड़ी देर बैठकर आराम कर लूँ, तब मैं आपको ले चलूँगा।"

तब अर्नाल्ड ने उसे बातों में लगा लिया, और क्लैरेट का पेग पर पेग देने लगा। मार्टिन भी नशे में मदहोश होकर अपनी सारी गाथा गा गया। अपने बीवी-बच्चों के नाम, अपनी जवानी के दिन, अपने सगे-सम्बन्धियों का परिचय और गिरफ़्तारी से लेकर अब तक का सारा हाल उसने अनाप-शनाप भाषा में कह सुनाया।

"जब गप-शप हो चुकी, और दोनों चलने को तैयार हुए, तो ऊपर उठने का प्रयत्न करते हुए मार्टिन लड़खड़ाकर बैठ गया। अपनी यह हालत देखकर उसने जोर से हँसते हुए कहा—

"वाह ! यह मुझे क्या हुआ ? नशा तो हो ही नहीं सकता। लो दोस्त, जरा मेरी मदद तो करो।" कहकर उसने जोर-जोर से गाना शुरू कर दिया।

"चुप !" अर्नाल्ड ने डपटकर कहा—"क्या मरवाने का इरादा है ?"

"धत् ! अब कौन हमारा कुछ बिगाड़ सकता है ?"

"अच्छा, चलो, इस समय तो सराय में चलकर आराम करते हैं। चलो, मैं एक हाथ से तो घोड़े की लगाम पकड़ता हूं, और दूसरे से तुम्हें सहारा देता हूं।"

"अच्छी बात है—आपको धन्यवाद। मालूम होता है, मेरा दिमाग जरा कुछ तेजी पर आ गया है।"

तब अर्नाल्ड उसे बाँह का सहारा दिये हुए पास के गाँव में पहुँचा, जिस पर इन दिनों स्पेन वालों का कब्जा था, और जहाँ से मार्टिन भाग निकला था।

चलते-चलते दोनों फौजी चौकी के पास पहुँचे। तब अर्नाल्ड ने उधर सङ्केत करके कहा—"मुझे कुछ जरूरी काम है; वह सामने सराय रही, तुम जोर से आवाज दो। जो आदमी भीतर से निकले, उसे अपना नाम बता देना, और मेरा नाम लेकर कहना—मैंने तुम्हें भेजा है। वह मेरा भाई लगता है, और तुम्हें भीतर कर लेगा।"

"आपका धन्यवाद है भाई," मार्टिन ने जवाब दिया—"मैं तो तुम्हारी नेकी का बदला दे नहीं सकता, पर भगवान् तुम्हें कर्मों का फल अवश्य देगा।"

उसकी यह बात सुनकर अर्नाल्ड क्षण-भर के लिये सिर से पैर तक सिहर उठा। एक बार उसकी इच्छा भी हुई, कि उस गरीब को वापस बुला ले; लेकिन मार्टिन ने जोर-जोर से दर्वाजा पीटना शुरू कर दिया था।

"कौन है ?" सन्त्री ने पुकारा।

"अर्नाल्ड डु थिल—नहीं, मार्टिन गेर !" उसने उत्तर दिया।

"क्या—अर्नाल्ड डु थिल ! लो दोस्तो—आ गया !" सन्त्री चिल्लाया, और एक पेड़ की आड़ में छिपे हुए अर्नाल्ड ने कई आदमियों को यह कहते हुए सुना—"वही है ! वही है !"

अपने पुराने दुश्मनों को पहचानकर बेचारे मार्टिन गेर ने ऐसी दर्दनाक चीख मारी, कि कठोर-हृदय अर्नाल्ड भी एक बार थर्रा उठा। इसके बाद कुछ खींचा-तानी और मार-पीट की-सी आवाज़ आई। थोड़ी देर बाद आवाज़ बन्द हो गई, और अर्नाल्ड वहीं पेड़ की आड़ में छिपकर सो रहा।

तड़के चार बजे ही वह उठ खड़ा हुआ, और सतर्कता-पूर्वक आम सड़क की ओर जा ही रहा था, कि शहर के ऐन बाहर उसे एक टिकटी पर किसी की लाश लटकती हुई दिखाई दी। उसने पहचाना—वह बेचारा मार्टिन था। उसके मुँह पर एक पैशाचिक मुस्कान दिखाई दी, और उसने तलवार निकालकर रस्सी काट दी। इसके बाद उसने मार्टिन की उँगली में से अँगूठी उतार ली, और उसको जेबें टटोलीं। उनमें से बहुत-से काग़ज-पत्र निकालकर उसने अपनी जेब के हवाले किये, और चलता बना।

इसके आध घंटे बाद एक लकड़हारा उधर से निकला। उसने रस्सी को टिकटी में लटकते और मुर्दे को ज़मीन पर पड़े हुये देखा। जब वह धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ा, तो मुर्दे ने सहसा सिर घुमाया, और हाथों को हरकत दी। अन्त में धीरे-धीरे वह उठकर बैठ गया। लकड़हारे ने यह लीला देखी, तो सिर पर पैर धरकर दौड़ लिया।

२७

छुटकारे का रुपया जमा करके हमारे पुराने दोस्त कॉन्सटेबिल

डि० मॉटगॉमरी पेरिस पहुँचे, और बादशाह के सम्मुख उपस्थित हुए। लेकिन बादशाह उसके साथ बहुत रुखाई से पेश आया, और सेनापति डि-गाई की प्रशंसा करने लगा। क्षुब्ध होकर कॉन्सटेबिल डायना डि-पोतेई के पास पहुँचा, पर यहाँ भी क़रीक-क़रीब वैसा ही व्यवहार मिला। तब क्रोध से आग-बबूला होता हुआ वह अपने घर लौटा। वहाँ अर्नाल्ड आया हुआ बैठा था, जिसे देखकर कॉन्सटेबिल की बाँछे खिल गईं। बोला—"कहो अर्नाल्ड, तुम यहाँ कैसे ? मैं तो समझ रहा था, तुम क़ैद हो !"

"जी हाँ, था तो सही !"

"कैसे छूटे ?"

"जी, रुपये से क्या नहीं होता ? मुझे अपने छुटकारे के लिये बड़ी भारी रक़म ख़र्च करनी पड़ी है, और अब मैं सख़्त ज़रूरत में हूँ !"

"क्या कहा ?"

"जी, मुझे क़र्ज़ लेकर रुपया अदा करना पड़ा था।"

"मैं तो इस वक़्त ख़ुद ज़बर्दस्त परेशानी में हूँ।"

"मोशिये ग़लती करते हैं।"

ग़लती करता हूँ !—हाँ, तुम्हें सब कुछ मालूम रहता है। यह भी मालूम होगा, अब बादशाह मेरे पुत्र को अपनी कन्या नहीं देगा ?"

"मेरा ख़याल है, कि वह यदि आप के द्वारा बादशाह को ला दी जाय, तो अवश्य आपकी इच्छा पूर्ण होगी।"

"क्या कहा ?"

"क्या आप को पता नहीं, सेण्ट-क्वेण्टिन की पराजय के बाद से डायना का पता नहीं है ?"

"नहीं ; मैं तो कल ही रात को लौटा हूँ।"

"अच्छा, अगर आप बेटी के वियोग में विकल बादशाह को उसका पता बता दें, तो क्या वे आप पर प्रसन्न न होंगे ?"

"तो क्या तुम्हें पता है ?"

"पता रखना तो मेरा व्यापार ही है। मैं तो ख़बरें बेचता हूँ। देख लीजिये, यह ख़बर ख़रीदने क़ाबिल है, या नहीं।"

"सब देखता हूँ भाई, लेकिन डायना का पता बताने या ला देने से ही क्या होगा ?—वह तो काउण्ट डि-एक्ससेम को चाहती है।"

"तो सोचिये डि-एक्सेम को उड़ा देना होगा।"

"नहीं, मुझे ऐसी ख़तरनाक हरकत नहीं करनी।"

ओह—आप मेरा मतलब नहीं समझे। मैं रक्त-पात की बात नहीं कहता। मेरा मतलब है, कि डायना के आ जाने पर किसी तरकीब से विस्काउट को काफ़ी समय तक यहाँ न आने दिया जाय। कहिये, तब तो शादी हो जायगी न ? अब इसके बदले में आप मुझे क्या दिलवाते हैं ?"

"क्या चाहते हो ?"

"सब से पहिले तो, अब तक का हिसाब साफ़।"

"मञ्जूर। और कुछ ?"

"जी, मैंने अब आवारागर्दी छोड़कर शान्ति-पूर्वक अपने बीवी-बच्चों में रहना स्थिर किया है।"

"तुम्हारे बीवी-बच्चे ! मेरा ख़याल तो था, तुम बिल्कुल अकेले आदमी हो।"

"ओ हो, सरकार, मेरा असली नाम मार्टिन गेर है, और मैं ओंटइन-ग्राम में अपने बीवी-बच्चों को छोड़कर इधर चला आया था। बस, अब मुझे यही कहना है, कि दो काम करने के बाद मैं आप से बिदा लूँगा, और अपने मित्रों और कुटुम्बियों के साथ आनन्द-पूर्वक जोवन-यापन करूँगा।"

"अच्छा तो, तुम्हारा इरादा क्या है ?"

"जी, मैं यह चाहता हूँ, कि आप मुझे इस मज़मून का एक प्रमाण-पत्र दे दें, कि मैं—मार्टिन गेर—बहुत दिन तक आपके यहाँ

नौकर रहा, और बहुत ईमानदारी से कार्य करता रहा। अन्त में नौकरी छोड़ने पर आपने सुख से भावी जीवन बिताने लायक़ रुपया देकर मुझे बिदा कर दिया।"

"असम्भव ; मैं ऐसा झूठा प्रमाण-पत्र कदापि नहीं दे सकता।"

"जी नहीं, झूठा कहाँ है ? मैं आपकी सेवाएँ तो की ही हैं। और इसके अतिरिक्त, यह तो आपस का फ़ैसला है ; आप स्वीकार करें, या न करें।"

"नहीं; पहले मुझे बताओ, कि मैडम डि कैस्ट्रो और विस्काउण्ट डि-एक्सेम कहाँ हैं।"

"जी, दोनों एक जगह क़ैद हैं।"

"क़ैद हैं ? तो विस्काउण्ट तो रुपया देकर छूट जायगा।"

"जी हाँ, उसने रुपया लाने के लिये आदमी भी भेज दिया है।"

"फिर हमारे किये क्या हो सकता है ?"

"मोशिये, सौभाग्यवश मैं ही मार्टिन गेर के नाम से उसके यहाँ नौकरी कर रहा था, और मुझी को उसने रुपया लाने के लिये भेजा है।"

"तो रुपया तुम्हें नहीं मिला ?"

"वाह ! मिलता क्यों नहीं ? अब यही दस हज़ार क्राउन मेरे आगामी जीवन को सुखी बनायेंगे, अगर आपसे प्रमाण-पत्र मिल जाय, तो सोने में सुगन्ध हो जाय।"

"नहीं, मैं एक चोट्टे के षड्यन्त्र में मदद नहीं दे सकता।"

"अच्छा, तो यह रुपया उसके पास पहुँचा दीजिये, और वह आ मौजूद होता है।"

"और अगर नहीं पहुँचायें ?"

"तो उसके आने में समय लगेगा। महीना-डेढ़ महीना तो वह मेरी प्रतीक्षा करेगा, फिर दूसरा आदमी भेजेगा, जिसे इतनी ही मुद्दत और लग जायगी। बस, इतने वक़्त में तो आप दो बार

शादी कर सकते हैं।......कहिये, अब प्रमाण-पत्र लिखा-लिखाया पेश कर दूँ ? आपको उस पर सिर्फ़ हस्ताक्षर करने होंगे।"

"लेकिन पहले डायना और विस्काउण्ट के क़ैद होने की जगह का नाम बतलाओ।"

"नाम के बदले नाम है, मोशिये—पहले हस्ताक्षर कीजिये।"

मॉण्टगॉमरी ने हस्ताक्षर कर दिये।

"मोहर कीजिये।"

"लो, मोहर भी लो; अब तो बताओ।"

तब उसने पता बता दिया, और कॉन्स्टेबिल उसी दम राज-महल की तरफ़ चल दिया।

२८

बेचारे जैब्री और डायना की स्थिति में एक महीना बीत जाने पर भी कोई अन्तर न पड़ा। पीर पिर्कोय अपने-अपने ज़िरह-बख़्तर के कारख़ाने में व्यस्त था, जीन ने बुनाहट का काम शुरू कर दिया था, और बैबिट बेचारी रो-रोकर दिन काटती थी। जैब्री भी व्यग्र भाव से मार्टिन के लौटने की इन्तज़ार करता रहा। अब वह लॉर्ड वेण्टवर्थ के यहाँ भी कम आता-जाता था; क्योंकि उस दिन की बात-चीत के बाद उसका व्यवहार कुछ रूखा हो गया था।

लॉर्ड वेण्टवर्थ खुद भी रोज़-रोज़ अधिकाधिक विषण्ण और दुःखी नज़र आने लगा। यद्यपि हेनरी द्वितीय की तरफ़ से तीन सन्देश आ चुके थे, कि वह चाहे जितनी रक़म लेकर डायना को छोड़ दे, पर उन पर उसने ज़रा भी कान न दिया था। इन तीनों सन्देशों में पहला नम्रतापूर्ण था, दूसरा कड़ाई के साथ लिखा हुआ और तीसरे में धमकियाँ दी गई थीं। इन तीनों का एक ही उत्तर उसने दिया था। वह यह कि या तो कभी किसी अपने महत्वपूर्ण क़ैदी के बदले में वह मैडम डि-कैस्ट्रो को देगा, अथवा युद्ध समाप्त

होने तक अपने यहाँ मेहमान की तरह रक्खेगा। इस प्रकार बादशाह हेनरी की चिन्ता उसे न थी, उसे तो दुःख इस बात का था कि उसकी दीनता और प्रार्थना का असर डायना पर ज़रा भी न हुआ। जब कभी उसके मुँह से प्रेम का एक शब्द निकलता, वह उसे इस बुरी तरह डाँटती कि वेण्टवर्थ का हृदय टूक-टूक हो जाता।

उसने उस से न तो उस पत्र का ज़िक्र किया था, जो उसने गुप्तरूप से जैब्री के पास पहुँचाया था, और न बादशाह के सन्देशों की बात सुनाई थी। पर दासी का आना बन्द हो गया देखकर डायना ने स्वयं ही अनुमान कर लिया था, कि उसका भेद खुल गया!

अक्तूबर का आख़िरी दिन था, और जैब्री अपने छुटकारे का रुपया लाने के लिये दूसरा आदमी भेजने की अनुमति माँगने लॉर्ड वेण्टवर्थ के घर पर उपस्थित हुआ। लॉर्ड वेण्टवर्थ उस समय किसी काम में व्यस्त था, उसने जैब्री से कुछ देर ड्राइङ्ग-रूम में प्रतीक्षा करने को कहला भेजा। जब जैब्री वहाँ बैठा हुआ इन्तज़ार कर रहा था, तो उसे सामने खिड़की के शीशे पर कुछ लिखा हुआ दिखाई दिया। वह ज़रा आगे बढ़ा, तो साफ़ लिखा हुआ था 'डायना डि-कैस्ट्रो'। पलक मारते उसके दिमाग़ में बहुत सी बातें चक्कर लगा गईं। उसी समय लॉर्ड वेण्टवर्थ ने कमरे में प्रवेश किया। जैब्री ने बिना कुछ कहे-सुने खिड़की की लिखावट की तरफ़ संकेत कर दिया।

लॉर्ड वेण्टवर्थ पहले तो ज़र्द पड़ गया, पर फिर सम्हलकर बोला—"तो क्या हुआ ?"

"क्या आपकी उसी पागल रिश्तेदार का यही नाम है ?"

"हो सकता है।" लॉर्ड वेण्टवर्थ ने क्रोधित होकर कहा।

"अगर ऐसा है, तो महाशय, मैं इन महिला को एक फ्रान्सीसी

की हैसियत से अपनी प्रतिष्ठा-भाजन समझता हूँ।"

"तो फिर ?"

"मैं आप से पूछता हूँ, कि आपने इन्हें क्यों क़ैद कर रक्खा है ?"

"अगर मैं आपके इस प्रश्न का उत्तर न दूँ, जैसा कि मैंने फ्रान्स के बादशाह के साथ किया ?"

"फ्रान्स के बादशाह के साथ ?"

"हाँ, मोशिये, एक अंग्रेज फ्रान्स के बादशाह से कदापि नहीं दब सकता; ख़ासकर उस अवस्था में, जब कि वह अपने ही प्रांत में रहता हो। इसलिये, मैं उनके या आपके प्रश्न का उत्तर देने को बाध्य नहीं हूँ।"

"नहीं, आपको मुझे संतुष्ट करना होगा।"

"वर्ना आप मुझे अपनी तलवार के घाट उतार देंगे ? आपको याद रखना चाहिए, कि यह तलवार मैंने आपको उधार दी हुई है, और उस पर आपका अधिकार नहीं है।"

"अच्छी बात है! आपको इसका फल भोगना पड़ेगा।"

"आपको याद रखना चाहिये महाशय, कि आप युद्ध के कैदी हैं, और अपने कर्जदार का गला काटकर उऋण होना आपके लिये उचित नहीं है।"

"माई लॉर्ड !" जैब्री ने शान्त स्वर में कहा—"आपको पता है, कि मैंने एक महीने से अपना आदमी रकम लाने के लिए पेरिस भेजा हुआ है। अवश्य ही वह किसी दुर्घटना का शिकार हुआ है। आज मैं आप से किसी दूसरे आदमी को भेजने की अनुमति लेने आया हूँ। मुझे आशा है, कि आप मेरा यह अनुरोध अवश्य स्वीकार करेंगे।"

लॉर्ड वेण्टवर्थ ने क्षण-भर विचारकर कहा—"मोशिये, आपने कई बार मेरे अविश्वास पर खेद प्रकट किया है, कि मैं आपको

स्वयं पेरिस जाकर रुपया भेज देने की मोहलत नहीं देता।"

"हाँ, किया तो है।"

"अच्छा, तो आज से आप स्वतन्त्र हैं। कैले के द्वार आपके लिये खुले हुये हैं।"

"मैं आपका मतलब समझ गया, आप मुझे मैडम डि-कैस्ट्रो से दूर हटाना चाहते हैं। अच्छा, अगर मैं जाने से इन्कार कर दूँ ?"

"मैं यहाँ का मालिक हूँ, इसलिये आपके स्वीकार या इन्कार का कई मूल्य ही नहीं है।"

"अच्छी बात है, तब मैं अभी चला जाऊँगा, पर अब मैं आपकी इस अनुमति के लिये कृतज्ञ नहीं हो सकता।"

"मुझे आपकी कृतज्ञता की आवश्यकता नहीं है।" लॉर्ड वेण्टवर्थ ने रुखाई से कहा।

"महाशय, मैं जाता तो हूँ, पर अधिक समय तक आपका क़र्ज़ सिर पर नहीं रक्खूँगा। मैं शीघ्र ही रक़म लेकर लौटूँगा, और तब मैं न आपका क़ैदी रहूँगा और न ऋणी। इसलिये उस समय आप मेरे साथ लड़ने से इन्कार नहीं कर सकते।"

"इन्कार तो करना ही पड़ेगा, मोशिये।" लॉर्ड वेण्टवर्थ बोला—"क्योंकि हमारी परिस्थिति एक-दूसरे से भिन्न है। मुझे मालूम है, कि मैडम डि-कैस्ट्रो आपको प्यार करती है। अगर मैंने आपको मार दिया, तो वह मुझ से घृणा करने लगेगी, और अगर मैं आप से हार गया, तो वह आपको अधिक प्यार करने लगेगी। लेकिन ख़ैर, मैं आपका चैलेंज स्वीकार करता हूँ। अभी तीन बजे हैं, और दस बजे शहर का दर्वाज़ा बन्द होता है। मैं हुक्म भेज दूँगा, कि आपको जाने दिया जाय।"

"अच्छी बात है, माई लॉर्ड, सात बजे के बाद मैं कैले में नहीं रहूँगा।"

"और आप दोबारा उसमें प्रवेश भी नहीं कर सकते। शहर के

बाहर हमारे-आपके दो-दो हाथ हो जायेंगे। अगर मुझे मार दिया, तो मैं मरते-मरते इस विषय का फ़रमान दे जाऊँगा, कि आपको मैडम डि-कैस्ट्रो के पास न पहुँचने दिया जाय।"

"हर्गिज नहीं; मैं उससे मिलूँगा—और फिर मिलूँगा!"

"कैसे ?"

क्षण-भर को रुककर जैब्री ने कहा—"माई लॉर्ड, मैं कैले को विजय करूँगा।" कहकर वह चल दिया, और लार्ड वेराटवर्थ चकित होकर यह सोचता रह गया, कि यह बात उसने दिल्लगी में कही, या धमकी दी!

जैब्री लौटकर जीन पिकॉय के पास आया, और सारा माजरा सुनाया। घण्टे-भर बाद तैयारी का सब सामान करके, जब वह बाहर आया, तो बैबिट खड़ी हुई मिली।

"क्या आप अवश्य ही लौटेंगे मोशिये ?"

"मैं कसम खाता हूँ।"

"आपके साथ मार्टिन गेर भी तो आयेगा ?"

"ज़रूर।"

"क्या पेरिस में अवश्य आप उसे पालेंगे ? आदमी ऐसा बुरा तो है नहीं; आपकी रकम लेकर भागनेवाला नहीं है। ऐसा विश्वास-घात करना उसके लिये सम्भव नहीं!—क्यों ?"

"नहीं बेईमान तो नहीं है; अलबत्ता पिछले कुछ दिनों से उसमें परिवर्तन अवश्य दिखाई देता है।"

"तो क्या वह किसी भोली-भाली लड़की को धोखा दे सकता है ?"

"इस विषय में मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"खैर, मोशिये," बेचारी बैबिट ने आशंका से पीली पड़कर कहा—"क्या आप कृपा करके यह अँगूठी उसे दे सकेंगे ? वह इसका मतलब समझ जायगा—और उसके भेजनेवाले का नाम भी।"

"मैं दे तो दूंगा," जैब्री ने आश्चर्य्य से कहा—"लेकिन इस

अँगूठी का प्रेषक क्या यह जानता है, कि वह विवाहित है ?"

"विवाहित ! ओह ! तब, मोशिये इसे उसको न देना—उसे तोड़ दीजिये, फेंक दीजिए।"

"लेकिन बैबिट, सुनो तो............"

"बस, नमस्कार मोशिये !" कहकर बैबिट अपने कमरे में भाग गई, और एक आराम कुर्सी में पड़कर बेहोश हो गई।

कुछ उदास मन से जैब्री नीचे उतरा। वहाँ जीन पिकॉय उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"मोशिये डि-विस्काऊण्ट," उसने कहा—"आप अकसर मुझ से पूछा करते थे, कि मैं इतनी लम्बी-लम्बी रस्सियाँ क्यों तैयार किया करता था। उसका जवाब मैं अब आपको देता हूँ। ऐसी दो रस्सियों को मिलाकर आसानी से एक बहुत बड़ी सीढ़ी तैयार हो सकती है। हम और पीर शहर की पुलीस में नौकर हो गये हैं, और ऑक्टेगन बुर्ज पर अकसर पीर की ड्यूटी रहती है। हम दोनों एक-एक, दो-दो करके इन रस्सियों को उस बुर्ज पर पहुँचा सकते हैं, और दिसम्बर या जनवरी की किसी अँधेरी रात में, जब हम में से किसी का वहाँ पहरा हो, तो हम बुर्ज की मज़बूत कीलों में इन सीढ़ियों को बाँधकर दूसरा सिरा समुद्र में लटका सकते हैं। वहाँ कोई हिम्मत कर नौकारोही अगर उन्हें पा जाय............"

"लेकिन, मेरे बहादुर दोस्त............"

"मोशिये, इस समय बस कीजिये। मैं आपको एक उपहार देना चाहता हूँ। वह कैले की दीवारों और रक्षण-स्थलों का नक्शा है। दिन-रात शहर में चक्करदण्ड लगा मैंने इसे तैयार किया है। बस, नमस्कार।"

बाहर के दर्वाज़े पर पीर से भेंट हो गई। उसने कहा—"मोशिये, मैं आपको एक वस्तु भेंट करना चाहता हूँ। यह एक नरसिंहा है, जिसे मैंने स्वयं तैयार किया है, और उसकी आवाज़ में कड़कती

बिजलियों में भी पहचान सकता हूँ। उदाहरण के लिये, जब मैं, हर महीने की ५ तारीख़ को ऑक्टेगन बुर्ज पर चढ़कर पहरा देता हूँ, जो कि समुद्र से बिल्कुल सटा हुआ है.............।"

"धन्यवाद !" कहकर जैब्री ने इस प्रकार उसका हाथ दबाया, जैसे वह उसका मतलब समझ गया हो।

"मेरे पास बहुत-से अस्त्र-शस्त्रों का संग्रह है, जो समय आने पर इस शहर के सारे फ़ान्सीसियों में बाँटे जा सकते हैं।"

"ठीक !" कहकर जैब्री ने फिर उसका हाथ दबाया।

"अच्छा, नमस्कार !"

"नमस्कार—मैं शीघ्र ही मिलूँगा !" जैब्री ने घोड़े की पीठ पर सवार होते हुए कहा।

२९

पेरिस पहुँचने में जैब्री को चार दिन लगे। अब तक वह बराबर अपने पिता और डायना की क़ैद के विषय में चिन्तित था। उसे विश्वास था, कि हेनरी अवश्य अपने वचन का पालन करेगा, और अब वह अपने पिता को मुक्ति दिलाने में समर्थ होगा।

सुबह के वक़्त वह अपने घर पर पहुँचा। एलोई जाग गई थी, और शीघ्र ही उसने जैब्री को अपनी छाती से चिपका लिया।

"हाय, मेरे प्यारे पुत्र—आख़िर तुम आ गये ! आ गये !"

"कहो एलोई, दरबार की कोई नई ख़बर तो नहीं ?"

"कोई नहीं, मोशिये।"

"ख़ैर ! मैं क़ैदी था, और मुर्दों से भी बदतर था, इसलिये मेरी तरफ़ किसी का ध्यान न देना स्वाभाविक था। अब मैं स्वतन्त्र हूँ; मेरे मुँह-मुकाबले कोई अपने वादे से नहीं फिर सकता।"

"ज़रूर।"

"क्या सेनापति कॉलिनी पेरिस में ही हैं ?"

"हाँ, उन्होंने दर्जनों बार पुछवाया है, कि आप अभी आये, या

नहीं। हाँ, मैडम डि० कैस्ट्रो का पता, जो एक मुद्दत से ग़ायब थीं, कॉन्सटेबल डि-मॉण्टमॉरेन्सा ने लगा लिया है। वह कैले के अँग्रेज़ गवर्नर..............."

"इसका मुझे भी पता है। मगर मार्टिन गेर कहाँ है ? इसी की वजह से मुझे इतने दिन क़ैद रहना पड़ा।"

"वह यहीं है मोशिये।"

"यहीं है! तब से यहाँ क्या कर रहा है ?"

"वह बीमार पड़ा है। कहता है, उसे फाँसी पर लटका दिया गया था।"

"फाँसी पर!—शायद मेरा रुपया लूटने के लिये ?"

"हाँ, आपके छुटकारे का रुपया। अब आप स्वयं जाकर उस पाजी से पूछिये, और सुनिये—उसका जवाब। वह एक दिन सहसा यहाँ आया था, और आपकी चिट्ठी के मुताबिक़ मैंने उसे दस हज़ार क्राउन दे दिये थे। कुछ ही दिन बाद वह ख़राब-ख़स्ता हालत में फिर आ मौजूद हुआ। कहने लगा कि उसने मुझसे कोई रक़म नहीं ली, और पिछले तीन महीने से वह दुश्मनों की क़ैद में था। कहता है, कि आपने उसे एक काम सौंपा था, वह रास्ते में पकड़ा गया, और अन्त मे फाँसी पर लटका दिया गया। किसी तरह जान बचा-कर यहाँ आ पाया है।"

"एलोई, यह अजीब बात सुन रहा हूँ। मुझे विश्वास है, कि मार्टिन इतना ईमानदार और विश्वस्त आदमी है, कि मेरी रक़म हड़प जाने का सन्देह उस पर कदापि नहीं किया जा सकता।"

"मेरा भी यही विश्वास है, लेकिन मुझे सन्देह है, कि उसका दिमाग़ ख़राब हो गया है। मैं सत्य कहता हूँ, मैंने उसे रुपया दे दिया था। बल्कि इलियट को उतना रुपया एक दम इकट्ठा करने में दिक्क़त भी उठानी पड़ी थी।"

"उस बेचारे को तो ख़ैर और दिक्क़त भी उठानी पड़ेगी।

लेकिन फ़िलहाल इस चिन्ता को छोड़ो, मुझे तुरन्त राजमहल जाना है।"

"यह क्या मोशिये ! बिना सुस्ताये ! अभी तो केवल सात ही बजे हैं, नौ बजे तक राज-भवन में कोई घुस ही नहीं सकता, और बादशाह बारह बजे से पूर्व किसी से नहीं मिलते।"

"उफ़ ! अब भी कुछ घण्टे प्रतीक्षा में काटने होंगे !"

इसी समय मार्टिन गेर अपने मालिक की आवाज पर कमरे में घुस आया।

"अहा ! मोशिये," उसने उछलकर कहा —"आप आ गये !"

लेकिन जैब्री ने रुखाई से कहा—"आ तो गया, मार्टिन, लेकिन तुमने अपनी मुस्तैदी खूब दिखाई !"

"क्या ! आप भी मुझ पर दोष लगाते आये !" मार्टिन ने सिहरकर कहा—"आपसे तो मुझे अपनी निर्दोषिता का प्रमाण मिलने की आशा थी।"

"क्या तुम्हें याद नहीं रहा, मैंने तुमको अपने छुटकारे की रकम लाने के लिये भेजा था ?"

"जी नहीं, मुझे नहीं भेजा। क्या मैं आपके साथ धोखेबाजी कर सकता था ?"

"नहीं, मार्टिन, मैं तो अभी-अभी स्वयं एलोई से यही बात कह रहा था। लेकिन यह भी तो सम्भव है, कि किसी ने तुम्हें लूट लिया हो, या मेरे पास लौटते हुए रकम तुमसे खो गई हो !"

"आपके पास लौटते हुए ! मैं कसम खाता हूँ, कि जिस दिन हम लोग रात में सेण्ट-क्वेण्टिन से चले, उसके बाद मैं आप को आज ही देख रहा हूँ। भला मैं आपके पास कहाँ लौटता ?"

"कैले को—और कहाँ ? यह असम्भव है कि तुम कैले को यों भूल गये हो !"

"मोशिये, मैं जीवन-भर में कभी कैले नहीं गया।"

"और बैबिट ?"

"कौन बैबिट ?"

"वह—जिसका तुमने सर्वनाश किया है !"

"ओ हो—आपका मतलब गुड्डल से है ? आप गलती कर रहे हैं।"

"अच्छा—किसी और को भी फाँसा ! खैर, उसको मैं नहीं जानता ; मैं तो केवल बैबिट पिकॉय को जानता हूँ।"

"देखिये मोशिये, यहाँ सब लोग मुझे पागल कहते हैं। मेरा विश्वास है, कि अगर अब तक मैं पागल नहीं था, तो अब जरूर हो जाऊँगा। बहरहाल इस वक्त मेरी स्मरणशक्ति बिल्कुल अच्छी हालत में है, अगर आप कहें, तो मैं पिछले तीन महीनों का अपना हाल ब्यौरेवार कह सुनाऊँ।"

"हाँ, हाँ, अवश्य कहो।"

तब मार्टिन ने सारा हाल कह सुनाया। फाँसी पाने बाद में जब वह होश में आया, तो गले में रस्सी तब तक बँधी थी, जो शायद किसी चोर ने काट दी थी; क्योंकि उसकी विवाह की अँगूठी गायब थी। अन्त में उसने कहा—"इसके बाद मैं दुश्मनों की नजर से बचता-बचता जंगल की जड़ी-बूटियों पर गुजारा करता हुआ, किसी तरह यहाँ पहुँचा।"

"अच्छा, तो मार्टिन, अब मैं इस से भिन्न एक कहानी तुम्हें सुनाऊँगा, जिसकी सत्यता के अनेक साक्षी हैं।"

"शायद मेरे भूत की कहानी ! कहिये, मैं उसे सुनकर बड़ा हर्षित होऊँगा।"

इसी समय एलोई ने प्रवेश किया, जिसके पीछे-पीछे किसानों की सी पोशाक पहने हुए एक आदमी आ रहा था।

आते ही वह बोली—"लीजिये, यह आदमी मार्टिन गेर की मौत का सन्देश सुनाने आया है।"

"मेरी मौत का ?"

"हे भगवान् !" उस पर नजर पड़ते ही किसान ने कहा—"यह क्या हुआ मोशिये। आप फिर मेरे सामने मौजूद हैं। मुझसे कसम ले लीजिये, कि मैंने यथा-साध्य शीघ्रतापूर्वक आपकी आज्ञा का पालन किया है ? आप घोड़े पर सवार थे, इसीलिये जल्दी पहुँच गये।"

लेकिन मैं तो तुम्हें जानता नहीं !" मार्टिन ने कहा।

"आप मुझे नहीं जानते ? क्या आपने ही मुझ से नहीं कहा था, कि यहाँ आकर मैं यह कह दूँ कि मार्टिन गेर को फाँसी दे दी गई और वह मर गया ?"

"लेकिन मार्टिन गेर तो खुद मैं ही हूँ।"

"आप—नहीं, आप भला अपनी मृत्यु का समाचार क्यों भेजते ?"

"कब और कहाँ, मैंने तुम्हें यह सन्देश दिया ?"

"तो क्या अब सारी बात ही कह डालूँ ?"

"हाँ, हाँ !"

"जब आपकी याददाश्त इतनी कमजोर है, और आप खुद ही सब कुछ कह देने का आग्रह कर रहे हैं, तो मुझे कहना ही पड़ेगा। आज से छः दिन पहले, सुबह के वक्त जब कि मैं मालिक का खेत जोत रहा था; तो मैंने आपको आते हुए देखा। आपने पूछा—"क्या कर रहे हो दोस्त ?"

"मैंने जवाब दिया—'जनाब, खेत जोत रहा हूँ।'

"इस पर आपने पूछा—'एक दिन में क्या कमा लेते हो ?'

"मैंने कहा—'यही चार-छः आने।'

"आपने कहा—'दो हफ्ते में बीस क्राउन कमाना चाहते हो ?'

"इस पर मैंने जवाब दिया—'क्यों नहीं ?"

"यह सुनकर आप बोले—'तेजी से दौड़ते हुए पेरिस जाओ, और वहाँ विस्काउण्ट डि-एक्सेम के घर का पता लगाना। काउण्ट तो स्वयं वहाँ होंगे नहीं, पर तुम उनकी प्रधान दासी एलोई को बुलाना और कहना, मैं स्पेन के कब्जे में आये हुए एक गाँव नॉयन से आया हूँ, जहाँ पर अभी हाल में मार्टिन गेर-नामक एक आदमी को फाँसी हुई है, और उसका सारा रुपया छीन लिया गया। लेकिन फाँसी से पहले उसने मौका पाकर मुझ से यह सब हाल आप तक पहुँचाने को कह दिया, ताकि आप मालिक के लिये दोबारा छुटकारे का रुपया भेज दें, और मुझे मेरे पारिश्रमिक-स्वरूप दस क्राउन इनाम दे दें। और आपने दस क्राउन मुझे पेशगी दे दिये।

"हाँ, जब मैं आने को तैयार था, तो मैंने पूछा—'अगर मैडम एलोई ने पूछा, कि फाँसी पानेवाले की शकल-सूरत कैसी थी, तो क्या जवाब दूँगा ?' तो आपने जवाब दिया—'मेरी शक्ल देख लो, ठीक मेरे-जैसी सूरत बता देना।'

"कैसे अचरज की बात है !" जब्री ने हैरान होकर कहा।

"मैं तो आपका सिखाया हुआ सबक ही यहाँ दोहराने आया था। मारा-मारा चलने पर भी मुझे छः दिन लग गये। लेकिन देखता हूँ, आप यहाँ पहले से ही मौजूद हैं।"

"यह आदमी झूठ बोलता है," एलोई ने कहा—"क्योंकि यह कहता है, मार्टिन उससे छः दिन पहले मिला था। पर वह तो बहुत दिन से यहाँ खटिया में पड़ा है।"

"वह जरूर मेरा भूत रहा होगा।" मार्टिन ने गर्दन हिलाकर कहा।

"धत् !" एलोई ने चिल्लाकर कहा।

"नहीं," जैब्री ने कहा—"इस आदमी ने सच्चाई प्रकट कर दी।"

"मोशिये, मैं कसम खाकर कहता हूँ, कि मेरी एक-एक बात सच है। उम्मीद है, आप मुझे दस क्राउन अवश्य ही देंगे।"

"हाँ भाई, अवश्य दे देंगे, पर तुम अपना नाम-पता यहाँ छोड़ जाओ; किसी दिन तुम्हारी जरूरत पड़ सकती है।" तब एलोई से कहा—"अब मैं जाता हूँ; क्योंकि बादशाह के पास जाने के पहले मुझे कार्डिनल और सेनापति डि-गाई से मिलना है।"

"तो आप बादशाह से भेंट करके तो तुरन्त लौटेंगे न ?"

"जरूर, मेरे विषय में चिन्ता करने की जरूरत नहीं। और तुम मार्टिन, यहीं रहो; विश्वास रक्खो, तुम्हारे साथ इन्साफ किया जायगा। इस समय मुझे अकेले जाना है, इसलिये तुम कष्ट न करो।"

बाहर निकलकर जैब्री जब कई सड़कें पार कर चुका, तो सहसा एक आदमी पर उसकी नजर पड़ गई, जिसने अपने शरीर में लम्बा ओवरकोट लपेट रक्खा था, और सिर पर तिर्छा टोप लगाया हुआ था, जिससे उसके चेहरे का अधिकांश भाग छिप गया था। उसने सहसा जैब्री के पास आकर धीरे-से कहा—"जैब्री !"

"कौन ! मोशिये डि-कौंलिनो ? आप इतने सबेरे यहाँ कैसे ?"

"चुप ! मैं नहीं चाहता कि कोई इस समय मुझे पहचाने, मगर तुम्हें देखकर मुझे ठहरना पड़ा। तुम से बिछुड़े हुए इतने दिन बीत गये, कि मैं तुम्हारे विषय में चिन्तित हो रहा था। कहो, कब आये ?"

"अभी आया हूँ, और आपसे मिलना भी चाहता था; इसके बाद बादशाह से भेंट करनी है।"

"तो थोड़ी दूर मेरे साथ चलो, और सुनाओ—इतने समय में तुम्हारे साथ क्या बीती।"

"सब सुनाऊँगा। लेकिन यह बताइये कि आपने बादशाह से मेरे सम्बन्ध में कुछ कहा था?"

"हाँ, जो कुछ तुम्हारी इच्छा थी, सब कह दिया था?"

"तब उन्होंने क्या जवाब दिया?"

"भाई, सुनकर तुम अचरज करोगे, लेकिन बादशाह ने मेरी उन बातों को, जो तुम्हारी तारीफ में कही गई थीं, टाल दिया। तुम्हें याद होगा, कि मैंने एक बार तुम से कहा था—कि बड़े आदमियों पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।"

"हाँ, वास्तव में बादशाह ने मुझे मरा समझकर आपका वचन भुला दिया, पर मैं अब उन्हें याद करा दूँगा।"

"लेकिन अगर वे इस पर ध्यान न दें?"

"सोचिये, राजा जब किसी प्रजा-जन के हाथ अन्याय करे, तो प्रजा को केवल भगवान् का भरोसा है, और भगवान् उसी के द्वारा अपना बदला लेने की योजना करता है।"

"तुम्हें याद है," कौलिनी ने कहा—"मैंने एक बार अत्याचार-पीड़ित प्रोटेस्टेण्ट लोगों का बदला बादशाहों से लेने के विषय में तुम से कुछ बात-चीत की थी?"

"हाँ, याद है और शायद किसी दिन मैं तुम्हारी स्कीम में योग देने लगूँ।"

"अच्छा, क्या तुम्हारे पास घण्टा-भर का समय है?"

"बादशाह से दोपहर को भेंट होगी, तब तक मैं खाली हूँ।"

"अच्छा, तो मेरे साथ आओ। तुम एक सज्जन पुरुष हो, मैं तुम से कोई कसम नहीं लेता, सिर्फ सीधा-सादा वादा लेना चाहता हूँ, कि तुम मेरे साथ चलकर जिन आदमियों से मिलो, और जिस जगह जाओ, उसका जिक्र किसी से न करोगे।"

"अच्छी बात है।"

३०

सेन्ट जैक्स मोहल्ले में पहुँचकर कॉलिनी ने एक ऐसे मकान के दर्वाज़े पर दस्तक दी, जो बाहर से देखने पर बहुत ही पुराना और गन्दा दिखाई देता था। तब, एक के बाद कई द्वार खुले, और कॉलिनी ने अन्त में एक बहुत बड़े कमरे में प्रवेश किया। इस कमरे के बीच में एक ताड़ की मेज़ और उसके चारों तरफ़ चार स्टूल रक्खे हुए थे।

"कप्तान साहब, आपके और अपने थियोडोर के लिये मैं एक नया मित्र लाया हूँ, जो अगर भूत और वर्तमान में हमारे साथ नहीं था, तो शायद भविष्य में हो जाय।"

उन्होंने झुककर अभिवादन किया, और जैब्री उन्हें सुविधा-पूर्वक बात-चीत करने का अवसर देने के लिये एक तरफ़ हट गया। कुछ देर बाद कॉलिनी ने उसके पास आकर कहा—"आप मुझे क्षमा कीजियेगा, लेकिन मुझे अपने साथियों को आपका परिचय देना आवश्यक था।"

"मुझे भी उनका परिचय मिल सकता है ?"

"हाँ, इसी कमरे में जॉन काल्विन ने सुधारक-दल की पहली गुप्त सभा की थी। वह इस समय जेनेवा में स्वच्छन्द रीति से अपनी शक्ति का उपयोग कर रहा है, लेकिन इस मकान की हरेक दीवार में उसकी आत्मा मौजूद है, और वह हमें हमारे गन्तव्य स्थान की ओर चला रही है।"

"लेकिन ये लोग कौन हैं ?"

"उसके अनुयायी। थियोडोर डि बेज़े तो बड़ा भारी लेखक है, और ला रिनॉद एक नम्बर का तलवरिया है।"

"मोशिये डि-एक्सेम," थियोडोर डि-बेज़े ने कहा—"आप को कुछ सतर्कता के साथ यहाँ लाया गया है, लेकिन आप हमको

किसी हालत में षडयन्त्रकारी या ख़तरनाक आदमी न समझ लीजियेगा। मैं आपको बताये देता हूँ, कि हमारे धार्मिक नेता सप्ताह में तीन बार यहाँ एकत्रित होते हैं, और उनका उद्देश्य सिर्फ़ यही होता है—कि भिन्न-भिन्न स्थानों में सुधारक-दल की सफलता पर विचार करें, या उन लोगों का स्वागत करें, जो हमारे पवित्र कार्य में योग देना चाहें। आपको यहाँ लाने के लिये मोशिये डि-कॉलिनी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं; क्योंकि आप अवश्य हमारे लिये एक मूल्यवान् सहायक सिद्ध होंगे।"

दूसरे ने कहा—"मैं आपको यह ख़ुशख़बरी भी सुना दूँ—कि शीघ्र ही एम्ब्रोई पारे भी हमारे दल में शामिल हो जायेंगे।"

"किसके द्वारा?" बेज़े ने पूछा।

"मिनिस्टर चाँडियाँ के द्वारा।"

"कहिये, मोशिये, आपने गम्भीरता-पूर्वक विचार कर लिया है?"

"जी, अभी नहीं; मैं प्रत्येक कार्य सत्यतापूर्वक करना चाहता हूँ। सच्ची बात यह है, कि मुझे अभी तक कुछ सन्देह बाकी हैं। उन्हें दूर करने के बाद ही मैं आप की योजना में पूरे दिल से शामिल हो सकूँगा। इन सन्देहों को दूर करने के लिये मैं आपकी मीटिंग में शामिल हुआ करूँगा, और सम्भव है, स्वयं कॉलविन महोदय से भी मिलने की इच्छा प्रकट करूँ।"

"ठीक है!" ला रिनोंद बोले।

"अब," जैब्री ने कहा—"मैं यह समझ गया, कि मैं किन से बातें कर रहा हूँ, और मेरे दोस्त मुझे यहाँ किस लिये लाये हैं। लेकिन मैं आप लोगों से अभी यह पूछना चाहूँगा, आप का उद्देश्य और सिद्धान्त क्या है?"

"इसमें किसी का व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है। हम वास्तव में राजदरबार की स्वेच्छाचारिताओं से ऊब उठे हैं। हमारा ख़याल है, कि हरेक आदमी को अपना अच्छा-बुरा सोचने की स्वाधीनता

होनी चाहिये; किसी पोप, पादरी, या किसी राजा को भी एक आदमी को ज़बर्दस्ती किसी पर ईमान लाने पर मजबूर करने का अधिकार नहीं है।"

"मोशिये, आपके शब्दों में बड़ा तीखापन और विद्रोह भरा हुआ है।" कॉलिनी ने कहा।

"विद्रोह नहीं—क्रान्ति कहिये।"

"अब कहिये मोशिये"—बेज़े ने कहा—"आप हमारे साथ शामिल होंगे ?"

"मैं आप से केवल इतनी ही रिआयत चाहूँगा, कि मुझे अपने साथ परामर्श करने का समय दीजिये, ताकि मेरे सामने जो-जो कठिनाइयाँ आवें, उन्हें मैं हल कर सकूँ।"

"आपको इससे भी ज्यादे सुविधायें मिलेंगी; सीधे कॉलिवन महोदय के साथ आप का पत्र-व्यवहार जारी करा दिया जायगा।"

"यह मेरा परम सौभाग्य होगा !"

"वह जैसा नेता है, आप वैसे ही सिपाही भी हैं, इसलिये आपका पत्र-व्यवहार होना आवश्यक है। आप अपने पत्र ला रिनोंद को दे दिया करेंगे, और वे उन्हें जेनेवा भेजने का प्रबन्ध कर देंगे।"

"लेकिन एक बात है," जैब्री ने कहा—"कि मैं सुधारक-दल के लिये मन में चाहे जितनी सहानुभूति और प्रतिष्ठा रखता होऊँ, लेकिन आपके साथ मिलकर लड़ने में मेरा एक व्यक्तिगत स्वार्थ होगा, जिसे आपके पवित्र अनुष्ठान में मैं शरीक नहीं करना चाहता। मैं अनुभव करता हूँ, कि अच्छा हो, यदि आप मुझे अपने साथ न मिलायें।"

"मोशिये, ईश्वर भिन्न आदमियों को भिन्न मार्गों पर चलाता है।"

"माननीय महोदय, आप मुझे क्षमा करेंगे, लेकिन मेरे मन में

बरबस यह जानने की इच्छा होती है, कि क्या आपके पास इतनी शक्ति है, जो बादशाह का विरोध कर सके ?"

पहले तो सब-के-सब अकचकाकर मुँह ताकने लगे, फिर बेजे ने जवाब दिया—"मोशिये डि-एक्सेम, इस प्रश्न से आपका कुछ भी अभिप्राय हो, मैं उसका सीधा और साफ जवाब दूँगा। भगवान का धन्यवाद है, कि हमारे साथ न केवल सत्यता है, बल्कि शक्ति भी है। हमारी उन्नति बड़े वेग से हुई है। पिछले तीन वर्ष के भीतर-भीतर फ्रान्स के प्रत्येक नगर में सुधारकों के गिरजाघर खुल गये, और जिस प्रकार जनता के दल-बादल इन गिर्जों में उपासना के लिये आते हैं, यह किसी से छिपा नहीं है। मेरा विश्वास है, कुल देश की जन-संख्या का कम-से-कम पाँचवाँ भाग हमारे साथ है।"

"अगर ऐसा है, तो मैं सहर्ष आपके साथ काम करने को तैयार हूँ।"

"यह एक अत्यन्त पवित्र कर्त्तव्य है, युवक !" लॉ रिनॉद ने कहा—"याद रक्खो, अगर एक बार इस भार को उठाना स्वीकार करते हो, तो फिर सदा अपने वचन का पालन करते रहना। यह धार्मिक कार्य है, और इसकी पूर्त्ति करते समय सब प्रकार की व्यक्तिगत भावनाओं को भूल जाना होगा।"

जैब्री क्षण-भर के लिये विचार में पड़ गया। फिर स्थिर स्वर में बोला—"मञ्जूर है !"

रिनॉद ने कहा—"हम आप पर पूर्ण विश्वास रखेंगे; क्योंकि आपकी हिचक ने हमारा सन्देह दूर कर दिया है।"

"आपकी इस कृपा के लिये आभारी हूँ। अब मैं आप से आज्ञा चाहता हूँ; परन्तु आपकी शिक्षा कभी न भूलूँगा।"

"चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ," कॉलिनी ने कहा—"मैं चाहता हूँ, कि तुम्हारे विषय में जो बातें मैंने बादशाह से कही थीं, उन्हें एक बार तुम्हारे सामने ही दोहरा दूँ।"

"मोशिये, आपकी इस दया का मैं आजन्म कृतज्ञ रहूँगा।"

३१

जब जैब्री और कॉलिनी राज-महल में पहुँचे, तो मालूम हुआ—बादशाह उस दिन किसी से भेंट नहीं करेंगे। फिर भी किसी न-किसी तरह, दर्वाजे-पर-दर्वाजा पार करते हुए ऐन बादशाह के कमरे के आगे जा पहुँचे। यहाँ आकर मालूम हुआ, कि बादशाह की कड़ी आज्ञा है, कि किसी को भीतर न आने दिया जाय; क्योंकि वे इस समय डायना डि-पोतेई और कॉन्सटेबिल डि-मॉण्ट-मारेन्सी से कुछ आवश्यक वार्तालाप कर रहे थे।

वे दोनों निराशा और व्यग्रता की मूर्त्ति बने, खड़े हुए कुछ सोच ही रहे थे, कि सहसा स्वयं बादशाह अपने कमरे के दरवाजे पर दिखाई दिये। इन दोनों पर निगाह पड़ते ही वे दो कदम पीछे हट गये, और उनके कुछ कहने के पहले ही जैब्री बोल उठा—"महाराज, मेरा विनय-पूर्ण अभिवादन स्वीकार कीजिये।" तब कॉलिनी की तरफ मुँह करके उसने कहा—"मोशिये, आगे आइये, और सेण्ट क्वेण्टिन युद्ध में मैंने जो कुछ किया, वह महाराज को सुना दीजिये।"

"यह क्या—" हेनरी ने सम्हलकर कहा—"आप मेरी आज्ञा के विरुद्ध किस प्रकार यहाँ चले आये ?"

जैब्री, जो ऐसे मौकों पर सदा हाजिर-जवाबी से काम लेता था, बोला—"श्रीमान्! मुझे विश्वास था, कि आप हर समय अपने आश्रितों के साथ इन्साफ़ करने के लिये तैयार रहते हैं।"

कॉलिनी और जैब्री तब तक कमरे में घुस गये थे। वहाँ एक तरफ डायना पोतेई बैठी थी, और दूसरी तरफ कॉन्सटेबिल क्रुद्ध भाव बनाये हुए खड़ा था।

जैब्री ने कहा—"हाँ, मोशिये कॉलिनी, अब कहिये।"

"अवश्य कहूँगा—क्योंकि वह मेरा कर्त्तव्य है, और वादा भी। महाराज," उसने बादशाह की तरफ रुख़ करके कहा—"जो कुछ

मैंने मोशिये डि-एक्सेम की अनुपस्थिति में कहा था, वही उनके सामने कहना भी मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ। यह उन्हीं की हिम्मत का नतीजा था, कि हम सेण्ट क्वेंटिन को काफी दिनों तक दुश्मनों के हाथ से सुरक्षित रख सके। मोशिये डी-एक्सेम ने तीन बार शहर की रक्षा की, और मैं कह सकता हूँ, कि बिना उनकी बहादुरी के फ्रान्स आज की तरह सुरक्षित अवस्था में न होता।"

"बेटे, इधर आओ!" कॉन्सटेबिल ने भतीजे पर एकदम अतुल स्नेह जताकर पुकारा—"मालूम होता है, तुम पर लिहाज-मुलाहिजे का असर बहुत जल्दी होता है।"

"नहीं मोशिये—मैंने जो कुछ कहा है, ठीक कहा है। उस शहर की रक्षा का भार मुझ पर सौंपा गया था, और मैंने अपने भरसक उसकी रक्षा की थी, लेकिन सच्ची बात यह है कि अगर ठीक वक्त पर काउण्ट डि-एक्सेम न पहुँचते, तो नगरवासियों की हताश मनोवृत्ति के आगे झुककर मुझे बहुत पहले ही आत्मसमर्पण कर देना पड़ता। इन्हीं की बदौलत शहर में ऐन जरूरत पर सेना की कुमुक पहुँच सकी, और मैं कसम खाकर कहता हूँ, कि शहर को इतने दिन मुकाबले पर खड़ा रखने का सारा श्रेय इन्हीं को है।"

"सेनापति-महाशय, आपकी स्वच्छ-हृदयता और सचाई के लिये मैं आपका कृतज्ञ हूँ। अस्तु, अब मैं आपको अधिक कष्ट न दूँगा; और अगर महाराज कृपा करके मुझे कुछ देर एकान्त में बात करने का समय दें............"

"फिर कभी!" हेनरी ने व्यग्र होकर कहा—"इस समय असम्भव है!"

"असम्भव, महाराज?" जैब्री ने दुःखित होकर कहा।

"इस समय क्यों असम्भव है महाराज?" सहसा डायना ने

पूछा; जिससे बादशाह और जैब्री—दोनों—को ही आश्चर्य हुआ।

"मैडम," हेनरी ने लड़खड़ाते हुए स्वर में कहा—"क्या आपका विचार........."

"मेरा विचार यह है, कि बादशाह का सब से पहला कर्तव्य प्रजा के साथ न्याय करना होता है।"

"बेशक," हेनरी ने अनिश्चय में पड़कर कहा—"और मेरी इच्छा है............"

"कि आप तुरन्त मोशिये डि-एक्सेम की बात सुनकर न्याय की रक्षा करें।"

"लेकिन" जैब्री ने कहा—"मैं तो महाराज से एकान्त में ही कुछ निवेदन करना चाहता हूँ।"

"मोशिये, मोशिये डि-कौलिनी को तो आपने भेज ही दिया है, और मॉण्टमॉरेन्सी-महोदय अब चले जायेंगे। रही मेरी बात, तो मैं आप दोनों की शर्तों की गवाह थी, इसलिये मैं समझती हूँ, मेरे यहाँ रहने में तुम्हें कोई आपत्ति न होगी।"

"अच्छी बात है।"

३२

जैब्री ने काँपती हुई आवाज़ में कहा—"महाराज, मैं आपको अपने उस वचन की याद दिलाता हूँ, जो आपने मुझे दिया था। सेनापति कौलिनी के कथन से आपको ज्ञात हो गया, कि सेण्ट क्वेंटिन में मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, अब आपकी बारी है, कि आप मेरे पिता को मुक्त कर दें।"

बादशाह ने अनिश्चय के संशय में पड़कर डायना की तरफ़ देखा। मुँह से उसके कोई आवाज़ न निकली।

जैब्री का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने कहा—"मेरा ख़याल है, महाराज अपना वचन भूलते नहीं हैं।"

इस युवक की व्यग्रता ने बादशाह का दिल हिला दिया। उसने धीरे से कहा—"मुझे याद है।"

अब डायना पोतेई ने एक क़दम बढ़कर कहा—"बादशाह नहीं भूले, मोशिये, आप भूलते हैं।"

जैक्री ने चकित होकर कहा—"मैं क्या भूला मैडम ?"

"अपना आधा काम आपको याद नहीं रहा। आपने यह वादा भी तो किया था, कि आप दुश्मन के किसी शहर पर क़ब्ज़ा करके दिखा देंगे।—क्यों, किया था न ?"

"हे भगवान् !"

"देखा आपने !" उसने रुखाई से कहा—"कि मेरी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र है। कहिये, आपको याद आया ?"

"हाँ, मैंने कहा था; पर मुझे विश्वास है, कि महाराज ऐसी शर्तें न लगायेंगे, जो असम्भव है। इस समय इँग्लैण्ड या स्पेन के क़ब्ज़े से एक शहर छुड़ा लेना बिल्कुल असम्भव है। और फिर आपने उस दिन मेरे कहे हुए पहले वादे को ही स्वीकार कर लिया था; आख़िरी अंश पर कुछ ज़ोर नहीं दिया गया था। आशा है, आप उस बात पर ज़ोर न देंगे, जो जोश में मेरे मुँह से निकल गई, और जो किसी भी आदमी के लिये साध्य नहीं।"

बादशाह कुछ कहना चाहता था, कि डायना ने उसे रोक दिया। बोली—"तो क्या ऐसे व्यक्ति को ही छोड़ देना आपने कोई मामूली काम समझ लिया है, जिसने भीषण राज-द्रोह किया हो ? तुम्हारी यह प्रार्थना अत्यन्त अनुचित है, कि तुम तो अपना वादा आधा ही पूरा करो, और बादशाह से अपनी बात का मन-माफ़िक फ़ैसला चाहो। याद रक्खो, अगर किसी पुत्र का कर्त्तव्य बड़ा है, तो एक बादशाह पर भी कम उत्तरदायित्व नहीं है। तुमको जितना बड़ा पुरस्कार देना स्वीकार किया गया है, वह राज्य के प्रति तुम्हारी असाधारण सेवाओं का आश्वासन पाकर ही किया गया था, अन्यथा राज्य के क़ानून बदलना बच्चों का खेल नहीं। तुम्हें अपने

पिता को मुक्त करने ही की चिन्ता है, परन्तु बादशाह को सारे देश की रक्षा का ध्यान है।"

तब जैब्री ने हाथ जोड़कर अन्तिम प्रयत्न किया—"महाराज! मैं आप से प्रार्थना करता हूँ। मैं आपकी विवेक-बुद्धि के आगे हा-हा खाता हूँ। मैं क़सम खाता हूँ, कि अवस्था सुधरते ही मैं दुश्मनों के किसी शहर को छीन लूँगा, अथवा इस प्रयत्न में प्राण दे दूँगा।"

हेनरी, डायना की आँख का सङ्केत पाकर, कठोर स्वर में बोला—"मोशिये, आपको अपना वादा पूरा करना चाहिये, तभी—मैं शपथ लेता हूँ—मैं तुरन्त अपने वचन का पालन करूँगा।"

"क्या यह आपका अन्तिम निर्णय है ?"

"हाँ।"

क्षण-भर तक जैब्री क्रोध, आवेग और निराशा की मूर्ति बना खड़ा रहा। इस क्षण-भर में उसके मन की आँख के आगे अनेक विचार चक्कर मार गये। इस अन्यायी बादशाह और इस पिशाचिनी स्त्री से बदला लेने के लिये सुधारक-दल में शामिल हो जाये—तो ? लेकिन शायद बदला पूरा होने के पहले ही उसके पिता की हत्या कर दी जायगी। वह जिस स्थिति में था, उसमें बादशाह से बदला लेने की अपेक्षा एक शहर छीनने का प्रयत्न करना अधिक सम्भव दिखाई देता था। इसके अतिरिक्त, बादशाह को शर्त्त पूरी करके सम्भवतः वह डायना को प्राप्त कर सकता था, लेकिन इसके प्रतिकूल आचरण करके सदा के लिये उसकी आशा छोड़नी पड़ती।

तब उसने कहा—"स्वीकार है, महाराज; मैं दुश्मनों से एक शहर छीन लूँगा, और बदले में मेरे पिता की मुक्ति आपको करनी होगी। यदि आपने तब भी अपना वचन पूरा न किया, तो आपके प्रति मेरी समस्त प्रतिज्ञाएँ समाप्त हो जायँगी, और आपकी अहित-चिन्तना के लिये मैं भगवान के सम्मुख उत्तरदायी न रहूँगा!"

३३

नवम्बर के अंतिम सप्तार में एक दिन, कैले से जैब्री की रवानगी के तीन सप्ताह बाद, एक दूत शहर में दाखिल हुआ, और उसने लॉर्ड वेएटवर्थ से भेंट करने की इच्छा प्रकट की। वह जैब्री के छुटकारे की रक़म जमा करने आया था। रुपया लेकर गवर्नर ने पूछा—"मोशिये डि-एक्सेम ने सिर्फ़ तुम्हें यह रुपया लेकर ही भेजा है, या कोई सन्देश भी दिया है ?"

"जी नहीं, सन्देश तो कोई नहीं दिया।"

"हूँह !" लार्ड वेएटवर्थ ने घृणा-व्यञ्जक हँसी हँसकर कहा—"अब उसका दिमाग़ ठीक हो गया मालूम होता है। शायद फ़्रांस के दरबार में भुलक्कड़पन की ख़ासियत है।"

"क्या आप मेरे मालिक को कोई सन्देश देंगे ?"

"नहीं—मगर ठहरो, उससे कह देना, कि पहली जनवरी तक मैं अपने वादे पर दृढ़ रहूँगा। बस, यही काफी है।"

"बहुत अच्छा, माई लॉर्ड।"

लार्ड वेएटवर्थ के पास से रवाना होकर यह दूत बहुत देर तक कैले के बाज़ारों में चक्कर काटता रहा, और इसके बाद पीर पिर्कोय के घर की तरफ रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर उसने ख़बर भिजवाई कि वह जैब्री के पास से आया है।

"वाह !" पीर ने खुश होकर कहा—"हमें विश्वास था कि वे हमें भूल नहीं सकते। कहिए, क्या समाचार है ?"

दूत ने कहा—"उन्होंने बहुत-बहुत नमस्कार और धन्यवाद के बाद अशर्फियों की यह थैली आपके लिये भेजी है। और हाँ, यह कहनेकी आज्ञा भी दी है कि 'पाँचवीं तारीख़ को याद रक्खें।' अब इसका मतलब आप स्वयं समझ लें।"

"बस ?"

"हाँ।"

"क्या मेरे भाई जी ने या मेरी बहन बैबिट के लिये भी कोई सन्देश दिया है ?"

"जी, कोई नहीं।"

"सुनो तो," जीन ने कहा—"जब तुम काउण्ट के यहाँ नौकर हो, तो उनके साथी मार्टिन गेर को भी जानते होगे।"

"हाँ-हाँ, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।"

"क्या उसे तुम्हारा यहाँ आना पता था ?"

"हाँ, जब मैं चला, तो वह मौजूद था।"

"और उसने भी हमारे घर के किसी व्यक्ति के नाम कोई सन्देश नहीं भेजा ?"

"कोई नहीं।"

"शायद उसने कोई बात गुप्त रूप से कहने को कहा हो। अगर ऐसा है, तो तुम डरो मत; हमें सब मालूम है। अगर इस पर भी न कहना चाहो, तो उसी व्यक्ति को एकांत में भेज दिया जाय, जिसके नाम सन्देश दिया गया हो।"

"अजब बात है !" उस आदमी ने जवाब दिया—"ईश्वर की सौगन्ध, आपकी बातों का अर्थ मेरी समझ में नहीं आया।"

"बस, जीन, बहुत हो चुका !" अब पीर ने टोका—"तुमने हमारी शर्म का पर्दा हद से ज्यादे फ़ाश कर दिया !"

"क्या आप रुपया गिनेंगे ?" दूत ने पूछा।

"इसकी जरूरत नहीं। अपने मालिक से कह देना, कि पाँचवीं तारीख़ को हम याद रक्खेंगे। यह भी कह देना, कि हम एक महीने के अन्दर-अन्दर उसके आने की आशा रक्खेंगे।"

"मैं सब कुछ कह दूँगा।"

दूत यहाँ से भी विदा हुआ, और फिर शहर में बहुत देर तक चक्कर लगाते रहने के बाद अन्त में शहरपनाह के फाटक पर

पहुँचा। शहर से बाहर निकलकर वह करीब एक घण्टे तक ख़ूब तेजी से चलता रहा, और तब एक जगह बैठकर सुस्ताने लगा। अब उसके ओंठों पर मुसकान की रेखा दिखाई दी, और उसने आप-ही-आप कहा—"इस शहर में मुझे बड़ी अजीब-अजीब बातें देखने को मिलीं। काउण्ट और मार्टिन गेर अपने पीछे एक ख़ासा तिलिस्म छोड़ गये हैं। ख़ैर, मैं जो कुछ चाहता था, पा गया। काग़ज़-कलम चाहे मेरे पास नहीं था, लेकिन शहर के चप्पे-चप्पे का नकशा मेरे दिमाग़ में खिंच गया है, और मैं मोशिये डि-एक्सम के अस्पष्ट नक़शे की मदद से अब एक बहुत ही सच्चा ख़ाका तैयार कर सकता हूँ।"

इस व्यक्ति का नाम वास्तव में पियर स्ट्रॉज़ी था, जो सोलहवीं शताब्दी का इतिहास-प्रसिद्ध नक़्शे-नवीस था, और उपरोक्त विशेष उद्देश्य से, जैब्री का दूत बनकर कैले आया था।

३४

गवर्नर के प्रति मैडम डि-कैस्ट्रो की नफ़रत दिन-दिन बढ़ती ही जा रही थी। वह हर रोज़ किसी-न-किसी बहाने से उसका मुँह तक देखना गँवारा नहीं करती थी। जब कभी बेहया बनकर गवर्नर सामने आ भी जाता, तो वह उससे बहुत ही रुखाई का व्यवहार करती थी। लॉर्ड वेण्टवर्थ अपनी नम्रता और शिष्टाचार के लिये विख्यात था, अतएव वह अपने भरसक डायना को तङ्ग न करता था। उसने डायना का मन मोहने के लिये इँगलैण्ड से भाँति-भाँति के उपहार मँगवाये थे, पर वह उनकी तरफ़ आँख तक उठाकर न देखती थी।

ख़ुद लॉर्ड वेण्टवर्थ अब रोज़ यह सोचने लगा था, कि बादशाह हेनरी से कोई बड़ी रक़म लेकर डायना को मुक्त कर दे, लेकिन इस ख़याल से ऐसा करने की उनकी हिम्मत न होती थी, कि वहाँ से छूटने पर वह अवश्य जैब्री की हो जायगी। अस्तु—३१ दिसम्बर

१८५७ की शाम को उसने डायना से भेंट करने की इच्छा प्रकट की। अब उसके मुँह से अप-शब्द सुनकर ही उसे थोड़ी-बहुत मानसिक शान्ति प्राप्त होने लगी थी। परन्तु, उस दिन जैसे ही उसने उसके कमरे में प्रवेश किया, एक सिपाही ने दर्वाजे पर दस्तक दी, और भीतर घुस आया।

"कौन है, जो इस बदतमीज़ी से भीतर घुस आया ?" उसने सक्रोध कहा।

"माई लॉर्ड, मेरी धृष्टता क्षमा करें। मुझे लॉर्ड डर्बी ने बहुत ही जल्दी में आपके पास भेजा है।"

"क्यों ?"

"उनके पास ख़बर आई है, कि कैले से कोई बीस मील परे, दो हज़ार आदमियों की फ्रान्सीसी सेना इधर ही बढ़ रही है।"

"ओह !" डायना प्रसन्न होकर बोल उठी।

"क्या इसी वाहियात बात के लिये तुमने एकान्त में बाधा डालने की हिम्मत की ?" वेण्टवर्थ ने कहा—"लार्ड डर्बी सदा तिल का ताड़ बनाया करते हैं। जाओ, और मेरी तरफ़ से उन्हें यही कह देना।"

"लार्ड डर्बी ने कहा है, कि सिपाहियों की संख्या दूनी कर दी जाय।"

"जितने हैं, उन्हें उतने ही रहने दो, और भविष्य में कभी ऐसी ऊल-जलूल विचारों से मुझे परेशान न करना। और आप मैडम," सिपाही के जाने के बाद उसने डायना से कहा—"इतना शीघ्र ख़ुशी न मनावें, मैं इस झूठी अफवाह का कारण आपको बताता हूँ। या तो गाई-परिवार के दोनों भाई एण्डर्स और बोलोन के हमारे क़िलों पर आक्रमण करना चाहते हैं, या उनकी इच्छा कैले की तरफ़ आकर पीछे हटने के बहाने इनमें से किसी स्थान पर क़ब्ज़ा करने की है।"

"आपके पास इसका क्या प्रमाण है, कि हमला सीधे क़िले पर नहीं हो रहा है ?" डावना ने जोश में भरकर पूछा ।

लॉर्ड वेण्टवर्थ ने दम्भ-पूर्ण भाव से मुस्कराकर कहा—"मैडम, मैं पहले ही आपसे निवेदन कर चुका हूँ, कि शहर कैले सर्वथा अजेय है। यहाँ पहुँचने वाले दुश्मन को पहले हमारे सेण्ट अगैथा और मिडले-नामक क़िलों को जीतना पड़ेगा। इसमें उन्हें कम-से-कम दो हफ्ते लग जायँगे, और इतनी देर में इँग्लैंड से हमें भरपूर सेना और गोला-बारूद प्राप्त हो सकती है। हँह ! कैले को लेंगे ! मुझे तो इस विचार पर हँसी आती है।"

इसी समय ख़ुद लॉर्ड डर्बी ने कमरे में प्रवेश किया। "माइ लॉर्ड !" उसने विचलित स्वर में कहा—"मैंने जो सूचना आपको दी थी, वह सच थी ; फ़्रान्सीसी सेना वास्तव में कैले की ओर बढ़ रही है।"

"यह असम्भव है !" लॉर्ड वेण्टवर्थ ने यथा-साध्य दृढ़तापूर्वक कहा—यद्यपि उसके चेहरे का रँग उड़ने लगा था—"यह अफ़-वाह........"

"अफ़सोस ! भाई साहब, यह ख़बर सच्ची है।"

"डर्बी, ज़रा धीरे-धीरे बोलो," लॉर्ड वेण्ट वर्थ ने उसके निकट पहुँचकर कहा—"अब सुनाओ—माजरा क्या है ?"

"फ़ान्सीसी सेना ने सेण्ट अगैथा पर आक्रमण कर दिया था। चूँकि वहाँ सब कोई बेख़बर थे, इसलिये शायद अब तक दुश्मन ने उस क़िले पर अधिकार कर लिया होगा।"

"तो भी वे लोग अभी काफी दूर हैं।"

"हाँ, लेकिन उनको रुकावट पहुँचाने की तो और कोई जगह नहीं है ; सिर्फ़ मिडली को समझ लीजिये, जो सिर्फ़ दो मील इधर है।"

"डर्बी, तुमने सेना उधर भेजी है क्या ?"

"हाँ, क्षमा कीजिये, मैंने आपकी आज्ञा के बिना ही ऐसा कर डाला है।"

"तुमने बड़ा अच्छा किया।"

"लेकिन सम्भव है, मेरी भेजी हुई सेना वहाँ देर से पहुँचे।"

"क्या पता ? हिम्मत हारने से काम नहीं चलेगा। चलो, तुरन्त निउली चलते हैं। अगर उन्होंने सेण्ट अगैथा पर क़ब्ज़ा कर भी लिया होगा, तो भी हम उन्हें मार-मार कर वहाँ से खदेड़ देंगे।"

ईश्वर करे ऐसा ही हो।"

"दुश्मन की फ़ौज का नायक कौन है ?"

"सेनापति डि-गाई। मेरे जासूस ने आपके पुराने क़ैदी जैक्री के अतिरिक्त और तो किसी परिचित व्यक्ति को उसमें देखा नहीं।"

"नाश हो उसका !" गवर्नर ने चीखकर कहा—"आओ डर्बी, तुरन्त चलें।"

इस वार्तालाप को अधिकांश डायना ने सुन लिया था, और उसका हृदय खुशी से उछलने लगा।

३५

लार्ड डर्बी की आशंका निराधार नहीं थी। सेनापति डि-गाई की कमान में तीन हजार फ्रान्सीसी सिपाहियों ने जान हथेली पर रखकर देखते-देखते सेण्ट अगैथा के किले पर अधिकार कर लिया था। इस छापे में पूरा घण्टा-भर भी नहीं लगा। जब लार्ड डर्बी और वेण्टवर्थ निउली के किले के पास पहुँचे, तो दुश्मन की सेना वहाँ आ चुकी थी, और किले में रहने वाले अँग्रेज सिपाही अस्त-व्यस्त होकर भागे जा रहे थे। विवश होकर इन दोनों को भी पीछे हटना पड़ा।

"मालूम होता है, ये लोग बिल्कुल पागल हो गये हैं," लार्ड वेण्टवर्थ ने झल्लाकर कहा—"लेकिन इनके पागलपन का इलाज अच्छी तरह किया जायगा। आज से दो सौ वर्ष पहले कैले एक वर्ष

तक अँग्रेजों के विरुद्ध जमा खड़ा रहा, और अब उनके हाथ में वह दस वर्ष तक भी जुम्बिश न लेगा। ईश्वर ने चाहा, तो एक हफ्ते में ही ये मूजी सिपाही भागते नजर आयेंगे। उन्होंने यहाँ तो आकस्मिक सफलता प्राप्त कर ली है, परन्तु आगे उनकी जैसी दुर्दशा होनेवाली है, उसे सोचकर मुझे डि-गाइ की बुद्धि पर हँसी आती है।"

"क्या आप इङ्गलैण्ड से कुमुक मँगवायेंगे ?"

"इसकी क्या जरूरत है ? अगर तीन दिन तक ये लोग अपनी गदहा-पचीसी से बाज नहीं आये, और हम उन्हें रोके ही रहेंगे—तो फ्रान्स में जो इँगलैण्ड और स्पेन की सेनायें पहले ही मौजूद हैं, वे सब हमारी सहायता के लिये दौड़ आयेंगी, और इनका विध्वंस हो जायगा। और अगर ऐसा न भी हुआ, तो डोवर को जरा खबर भेजने की देर है, चौबीस घण्टे के भीतर-भीतर हजारों सिपाही आ सकते हैं। फिलहाल इसकी कोई जरूरत नहीं है—हमारे नौसौ सिपाही और शहर की मजबूत चारदीवारी इनके दाँत खट्टे करने के लिये काफी होंगे।"

× × ×

तीन दिन बीत गये। लार्ड वेण्टवर्थ की धारणा के विरुद्ध फ्रांसीसी सेना की गति रुकी नहीं। उन्होंने निउली के किले को जीतकर बहुत से गोला-बारूद और अन्य सामान पर कब्जा कर लिया, और अब कैले के सामने युद्ध के मैदान में डेरा डाले पड़े थे।

उस दिन, अपने सिपाहियों की दुर्दशा को याद करके लार्ड वेण्टवर्थ ने कहा—"वास्तव में वह दृश्य बड़ा ही भीषण था!"

"खुशी की बात तो यह है," लार्ड डर्बी ने उत्तर दिया—"कि कैले काफी दिन तक सामना करने की शक्ति रखता है, और इङ्गलैंड की तरफ का रास्ता हमारे लिये खुला है।"

लार्ड वेण्टवर्थ का सारा अहङ्कार हवा हो गया था, और उसे विवश होकर कुमुक के लिये डोवर पत्र भेजना पड़ा था।

इधर हम यह देखें, कि दूसरे पक्ष में क्या हो रहा था। आइये, हम इस खेमे में प्रवेश करें, जो सेनापति के तम्बू से जरा दाहिनी हाथ को लगा हुआ है, यह खेमा जैब्री का है। साथ में उसके कुछ चुने हुये लड़ाकू और खूँख्वार आदमी भी इसी खेमे में डेरा लगाये हुये हैं। जैब्री इस समय खेमे के कोने में किसी गम्भीर विचार में निमग्न बैठा था। मार्टिन गेर उसके पास ही बैठा एक तलवार की मियान सी रहा था। इनसे थोड़ी दूर परे ही एक घायल आदमी फौजी कोटों के मोटे बिस्तर पर पड़ा कराह रहा था। बाकी के सब लोग एक जगह झुण्ड मारे बैठे थे; कुछ तो जुआ खेल रहे थे, और कुछ गप शप कर रहे थे।

सहसा घायल के मुँह से एक मर्म-वेधिनी आवाज निकली, और जैब्री ने कहा—"मार्टिन, क्या बजा है ?"

"मेरे ख्याल में छः का वक्त है।

"छः ही बजे तो डाक्टर के आने की बात थी। लो, शायद वे आ पहुँचे।"

जैब्री ने देखा—उसके परिचित डॉक्टर एम्ब्रोईं पारे चले आ रहे हैं। कॉलिनी से उसे मालूम हो चुका था, कि वे सुधारक-दल के अन्यतम सदस्य हैं। इस समय उन्हें वहाँ देखकर उसे बड़ा आश्चर्य्य हुआ, और उसने पूछा—"आप यहाँ कैसे मोशिये ?

"जहाँ मेरी जरूरत होती है, मैं वहीं पहुँच जाता हूँ

"मुझे आपको देखकर बड़ी खुशी हुई। आपका करामात देखने का मौका भी यहाँ आसानी से मिल जायगा !

"कहिये, आपको तो कुछ तकलीफ नहीं है ?"

"नहीं; मेरे एक निजी आदमी के कन्धे में आज सुबह बरछे का घाव लग गया है।"

"कन्धे में—तब तो ज्यादे खतरे की बात नहीं है।"

"मेरा खयाल है, कि वह बहुत खतरनाक है; क्योंकि हमीं में से किसी आदमी ने ऐसी बेहूदगी से बरछा घाव में से खींचने की कोशिश की, कि उसका फल टूट कर भीतर ही रह गया है।"

डाक्टर पारे ने चिन्ता का भाव व्यक्त करते हुए कहा—"खैर, चलिये—देख तो लें।"

मरीज़ के पास पहुँचकर उसने घाव पर ढका हुआ कपड़ा उठाया, और एक नजर देखकर कहा—"यह कुछ नहीं है।"

"तो क्या मैं कल लड़ाई में शामिल हो सकूँगा ?" उस आदमी ने तुरन्त पूछा।

"नहीं !" डाक्टर ने घाव का निरीक्षण करते हुये कहा।

—कहते-कहते डाक्टर पारे ने अकस्मात् बरछे का फल बाहर खींच लिया।

मरीज ने कहा—"मोशिये, मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ।"

डॉक्टर पारे की अलौकिक क्षमता पर सभी के मुँह से प्रशंसा-सूचक ध्वनि निकल गई।

"क्या, सब निबट गया ?" जैब्री ने चकित होकर कहा—"अद्भुत ! अद्भुत !"

"मरीज की हालत ऐसी खतरनाक नहीं थी।" डॉक्टर ने उत्तर दिया।

"लेकिन हकीम भी साधारण नहीं है," पीछे से किसी आवाज़ ने कहा।

"कौन—मोशिये ड्यूक डि-गाई ?" पारे के मुँह से निकला।

"हाँ, मैं ही हूँ—और आपकी असाधारण क्षमता देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ है। मैंने अस्पतालों में अनेक बार देखा—कि डॉक्टर लोग बहुधा अर्थ का अनर्थ कर डालते हैं। लेकिन

मैं देख रहा था—आपने बरछे के फल को इस तरह आसानी से निकाल लिया, जैसे सिर से पका बाल नोंच लेते हैं। आपका नाम क्या है मोशिये ?"

"जी, अम्ब्रोइ पारे।"

"ईश्वर ने चाहा, तो मैं आपको बहुत ऊँचे पद पर पहुँचा दूँगा; परन्तु एक ही शर्त पर ?"

"वह क्या ?"

"कि अगर मैं कभी घायल हो जाऊँ, तो आप मेरा इलाज करें।"

पारे ने वादा कर लिया।

घायल की मरहम-पट्टी करके जब डॉक्टर चला गया, तो ड्यूक डि-गाइ और जैब्री तम्बू के एक कोने में बैठ कर बातचीत करने लगे।

३६

"क्यों, मोशिये—आप हमारी अब तक की सफलता से सन्तुष्ट तो हैं ?"

"हाँ, जो कुछ हो चुका, उस पर तो मुझे सन्तोष है, परन्तु आगे क्या होगा—इसकी कल्पना मुझे सुखद नहीं जान पड़ी।"

"यह कैसे मोशिये ?"

"मेरे मित्र, मैं अपने चिरकालीन अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ, कि हमारे पक्ष में यदि कोई दैवी घटना न घट जाय, तो हम लोगों का सर्वनाश निश्चित है।"

"जी नहीं, ऐसा नहीं होगा।" जैब्री ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

"जैब्री, तुम आग्रह-पूर्वक मुझे जिस धावे पर ले आये हो, वह आकस्मिक होने के कारण ही सफल हो सकता था, और इसी कारण हम अब तक सफल हो सके हैं। साथ ही तुम्हारा यह

अनुमान भी सही निकला, कि लॉर्ड वेण्टवर्थ अहङ्कार के मारे इंग्लैण्ड से जल्दी सहायता नहीं मँगायेगा। परन्तु अब………………"

"अब ऐसा होगा," जैब्री ने बात काटकर कहा—"कि जब इङ्गलैण्ड से मदद आयेगी, तो कैले पर ड्यूक डि-गाई का कब्जा हो चुकेगा।"

"अफ़सोस ! मुझे इसकी आशा नहीं। समुद्र का रास्ता दुश्मन के लिये खुला है। जब तक ऑवेटेगन बुर्ज पर उनका आधिपत्य है, हम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अब तो दो ही उपाय हैं; या तो हम जान हथेली पर रखकर कल एक-दम हल्ला बोल दें, या तुम्हारे पूर्व आश्वासन के अनुसार शहर के तुम्हारे दोस्त कुछ सहायता करें। परन्तु पहला उपाय काम में लाने पर हमारे कम-से-कम आधे आदमी काट डाले जायेंगे, और हमें भागना पड़ेगा। रहा दूसरा उपाय—सो तुम्हारे उन दोस्तों ने पूरा-पूरा विश्वासघात किया।"

"क्षमा कीजियेगा,—यह आप से किसने कहा ?"

तुम्हारी चुप्पी ने। यही तो ऐन मौक़ा है, और तुम चुप बैठे हो।"

जी, मैं बकने की बजाय कुछ करना ज्यादे पसन्द करता हूँ।"

"तो क्या तुम्हें अभी तक कुछ आशा है ?"

"अवश्य—अन्यथा मेरा जीना वृथा है।"

"तो क्या ऑवेटेगन बुर्ज……"

"मैं जीता रहा, तो हमारे क़ब्ज़े में हो जायगा।"

"लेकिन यह तो कल तक हो जाना चाहिये।".

"मैंने कहा न—कि अगर मैं तब तक जीता रहा, तो कल सुबह आप देख लेंगे।"

"जैब्री, तुम्हारा इरादा क्या करने का है ? क्या कोई घातक

योजना स्थिर की है ? नहीं, मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूँगा—फ्रान्स को तुम्हारे-जैसे व्यक्तियों की ज़रूरत है।"

"घबराइये नहीं मोशिये, योजना गम्भीर है, तो इरादा भी महत्व-पूर्ण है। आप तो सिर्फ परिणाम का विचार कीजिये; मेरी चिन्ता छोड़ दीजिये।"

"ख़ैर, यह बताओ, कि मुझे क्या करना होगा।"

"मोशिये, मुझे आपसे एक प्रार्थना करनी है।"

"बोलो।"

"कल सुबह आठ बजे आप किसी आदमी को उस जगह भेज दें, जहाँ से ऑक्टेगन-बुर्ज दिखाई देता है। अगर उसके ऊपर उस समय तक अँग्रेज़ी झण्डा फहराता दिखाई दे, तो आप समझ लें, कि मैं अपने प्रयत्न में असफल हुआ; और आपकी जो समझ में आये, करें। उसके बाद भी आपको चार घण्टे का समय मिलेगा; क्योंकि डोवर की कुमुक बारह बजे से पहले न पहुँचेगी।"

"लेकिन जैक्री, क्या सफलता की कुछ आशा है?"

हाँ, अवश्य है; आप धीरज से काम लें। अगर सुबह आठ बजे ऑक्टेगन-बुर्ज पर आप फ्रान्स का झण्डा देखें........"

"फ्रान्स का झण्डा!"

"जहाँ का दृश्य आनेवाले अँग्रेज़ी जहाज़ों को सबसे पहले नज़र आ जायगा।"

"हाँ, ख़याल तो मेरा भी ऐसा ही है। लेकिन तुम ऐसा कर कैसे सकोगे?"

"अब इस भेद को फ़िलहाल पर्दे में ही रहने दीजिये; मैं अपने काम के लिये आपसे कोई आदमी नहीं माँगता, न कुछ सहायता की मुझको ज़रूरत है।"

"भला यह अभिमान क्यों?"

"यह अभिमान नहीं है। आपने एक बार मुझसे वादा किया था, कि अगर कैले पर अधिकार करने में मेरा कोई ख़ास हिस्सा हो, तो आप बादशाह से ज़िक्र कर देंगे।"

"अवश्य; जैक्री, यह कोई रिआयत की बात नहीं होगी। धीरज रक्खो, मैं सदा तुम्हारे साथ उचित व्यवहार करूँगा।"

"बस, मैं तो यह चाहता हूँ, कि उस बात का उल्लेख बादशाह के सामने हो जाना चाहिये।"

"लेकिन क्या तुम्हारी आज की योजना में मैं कोई सहायता नहीं दे सकता?"

"हाँ; अगर आप मुझे रात का सङ्केत-शब्द बतला दें, तो मैं अपने साथियों के साथ रात के अँधेरे में आसानी से अपने गन्तव्य स्थान पर जा सकूँगा।"

"आज का सङ्केत-शब्द 'कैले और चार्ल्स' है।"

"एक बात और। अगर मैं अपने प्रयत्न में असफल हो जाऊँ, तो आप इस बात को स्मरण रक्खें, कि मैडम डायना डि-कैस्ट्रो लॉर्ड वेएटवर्थ के यहाँ क़ैद हैं।"

"अच्छी बात है। और कुछ?"

"हाँ, मोशिये—आज के प्रयत्न में मुझे एक साहसी मछियारे से मदद लेनी है, अगर मेरे साथ-ही-साथ उसकी जान पर भी कोई आफ़त आ जाये, तो आप उसके बीबी-बच्चों के गुज़ारे का प्रबन्ध अवश्य कर दें।"

"बहुत अच्छा; बस?"

"बस; अगर मैं मारा जाऊँ, तो कभी-कभी दया-पूर्वक आप मुझे स्मरण कर लिया करें।"

"जैक्री, ऐसी बातें न करो। मेरा दिल कहता है, कि हम अवश्य फिर मिलेंगे।"

"मिले, तो कैले पर क़ब्ज़ा हो जाने के बाद ही मिलेंगे।"

३७

अपने डेरे में पहुँचकर जैब्री ने मार्टिन से इशारे में कुछ कहा। वह तुरन्त उठकर तम्बू से बाहर चला गया, और कुछ देर बाद ग़रीबों के-से कपड़े पहने हुए एक आदमी के साथ उपस्थित हुआ।

आते ही उसने कहा—"मोशिये, यह आ गया है।"

"तुम्हीं मछियारे अन्सेल्मो हो ?" जैब्री ने कहा।

"जी हाँ।"

"मालूम है, तुमसे हम क्या काम लेना चाहते हैं ?"

"आपके आदमी ने मुझे बता दिया है, और मैं उसके लिये तैयार हूँ।"

"शाबाश !"

"कोई बात नहीं। मोशिये, मैं तो तुच्छ मछलियों की तलाश में रोज ही अपनी जान हथेली पर लिये फिरता हूँ। इस समय तो मुझे भरपेट इनाम दिया गया है। रात भयानक जरूर है, लेकिन कोई पर्वाह नहीं; ईश्वर मालिक है।"

"तुम्हारी नाव में चौदह आदमी बैठ सकते हैं ?"

"बीस तक बैठ सकते हैं।"

"चलाने में तुम्हें मदद की ज़रूरत पड़ेगी ?"

"जी हाँ, पाल थामने के लिये एक आदमी चाहिएगा।"

"ख़ैर, यह हो जाएगा।"

तब जैब्री ने अपने बारहों साथियों से कहा—"दोस्तो, आज हमें एक बेढब मुहिम पर जाना है।"

"वाह वा ! वाह वा !" सब लोग एक-साथ चिल्लाये।

"दो घण्टे की आपको छुट्टी है, तब तक आप एक-एक नींद ले लें। ठीक समय पर मैं आपको जगा लूँगा।"

थोड़ी देर में सब-के-सब ख़र्राटे लेने लगे, परन्तु जैब्री की आँखों

में नींद का नाम नहीं था। एक बजे के क़रीब उसने सबको जगाया, और अपनी मुहिम पर रवाना हुए।

रात के तीसरे पहर में ऑक्टेगन बुर्ज के नीचे बहते हुए पथरीले समुद्र में चौदह आदमियों की डोंगी निःशब्द रूप से आई, और जैत्री ने नीचे लटकी हुई रस्सी की सीढ़ी को छुआ। तब उसने मॉर्टिन गेर को बुलाया, और सबसे आगे उसे चढ़ने के लिये कहा। अपने शेष ग्यारह आदमियों के चढ़ जाने के बाद सब से अन्त में उसने सीढ़ी पर पैर रक्खा।

तब नीचे से उसने आवाज दी—"मार्टिन, जल्दी चढ़ो।"

मार्टिन का सिर ज्योंही मजबूत दीवार के ऊपर दिखाई दिया, त्यों-ही धीमी आवाज़ में बुर्ज से किसी की आवाज आई—"कौन है ?"

"मार्टिन गेर।"

मुश्किल-से उसके मुँह से उपरोक्त शब्द निकले होंगे, कि पीर पिर्कोय ने—क्योंकि ऊपर से बोलनेवाला वही था—ज़ोर से उसे धक्का दिया। मार्टिन के मुँह से भय की एक दबी हुई चीख़ निकली और लुढ़ककर नीचे गिरा। ख़ैर इतनी हुई, कि पीछे आनेवाले साथियों में से किसी पर वह नहीं पड़ा।

बाकी सब लोग एक-एक करके ऊपर पहुँचे। सब से अन्त में जैत्री ने बुर्ज में कदम रक्खा, और कहा—"यह आपने क्या पागलपन किया ? ग़रीब मार्टिन ने भला आपका क्या बिगाड़ा था ?"

"मेरा कुछ नहीं, पर बैविट का तो सर्वनाश कर दिया !"

ओह ! वह तो मैं भूल ही गया था। इस मार्टिन का उस सम्बन्ध में कोई दोष नहीं था। कहिए, अब किसी तरह उसकी रक्षा हो सकती है ?"

"अजी, ढाई सौ फ़ीट ऊँचे से चट्टानों पर पड़ने के बाद वह बचा रह सकता है ?"

पीर ने उन्मत्त की नाईं हँसकर कहा—"आइये, इस समय तो हम अपना बचाव की फ़िक्र करें; क्योंकि अभी पाँच मिनट में पहरा बदलनेवाला है।"

"कहिये, क्या करें।......मगर बेचारा मार्टिन................"

"यह समय एक पापी की मृत्यु पर शोक करने का नहीं है।"

"पापी ? वह बिल्कुल निर्दोष था। मैं आपको सब हाल सुनाऊँगा। लेकिन आपका कथन ठीक है, यह समय इन बातों का नहीं है। कहिये, आप हमारी सहायता करेंगे न ?"

"मैं फ्रान्स का और आपका सेवक हूँ।"

"तो बताइये, इस समय क्या किया जाय ?"

"पहरा बदलनेवाला है। जो चार नये पहरेदार आयेंगे, पहले तो उन्हीं पर क़ब्ज़ा करना है। लीजिये, वे आ पहुँचे।"

उसी समय नये पहरेदार आ पहुँचे। जैश्री और उसके साथियों ने पलक मारते उन्हें बाँध लिया; बेचारों के मुँह से एक भी शब्द न निकला।

"मोशिये," पीर ने कहा—"अब हमें बाक़ी के पहरेदारों की ख़बर लेनी है। उसके बाद ऑक्टेगन बुर्ज पर सोलह-आने अपना अधिकार समझिये।"

"ओह पीर-महोदय, मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ। लेकिन अफ़सोस ! आपने बेचारे मार्टिन की जान व्यर्थ में ले डाली !"

"फ़िलहाल उसका ज़िक्र छोड़िये, और असली काम की तरफ़ ध्यान दीजिये।"

सुबह साढ़े सात बजे कैले के समस्त पहरेदार क़ैद कर लिये गये, पीर और जीन के फ़्रान्सीसी मित्रों में हथियार बाँट दिये गये, और सैकड़ों आदमी चारों तरफ़ फैल गये। उधर जैश्री ने बुर्ज पर चढ़कर अँग्रेज़ी की जगह फ़्रान्सीसी झण्डा फहरा दिया। इस से निबटकर वह डरते-हिचकते उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ से

बेचारा मार्टिन धकेल दिया गया था। परन्तु उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ, कि जैनी की देह समुद्र-गर्भ में जाने की बजाय रस्सी की सीढ़ी में अटकी रह गई है। लक्षण से तो मालूम होता था, कि उसमें दम बाकी नहीं है, लेकिन उसने तुरन्त एक आदमी को नीचे उतारा, जो उसे उठाकर ऊपर लाया। फ़ौरन् एक डॉक्टर को बुलाया गया, जिसने देखकर कहा कि शरीर में जान बाक़ी है, और बेहोशी थोड़ी देर में दूर हो जायगी। सचमुच कुछ ही देर बाद उसे होश आ गया, और वह दर्द से कराहने लगा; क्योंकि उसका एक हाथ और एक पैर टूट गया था।

३८

उसी दिन तीसरे पहर का समय था। शहर में विद्रोहियों ने पूरी अशान्ति उपस्थित कर दी। अँग्रेज़ सेना के बचे खुचे आदमी, शहर के दर्वाज़े पर ड्यूक डि गाईज के सिपाहियों से लोहा बजा रहे थे। इँगलैण्ड से जहाज़ बारह बजे आये थे, पर फ़्रान्सीसी झण्डा लहराता हुआ देखकर वापस लौट गये। लॉर्ड डर्बी और वेण्टवर्थ एक सुरक्षित स्थान पर बैठे क्षण-क्षण में अपनी पराजय का समाचार सुन रहे थे। सहसा लॉर्ड वेण्टवर्थ ने डर्बी से पूछा—"तुम्हारे ख़याल में हमें अभी कितनी देर तक दुश्मनों को रोके रह सकते हैं ?"

"मेरा ख़याल है, तीन घण्टे से ज़्यादे नहीं ?"

"क्या तुम विश्वासपूर्वक कह सकते हो, कि दो घण्टे तक हम मोरचे पर अड़े रह सकते हैं ?"

"अवश्य !"

"तो, तब तक के लिये मैं शहर की सारी ज़िम्मवारी तुम्हारे ऊपर छोड़ता हूँ। अगर दो घण्टे तक हम दुश्मनों को पीछे न हटा सके, तो तुम आत्म-समर्पण कर देना।"

"बहुत अच्छा; लेकिन किन शर्तों पर ?"

"जो मुनासिब समझो; पर मेरे लिये कोई शर्त मत करना।

समय आने पर तुम इँग्लैण्ड में इस बात के गवाह होगे, कि मैंने अपनी करनी में कोई कसर उठा नहीं रक्खी है।"

कहता हुआ, वह वहाँ से चल दिया, और कड़ा हुक्म दे गया। कि किसी हालत में भी कोई उसे बुलाने न आवे।

वह सीधा अपने निवास-स्थान पर पहुँचा। इस समय उसकी केवल यही इच्छा थी, कि उसे दो घण्टे का समय मिल जाय। वह सीधा डायना के कमरे में पहुँचा, और वहाँ उपस्थित एक दासी से कड़ककर बोला—"तुम यहाँ से जाओ। दो घण्टे बाद यहाँ फ़ान्सीसियों का क़ब्ज़ा हो जायगा; इसलिये तुम शहर में अपने घर चली जाओ।"

"जी.......सरकार.........!"

"सुनती नहीं ?—फ़ौरन् चली जाओ।"

अकेली रह जाने पर डायना ने कहा—"क्या यह ख़बर सच्ची है ?"

"हाँ, मैडम; क्या तुम्हें बहुत खुशी हुई है ?"

"ओह ! मुझे विश्वास नहीं होता !"

"सुनो मैडम !" लॉर्ड वेण्टवर्थ ने कहा—"मैं अपने साथियों को छोड़कर यहाँ चला आया हूँ;—इसलिये, कि हार के वक्त में मौजूद न रहूँ। डेढ़-दो घण्टे बाद लॉर्ड डर्बी आत्म-समर्पण कर देंगे, और फ़ान्स की सेना कैले में घुस आयेगी। उनके साथ विस्काउण्ट डि-एक्सेम भी होगा। कहो, सुनकर खुशी हुई ?"

'माई लॉर्ड, आप ऐसे स्वर में बोल रहे हैं, कि मेरी समझ में नहीं आता, कि आपकी बात पर मैं विश्वास करूँ—या न करूँ,"

"नहीं, मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि डेढ़ घण्टे बाद फ़ान्सीसी सेना शहर में प्रवेश करेगी, और विस्काउण्ट डि-एक्सेम उसके साथ होगा। अब भय से काँप जाओ।"

"क्या ! मतलब ?" डायना ने ज़र्द पड़कर पूछा,

"क्या ! मेरी बात बिल्कुल स्पष्ट नहीं है ? घण्टे भर में ही मेरी-तुम्हारी स्थिति बदल जायगी; तुम स्वतंत्र हो जाओगी, मैं क़ैदी। विस्काउण्ट डि-एक्सेम आकर तुम्हें अपने प्रेम-रस में विभोर करेगा, और मुझे जेलख़ाने की कोठरी में जाना पड़ेगा। भय से काँप जाओ।"

"भला काँप क्यों जाऊँ ?" उसकी अङ्गारे-सी आँखों से भयभीत होकर पीछे हटते हुए डायना ने कहा।

"मेरा मतलब आसानी से समझ में आसकता है।"

"मैडम," उसने आगे बढ़ते हुए कहा—"अभी एक घण्टे तक तो मैं स्वतंत्र हूँ ही।"

माई लॉर्ड ! माई लॉर्ड ! आप मुझसे क्या चाहते हैं ? मेरे पास न आना—वर्ना मदद के लिये चिल्लाऊँगी।"

"चिल्लातीं क्यों नहीं ? मकान बिल्कुल ख़ाली है और सड़क पर कोई चिड़ी का पूत तक नहीं है। घण्टे-भर तक यहाँ किसी के भी आने की आशा त्याग दो, मुझे इस बात का इतना विश्वास है, कि मैंने दर्वाज़ों को बन्द तक नहीं किया है।"

"लेकिन घण्टे-भर बाद, उन लोगों के आने पर, मैं तुम्हारे किये का फल दिलाऊँगी।"

"नहीं," उसने लापर्वाही से उत्तर दिया—"तब तो, वे लोग मुझे क्या मारेंगे—मैं खुद ही अपनी जान दे दूँगा। क्या तुम्हारा ख़याल है, कि कैसे को खोकर मैं जीवित रह सकता हूँ ? लेकिन उसका मौक़ा तो फिर भी मिल जायगा, अब तो मैं अपनी प्रतिहिंसा और कामाग्नि को तृप्त करना चाहता हूँ।"

"तो लो, मैं अपनी रक्षा करती हूँ," कहकर डायना ने एक छुरा कपड़ों में से निकाल लिया।

लेकिन पलक-मारते लॉर्ड वेण्टवर्थ ने डायना के हाथ छुरा छीन

लिया, और कहा—"अभी नहीं; थोड़ी देर बाद, अगर मरना ही चाहो—तो मेरे साथ मरना !"

कहकर उसने उसे अपने बाहु-पाश में आबद्ध कर लिया। वह बेबसी के समुद्र में डूब कर बोली माई लार्ड मुझ पर। रहम कीजिये—अपनी माँ-बहन के नाम पर मुझ पर दया कीजिये। आप एक सज्जन पुरुष हैं।........"

"मैं सिर्फ एक मामूली आदमी हूँ, जो अपने दिल की आग बुझाकर मर जाना चाहता है।" कहते-कहते उसने उसे ऊपर उठा लिया। परन्तु उसी समय बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई दिया, और दूसरे ही क्षण जीन और पीर पिकॉय तथा बहुत-से फ्रान्सीसी सिपाहियों के साथ विस्काउण्ट डि-एक्सेम ने कमरे में प्रवेश किया।

उपरोक्त दृश्य देखकर जैब्री ने तलवार हाथ में ले ली, और दहाड़कर कहा—"ओ बदमाश !"

लार्ड वेण्टवर्थ ने दाँत पीसकर डायना को धकेल दिया, और कुर्सी पर पड़ी हुई तलवार उठा ली।

"पीछे हट जाइये," जैब्री ने अपने साथियों से कहा—"मैं इस आदमी से अकेला ही भुगतान चाहता हूँ।"

बिना एक शब्द बोले, दोनों की तलवारें मिल गईं। डायना मूर्छित हो गई थी।

अब हम यह बता दें, कि लार्ड वेण्टवर्थ की धारणा के पूर्व ही जैब्री यहाँ कैसे आ पहुँचा। सुबह के वक्त जैब्री को बुर्ज में छोड़कर पीर शहर के समस्त फ्रान्सीसियों में अस्त्र-शस्त्र बाँटने चला गया था। उधर तो लार्ड वेण्टवर्थ डर्बी के पास से चला, और इधर पीर ने बुर्ज के पास जाकर जैब्री को बुला लिया। अब उनके साथ प्रवासी फ्रान्सीसियों की एक बड़ी संख्या थी। तब यह लोग दौड़ते हुये लार्ड वेण्टवर्थ के निवास स्थान की ओर आये। घर के सब दर्वाजे खुले हुये थे, और जिस प्रकार जो कुछ बीता, वह पाठकों के सामने है।

कुछ देर के युद्ध के बाद लार्ड वेण्टवर्थ के हाथ से तलवार छूट गिरी। उसे उठाने के प्रयत्न में उसका पैर फिसल गया, और वह गिर पड़ा। जैब्री ने क्रोधाविष्ट होकर उसकी छाती पर पाँव रख दिया, और उसकी हत्या करना ही चाहता था, कि सहसा डायना, जो तभी होश में आ गई थी, धीमी आवाज में बोल उठी—"दया करो!"

उसके मृदुल कण्ठ-स्वर ने जैब्री पर बिजली का-सा असर किया! उसने पूछा—"क्या तुम इसे जीवित रखना चाहती हो डायना?"

"उसे परिताप का अवकाश दीजिये।"

"अच्छी बात है,—देव-लोक की रानी ने राक्षस की जान बचा ली!" तब उसकी छाती पर पैर रक्खे हुये ही उसने अपने साथियों को बुलाकर उसे क़ैद कर लेने का हुक्म दिया।

"नहीं, मुझे मार डालो!" लार्ड वेण्टवर्थ चिल्लाकर बोला।

पर सिपाही उसे बाँधकर ले गये। जब डायना जैब्री के साथ अकेली रह गई, तो घुटने टेककर बोली—"हे भगवान्! तू ने उसके द्वारा मेरी रक्षा की—इसके लिये मैं तुझे धन्यवाद देती हूँ।"

३९

तब डायना जैब्री से लिपटकर बोली—"जैब्री, मैं तुम्हें भी धन्य-वाद देती हूँ।"

"ओह! डायना, जब से तुम्हें छोड़ा, मैं मर्मान्तक व्यथा का अनुभव करता रहा।"

"मेरी भी यही दशा थी।"

तब दोनों ने इस दीर्घ विरह-काल की अपनी-अपनी गाथा कह डाली। थोड़ी देर के लिये दोनों ही यह भूल गये, कि वे कहाँ और कैसी स्थिति में हैं।

"आह! जैब्री," आख़िर डायना ने कहा—"मैंने इस सुखद समय की कल्पना अपनी क़ैद के समय में अनेक बार की थी। न-

जाने कौन शक्ति बार-बार मुझसे कहती थी, कि मेरी मुक्ति तुम्हारे ही हाथों होगी।"

"डायना, तुम्हारे विचार ने ही मुझे इस तरफ़ आने पर मजबूर किया। अगर तुम यहाँ क़ैद न होतीं, तो कैले को विजय करने का विचार मेरे मन में उठ नहीं सकता था। मुझे आशा है, कि व्यक्तिगत स्वार्थ के वशीभूत होकर एक अच्छा काम करने के लिये मैं भगवान् के निकट अपराधी सिद्ध न होऊँगा।"

कहते-कहते उसे सेण्ट जैक्स-मोहल्ले के सुधारक-दल में सुनी हुई बात याद आ गई, कि किसी पवित्र अनुष्ठान में पवित्र संकल्प ही होना चाहिये।

लेकिन डायना के प्रेम-पूरित शब्दों ने उसे धीरज दिया, "भगवान् तुम्हें अपराधी समझेंगे -- तुम्हें, जो इतने अच्छे और उदार व्यक्ति हो ?"

"यह कौन कह सकता है ?" उसने लम्बी साँस लेकर कहा।

"मैं।" डायना मुस्कराकर बोली।

"डायना, तुम तो साक्षात् स्वर्ग की देवी हो !"

"और तुम देवताओं की भाँति ही उदार और बलवान हो।" कहते-कहते डायना ने उसके कन्धे पर अपना सिर रख दिया।

"आह ! डायना, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ।" दूसरे ही क्षण दोनों के ओठ भिड़ गये। पर सहसा जैब्री चौंककर उठा, और बोला—"डायना ! डायना !"

"क्यों ?"

"डायना ! अगर तुम मेरी बहन............"

"तुम्हारी बहन !" उसने चकित होकर पूछा।

जैब्री सहम गया, और बोला—"मैंने अभी क्या कहा था ?"

"क्या, मैं इस शब्दों को सच समझूँ ? यह कैसा भीषण रहस्य है ! क्या मैं सचमुच तुम्हारी बहन हूँ ?"

"क्या मैंने यह कहा था कि तुम मेरी बहन हो ?"

"हाँ; यह तो बताओ, क्या यह सच है ?"

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैं जानता भी नहीं, कोई भी नहीं जानता। मगर मुझे तुम से कहना नहीं चाहिये था। उस भेद को मैंने अपने ही सीने में छुपा रखने की प्रतिज्ञा की थी। हे भगवान्! बड़ी-बड़ी मुसीबतें पड़ीं, पर मैंने अपनी विवेक-बुद्धि को नष्ट न होने दिया। पर आज हर्ष के एक ही झोंके में मैं अपना कर्त्तव्याकर्त्तव्य भूल गया!"

"जैम्री!" डायना ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"ईश्वर जानता है, मैं जो कुछ पूछना चाहती हूँ, वह केवल कौतूहल-निवृत्ति के लिये नहीं है। कृपा करके मुझे सारा हाल साफ़-साफ़ कह सुनाओ।"

"यह नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता? यह भेद मेरे और तुम्हारे साथ समान रूप से सम्बन्ध रखता है, इसलिये उसको मुझसे गुप्त रखने का तुम्हें कोई हक नहीं है।"

"यह ठीक है; पर इस भेद के भार से मैं ही दबा जा रहा हूँ, तुम्हें बताकर परेशानी में डालना मुझे मञ्जूर नहीं।"

"नहीं जैम्री, मैं विनय करती हूँ बतादो।"

"लेकिन मैंने बादशाह से क़सम खाई थी..........."

"तम अपने अन्य परिचित-अपरिचित मित्रों से इस भेद को छुपाये रख सकते हो, लेकिन मुझसे—जिसे उसको जानने का बराबर का हक़ है, बताने में आपकी क़सम नहीं टूटेगी। मुझ पर दया करो जैम्री, मैं पहले ही काफ़ी तक लीफ़ भोग चुकी हूँ। मेरा हृदय संशय और कौतूहल के हचकोलों में पड़कर जर्जरित हो गया है। इसलिये, अगर हमारा पुण्य-सम्बन्ध स्थापित न हो सके, तो कम-से-कम सन्तोष और धैर्य का जीवन तो बीते। बोलो! जैम्री, बोलो।"

"ओह ! डायना, अगर तुम इस रहस्य को जानने पर तुल ही गई हो, तो मैं उसे छुपाये नहीं रख सकता। मेरे शब्द वास्तव में सत्य हैं। तुम शायद मेरे पिता काउण्ट डि-माण्टगॉमरी की कन्या, और मेरी बहन हो।"

"माँ मरियम !.......भला यह कैसे हो सकता है ?"

"मैं चाहता था डायना, कि यह पाप-पूर्ण कहानी तुम्हें न मालूम हो, तभी अच्छा है, लेकिन मैं तुमसे अधिक देर तक छिपाये नहीं रह सकता।"

तब उसने धीरे-धीरे सारी कहानी कह सुनाई।

"भयानक !" सुनकर डायना ने कहा—"सचाई कुछ भी हो, हमारे लिये अन्त भयानक ही दीखता है। अगर मैं काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी की कन्या हूँ, तो तुम मेरे भाई हुए; अगर बादशाह मेरे पिता हैं, तो आपके पिता उनके जानी दुश्मन हुए !

"नहीं, डायना ! एकदम निराशा का कोई कारण नहीं है। अभी मैंने पूरी बात तुम्हें नहीं सुनाई।"

तब उसने बादशाह के वादे की बात उसे बताई, कि दुश्मन के एक शहर पर कब्ज़ा कर लेने के बाद उसे अपने पिता के मुक्त होने की आशा है, और तब इस भेद पर प्रकाश पड़ सकता है। डायना के हृदय में फिर आशा का अंकुर उदय होना शुरू हुआ।

"मेरे प्यारे जैब्री," उसने कहा—"निस्सन्देह तुम्हारी बातों में धीरज की बहुत-कुछ सामग्री है। इस समय हमें बुरी बातों का विचार छोड़ देना चाहिये। तुमने बादशाह से कहा हुआ अपना वचन पूरा किया, और आशा है, वे भी अपना वचन-पालन करेंगे।"

"मैं अब," जैब्री ने कहा—"ड्यूक डि-गाई के पास जाऊँगा। उन्होंने बादशाह के नाम एक चिठ्ठी लिखकर देने का वादा किया

है। वे उसमें मेरी समस्त सेवाओं का उल्लेख कर देंगे। तब मैं पेरिस चला जाऊँगा।"

"जैब्री, मेरी बात सुनो। ड्यूक के इस पत्र के साथ-ही-साथ मेरा भी एक पत्र तुम साथ ही लेते जाना। जिस प्रकार तुमने मेरी रक्षा की है, वह सब वृत्तान्त तुम बादशाह को सुना देना। इस प्रकार सब लोग जान जायेंगे, कि तुमने न सिर्फ बादशाह के लिये दुश्मन का एक शहर जीता है, बल्कि एक पिता के लिये उसकी कन्या का उद्धार भी किया है। यह बात मैं इतनी दृढ़तापूर्वक इसलिये कहती हूँ, कि मेरा मन कहता है, कि वास्तव में मैं बादशाह की ही कन्या हूँ।"

"ईश्वर करे, तुम्हारा कथन सत्य हो।"

"जैब्री, मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है, कि हमारे भविष्य का हाल पहले तुम्हें मालूम हो जायगा। ख़ैर, मैं भी जल्द आऊँगी; क्योंकि अगर ड्यूक डि-गाई ने कष्ट न माना, तो मैं कल-परसों ही उनसे रवाना होने की अनुमति माँग लूँगी। पर मैं तो धीरे-धीरे पहुँचूँगी, इसलिये मेरे-तुम्हारे बीच शायद कई दिन का अन्तर पड़ जाय।"

"आह! डायना, तुम जल्द-से-जल्द आने की कोशिश करना।"

४०

अगले दिन पीर पिकॉय का सारा परिवार मार्टिन गेर की शैया के निकट उपस्थित था। डॉक्टर पारे ने मार्टिन की टाँग का ऑपरेशन कर दिया था, और वह धीरे-धीरे सम्हल रहा था।

सारा हाल सुनकर पीर पिकॉय को अपनी ग़लती पर जितना पश्चात्ताप था, उसका चित्रण करना असम्भव है। इस थोड़े-से समय में ही उसने कई बार मार्टिन से कहा, कि वह उसका सर्वस्व लेकर भी उसे माफ़ कर सके, तो कर दे। अलबत्ता उसे इस बात का सन्तोष था, कि अगर असली मार्टिन गेर विवाहित है, तो सम्भव है, बैबिट का कौमार्य नष्ट करनेवाला व्यक्ति अविवाहित हो; —

उसके साथ अपनी बहन का विवाह करके वह इस अनर्थ का प्रतिकार कर सके। परन्तु जीन का भाव अधिक दुःखपूर्ण दिखाई देता था, और बैबिट ने मुँह लटका लिया था।

जीन और पीर अभी-अभी ड्यूक डि-गाई के पास से लौटकर आये थे। उसने उन्हें बुलाकर उनके प्रयत्नों के लिये व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद दिया था। पीर ने आते ही बैबिट से कहा—"जब हम ड्यूक के सामने पहुँचे, और काउण्ट डि-एक्सेम ने हमारी सहायता का उल्लेख किया, तो उसने अत्यन्त सहृदयता-पूर्वक हमें धन्यवाद दिया, और अपने योग्य कार्य के लिये पूछा। मैंने उसका अनुरोध किसी अन्य अवसर के लिये सुरक्षित कर दिया है, और समय आने पर ड्यूक के द्वारा मैं उस भले आदमी को मजबूर करूँगा, कि वह तुम्हारे प्रति अपने कर्तव्य का पालन करे।" सहसा बैबिट को रोते हुए देखकर उसने पूछा—"हैं! तुम रोती क्यों हो?"

"भाई, मैं अभागिनी हूं।" वह सिसकियाँ लेती हुई बोली।

"लेकिन अब तो नई आशा हो गई है।"

"नहीं, मेरा कष्ट बढ़ने के सामान हो गये।"

"नहीं, धीरज रक्खो; तुम्हारा प्रेमी अवश्य मिल जायगा, और उसके साथ तुम्हारा विवाह होगा।"

"लेकिन अगर मैं उससे विवाह न करूँ?"

जीन पिकॉय के चेहरे पर हर्ष की एक रेख दौड़ गई। जैक्री भी वहीं मौजूद था। जीन के भाव पर उसके अतिरिक्त किसी ने लक्ष्य न दिया।

"विवाह न करो! तुम्हें तो उससे प्रेम हो गया था?"

"मुझे उससे प्रेम नहीं हुआ था, बल्कि एक बीमार आदमी के प्रति करुणा-भाव होने के कारण ही मेरे मन में अनुराग की उत्पत्ति

हो गई थी। लेकिन जिस व्यक्ति ने मुझे धोखा दिया, और मुझे त्याग कर चला गया, मैं उस नर-पशु से घृणा करती हूँ।"

"और अगर वह तुमसे विवाह कर ले ?"

"अब अगर वह विवाह करेगा, तो या तो डर से, अथवा स्वार्थ से। मैं ऐसे आदमी का मुँह भी न देखूँगी।"

"बैबिट," उसके भाई ने कठोरता-पूर्वक कहा—"अब तुम्हें ऐसी बात कहने का हक़ नहीं रहा।"

"भाई! मुझे ऐसे आदमी से विवाह करने पर मजबूर न करो, जिसे स्वयं तुम भी मनुष्य नहीं, राक्षस समझते हो।"

"लेकिन बैबिट, अपनी प्रतिष्ठा का भी तो ख़याल करो।"

"मैं अपने पाप से लज्जित हो सकती हूँ, पर अपने पति के कारण दुनियाँ की घृणा-पात्री नहीं बनना चाहती।"

"तो तुम मेरी इच्छा पूरी न करोगी ?"

"भाई, मैं तुमसे दया की भीख माँगती हूँ।"

"नहीं, मेरी आज्ञा है कि तुम्हें विवाह करके हमारे वंश की मान-रक्षा करनी ही होगी।"

"भाई, तुम तो मुझे मौत के मुँह में ही ढकेलना चाहते हो!" बैबिट ने रोते हुए कहा—"ख़ैर, जब कोई मेरा भी पक्ष लेने वाला नहीं है, तो मैं अपना मुँह सिये लेती हूँ; जो तुम्हारे जी में आये, करो।"

अब जीन पिकौंय अपने-आपको न रोक सका। बोला—"कौन तुम्हारा पक्ष ले—जब कि तुम्हारे भाई का कथन बिल्कुल न्याय-युक्त है ? उसे अपने वंश की मान-रक्षा के लिये तुम्हें कुएँ में ढकेलते दया नहीं आती, तो कोई क्या करे ? उसे इस बात का जरा भी खयाल नहीं, कि जब उस बदमाश आदमी की हरकतों के लिये काउण्ट डि-एक्सेम बादशाह के दरबार में प्रार्थना करेंगे, तो तुम्हें

गवाही में घसिटना पड़ेगा, और तब उनके वंश की प्रतिष्ठा में चार चाँद लग जायँगे !"

"जीन !" पीर ने स्तम्भित होकर कहा—"तुम तो बहुत ही शान्त-प्रकृति थे। यह उत्तेजना आज कहाँ से आ गई ?"

"पीर, तुम अपने निश्चय के परिणाम पर विचार नहीं करते।"

"मैं मानता हूँ जीन, कि स्थिति बड़ी नाज़ुक हो गई है, पर इसमें मेरा क्या वश है ! तुम्हीं बताओ, कोई इसमें अच्छा रास्ता है ?"

"हाँ; है क्यों नहीं ?"

"वह क्या ?" पीर और बैबिट ने एक-साथ चिल्लाकर पूछा।

"वह यह है," जीन ने शान्त स्वर में कहा—"कि किसी ऐसे आदमी को तलाश की जाय, जो बैबिट के दुर्भाग्य से बहुत प्रभावित हुआ हो, और उसके साथ विवाह करना स्वीकार कर ले।"

पीर ने सिर हिलाकर कहा—"ऐसा आदमी कोई नहीं मिल सकता।"

अब जैब्री ने बीच में पड़कर कहा—"मौशिये पीर, मैं ऐसा आदमी तुम्हारे सामने पेश कर सकता हूँ।"

पीर ने चौंककर पूछा—"कौन ?"

जैब्री ने कनखियों से जीन और बैबिट की तरफ देखते हुए कहा—"वह आदमी बैबिट से सहानुभूति रखता है, और उस पर हार्दिक अनुराग रखता है। कहिये मौशिये, क्या मैं उनका नाम बता दूँ ?"

"हाँ ! हाँ !"

"तो बहन बैबिट, क्या मेरी यह धारणा गलत है, कि तुम जीन को हृदय से चाहती हो, और जीन, क्या मुझे यह कहने की आवश्यकता पड़ेगी, कि बैबिट पत्नी रूप में पाकर तुम अत्यन्त आनन्दित होगे ?"

"ओहो ! ऐसा ?" पीर ने हर्ष से उछलकर कहा।

क्षण-भर के लिये जीन और बैबिट की आँखें चार हुईं और फिर, न-जाने किस शक्ति के साथ वशीभूत होकर दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

हर्षातिरेक के कारण पीर के मुँह से शब्द निकलना कठिन हो गया, और उसने नेत्रों में अलौकिक कृतज्ञता का भाव भरकर जीन का हाथ दबाया।

उधर मार्टिन-महाशय खाट पर पड़े-पड़े खुशी से तालियाँ बजा रहे थे!

× × ×

उसी दिन शाम को जैब्री कैले से चला जाने वाला था। चलते-चलते वह डायना से मिला। उसने बादशाह के नाम अपना कथित पत्र दिया, और कहा—"मोशिये, आपका जिगरी मार्टिन गेर तो बीमार है—आप उसे छोड़े जा रहे हैं, इसलिये मैं आपको लड़का सौंपती हूँ। इसका नाम एएडर है, और इसे लार्ड वेएटवर्थ ने मेरी सेवा के लिये छोड़ रक्खा था। उम्र तो इसकी अभी सतरह वर्ष की ही है, पर हिम्मत और बहादुरी में बड़े-बड़े तलवरिये इसका मुकाबला नहीं कर सकते।"

"इसके लिये धन्यवाद, लेकिन प्यारी डायना, मैं तो एक-दम जा ही रहा हूँ।"

"वह शहर के बाहर जाते-जाते तुम्हारे पास पहुँच जायगा।"

"तब मुझे कोई आपत्ति नहीं।.........और हाँ, उससे मैं तुम्हारे विषय में कभी-कभी कुछ बातें भी कर लिया करूँगा।"

"यही मेरा भी खयाल था।" उसने शर्माकर जवाब दिया—"अच्छा, अब विदा!"

"विदा नहीं डायना, हम फिर मिलेंगे।"

"हाय! न-जाने अब कब और कैसे मिलेंगे? अगर हमारे भाग्य

की समस्या दुःखान्त होने वाली हो, तो हमारा न मिलना ही अच्छा है।"

"ऐसा मत कहो, डायना ! लेकिन चाहे जो कुछ कहो, खबर तो मुझे ही पहुँचानी होगी।"

"हे भगवान् ! मैं अपने दुर्भाग्य का समाचार तुम्हारे मुँह से सुनना नहीं चाहती।"

"तब मैं क्या करूँ ?"

डायना ने अपनी उँगली से अँगूठी उतारी, और सन्दूक में से वह काली निकाब निकाली, जो वह सेएट क्वेरिटन के आश्रम में उपयोग किया करती थी। तब अत्यन्त गम्भीर स्वर में कहने लगी—"जैब्री, मुझे पूरी आशा है, कि हमारी इच्छाएँ पूर्ण होंगी। यदि ऐसा हो, तो तुम एण्डर को पेरिस से भेज देना; ताकि वह रास्ते में ही आकर मुझसे मिल लें। अगर घटना-क्रम हमारे पक्ष में हो, तो उसके हाथ यह अँगूठी काउण्टेस डि-माएटगामरी के पास भेज देना; अगर ईश्वर न करे, अवस्था प्रतिकूल हो, तो आश्रम में रहने वाली देवी बेनी के पास इस नकाब को भेज देना।"

"डायना, तुम स्वर्ग की देवी हो।"

दोनों की चार आँखें हुई, और डायना ने कहा—"नमस्कार जैब्री, फिर मिलेंगे—इस लोक में अथवा परलोक में !"

इसके आध घण्टे बाद किशोर एण्डर के साथ वह पेरिस जानेवाली सड़क पर चला जा रहा था। उसके साथ कैले के अँग्रेजी झण्डे और शहर की चाबियाँ भी थीं।

४१

सन् १५५८ की १२ जनवरी का दिन था। उस दिन राजमहल में सभी बड़े-बड़े सरदार और अमीर जमा थे। बादशाह उस दिन असाधारण रीति से स्तब्ध था। वह कैले के समाचार जानने के लिये अत्यन्त उत्सुक था। बार-बार उसे इस बात पर दुःख होता था,

कि उसने क्यों ड्यूक को ऐसी असाध्य मुहिम पर भेज दिया। सहसा दरबान ने प्रवेश किया, और अभिवादन के पश्चात् निवेदन किया, कि सेनापति ड्यूक डि-गाईं के पास एक अफसर आया है, और बादशाह से भेंट करना चाहता है।

बादशाह ने उसे लाने की आज्ञा दी। जितने आदमी वहाँ जमा थे, सब साँस रोककर आगन्तुक की प्रतीक्षा करने लगे। जरा देर के बाद जैब्री ने भीतर आकर महाराज को नमस्कार किया। उसके पीछे-पीछे चार आदमी अँग्रेजी झण्डों को लिये हुए चले आ रहे थे। जैब्री के हाथों में एक मखमली गद्दी थी, जिस पर कैले के राज-कोष की चाभियाँ और डायना के दोनों पत्र रक्खे हुए थे। जैब्री को देखते ही हेनरी पर हर्ष और भय का मिश्रित प्रभाव हुआ, उसके मुँह से निकल पड़ा—"विस्काउण्ट डि-एक्सेम !"

कॉन्सटेबिल और डायना डि-पोतेईं की आँखें चार हुईं, और दोनों ने दोनों के मन का उद्वेग पढ़ लिया। परन्तु जैब्री गम्भीर और स्थिर भाव से आगे बढ़ा, और बादशाह के सम्मुख घुटने टेककर बोला—"महाराज, मैं आपकी सेवा में कैले के राज-कोष की चाभियाँ उपस्थित करता हूँ, जिस पर आपकी कृपा और ड्यूक डि-गाईं महोदय की वीरता के फल-स्वरूप सात दिन के भीषण युद्ध के बाद हमारा कब्जा हो गया।"

"कैले पर हमारा कब्जा हो गया ?" बादशाह ने खुशी से चीखकर कहा।

"जी हाँ।"

तब समस्त उपस्थित जन-मण्डली ने बादशाह का जय-निनाद किया।

बादशाह ने चारों तरफ देखते हुए हर्षित होकर कहा—"सज्जनों, मुझे आपकी जय-भावना स्वीकार है। पर असल जय-

ध्वनि तो ड्यूक डि-गाईं की होनी चाहिए थी। अब वे चूँकि यहाँ उपस्थित नहीं हैं, इसलिये उनके सुयोग्य भाई कार्डिनल डि-लॉरें और उनका सन्देश लेकर आने वाले बहादुर विस्काउण्ट डि-एक्सेम को मेरा साधुवाद है।"

"महाराज," जैब्री ने विनय-पूर्वक कहा—"धृष्टता क्षमा कीजिएगा; मैं अब विस्काउण्ट डि-एक्सेम नहीं हूँ।"

"फिर ?" हेनरी ने भवें चढ़ाकर पूछा।

"कृपानिधान, कैले-विजय के बाद मुझे सर्व-साधारण में प्रकट कर देना चाहिए—कि मेरा नाम विस्काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी है।"

इस नाम की आवाज कान में पड़ते ही, जो एक मुद्दत से लोगों ने न सुना था, सब के मुँह से आश्चर्य्य की एक अस्पष्ट ध्वनि निकल गई। क्या विस्काउण्ट डि-मॉण्टगॉमरी अभी तक जीवित है ?

बादशाह का रङ्ग सफेद पड़ गया, और क्रोध और अधीरता से उसके ओठ काँपने लगे। उसने कहा—"मोशिये, इसका क्या मतलब है और यह धृष्टता तुमने क्यों की ?"

"श्रीमान्! यही मेरा असली नाम है, और जिसे आप धृष्टता कहते हैं, वह मेरा आत्म-विश्वास है।"

"तुम्हारी व्यक्तिगत बातें बाद में होंगी, फिलहाल तो मुझे यह कहना है, कि तुमने अपना वादा पूरा नहीं किया दीखता।"

इसके उत्तर में जैब्री ने ड्यूक का पत्र बादशाह के हाथ में दे दिया, और जिसे कार्डिनल डि-लॉरें ने पढ़ना शुरू किया। पत्र बहुत लम्बा था, और कैले तथा उसके समीपवर्ती क़िलों की विजय के विस्तृत समाचार के बाद अन्त में लिखा था—

"..........जिस दिन हमने कैले में प्रवेश किया, मेरे मस्तक पर एक गहरा घाव लग गया था। परन्तु एम्ब्रोईं पारे नामक एक

कुशल डॉक्टर ने मुझे मौत के मुँह से बचा लिया। इस विषय में अधिक बातें मेरा वही बहादुर सहकारी बतायेगा, जो अँग्रेजी झण्डे और यह पत्र लेकर आपकी सेवा में जा रहा है, और जिसके विषय में मुझे बहुत कुछ कहना चाहिए। सच बात यह है, कि उसकी सहायता के बिना मैं कैले को कदापि विजय नहीं कर सकता था। यद्यपि मेरी सेना ने लड़ाई करने में कोई कसर नहीं उठा रक्खी, परन्तु हमारी सफलता का अधिकांश श्रेय वास्तव में मोशिये डि-एक्सेम को ही मिलना चाहिए। मैं स्वीकार करता हूँ, कि उसके प्रस्ताव और अतुल शौर्य के बिना मैं इस तरफ आने का कभी साहस भी नहीं कर सकता था। जब हम सेण्ट अगैथा और निउली के क़िलों को विजय करने के बाद कैले के सामने पड़े थे, तो यह काउण्ट डि-एक्सेम की ही हिम्मत थी, कि अँधेरी रात में जान हथेली पर रखकर उसने अपने मुट्ठी-भर निजी आदमियों की मदद से ऑक्टेगन-बुर्ज पर अधिकार कर लिया, जो एक प्रकार से कैले-नगर की कुञ्जी थी;—अन्यथा, इँग्लैण्ड से कुमुक मिलते ही, दुश्मन हमें भून देते........"

इसके आगे अनेक स्थलों पर जैब्री ने सेनापति को जो-जो सहायता दी थी, पत्र में उसका उल्लेख बहुत ही विस्तार-पूर्वक और आकर्षक ढङ्ग से किया गया था।

पत्र समाप्त होने पर, जितने आदमी उपस्थित थे, सब-के-सब 'धन्य-धन्य!' कह उठे, और जैब्री के प्रति सब के मन में अपूर्व श्रद्धा और आदर के भाव उत्पन्न हो गये। बादशाह भी अपने को रोक न सका, और बोला—"शाबाश मोशिये, आपने सचमुच बड़ी वीरता का काम किया है, और मैं तुम्हें तुम्हारे मनमाफिक पुरस्कार दूँगा।"

"महाराज, मैं जो पुरस्कार चाहता हूँ, वह आपको मालूम है। पर हाँ, एक पत्र मैडम डि-कैस्ट्रो का भी है।"

बादशाह ने व्यग्र भाव से डायना का पत्र पढ़ा, और कहा—"मैडम डि-कैस्ट्रो भी अपने रक्षक की प्रशंसा करती हैं। वह लिखती हैं, कि तुमने न-सिर्फ उन्हें मुक्त किया, बल्कि ऐन वक्त पर उनकी इज्जत भी बचाई है।"

"कृपानिधान, मैंने केवल अपना कर्त्तव्य-पालन किया है।"

"तो अब समय आया है, कि मैं अपना कर्त्तव्य-पालन करूँ। लो, यह अँगूठी लो," बादशाह ने बहुत धीमे स्वर में कहा—लेकिन डायना डि-पोतेई ने पास सरककर सब कुछ सुन लिया—"कल आठ बजे बड़े जेलखाने पर जाकर गवर्नर को इसे दिखाना, और तुम्हारे पिता को तुम्हें सौंप दिया जायगा।" जैब्री ने घुटने टेककर अँगूठी ले ली। तब बादशाह ने मुसकराकर जोर से कहा—"उठो, और अब कैले-विजय का विस्तारपूर्वक वर्णन् करो।"

४२

बादशाह के पास जैब्री को घण्टा-भर से अधिक टिकना पड़ा। इतनी देर उसने कैले-विजय का सविस्तर वर्णन सुनाया। सहसा उसकी दृष्टि डायना डि-पोतेई पर जा पड़ी। वह इस समय बादशाह के पास पहुँचकर धीमे स्वर में उनसे वार्तालाप कर रही थी। उसके चेहरे का भाव देखकर और बादशाह की प्रतिरोध-चेष्टा पर नजर पड़ते ही जैब्री का हृदय आशङ्का से भर उठा। सहसा डायना ने बूढ़े कॉन्सटेबिल को अपने निकट बुलाया, और तब वे दोनों बादशाह पर किसी बात का जोर डालने लगे।

उधर रानी-बहू मैरी स्टुअर्ट ने प्रशंसा-मिश्रित भाव से जैब्री के साथ वार्तालाप आरम्भ कर दिया। इस भलीमानस लड़की के हृदय में आरम्भ से ही जैब्री के लिये बड़े सम्मान का भाव था, और राजमहल में आने पर अनेक बार जैब्री उसके इस भाव का

परिचय पा चुका था। अस्तु, उसके इस समय के प्रश्नोत्तर में बादशाह और डायना डि-पोतेई की तरफ से जैब्री का ध्यान हट गया।

जब मैरी स्टुअर्ट उससे बात कर चुकी, तो फिर उसने बादशाह की तरफ ताका। उस समय बादशाह की प्रतिरोध-भावना लुप्त हो चुकी थी, और वे डायना और कॉन्सटेबिल की बातों को विचार-पूर्वक सुन रहे थे। यह दृश्य देखकर जैब्री का हृदय बाँसों उछलने लगा, और उसके मुँह से गहरी वेदना का एक उच्छ्वास निकल गया।

सहसा कैप्टेन कॉलिनी उसके समीप आ खड़ा हुआ, और उसकी वीरता की प्रशंसा करता हुआ बोला—"मुझे विश्वास है, कि आपको हमारे विरुद्ध लड़ने का संयोग प्राप्त नहीं होगा।"

"कदापि नहीं; पर आपकी बात का मतलब क्या है ?"

"अजी, बादशाह की आज्ञा से हमारे दल के चार आदमी जीवित जला दिये गये," कॉलिनी ने कहा—"उधर हमारे दल का बल दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। मेरा विश्वास है, शीघ्र ही भीषण संघर्ष का आरम्भ होगा।"

"फिर ?"

"फिर क्या—मोशिये एक्सेम, हमारी मीटिंगों में शरीक होकर भी आपने हमें अपना पूरा सहयोग देने से जो अब तक बञ्चित रक्खा है, उस से सुधारक-दल को यह सन्देह होने लगा है, कि आप कदाचित् बादशाह के विरुद्ध हमारी मदद करने को तैयार न हों।"

"नहीं, आपका अनुमान गलत है," जैब्री व्यग्र भाव से बादशाह की गति-विधि का निरीक्षण करते हुये कहा—"मेरी धारणा तो यह है, कि मैं शीघ्र ही अत्याचारियों के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला विद्रोह की घोषणा कर दूँगा।"

"यह क्या—जैब्री महोदय, आप सहसा व्यग्र क्यों हो गये ? आपके चेहरे का रङ्ग फक़् क्यों पड़ गया ? जान पड़ता है, आप किसी मनोव्यथा का अनुभव कर रहे हैं।"

जैब्री ने उसी क्षण बादशाह के चेहरे पर आत्म-समर्पण का सम्पूर्ण भाव देखा था, और कॉन्स्टेबिल और डायना डि-पोतेई के नेत्रों में विजय-गर्व का उल्लास, फिर भी, जब विदा होने के लिये जैब्री बादशाह के पास पहुँचा, तो बोला—"तो महाराज, कल सुबह तक..............."

"हाँ, मोशिये—कल सुबह तक........" कहकर बादशाह ने अन्यमनस्क भाव से मुँह फेर लिया।

मन में भीषण भय का भाव छिपाये हुए जैब्री विदा हुआ। सन्ध्या-समय वह बहुत देर तक राज्य के उस क़ैदख़ाने के चारों तरफ़ चक्कर काटता रहा, जिसमें उसका अभागा बाप बन्द था। काफ़ी रात बीत जाने पर भी जब उसने किसी नवागन्तुक को वहाँ नहीं देखा, तो उसकी हिम्मत कुछ बँधी। तब सहसा उसे बादशाह का स्पष्ट वचन याद आया, कि उसके मन की इच्छा अवश्य पूरी होगी। इसे स्मरण करके वह फिर आशा के तार में झूलने लगा।

× × × ×

उन कुछ घण्टों के भीतर जैब्री को जिस भीषण संघर्ष में से गुज़रना पड़ा, जो क़ैदख़ाने से लौटने पर उसने अपने घर में बिताये, उनका ठीक अनुभव स्वयं उसके अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। अपने मन की बात उसने जान से प्यारी एलोई से भी नहीं कही, और मन-ही-मन हज़ारों तरह के बाँधनू बाँधते हुए उसने बिना पलक झपकाये सारी रात काट दी।

सुबह आठ बजे उसे जेलख़ाने में जाकर बादशाह की अँगूठी गवर्नर को दिखानी थी, और अपने पिता का उद्धार करना था। छः बजते-बजते वह नीचे उतर आया, और एक बहुत लम्बी यात्रा

की तैयारी करने लगा, घर में जितना नक़द रुपया-पैसा था, सब उसने एक जगह एकत्रित किया, और अपने नये नौकर एण्डर को बुलाकर कहा—

"एण्डर, मुझे किसी बहुत ज़रूरी मुहिम पर जाना है, और कुछ काम तुम्हारे सुपुर्द करना चाहता हूँ।"

"जो आज्ञा!"

"तो ध्यान से सुनो। एक घण्टे बाद मैं यहाँ से रवाना हो जाऊँगा। मेरे साथ कोई नहीं जायगा। अगर मैं थोड़ी देर बाद ही लौट आऊँ, तब तो तुम्हें कुछ करना-धरना नहीं होगा; उस अवस्था में मुझे तुमको दूसरी ही आज्ञा देनी पड़ेगी। लेकिन सम्भव है, मैं आज, या कल—या बहुत दिनों तक वापस न लौट सकूँ।"

"मोशिये, मेरी धृष्टता क्षमा करें—क्या आपका मतलब है, कि शायद मैं भी दीर्घ काल तक आपकी सेवा में वञ्चित रहूँ?"

"सम्भव है।"

सुनकर एण्डर ने खेद-पूर्वक सिर हिलाया, और जेब से एक चिट्ठी निकाल कर जैब्री के हाथ में देते हुए कहा—"यह चिट्ठी मैडम डि-कैस्ट्रो ने मुझे दी थी, और कहा था, कि मैं जिस समय आपको अत्यन्त विषण्ण देखूँ, उस समय इसे आपको दे दूँ।"

जैब्री खिड़की के पास गया, और पत्र खोलकर पढ़ा। लिखा था—

"जैब्री,

मेरा मन यह कहता है, कि शायद तुम कभी यह अनिवार्य समझो, कि बादशाह से बदला लेना तुम्हारा पवित्र कर्त्तव्य है, इसलिये मेरे इस निवेदन पर ध्यान देना। यद्यपि मैं यह नहीं जानती, कि बादशाह मेरे पिता हैं, या नहीं, लेकिन मैंने उनसे एक सच्चे पिता का सच्चा स्नेह पाया है, इसलिये तुम्हारे उनके बीच किसी प्रकार के संघर्ष की कल्पना करके मेरा हृदय काँपता है। जैब्री, अगर कभी

तुम ने मुझे प्रेम किया है, तो मैं हाथ जोड़कर कहती हूँ, कि मेरे इसी प्रेम की खातिर तुम सदा बादशाह के व्यक्तित्व का सम्मान करना, और कभी उनसे बदला लेने का प्रयत्न न करना। दया! दया!

तुम्हारी—डायना-डि-कैस्ट्री।"

जैब्री ने इस पत्र को पढ़कर मुँह पर कोई भाव प्रकट होने न दिया, और एण्डर से कहा—"अगर मैं शाम तक न लौटूँ, तो तुम तुरन्त मैडम डि-कैस्ट्री से रास्ते में जाकर मिलना, और यह बण्डल उन्हें देकर कहना, मैं उनकी आज्ञा मानने का प्रयत्न करूँगा, और यह कि मैं उन्हें उनके समस्त वचनों से विमुक्त करता हूँ। तुम चाहो, तो उनके पास ही रहना, या यहाँ मेरे लौटने की प्रतीक्षा करना।"

"तो तुम लौटोगे तो सही?" ऐलोई, जो सारी बात सुन रही थी, आँखों में आँसू भरकर बोली।

"जल्दी या देर में—लौटूँगा जरूर, प्यारी अम्माँ, धीरज से मेरी प्रतीक्षा करना!"

इसके आध घण्टे बाद जैब्री ने काँपते हाथों से कैदखाने के दर्वाजे पर दस्तक दी।

४३

जेलखाने के पुराने गवर्नर सल्वासिन की मृत्यु हो चुकी थी। नये गवर्नर का नाम था—मोशिये सैय्राँ। जैब्री ने उसके सम्मुख पहुँचकर बादशाह की दी हुई अँगूठी पेश की। मोशिये सैय्राँ इस अँगूठी के देखते ही विनयपूर्वक झुका, और बोला—"मोशिये, मैं आपकी प्रतीक्षा ही कर रहा था। एक घण्टा पहले मुझे फरमान मिला है, कि मैं इस अँगुठी को लानेवाले व्यक्ति के साथ नवम्बर २१ के बे-नाम कैदी को मुक्त कर दूँ। कहिये, मेरा कथन सत्य है?"

"हाँ, हाँ, मोशिये—इस फरमान को............"

"मैं खुशी के साथ बजा लाऊँगा।" गवर्नर ने ऐसे स्वर में कहा, जिसमें प्रच्छन्न वेदना का भाव निहित था।

"ओह! तब तो मेरे सारे सन्देह व्यर्थ थे। जैब्री ने हर्ष से चीखकर कहा—"मोशिये, चलिये, कृपा करके जल्दी कीजिये।"

जैब्री गवर्नर के पीछे चला। लेकिन हर्षातिरेक से उसका अंग-अंग शिथिल हो गया। उसने कहा—"मोशिये, क्षमा कीजियेगा—कभी-कभी हर्ष का सहन करना अत्यन्त कठिन हो जाता है।"

"जी नहीं, हर्ष मानने की जरूरत नहीं है।" इस बार गवर्नर का दुःखित स्वर सुनकर जैब्री चौंक पड़ा, और उसने स्तम्भित दृष्टि से गवर्नर की तरफ ताकते हुए धीमे स्वर में कहा—"चलिये, मैं सम्हल गया।"

दोनों जीने की राह नीचे उतरे। उस कोठरी के आगे पहुँचकर जिसमें जैब्री ने अपने पिता को उस दिन कैद देखा था, उसके मुँह से निकला—"इसमें!" परन्तु मोशिये सैग्राँ ने खेदपूर्वक सिर हिलाकर कहा—"जी नहीं, उसमें नहीं।"

"क्या! उसमें नहीं?"

"जी नहीं।"

"क्या मतलब?"

"मोशिये, मुझे खेदपूर्वक कहना पड़ता है, कि कल शाम को वह क़ैदी सब से नीचेवाले तहखाने में बन्द कर दिया गया।"

"हाय!" जैब्री ने तड़पकर कहा—"भला क्यों?"

"शायद आपको पता हो, कि इस कैदी को यह सूचना दे दी गई थी, कि अगर उसने अपने मुँह से एक शब्द भी निकाला, तो उसे सब से नीचेवाले तहखाने में भेज दिया जायगा। एक बार पहले इस उसने फरमान को भूलकर मुँह से कोई शब्द निकाल दिया था,

जिसके परिणामस्वरूप इसे उस भीषण कारागार में ठेल दिया गया था।"

"अच्छा—फिर ?" जैब्री ने व्यग्रतापूर्वक चीखकर कहा।

"कल रात को एक सज्जन यहाँ आये, जिनका राजकार्य में बड़ा हाथ है, और जिनका नाम बताने की हिम्मत मुझ में नहीं है।"

"खैर, तब क्या हुआ ?"

"उन्होंने इस कैदी की कोठरी में प्रवेश किया, और मेरे सामने ही कैदी से बहुत सी बातें कहीं, जिनका कोई उत्तर कैदी ने नहीं दिया। लगातार आध घण्टे तक कैदी स्तब्ध रहा, पर सहसा आगन्तुक सज्जन ने एक ऐसी बात कही, कि कैदी की आँखों में से आँसू बहने लगे, और वह बोल पड़ा।"

"तब ?"

"तब मुझ से पूछा गया, कि मैं नियमानुसार उसे सबसे नीचे-वाले तहखाने में भिजवा दूँ, मैंने बहुतेरी मिन्नत समाजत की, पर उन्होंने एक न मानी। अगर मैं उनके आज्ञा-पालन से इनकार कर देता, तो उनके पास ऐसे साधन मौजूद थे, जिनकी सहायता से वह कैदी को तुरन्त नीचे भिजवा सकते थे ; साथ ही मुझे बादशाह का कोप-भाजन बनना पड़ता।"

"ओह ! तब तो आओ—दौड़कर चलें ; क्योंकि मैं उस कैदी को मुक्त करने आया हूँ।"

गवर्नर ने मातम-भरे भाव से सिर हिलाया। उधर जैब्री ने उतरना शुरू कर दिया था। गवर्नर ने सिपाही के हाथ से मशाल ले ली, और उसके पीछे-पीछे चला। ज्यों-ज्यों वे नीचे उतरते जाते थे, हवा अधिककाधिक गन्दी और दम-घोंटू होती जाती थी, और जब वे तहखाने ती तह में पहुँचे, तो उन्हें साँस लेना भी कठिन हो गया।

जैक्री ने गवर्नर से ताली ली, और पलक-मारते तहखाने का मिट्टी-सना भारी दर्वाजा खोलकर भीतर घुसा। मशाल की रोशनी में उसने देखा—तहखाने के एक कोने में किसी अभागे का शरीर निश्चेष्ट पड़ा है। देखते ही वह "हाय, मेरे पिता!" चिल्लाकर उस शरीर की तरफ दौड़ा।

गवर्नर इस सम्बोधन को सुनकर सिर से पैर तक काँप उठा। उधर उस मृत शरीर के हाथ-पाँव जैक्री के हाथों पर झूलने लगे।

× × ×

जैक्री कुछ देर तक आश्चर्य-चकित होकर इस शव की तरफ़ ताकता रहा। तब उसने अपना हाथ उसके हृदय पर रक्खा।

"नहीं" क्षण-भर बाद ही उसने भयानक शान्तिपूर्ण स्वर में कहा—"दिल की हरकत बिल्कुल बन्द हो चुकी है—यद्यपि शरीर अभी तक गर्म है।"

"कैसी भीषण घटना है," गवर्नर ने मन-ही मन कहा—"शायद बूढ़ा थोड़ी देर पहले तक जीवित था।"

जैक्री ने झुककर मृत व्यक्ति की आँखें बन्द कर दीं, और पहली और आख़िरी बार उनकी श्री-हत आँखों का चुम्बन किया, जिन पर एक युग से बहते हुए आँसुओं के परत सूख गये थे।

"मोशिये," गवर्नर ने आगे बढ़कर कहा—"अगर मृत व्यक्ति आपके कोई प्रिय सम्बन्धी थे, तो मैं आपको शव ले जाने की अनुमति दे सकता हूँ।"

"आह! ठीक है," जैक्री ने उसे डरा देनेवाली स्तब्धता के साथ कहा—"वे अपना वादा पूरा करते हैं, और बड़ी सख़्ती के साथ पूरा करते हैं। वादा तो यही था, कि मेरे पिता को मुझे सौंप दिया जायगा; यह नहीं, कि जीवित या मृत।" कहते-कहते वह ज़ोर से हँस पड़ा।

"साहस करिये मोशिये," गवर्नर ने कहा—"अब हमें तुरन्त इस स्थान का परित्याग कर देना चाहिये; क्योंकि यहाँ की हवा बेहद बदबूदार और स्वास्थ्य के लिये ख़तरनाक है।"

"यह उसका सुबूत है," जैब्री ने शव की ओर उँगली उठाकर कहा।

"अच्छा, अब आइये।" मोशिये सैग्राँ ने इस बदनसीब नौजवान को हाथ का सहारा देते हुए कहा।

"अभी चलता हूँ, एक मिनट का समय और दीजिये।"

गवर्नर कोठरी के द्वार पर जा खड़ा हुआ, वहाँ हवा कुछ साफ़ थी, और जैब्री अपने पिता के शव के समीप घुटने टेककर बैठ गया। उसके मन में क्या-क्या भाव गुज़र रहे थे, यह कहना असम्भव है। लेकिन कुछ देर ठहरकर गवर्नर ने आवाज़ दी—"मोशिये, कृपा करके चलिये, बहुत देर हो चुकी।"

"आ गया महोदय!" कहकर जैब्री ने एक बार पुन: अपने पिता का कर-चुम्बन किया, और गवर्नर के साथ ज़ीना चढ़ने लगा।

ऊपर पहुँचकर गवर्नर ने कहा—"कहिये, मेरे योग्य और कोई काम है?"

"मोशिये, आपने कहा था, कि मैं अपने पिता का शव ले जा सकता हूँ। आज शाम को मैं अपने आदमियों को भेजूँगा। तब तक यदि आप शव को कफ़न पहनवा दें, तो मेरे आदमी क़ब्रिस्तान में ले जाकर अन्तिम क्रिया कर देंगे।"

"बहुत अच्छा; लेकिन किसी वादे के अनुसार आपको यह क्रिया चुपचाप करनी पड़ेगी।"

"अवश्य। जो लोग रात को यहाँ आयेंगे, उन्हें भी यह पता नहीं लगेगा, कि वे किसकी लाश ले जा रहे हैं, और......"

"बस, मोशिये, और अधिक मुझे न बतायें।"

"मुझे आप से कोई छिपाव नहीं है। छिपाव रखने की ज़रूरत तो पापी आदमी को ही होती है। ख़ैर, मोशिये, मैं यह और कहे जाता हूँ, कि जो व्यक्ति कल यहाँ आया था, और मेरे पिता को निचले तहख़ाने में डलवा गया, मैं उसे जानता हूँ।"

"क्या! आप जानते हैं?"

"हाँ, वह आदमी कॉन्टेबिल डि-मॉण्टमोरेन्सी था, और उसने वृद्ध से यह कहा था कि 'तुम्हारा पुत्र तुम्हें छुड़ाने आ रहा है' या 'तुम्हारा पुत्र आ पहुँचा है'। कहिये?"

गवर्नर ने कुछ उत्तर न दिया।

"आपने इसका विरोध नहीं किया, इसलिये मेरा कथन सत्य है। अच्छा, अब मोशिये, मैं आपसे अपना और अपने पिता का परिचय भी नहीं छुपाना चाहता; क्योंकि अब मेरे पिता की मृत्यु हो चुकी है, इसलिये मेरा नाम काउण्ट डि-मॉण्टगोमरी है। अच्छा, अब नमस्कार, और आपकी कृपा के लिये धन्यवाद।"

जेलख़ाने से बाहर आकर जैब्री किसी एकान्त स्थान पर पहुँचा, और वहाँ बैठकर उसने अपनी नोट-बुक के एक पन्ने पर लिखा—

"प्यारी एलोई—मेरी प्रतीक्षा न करना, मुझे कुछ दिन अकेले भटकने की ज़रूरत है। कुछ दिन बाद मैं अवश्य घर लौटूँगा। आज शाम को नौकर-चाकरों को जल्द छुट्टी दे देना, और दर्वाज़ा खुला रखना। रात के पहले पहर में चार आदमी तुम्हारे पास आयेंगे। उनके कन्धों पर एक व्यक्ति का शव होगा, जिसे तुम हमारे क़ब्रिस्तान में भिजवा देना। जब सब काम समाप्त हो जाय, तो चारों आदमियों को एक-एक क्राउन दे देना, और उनसे और कोई बात न करना। तुम मृत व्यक्ति की क़ब्र के पास बैठ कर ईश्वर से उनके लिये प्रार्थना करना। मैं भी आज की रात प्रार्थना में बिताऊँगा, और फिर ईश्वर के जिज्ञासु बनकर अपने भविष्य का निश्चय करूँगा। बस, विदा।"

यह पत्र लिखकर जैब्री ने चार मज़दूरों को पक्का किया, और एक-एक क्राउन देकर उन्हें उनका काम समझा दिया।

४४

अगले दिन एण्डर, अपने स्वामी के आज्ञानुसार मैडम डि-कैस्ट्रो के पास रवाना हुआ। उसकी सूरत देखते ही डायना का रँग फ़क़ पड़ गया, पर किसी तरह सम्हलकर उसने पूछा—"कहो एण्डर—क्या लाये ?"

"और कुछ नहीं, मैडम, सिर्फ़ यह लाया हूँ," कहकर एण्डर ने पैकेट उसे दे दिया। इस पैकेट में डायना की दी हुई नक़ाब और अँगूठी थी।

"अरे—इसमें तो नक़ाब है!"

"उन्होंने कहा है, कि मैं आपसे यह कह दूँ कि वे आपको समस्त प्रतिज्ञाओं से मुक्त करते हैं। जिस वचन की द्योतक यह नक़ाब है, उसके विषय में भी अब आप अपने को स्वतन्त्र समझें।"

"लेकिन क्या तुमने उन्हें मेरा पत्र दे दिया था ? उसे पढ़कर उन्होंने क्या कहा ? एण्डर, एण्डर! मुझे सब हाल ख़ुलासा कह सुनाओ।"

"मैडम, मुझे जो कुछ मालूम है, सब आपको सुनाऊँगा; पर सुनने के लिये कुछ ज्यादा है नहीं।" तब उस सिलसिलेवार वे सारी बातें कह सुनाईं, जो जैबी ने की या कही थीं, लेकिन डायना का मनस्तोष इतने पर भी न हुआ। वह विषादपूर्ण नेत्रों से कभी नक़ाब और कभी एण्डर की तरफ़ ताकने लगी, और अपने अन्धकारपूर्ण भविष्य पर विचार करने लगी।

उसने मन-ही-मन सोचा—"या तो जैब्री को यह पता लग गया है, कि वह मेरा भाई है, या फिर इस भेद का पता लगाने में वह असमर्थ रह गया है। अब मुझे दो दुर्भाग्यों में से एक को चुनना

है। हाय ! उसने स्वयं आकर मुझे सारी बात क्यों न सुना दी !
सन्देह और अनिश्चय में पड़े रहने की जगह निश्चय दुर्भाग्य का
हाल मालूम हो जाना अच्छा है। अब मैं क्या करूँ ? क्या यहीं से
लौटकर किसी आश्रम में चली जाऊँ ? या राजमहल में पहुँचूँ,
और जैब्री की खोज कराऊँ, और उससे सारी बातें पूछूँ ? लेकिन
मेरे पिता—अगर बादशाह मेरे पिता हैं, तो जैब्री की सहायता मेरे
पिता के हत्याकारी की सहायता तो न बन जायगी ?"

लेकिन डायना बड़ी ही उदारमना रमणी थी। सोच-विचार कर
वह इसी निश्चय पर पहुँची, कि क्रोध करने के लिये पछताने की
ज़रूरत पड़ सकती है, क्षमा के लिये नहीं। अस्तु अपनी स्वभाव-
सुलभ उदारता के वशवर्ती होकर उसने यही निश्चय किया, कि
पेरिस जाकर वह जैब्री की खोज करायेगी, और बादशाह के
निकट रहकर अपने पिता की रक्षा में निरत रहेगी। उधर जैब्री को
सहायता देकर वह उसका दुःख दूर कर सकती है, और इस प्रकार
अपने दोनों प्यारों को सुखी बनाकर आश्रम में प्रविष्ट होने में
उसे विशेष शान्ति प्राप्त होगी।

तीन दिन बाद वह राजमहल में पहुँच गई। हेनरी ने बड़े प्रेम
से उसका स्वागत किया। पर चेष्टा करने पर भी वह अपना
आन्तरिक विषाद छिपा न सकी। बादशाह उसका यह भाव देख-
कर बहुत चकित हुए। इस अवस्था में उससे फ्रैङ्कोई के सङ्ग विवाह
का प्रस्ताव करने का साहस भी उन्हें न हुआ। इससे डायना की
एक चिन्ता मिट गई। परन्तु जैब्री का कोई विश्वस्त समाचार न
मिलने के कारण उसे बड़ी व्याकुलता रही। यों लोग तरह-तरह की
ख़बरें सुनाते थे। कोई कहता, मैंने उसे अमुक जगह आवारा घूमते
हुए देखा; कोई कहता, मैंने उसे अमुक नाले के किनारे पर विषण्ण
भाव से बैठे देखा था। पर इन ख़बरों के आधार पर डायना जैब्री
की कुछ खोज न लगा सकी।

लेकिन वास्तव में यह ख़बरें सच थीं। अनेक स्थान पर अ. व्यक्तियों ने उसे देखा था; क्योंकि उसके हृदय पर जो भीषण आघात लगा था, उससे व्याकुल होकर वह बराबर पागलों की तरह इधर-उधर घूम रहा था—एक जगह बैठकर सही दिमाग़ से कुछ विचार करना उसके लिये एकबारगी असम्भव था। हफ्तों तक उसने कभी किसी के दर्वाजे में पैर नहीं रक्खा। अलबत्ता एक दिन डॉक्टर पारे से भेंट हो गई, और जैब्री उसके साथ-साथ उसके घर तक चला गया। तब उसने बहुत से ऐसे प्रश्न डॉक्टर से पूछने शुरू कर दिये, जैसे बहुत दिन बाद परदेश से लौटकर आया हुआ व्यक्ति करता है। उसके अधिकांश प्रश्न ड्यूक डि-गाईं और उनकी सेना के सम्बन्ध में थे।

ख़बरे सभी सन्तोपजनक थीं। ड्यूक डि-गाईं ने अपनी घोषणा के अनुसार फ्रान्स की जमीन पर से अंग्रेज़ों का निशान मिटा दिया था। जैब्री ने इन ख़बरों को आनन्द-पूर्वक सुना, और अन्त में कहा—"मोशिये, मैं आप से इस विषय में बातें करने नहीं आया। मैं यह पूछना चाहता हूँ, कि क्या आपने सुधारक-दल की सदस्यता निश्चित रूप से स्वीकार कर ली है ?"

"हाँ, मोशिये, मैं स्वयं काल्विन से बहुत दिन तक पत्र-व्यवहार करता रहा, जिससे मेरे रहे-सहे सन्देह भी दूर हो गये, और मुझे इस दल के आदर्शों पर पूर्ण श्रद्धा हो गई है।"

"तो आप क्या इस विषय में अपने तर्क मेरे आगे पेश करने की कृपा करेंगे ?"

"ख़ुशी से।"

दोनों कई घण्टे तक वार्तालाप करते रहे। अन्त में जैब्री उठा, और डॉक्टर का हाथ दबाते हुये बोला—"धन्यवाद, मोशिये—आज के इस वार्तालाप ने मेरा बड़ा उपकार किया है। अभी वह समय नहीं आया, कि मैं खुल्लम-खुल्ला आपके दल का पृष्ठ-पोषण करूँ;

लेकिन मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया है, कि आप लोगों का मार्ग बहुत ही न्याय संगत है। अच्छा—हम फिर मिलेंगे!"

अगले महीने मई १५८८ के प्रथम सप्ताह में जैब्री अपने घर लौटा। मार्टिन गेर वहाँ मौजूद था, और उसने हर्षोत्फुल्ल होकर स्वामी का स्वागत किया। ऐलोई के आनन्द की भी सीमा न की। उसने जैब्री से तरह-तरह के प्रश्न करने शुरू किये, लेकिन वह कुछ नहीं बोला। दिन भर वह उन लोगों के साथ रहा, पर सन्ध्या होते ही उठा, और मार्टिन की तरफ देखकर बोला—"मेरे बहादुर मार्टिन, मैं अपनी पिछली यात्रा में बराबर तुम्हारी विपत्तियों पर विचार करता हूँ, और मैंने तुम्हारे दुश्मन का कुछ पता भी पा लिया है।"

"अच्छा—!"

"हाँ, मेरा खयाल है, मैंने ठीक सूत पा लिया है; लेकिन तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। तुम तुरन्त अपने घर की तरफ रवाना हो जाओ, लेकिन सीधे वहाँ मत जाना; करीब एक महीने लायन्स नगर में ठहरकर मेरी प्रतीक्षा करना, तब हम दोनों मिलकर अपना काम करेंगे।"

"जैसी आपकी आज्ञा—लेकिन अब क्या आप अकेले ही जायेंगे?"

"हाँ, अब मुझे अकेला रहने की ही जरूरत है। अच्छा, अब नमस्कार! याद रखना, लायन्स में एक महीना!"

४५

उक्त घटना के छः सप्ताह बाद, १५ जून के दिन रीक्स नगर के पास एक गाँव में, एक आदमी अपने घर के सहन में लकड़ी के बेञ्च पर बैठा था, और एक औरत झुकी हुई उसके जूतों के फीते खोल रही थी।

"अभी खुले नहीं क्या बट्रॉण्ड ?" सहसा उसने चिल्लाकर

कहा—"तुम ऐसी सुस्त और निकम्मी औरत हो, कि मेरा दिमाग परेशान हो जाता है !"

"हो गया मार्टिन !" औरत ने बहुत ही नम्र स्वर में उत्तर दिया !

"हाय राम !" नकली मार्टिन ने बड़बड़ाते हुये कहा—"अब दूसरे जूतों का पता नहीं ! तुम्हारा तो दिमाग आस्मान पर है, तुम्हें उनको लाने का होश कहाँ ? अब जाकर दूसरा जोड़ा लाओगी, और मैं तब तक नंगे-पावों बैठा सिकुड़ता रहूँगा।"

बर्ट्रॉण्ड दौड़ती हुई गई, और जूता-जोड़ा लेकर तुरन्त ही लौट आई। नकली मार्टिन ने उसका स्वभाव बदलकर उसे पालतू बिल्ली बना दिया था।

"और शराब का गिलास कहाँ है ?" उसने डपटकर पूछा।

"मेरे मालिक, वह भी तैयार है, अभी लाती हूँ।"

"हर बात में इन्तज़ार !" उसने अधीरता से चीख़कर कहा—"जा, जल्दी कर ! वर्ना………" कहते-कहते उसने हाथ की लकड़ी की तरफ़ संकेत किया।

शराब का गिलास चढ़ा लेने के बाद उसका दिमाग़ कुछ ठिकाने पर दिखाई दिया। बर्ट्रॉण्ड ने डरते-डरते कहा—"तुम कभी-कभी बहुत तेज़ हो जाते हो।"

"सुनो," अर्नाल्ड ने कहा—"आज मैं सारे पास-पड़ोसियों को न्यौता देने में दिन-भर ख़ाक छानता फिरता रहा ! क्या बताऊँ—बाप-दादों के रिवाज की रक्षा करनी ही पड़ती है। मैं तो भूल ही गया था—कल तुमने सहसा याद दिला दिया।"

"हाँ, मार्टिन, यह रस्म है तो बड़ी असुविधाजनक, पर उसका पालन करना हमारा धर्म है।"

"कहो, तुमने अपने हिस्से का काम समाप्त कर लिया ? मेज़ पर सब सामान तैयार है ?"

"हाँ, तैयार है।"

"और जज साहब के यहाँ बुलावा भी दे आई ?"

"हाँ, दे आई। उन्होंने कहा, कि जहाँ तक हो सका, ज़रूर आयेंगे।"

"जहाँ त हो सका ! नहीं, उन्हें अवश्य आना होगा। तुमने ठीक से नहीं कहा होगा। तुम्हें पता है, मैं जज साहब को यहाँ बुलाने के लिये अत्यन्त उत्सुक था, लेकिन तुमने मेरे भावों की ज़रा चिन्ता नहीं की। अगर वे आ जाते, तो मैं अपनी आज की परेशानी का कुछ लाभ समझता।"

"परेशानी ! हमारे विवाह की दावत को परेशानी कहते हो।" बर्ट्राण्ड ने रोते-रोते कहा—"हाय मार्टिन, तुम दुनियाँ की नई बातें सीखकर चाहे देहाती रीति-रिवाज़ को कितना ही कोस लो, लेकिन आज की दावत मुझे अपने उन दिनों की याद दिला देती है, जब तुम अपनी पत्नी के प्रति बहुत नम्र और विनयशील थे।"

"जीहाँ," अर्नाल्ड ने ताने से हँसते हुए कहा—"और जब मेरी पत्नी मेरे प्रति अत्यन्त कठोर और अविनयशील थी !"

"ओह मार्टिन ! उन बातों की याद दिलाकर मुझे लज्जित मत करो।"

"ख़ैर, अब अवस्था बदल गई है, और हमारा जीवन मज़े में कट रहा है !"

"सच है—ईश्वर का धन्यवाद !"

"अच्छा तो अब तुरन्त जज साहब के यहाँ जाओ, और उनसे पक्का वादा न ले आओगी, तो तुम ज़िम्मेवार हो।"

बर्ट्राण्ड चल दी, और अर्नाल्ड सन्तुष्ट नेत्रों से उसकी तरफ़ ताकता रहा। उसी समय एक बूढ़ा आदमी लकड़ी टेकता हुआ वहाँ पहुँचा, और बोला—"मोशिये, क्षमा करें—क्या यहाँ ठहरने के लिये कोई सराय है ?"

"नहीं; यहाँ से चार कोस परे, रीक्स में सराय मिल सकती है।"

"अरे बाप रे—चार कोस परे! मैं तो थकान के मारे मरा जा रहा हूँ। अगर मुझे एक वक़्त का खाना और रात-भर का सोना मिला जाय, तो मैं एक अशर्फ़ी भी आसानी से ख़र्च कर सकता हूँ—पर आगे बढ़ना मेरे लिये असम्भव है।"

"एक अशर्फ़ी!" लालची अर्नाल्ड ने चौंककर कहा—अच्छी बात है, बुड्ढे, तुम्हारी ऐसी ही बुरी हालत है, तो मैं रात-"भर के लिए तुम्हें एक कोने में जगह दे सकता हूँ। रही बात खाने की, सो आज हमारे घर में सहभोज है, उसी में तुम भी शरीक हो जाना। कहो, स्वीकार है?"

"स्वीकार है। मैं तो भूख और थकान के मारे बेहोश हुआ जा रहा हूँ।"

"बस, तो तय हो गया! एक अशर्फ़ी की बात थी न?"

"हाँ; यह लो पेशगी!"

जब अर्नाल्ड अशर्फ़ी लेने के लिये उठा, तो उसने पहले-पहल अपनी चौड़ी टोपी सिर से उतारी, और उसके चेहरे पर नज़र पड़ते ही बुड्ढा चौंककर बोला—"कौन?— मेरा भाञ्जा, अर्नाल्ड-डु-थिल?"

एक बार तो अर्नाल्ड का रँग फ़क़ हो गया, पर तुरंत ही सम्हल-कर उसने कहा—"कौन है तू—मैं तो तुझे पहचानता तक नहीं।"

"वाह अर्नाल्ड! तुम अपने बुज़ुर्ग मामा कार्बन बैर्थ को नहीं पहचानते—जिसे तुमने अपने सारे परिवार के साथ-साथ अत्यन्त कष्ट दिया है?"

"छी:! मैं किसी को नहीं जानता।"

"क्या ! तुम मुझे नहीं जानते ? क्या तुम्हें मालूम नहीं, कि दस बरस पहले जब तुम हम लोगों को छोड़-छाड़कर ग़ायब हो गये, तो तुम्हारी माँ वियोग में तड़प-तड़पकर मर गई ? भलेमानस, याद रख, मैं तुझे पहचानता हूँ ।"

"मेरी समझ में नहीं आता बुड्ढे, तू बक क्या रहा है," अर्नाल्ड ने उद्दण्डता से कहा—"मेरा नाम अर्नाल्ड नहीं, मार्टिन गेर है । यहाँ के सब लोग मुझे जानते हैं । विश्वास न हो, तो मेरे औरत-बच्चों से पूछ ले ।"

"तुम्हारे औरत-बच्चे ! तो क्या मुझे भ्रम हुआ—ऐसा सादृश्य भी कहीं हो सकता है ?"

"बात यह है, कि दस बरस के दीर्घ काल में बहुत सी बातें भूल जाती हैं । खैर, अभी थोड़ी देर बाद तुम मेरे असली मामा-नानाओं को देख लोगे ।"

"खैर बात यह है, कि तुम्हारी शक्ल उससे हू-ब-हू मिलती है । लेकिन यह कोई गौरव की बात नहीं है ; क्योंकि वह एक पक्का बदमाश था । मेरा विश्वास है, कि वह जरूर किसी-न-किसी अपराध में फाँसी पर लटका दिया गया होगा । चलो, मुझे तो इसी बात का सन्तोष है, कि मैं निस्सन्तान हूँ, और मेरे जीवन को दुःखमय बनाने वाला कोई नहीं है ।"

"हूँ !" अब अर्नाल्ड ने मन में सोचा—"मेरा मामा निस्सन्तान है—उसका कोई वली-वारिस जिन्दा नहीं ।" तब जोर से बोला—"खैर, तुम मुझे अपना बेटा समझ लो । बेटा न समझो, तो भांजा ही सही;—क्योंकि अपनी धन-सम्पत्ति भी तो आखिर तुम्हें किसी को सौंपनी ही होगी ।"

"अपनी धन-सम्पत्ति ?"

"हाँ ; तुम—जो इतनी आसानी से अशर्फियाँ लुटाते फिरते

हो—गरीब आदमी तो होगे नहीं। खेद की बात है, कि मैं तुम्हारा भाञ्जा नहीं हुआ।"

"हाँ; अगर अर्नाल्ड जीवित हो, तो अवश्य मेरा उत्तराधिकारी बने, लेकिन अपने आराम के लिये अशर्फियाँ खर्च कर देने के कारण ही मेरे पास अब ज्यादा पैसा नहीं बचा है।"

"हूँ!" कहकर अर्नाल्ड विचार में पड़ गया।

"असल में मैं लायन्स के शान्ति-गृह में प्रविष्ट होने जा रहा हूँ, वहाँ भलेमानसों की खैरात पर अपनी गुजर करूँगा। मेरी हालत इस समय बहुत ही खराब हो गई है..........।"

"अच्छा! अच्छा!" अर्नाल्ड ने बीच में रोककर कहा—"मुझे तुम्हारी बातें सुनने का अवकाश नहीं है। चुप रहो।"

धीरे-धीरे मेहमान आने लगे। जज साहब को सब से ऊँचा स्थान दिया गया। कार्वन बैर्थू को इस बात के बहुत से प्रमाण मिल गये, कि उसके मेजबान का नाम मार्टिन गेर ही था।

"मार्टिन," एक युवक ने कहा—"तुमको क्रिसस्टम की याद है, जिसने हम दोनों को पढ़ाया था?"

"खूब याद है।" अर्नाल्ड ने उत्तर दिया।

"जब तुम्हारी स्मृति इतनी प्रखर है, तो मेरी याद भी तुम्हें अवश्य ही होगी।" सहसा मेहमानों के पीठ पीछे से एक आवाज आई।

जिस आदमी ने उपरोक्त वाक्य कहा था, उसने, सब लोगों को अपनी तरफ ताकते देखकर, अपना ढीला लबादा और चौड़ा हैट उतार दिया, और सब ने अपने सामने एक सुन्दर नवयुवक को खड़े हुए देखा।

"मोशिये लि विस्काउण्ट डि० एक्सेम!" अर्नाल्ड ने चिहुँक कर कहा।

"अच्छा! आपने मुझे पहचान लिया!" तब उसने जज साहब

तथा अन्य उपस्थित जनों की ओर देखकर कहा—"सज्जनो, यह व्यक्ति मार्टिन गेर नहीं, अर्नाल्ड डु-थिल-नामक एक हत्यारा और धूर्त आदमी है। इसने मार्टिन गेर से सादृश्य होने के कारण उसके जान-माल, उसकी प्रतिष्ठा और अन्त में उसकी पत्नी पर अनुचित अधिकार कर लिया है।"

सहसा बूढ़े कार्बन बैर्यू ने उठकर कहा—"तब तो मेरा खयाल ठीक था। मैं इस बात की गवाही देता हूँ, कि यह व्यक्ति मेरा भाञ्जा डु-थिल है!"

जज साहब की आज्ञा से अर्नाल्ड बन्दी कर लिया गया।

४६

इसके आठ दिन बाद अर्नाल्ड को अपने किये का फल मिल गया। जज के यहाँ मुकद्दमा हुआ, गवाह पेश हुए, और अन्त में उसे प्राण-दण्ड मिला।

कई हफ्ते बीत जाने पर मार्टिन घर के दर्वाजे पर बैठा आनन्द से गुनगुना रहा था। सहसा जैब्री चुपके से वहाँ आ पहुँचा। उसके पैरों की चाप सुनकर मार्टिन चौंका, और उसे देखकर बोला—"ओहो! आप हैं मोशिये? क्षमा कीजियेगा, मैंने आपको देखा नहीं।"

"इसकी कोई चिन्ता नहीं मार्टिन, मैं तुम्हें आनन्द मनाते हुए देखना चाहता था, तुम्हारे सुख-स्वप्न में बाधा डालना नहीं।"

"मोशिये, आपके आशीर्वाद से मैं इस समय बहुत खुश हूँ। मेरा घर नन्दन-कानन बन गया है, मेरी स्त्री का कर्कश स्वभाव एकबारगी बदल गया है। खाने-पीने की भी मुझे कमी नहीं है। यों अर्नाल्ड का लाया हुआ बहुत-सा रुपया घर में रक्खा है, पर पर मैं उसे छू भी नहीं सकता। वह आपका है, और उसे मैं आप ही को लौटा देना चाहता हूँ।"

"नहीं, मार्टिन, वह धन मैं तुम्हारी ही भेंट करता हूँ। अपनी

दीर्घकालीन सेवाओं के बदले इस तुच्छ पुरस्कार को तुम स्वीकार करो।"

"क्या—मोशिये, एकदम इतना रुपया!"

"मार्टिन, तुम्हारी स्वामि-भक्ति का मूल्य चुकाने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। कहो, अब तुम्हारी पत्नी से तो अच्छी तरह निभ जायगी?"

"अच्छी तरह मोशिये, अब तो बड़ी शीलवती हो गई है। अर्नाल्ड ने मेरा इतना अहित करने पर भी यह बड़ा भारी हित किया है।"

"तो तुम अब पूर्ण सुखी हो?"

"हाँ मोशिये।"

"तो अब हमारी रवानगी है।"

"अभी से मोशिये?"

"अब मेरा यहाँ ठहरना वृथा है।"

"ठीक है; तो कब चलने का विचार है?"

"आज ही शाम को।"

"और आपने इस समय मुझसे कहा है। खैर, मैं बहुत जल्द तैयार होजाऊँगा।"

"क्या!"

"बर्ट्रार्एड ओ बर्ट्रार्एड!"

"क्यों? तुम अपनी पत्नी को क्यों बुला रहे हो?"

"मेरी यात्रा की तैयारी कर देने के लिये।"

"नहीं, मार्टिन, मेरे साथ तुम्हारे चलने की आवश्यकता नहीं।"

"क्यों—आप मुझे साथ न ले चलेंगे?"

"नहीं, मैं अकेला ही जाऊँगा।"

"सदा के लिये?"

"कम-से-कम ज्यादा दिनों के लिये नहीं।"

"तो क्या आप मुझसे रुष्ट होगये हैं ?"

"नहीं, मार्टिन, तुम बड़े अच्छे आदमी हो।"

"तो आप मुझे क्यों नहीं ले चलते ?"

"एक तो तुम्हारी टाँग बेकार हो गई है, दूसरे इस सुख में से तुम्हें निकालना क्रूरता है, तीसरे, अब मुझे फ्रान्स के लिये किसी युद्ध में शरीक नहीं होना है—बल्कि एक व्यक्तिगत प्रतिहिंसा की पूर्ति करनी है, जिसे केवल मैं ही कर सकता हूँ, और करना चाहता हूँ। अस्तु, अधिक कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं है। बस, मेरे प्यारे मित्र, नमस्कार ! भगवान् तुम्हारी रक्षा करें।"

बेचारे मार्टिन ने रोते-रोते कहा—"अच्छा मोशिये, नमस्कार—भगवान् हमें पुनर्मिलन का अवसर दें !"

४७

इसके बाद जैब्री पहले की तरह-ही दो तीन महीने तक इधर-उधर घूमता रहा। तब एक दिन अकस्मात् अपने घर लौट आया। एलोई उसे देखकर रो पड़ी। घर पर जैब्री काफी अरसे तक रहा। दिन का अधिक भाग वह अपने कमरे में पड़े-पड़े बिता देता था, और रात में अकसर अपने पिता की समाधि के पास जा बैठता था।

अब उसका एक-मात्र लक्ष्य था—बादशाह से बदला लेना। पर महीनों के सोच-विचार के बाद भी वह निश्चय न कर सका, कि यह बदला किस प्रकार पूरा होगा।

आखिर १३ जून के दिन थोड़े ही अन्तर में दो पत्र उसके पास आये। पहला पत्र लगभग पाँच बजे पहुँचा, जिसमें लिखा हुआ था—

"भाई,—समय आ पहुँचा है, दुश्मन के ज़ुल्म का कुल्हाड़ा चलना शुरू हो गया है। ईश्वर का धन्यवाद है—क्योंकि बलिदान ही विजय का मन्त्र है। आज रात को नौ बजे मॉबर्ट-स्क्वायर के ११

नम्बर वाले मकान में आइये। द्वार-प्रवेश का सङ्केत-चिह्न नीचे लिखा जाता है।"

जैब्री ने सङ्केत-चिह्न नोट करके पत्र जला दिया, और एक चिट पर केवल "आऊँगा" लिखकर पत्र-वाहक को दे दिया। आठ बजे के क़रीब, जबकि वह रवाना होने की तैयारी में था, एलोई के साथ एक ख़िदमतगार ने आकर यह पत्र उसे दिया—

"मेरे जाँनिसार साथी,—मैं छः हफ्ते से पेरिस में हूँ; क्योंकि सेना के लिये अब कोई मुहिम जीतने के लिये नहीं रही है। मुझे पता लगा है, कि तुम यहीं हो। मालूम होता है, संसार के स्वार्थी लोगों की तरह तुम भी मुझे एकबारगी भूल गये हो। लेकिन मेरा दिल इसकी गवाही नहीं देता। इसलिये मैं कल रात को दस बजे अपने तूर्नेईवाले मकान पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा। मुझसे मिलना ज़रूर—और कुछ नहीं, तो मिलकर अफ़सोस ही कर लेंगे, कि लोग हमारे परिश्रम का कैसा अनुचित उपयोग कर रहे हैं।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

"फ्रैङ्कोई- डिलॉरें।"

जैब्री ने इसके उत्तर में भी "आऊँगा।" कहला भेजा।

इतिहास बताता है, कि ड्यूक डि-गाईं की ख्याति से ईर्ष्यान्वित होकर कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी ने हेनरी को एक ऐसे सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिये विवश किया था, जो फ्रान्स के हक़ में ज़रा भी लाभकारी नहीं था, तथा जिसकी एक शर्त यह थी, कि कैले का शहर फ्रान्स के अधिकार में केवल आठ वर्ष तक रहेगा, तथा उसके बाद यदि कैले इँगलैण्ड को न लौटाया जायगा, तो फ्रान्स एक लाख सुनहरे सिक्कों का देनदार रहेगा। यद्यपि बाद में यह शर्त पूरी नहीं की गई, लेकिन उस समय तो इस शर्त तथा अन्य अनेक प्रकार की दुर्बलताओं को देख-सुनकर ड्यूक डि-गाईं

क्रोध से पागल हो उठे, और अपने परिश्रम पर इस प्रकार पानी फिरते हुए देखना उन्हें सहन न हुआ।

यह बुलावा इसी विषय में परामर्श करने के लिये था।

हेनरी द्वितीय के पश्चात् फ्रान्स में सुधारक-दल का विद्रोह और ड्यूक डि-गाई की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति का सविस्तर वर्णन् फ्रान्स के तत्कालीन इतिहास में मिलता है। इस ग्रन्थ में भी पाठकों को स्थान-स्थान पर इन घटनाओं के परिणाम का आवश्यक निदर्शन मिलेगा।

❀ ❀ ❀

४८

उधर डायना डि-कैस्ट्रो अपने वियोग के दिन काट रही थी। वह भी धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रही थी, लेकिन उसकी प्रतीक्षा जैब्री की अपेक्षा अधिक कष्टकर थी। वह प्रति सप्ताह एण्डर को जैब्री के घर भेजती थी, पर हर बार उसे यही समाचार मिलता था, कि वह दु:ख से भरा हुआ चुपचाप अपने कमरे में पड़ा रहता है। उसने कुछ दिन तक प्रतीक्षा की, पर आख़िर उसके धैर्य का बाँध टूट गया, और हिम्मत बाँधकर लबादे से बदन छिपाये हुए, एण्डर के साथ जैब्री को देखने चली। जब वह स्वयं उससे मिलने नहीं आया तो उसी ने उसकी ख़बर लेना अपना कर्त्तव्य समझा।

लेकिन वहाँ पहुँचकर जब उसे मालूम हुआ, कि जैब्री घर में मौजूद नहीं है, तो उसका सारा उत्साह विलुप्त हो गया, नौकर ने कहा कि उसके लौटने का भी कोई निश्चय नहीं। अधिक देर ठहरने का साहस तो डायना को न हुआ, लेकिन कुछ बातें करने के इरादे से उसने एलोई को बुलवाया। बचपन की उन सुखद घड़ियों के बाद एलोई से उसकी भेंट हुई थी। अतएव उसके सामने आते ही डायना "प्यारी एलोई !" कहकर उसकी छाती से चिपक गई।

एलोई के नेत्र अश्रु-पूर्ण हो गये, वह बोली—"तुम्हें मेरी याद है ?"

"तुम्हारी याद ! क्या मैं मॉण्टगॉमरी दुर्ग और अपने उस बाल्य-काल को भूल सकती हूँ ?"

"तुम कैसी अच्छी हो !" एलोई ने विषाद-पूर्ण मुसकान-सहित कहा।

"माँ, मैं अपनी बात करने यहाँ नहीं आई थी।"

"तब किसकी ?"

"और किसकी ?—तुमसे मैं दिल की बात साफ़ कहती हूँ। खेद है, कि वह यहाँ मौजूद नहीं हैं। मैं अपने और उनके जी का बोझ हलका करने आई थी। कहो, उनकी तबियत कैसी है ? मालूम होता है, सदा दु:खी रहते हैं। और भला वह मुझसे मिलने राज-भवन में क्यों नहीं आये ?...बताओ तो।"

"मैडम, वास्तव में वह बहुत ही दु:खी रहते हैं।"

"ठहरो...देखो, मैं राज-भवन से अधिक देर तक अनुपस्थित नहीं रहना चाहती। इसलिये घण्टा-भर होते ही मुझे याद दिला देना।"

तब एलोई ने, जो कुछ वह जानती थी, सब डायना को सुना दिया। जैब्री के विषय की बातें जानकर डायना को आनन्द तो हुआ, लेकिन जब उसकी वेदना और अशान्ति का हाल मालूम हुआ, तो उसको निराशा का ठिकाना न रहा। उसी समय एलोई ने याद दिलाया, कि एक घण्टा बीत चुका है।

"सिर्फ़ एक बात;—क्या कभी उन्हें मेरी याद आई थी ?"

"मेरा विश्वास है, अनेक बार।"

"फिर भी वह मुझसे मिलने नहीं आये ?"

"मैडम, राज भवन तो वह किसी और ही कारण से नहीं गये थे।"

"समझ गई," डायना ने मन-ही-मन सोचा—"वह अपने दुश्मन का मुँह देखना नहीं चाहते थे।" तब प्रकट में कहा—

"ख़ैर, मैं उनसे अवश्य मिलूँगी।"

"क्या मैं उनसे कह दूँ, कि वे राज-भवन में जाकर आपसे भेंट करें ?"

"नहीं, नहीं—राज-भवन में नहीं। मैं अवसर देख रही हूँ, और समय आने पर स्वयं यहाँ आ पहुँचूँगी।"

"लेकिन अगर वह फिर बाहर चले गये ? आप मुझे अपने आने का ठीक समय बता दें, तो वह आपकी प्रतीक्षा करते रहेंगे।"

"अफ़सोस ! बादशाह की कन्या इतनी स्वच्छन्द नहीं, पर मैं एगडर के हाथ ख़बर भेज दूँगी।"

तब वह चली गई।

सदा की तरह जैब्री निराशा के समुद्र में डूबा हुआ घर लौटा। लेकिन जब एलोई ने डायना के आने की ख़बर उसे सुनाई, तो उसके शरीर में जैसे बिजली दौड़ गई, और वह बोला—"क्यों वह कैसे आई थी ? क्या कह रही थी ? हाय ! मैं यहाँ क्यों नहीं रहा ?"

एलोई ने सारी बातें कह दीं।

"वह मुझसे भेंट करना चाहती है; लेकिन यह नहीं बता सकी कि कब आयेगी ? नहीं, मैं इस संशय में पड़ा नहीं रह सकता, मैं उससे मिलने मैं जाऊँगा।"

"क्या ! महल में !"

"क्यों—महल से मुझे निर्वासित नहीं किया गया है। जिस व्यक्ति ने कैले मैडम डि-कैस्ट्रो की रक्षा की, उसे उससे भेंट करने का पूरा अधिकार है।"

"यह तो ठीक है, पर मैडम डि-कैस्ट्रो आपके वहाँ जाने से बहुत डर रही थीं।"

"क्या मुझ में ऐसी कोई बात है ?"

"नहीं, वह तो शायद अपने ही कारण डर रही थीं।"

"मेरे वहाँ जाने की अपेक्षा उसके यहाँ गुप्त रूप में आने से उसकी प्रतिष्ठा पर आँच आने की अधिक सम्भा-वना है, इसलिये मैं अभी जाता हूँ।"

"लेकिन मोशिये, अब तक आप राज-महल से बिल कुल ही उदासीन रहे थे।"

"मैं डायना से तब तक मिलना नहीं चाहता था, जब तक कि वह मुझे स्वयं न बुलाये। अब जब उसे मेरी ज़रूरत है, तो मैं अवश्य जाऊँगा।"

४९

जैब्री निर्बाध गति से मैडम डि-कैस्ट्रो के कमरे में जा पहुँचा। वह अपनी एक दासी के साथ बैठी हुई बेल काढ़ रही थी। उसी समय एण्डर ने जैब्री के आगमन की सूचना दी।

जैब्री ने अपने भरसक शान्त भाव बनाकर भीतर प्रवेश किया। डायना के सामने पहुँचकर वह अत्यन्त नम्रता-पूर्वक झुक गया। उसने एक संकेत से अपनी दासी और एण्डर को बिदा कर दिया। जब दोनों अकेले रह गये, तो आगे बढ़ कर एक ने दूसरे का हाथ थाम लिया, और दोनों ने स्वर्गीय सुख का अनुभव किया।

"डायना, तुम मेरे घर गई थीं, मुझसे मिलना चाहती थीं, मुझसे बात करना चाहती थीं, तो मैं आ गया; बोलो, क्या आज्ञा है।"

"जैब्री, क्या मेरे जाने पर ही तुम्हें यह प्रतीत हुआ, कि मैं तुमसे मिलना चाहती थी ? क्या बिना इसके तुम्हारा यह विश्वास नहीं था ?"

"डायना," जैब्री ने विषाद-भरी मुस्कान के साथ कहा—"मेरा

साहस दूसरी जगह ख़र्च हो चुका है, अतएव मुझे यह कहने में कोई लज्जा नहीं, कि मैं यहाँ आने से डरता था।"

"किससे डरते थे ?"

"तुमसे भी, खुद अपने से भी।"

"तो तुमने हमारे पिछले सारे स्नेह-सम्बन्ध को भुला दिया ?" वह शीघ्रता-पूर्वक बोली।

"डायना, डायना ! अगर मैं उसे भूल सकता, तो क्या ही बात थी ! मैं इतने दिन आवारा फिरता रहा, पर तुम्हारा मुँह देखने के लिये तड़पता रहा। ओह.........!"

"हाय ! जैक्री........"

"हाँ, डायना, यदि मैं अब भी तुमसे न मिलता, तो हम लोगों के लिये बेहतर होता; क्योंकि निश्चित यातना के बजाय अनिश्चितता का संशय कहीं श्रेयस्कर है।"

अब डायना को भी विचार हुआ, कि कदाचित् संशय में रहना ही अधिक ठीक होता। पर अब अवसर बीत चुका था। अस्तु, उसने कहा—"जैक्री, मैं तुमसे इसलिये मिलना चाहती थी, कि एक बात मुझे कहनी थी, और एक बात पूछनी थी।

"वह क्या ?"

"कहनी तो यह है, कि मैं तुम्हारी भेजी हुई नक़ाब पाकर भी किसी आश्रम में तुरन्त क्यों नहीं चली गई।"

"मैंने एण्डर के हाथ कहला भेजा था, हमारा-तुम्हारा निर्णय रद्द हुआ—तब इस बात की ज़रूरत क्या थी ?"

"आ जन्म आश्रम-वासिनी बनकर रहने का मेरा पक्का इरादा है; और वह इरादा अभी बदला नहीं है—केवल स्थगित हो गया है।"

"क्यों डायना—इस उम्र में तुम इस मोद-भरे संसार को क्यों छोड़ना चाहती हो ?"

"जैक्री, मैंने इस दुनियाँ में बड़े कष्ट पाये हैं। इसे छोड़कर मेरे

मन को बड़ा सन्तोष होगा। मुझे शान्ति की आवश्यकता है, जो मुझे केवल भगवान् के निकट ही प्राप्त हो सकती है। किन्तु अपनी इच्छा-पूर्ति को स्थगित करने का कारण यही है—कि मैं देखना चाहती हूँ, तुम मेरे पत्र की प्रार्थना पर अमल करते हो, या नहीं। मैं उन दो व्यक्तियों के बीच में अपने-आपको झोंक देने का विचार रखती हूँ, जो मुझे हृदय से प्यार करते हैं, पर एक दूसरे के कठिन शत्रु हैं। क्यों जैब्री, क्या तुम मेरे इस विचार की निन्दा करते हो ?"

"डायना, कहीं देवियों के स्वभाव की निन्दा की जाती है ?"

"परन्तु जैब्री, मैंने यह सब केवल अनुमान के सहारे किया है, और मैं इसी विषय में तुम्हारा मत जानना चाहती थी।"

"डायना, यह बड़ी भीषण उत्सुकता है।"

"कुछ भी हो, मैं अब इस बेचैनी की दशा में जीवित नहीं रह सकती। बताओ, जैब्री, क्या तुम्हें यह निश्चय हो गया है, कि मैं तुम्हारी बहन हूँ, अथवा तुम्हें इस भेद मालूम करने की कोई आशा ही नहीं रही ? बताओ—मुझे साफ़-साफ़ बताओ।"

"सुनो," जैब्री ने वेदना-मिश्रित स्वर में कहा—"जब से मैं तुमसे अलग हुआ हूँ, मैंने बहन के रूप में तुम्हारी कल्पना करने का प्रयत्न किया है, लेकिन वास्तविक बात यह है, कि मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है—प्रमाण पाने की मैंने समस्त आशाएँ त्याग दी हैं।"

"हे भगवान्! तो जान पड़ता है, जिस व्यक्ति से तुम्हें मालूम होने की आशा थी, वह तुम्हारे लौटने से पहले ही समाप्त हो चुका।"

"नहीं, डायना, वह मेरे लौटने तक जीवित था।"

"तो क्या उन्होंने वादा पूरा नहीं किया ? मैंने तो सुना, बादशाह ने तुम्हारी बड़ी खातिर की थी ?"

"डायना, मैं तुम्हें सब सुनाऊँगा—मेरे दुःखद भेद की साझीदार तुम्हें अन्त तक बने रहना होगा।" तब उसने सारी बीती बातें एक-एक करके सुनाईं—जिन्हें डायना ने बिना टोके सुना, और बीच-बीच में भय और ग्लानि से उसकी चेष्टा विकृत होती गई।

जब वह समाप्त कर चुका, तो सबसे पहले उसके मुँह से यह शब्द निकले—"बादशाह को क्षमा करो!"

"आह! तुम बादशाह को क्षमा करने को कहती हो। तब तो इसका मतलब है, कि तुम उसे अपराधी मानती हो!"

"ओह जैब्री!"

"हाँ, तुम्हारा हृदय मेरे साथ-ही-साथ क्रिया करता है, केवल तुम्हारी प्रकृति भिन्न है। स्त्रियाँ सदा क्षमा माँगा करती हैं, और पुरुष न्याय।"

इसी समय दर्वाजा खड़काकर एण्डर ने कमरे में प्रवेश किया, और घबराहट के साथ कहा—"मैडम, मेरी धृष्टता को क्षमा कीजियेगा, बादशाह ने यह पत्र भेजा है।"

डायना ने पत्र ले लिया, और भय-विह्वल भाव से निम्नलिखित पंक्तिया पढ़ीं—

"मेरी प्यारी बेटी—मुझे समाचार मिला है, कि तुम यहीं हो। कृपा करके मुझसे बिना कहे कहीं बाहर मत जाना। मैं इस समय राज्य-समिति की बैठक कर रहा हूँ। वह शीघ्र ही समाप्त होनेवाली है। यहाँ से सीधा मैं तुम्हारे पास आऊँगा। एक मुद्दत से मैंने तुम्हें देखा नहीं है, और इस समय अपनी प्यारी पुत्री के साथ एकान्त में वार्तालाप करने की मेरी अतीव बलवती इच्छा है।

"हेनरी"

डायना भय से पीली पड़ गई, और उसने पत्र को तोड़-मरोड़ डाला। अब वह क्या करे? जैब्री को भेज दे? सम्भव है, रास्ते में उसकी मुठभेड़ बादशाह से हो जावे। अगर उसे रोकती है, तो

बादशाह से जरूर उसकी भेंट हो जाती है। जिन दोनों को सदा पृथक् रखना चाहती थी, इस समय उनका मिलना अनिवार्य-सा दिखाई देने लगा।

"बादशाह ने क्या लिखा है ?" जैब्री ने कुछ विचलित स्वर में पूछा।

"कुछ नहीं, आज शायद वह यहाँ आने वाले हैं।"

"तो शायद मेरा रहना उचित नहीं; मैं जाता हूँ।"

"नहीं, जाने की ज़रूरत नहीं; लेकिन अगर कुछ उपद्रव करने की मन में हो, तो मैं नहीं रोकूँगी।"

"यह पत्र पढ़कर तुम बहुत व्यग्र हो उठी हो डायना, मेरा ख़याल है, मुझे यहाँ से हट ही जाना चाहिए।"

"तुम ! तुम ऐसा कहते हो ? मैं तो स्वयं तुमसे मिलने गई थी। पर शायद मैंने अच्छा नहीं किया। ख़ैर, मैं तुमसे फिर मिलूँगी, यहाँ नहीं, तुम्हारे ही घर पर—जल्दी-से-जल्दी। मैं वचन देती हूँ। इस समय वास्तव में मैं कुछ घबरा गई हूँ।"

"मैं स्वयं देख रहा हूँ डायना—लो, मैं जाता हूँ।" जैब्री दुःखित होकर बोला।

वह उसके साथ-साथ दर्वाजे तक गई। मन में सोचा—"अगर उसे रोकती, तो बादशाह से भेंट अनिवार्य थी, अगर उसे जाने दिया, तो शायद भेंट न हो।" इस पर भी उसने हिच-किचाकर जाते-जाते जैब्री से कहा—"जैब्री, एक आखिरी बात और है। तुमने मुझे यह नहीं बताया, कि तुम करना क्या चाहते हो ! मैंने दया की प्रार्थना की, तुमने न्याय की आवाज दी। पर यह तो बताओ, यह न्याय तुम पाओगे किस तरह ?"

"कुछ पता नहीं। मुझे केवल भगवान् पर और अवसर पर भरोसा है।"

"हैं ! क्या मतलब ? नहीं, जैब्री, तुम जाने नहीं पाओगे।

वापस लौटो।" कहकर उसने उसे फिर कमरे में खींच लिया।

"अगर रस्ते में उसकी भेंट बादशाह से हुई," डायना ने सोचा, "तो वे दोनों अकेले होंगे, और अगर यहाँ वे मिलेंगे, तो मैं मौजूद रहूँगी।"

जैब्री उसका भाव ताड़कर बोला—"न डायना, मुझसे इतना मत डरो"

डायना ने काँपकर कहा—"नहीं, नहीं, जैब्री ऐसा विचार मत लाओ। अगर तुम्हें ऐसा सन्देह है, तो जाओ, मैं तुम्हें नहीं रोकती, तुम शान्तिपूर्वक जा सकते हो।"

जब तक जैब्री दिखाई देता रहा, वह उसकी तरफ ताकती रही। तब कमरे में लौटकर और घुटने टेककर वह रोती-रोती कहने लगी—"हे भगवान! उस पर दया रखना, जो शायद मेरा भाई है। उसकी रक्षा करना, जो शायद मेरा पिता है। मेरे प्यार की इन दोनों विभूतियों को अक्षुण्ण रखना।"

डायना के प्रयत्न करने पर भी महल की गैलरी में जैब्री और हेनरी की भेंट हो ही गई। जैब्री ने देखा—न बादशाह के शरीर पर कोई शस्त्र है, न साथ में शरीर-रक्षक। क्षण-भर के लिये जैब्री रुककर पत्थर की मूरत की तरह स्थिर रह गया। उसका दिमाग़ चकराने लगा, और कोई विचार स्थिर करने की शक्ति भी उसमें शेष नहीं रही। बादशाह भी थमकर खड़ा हो गया। असाधारण साहसी होते हुए भी एक बार भय की तीव्र लहर उसकी नस-नस में दौड़ गई। मदद के लिये किसी को पुकारना कायरता थी और हटना पीठ दिखाना, अतएव उसने स्थिर खड़े हुए जैब्री की तरफ वहाँ से ही रुख़ किया। जैब्री ने अर्द्ध-चेतनावस्था में अपनी तलवार पर हाथ डाला। बादशाह ने समझ लिया, कि उसका अन्तिम समय आ पहुँचा। तोभी वह किसी अज्ञात शक्ति के वशीभूत होकर आगे ही बढ़ता रहा। इसी व्यग्रता की दशा में उसने हाथ उठाकर जैब्री

को नमस्कार किया। जैब्री ने कोई उत्तर न दिया; किन्तु बादशाह को अछूता गुज़र जाने दिया।

ज़रा आगे बढ़ते ही हेनरी सम्हल गया। उसने मन में सोचा, जैब्री जरूर डायना के डेरे से आ रहा होगा, परन्तु वहाँ पहुँचकर डायना से यह पूछने की उसकी हिम्मत न हुई।

५०

बादशाह की कन्या एलिज़ाबेथ का फिलिप द्वितीय के साथ तथा बहन मार्गरेट का ड्यूक ऑफ सेवाय के साथ विवाह होने वाला था। इस खुशी में एक बड़े मेले की योजना की गई थी, जिसमें तीरन्दाजी और तलवारबाजी के बड़े-बड़े करतब दिखाये जाने वाले थे। २८, २९ और ३० जून की तिथि इन मेलों के लिये निश्चित की गई थी। अमीर-गरीब—सब को—इन मेलों में भाग लेने की खुली इजाजत थी। स्वयं बादशाह ने भी अपने चिर-अभ्यासानुसार इन खेलों में योग देने का निश्चय किया था।

२८ जून की सुबह हेनरी की विवाहिता महारानी कैथेराइन ने बादशाह से भेंट की, और आते ही व्यग्र स्वर में बोली—"श्रीमान्, कृपा करके आप इस मास के अन्त तक राजमहल से बाहर न निकलें।"

"यह क्यों मैडम ?"

"क्योंकि मुझे किसी दुर्घटना का अनुमान हो रहा है।"

"कैसे ?"

"आपके नक्षत्र से ?"

महारानी कैथेराइन डि-मेडिसिस को ज्योतिष का बड़ा शौक था, और इतिहास बताता है, कि उसकी भविष्य वाणी बहुत सत्य हुआ करती थी। परन्तु हेनरी द्वितीय को ज्योतिष पर तनिक श्रद्धा न थी। अस्तु उसने हँसते हुए उत्तर दिया—"ओह मैडम, अगर मेरा

नक्षत्र मुझ पर कोई विपत्ति आने की सूचना देता है, तो वह विपत्ति अवश्य ही आयेगी—चाहे मैं यहाँ रहूँ, या बाहर।"

"जी नहीं, खुले आकाश के नीचे ही आप पर सङ्कट आने का योग है।"

"तो क्या कोई बबूला आयेगा ?"

"महाराज, इन बातों की मजाक मत उड़ाइये। ग्रह-नक्षत्रों का योग भगवान् की वाणी है।"

"तो इसका अर्थ है, कि भगवान् की वाणी बड़ी ही निर्बल है, जिसे कोई भी ज्योतिषी पलट दे सकता है।"

"तो क्या महाराज गये बिना मानेंगे नहीं ?"

"और मौका होता, तो मैं तुम्हें प्रसन्न करने लिये न जाता, किन्तु अब मैं सर्व-साधारण में अपने निश्चय की घोषणा कर चुका हूँ।"

"अच्छा, यही वादा कीजिये, की खेलों में खुद शरीक न होंगे !"

"अफसोस, यह भी नहीं हो सकता। तुम्हारी सद्भावना के लिये मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ, लेकिन इन आशङ्काओं पर ध्यान देने को मैं तैयार नहीं हूँ।"

"महाराज मैं आपकी आज्ञा मानने की सदा से अभ्यस्त हूँ, इसीलिये आज भी भय-विह्वल हृदय लेकर मैं समर्पण करती हूँ।"

"और तुम मेले में भी जरूर आना—ताकि अपनी आँखों से अपनी आशङ्काओं को निर्मूल होता हुआ देख लो।"

"जो आज्ञा।"

तदनुसार शाम को महारानी कैथेराइन अपनी सब सखी-सम्बन्धिनों के साथ खेल के मैदान में मौजूद थीं। केवल डायना किसी बहाने से अपने डेरे पर ही रह गई थी। मैदान में खेल शुरू हुए, और पहली बार ही बादशाह ने सब खिलाड़ियों को चैलंज दे दिया।

रात तक जब सब खेल खत्म हो गये तो बादशाह ने लौटकर महारानी कैथेराइन से कहा—"क्यों—नक्षत्र तो गलत हो गया न ?"

"अफसोस ! अभी जून का महीना खत्म नहीं हुआ है ।" कैथेराइन ने जवाब दिया ।

अगला दिन भी राजी-खुशी बीत गया, और रात को हेनरी ने हँसते हुए कहा—"देखा—तुम्हारा नक्षत्र फिर गलती खा गया !"

"कल का दिन अत्यन्त भयानक है !" महारानी ने धीरे से जवाब दिया ।

आखिरी दिन के खेल बहुत ही शानदार रहे । उस दिन फ्रान्स के सर्वश्रेष्ठ तलवारबाजों ने अपने-अपने कर्त्तव्य दिखाये । सूर्य क्रमशः अस्ताचल की ओर जाने लगा । क्रमशः सभी वीरगण हेनरी से दो-दो हाथ कर, खेत छोड़ने लगे । बाजे पर चोट पड़ी । खेल खत्म होने को आये । कैथेराइन ने आराम की साँस ली । बादशाह ने चारों तरफ देखकर कहा—"अरे ! दिन खत्म हो गया—और मेरा काम अभी खत्म नहीं हुआ ।"

खेलों के मध्यस्थ ने कहा—"आपकी बारी खत्म हो चुकी, श्रीमान्, अब कोई लड़ने को बाकी नहीं है ।"

"नहीं; एक आदमी है,—वह जो कणटोप से मुँह ढाँके सामने खड़ा है, और जिसने इतनी देर में एक वार भी नहीं किया है । वह है कौन मोशिये ?"

"मुझे नहीं मालूम पृथ्वीनाथ, मेरा ध्यान उसकी तरफ नहीं गया था ।"

"मोशिये," बादशाह ने उसकी तरफ बढ़ते हुये कहा—"अगर आपकी इच्छा हो, तो दो-दो हाथ कर लीजिये ।"

यह घुड़सवार कुछ देर तक निश्चल खड़ा रहा, फिर तनिक व्यग्र स्वर में बोला—"महाराज, मुझे अपनी आज्ञा को अस्वीकार करने की आज्ञा दें ।"

"अस्वीकार करने की ? नहीं, मोशिये, हर्गिज नहीं," बादशाह ने क्रोधित होकर उत्तर दिया।

इस पर उस अपरिचित घुड़सवार ने अपना कनटोप ऊपर सरकाया, और बादशाह ने जैब्री डि-मौंण्टगोंमरी का जर्द चेहरा पहचान लिया !

५१

जैब्री की विषाद-मूर्त्ति पर निगाह पड़ते ही हेनरी की नस-नस में बिजली-सी दौड़ गई। पर क्षण-भर के बाद ही उसने पूरा ज़ोर लगाकर अपने-आप को सम्हाला।

जैब्री ने विषण्ण भाव से कहा—"मैं श्रीमान् से प्रार्थना करूँगा, कि आप हठ न करें।"

हेनरी क्षण-भर के लिये उससे डर गया था, इसलिये अब उसने आवश्यकता से अधिक कड़ाई बर्त्तने का इरादा कर लिया। बोला—"नहीं; मैं मान नहीं सकता, मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी, तैयार हो जाइये।"

इसी समय बादशाह के अङ्ग-रक्षक ने आकर कहा कि "महारानी कहती हैं, कि उनके प्रेम के नाम पर बादशाह यह अन्तिम द्वन्द न करें।"

बादशाह ने उत्तर दिया—"महारानी से कहना कि उनके प्रेम के नाम पर ही मैं इस युद्ध में प्रवृत्त होता हूँ।"

जैब्री की विचार-शक्ति नष्ट-प्राय हो गई, और साँस निकलना दूभर हो गया। वह यन्त्र-पुत्तलिका की भाँति आगे बढ़ा, और इससे आगे जो कुछ किया, मानों स्वप्न देखते हुए किया।

मध्यस्थ ने सङ्केत किया। दोनों घोड़े पूरी तेज़ी से एक-दूसरे की तरफ़ बढ़े। जैब्री और बादशाह बीचो-बीच मिले, पर दोनों अछूते बच गये। महारानी ने साँस ली।

न-जाने जान-बूझकर या अर्द्ध-मूर्च्छित होने के कारण, जैब्री ने नियमानुसार बर्छा फेंका नहीं, और अध-टूटे हैण्डिल को ही कसकर थामे हुए दूसरी बार पलटा। घोड़ा पूरी तेज़ी में था, और इस बार बर्छा इतने ज़ोर से बादशाह के सिर में लगा, कि उनका लोहे का कण्टोप ऊपर सरक गया, और बर्छा आँख में धँसकर कान के पास बाहर निकल आया। दर्शकों के मुँह से एक भीषण कोलाहल-ध्वनि निकल पड़ी।

"हाय, मैं मर गया!" सब से पहले यह शब्द बादशाह के मुँह से निकले, तब उन्होंने रुक-रुककर कहा—"काउण्ट डि-मॉण्टगोमरी का अनिष्ट न किया जाय। इन्साफ़ यही था। मैं उसे क्षमा करता हूँ।" कहकर वे बेहोश हो गये।

इससे आगे का दृश्य-वर्णन् करना असम्भव है। अर्द्ध-मृतावस्था में महारानी राजमहल पहुँचाई गईं। बादशाह भी अचेतावस्था में निकटवर्त्ती सुरक्षित स्थान पर पहुँचाये गये। जैब्री घोड़े से उतरकर मैदान के किनारे आ-खड़ा हुआ था। आँखें उसकी स्थिर हो गई थीं, और शरीर निश्चल। ऐसा जान पड़ता था, मानों वार बादशाह पर नहीं, स्वयं उसी पर हुआ है। बादशाह का अन्तिम आदेश सब ने साफ़-साफ़ सुन लिया था, और किसी की हिम्मत उसे हाथ लगाने की न हुई। तो भी हर आदमी भय और आतङ्क की दृष्टि से उसकी तरफ़ ताकता था। केवल सेना पति कॉलिनी ने उसके पास पहुँचने का साहस किया।

उसके निकट से गुज़रते हुए उसनें धीमी आवाज़ में कहा—"बड़ी भीषण घटना हो गई है, मेरे मित्र; यद्यपि है बिल्कुल आकस्मिक ही। मेरी सलाह है, कि तुम कुछ समय के लिये फ्रान्स को ही छोड़ दो, अन्यथा किसी विपद् में पड़ोगे। मुझे सदा अपना मित्र समझना—विदा।"

"धन्यवाद।"

कुछ देर बाद ही ड्यूक डि-गाई आ पहुँचे, और फुस-फुसाकर बोले—"बड़े दुर्भाग्य की बात है, जैब्री, परन्तु मैं तुम्हें दोष नहीं देता, केवल तुम्हारी स्थिति पर दया करता हूँ। अगर कोई हमारी उस दिन की बातें सुन लेता, तो कदाचित् इस घटना के विषय में भाँति-भाँति की चर्चा फैल जाती। लेकिन कोई चिन्ता नहीं। मेरे बाहुओं में दम है, और मैं तुम्हारा मित्र हूँ। बस अब ज़रा छिपकर रहो, लेकिन पेरिस से हटना मत। सङ्कट के समय मुझे याद रखना।"

"धन्यवाद मोशिये।" जैब्री ने उसी प्रकार बे-मन से जवाब दे दिया।

यह स्पष्ट था, कि ड्यूक डि-गाई और कॉलिनी ने इस घटना को केवल एक आकस्मिक दुर्घटना ही नहीं समझा था। इनके आश्वासन के पश्चात् जैब्री निर्विकार भाव से अपने घर की तरफ़ लौटा।

उधर जिस कमरे में बादशाह को रक्खा गया, वहाँ महारानी, हेनरी के बाल-बच्चे, तथा डॉक्टरों के अतिरिक्त किसी को घुसने की अनुमति नहीं थी। डॉक्टरों ने थोड़ी देर के पश्चात् ही घोषणा कर दी, कि बादशाह के बचने की कोई आशा नहीं है। लगातार चार दिन तक बादशाह अचेत रहे। पाँचवे दिन उन्हें ज़रा होश हुआ, और उन्होंने अपनी बहन का विवाह-संस्कार सम्पन्न करने की आज्ञा दी। थोड़ी देर तक उन्होंने महारानी और बच्चों से भी बात की, पर शीघ्र-ही ज्वर का प्रकोप हुआ, और १० जुलाई को उनका शरीरान्त हो गया।

ठीक उसी दिन डायना डि-कैस्ट्रो सेण्ट-क्वेंटिन के आश्रम की तरफ़ रवाना हुई।

५२

बादशाह के कृपा-पात्रों का पतन उनके लिये मृत्यु से अधिक

भयङ्कर होता है। इसलिए जैब्री की मन चाही पूरी हुई। डायना डि-पोतेई और कॉन्स्टेबिल डि-मॉण्टमारेन्सी के प्रति उसकी प्रतिहिंसा की भावना को सम्पूर्ण तुष्टि मिल गई; क्योंकि उसी के कार दोनों की शक्तियों का ह्रास हो गया, और जो किसी दिन बादशाह की नाक के बाल बने हुए थे, उनकी इज़्ज़त एक कौड़ी-बराबर भी न रही।

हेनरी के अन्तिम ग्यारह दिनों में, जबकि मौत क्रमशः उसके निकटतर होती जा रही थी, कॉन्सटेबिल ने शासनकार्यों में अपना अधिकार जमाये रखने की भरपूर कोशिश की, और इस कोशिश में जो-जो आदमी ड्यूक डि-गाई के प्रतिकूल उसकी सहायता कर सकते थे, सभी को उसने अपनी तरफ़ खींचना चाहा। डायना डि-पोतेई हर तरह उसे अपना सम्पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

जब, १० जुलाई को नये बादशाह को गद्दी मिली, तो उसे प्राचीन राज्य-व्यवस्था के अनुसार उसकी सोलह वर्ष की आयु, निर्बल स्वास्थ्य और अनुभव की कमी के कारण शासन-प्रबन्ध के समस्त अधिकार नहीं मिल सके। नियमानुसार एक ऐसे योग्य मन्त्री को राज-काज का सारा काम चलाने पर नियुक्त किया जाने वाला था, जो सब काम बादशाह के नाम पर करे। यह पद किसे दिया जाय—प्रश्न यह था। कई आदमी इस पद के लिये उम्मेदवार थे। ड्यूक-डि-गाई, कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी और हेनरी की सन्तान के पश्चात् फ्रान्स के तख्त के हक़दार, नेवर के बादशाह अण्टोइन डि-बर्बन का नाम उल्लेखनीय है। १२ जुलाई को दिन के तीन बजे बालक फ्रैंकोई (नये बादशाह) का दरबार होनेवाला था, जिसमें शासन-समिति के समस्त अधिकारियों के सम्मुख इस मन्त्री को, जो स्पष्ट अर्थों में फ्रान्स का एकाधिपति होता, पेश किया जाने वाला था।

कैथेराइन और ड्यूक-डि-गाई उस दिन सुबह ही फ्रैंकोई के

पास पहुँच गये थे। बहाना तो था, नये बादशाह से उसके पिता की मृत्यु पर खेद-प्रकाश करना, पर वास्तव में दोनों ही अपना-अपना हक्क बादशाह के सम्मुख प्रदर्शित करने गये थे। इस अत्यावश्यक कार्य के लिये कैथेराइन ने समाज का वह नियम भी तोड़ दिया था, जो उसे अपने पति की मृत्यु के शोक में चालीस दिन पर्दे में रहने को वाधित करता था। हेनरी के जीवन काल में वह पति द्वारा सदा लाञ्छित और तिरष्कृत रही; अब सहसा उसके मन में शासन और अधिकार का खुमार चढ़ गया था, और राज्य-प्रबन्ध में अपना गहरा हाथ रखकर उसने अपना शेष जीवन-काल पूर्ण वैभव और ऐश्वर्य में बिताने का संकल्प किया। लेकिन कायदे के मुताबिक उसे मन्त्री का पद मिलना असम्भव था, इसलिये उसकी इच्छा थी, कि वह पद किसी ऐसे आदमी को मिले, जिस पर उसका पूरा अधिकार हो। कॉन्सटेबिल का तो कोई जिक्र ही नहीं; क्योंकि उसका झुकाव सदा बादशाह की रखैल डायना डि-पोतेई की तरफ रहा, और अपरोक्ष रूप से वह कैथेराइन के दुर्भाग्य का एक बड़ा कारण रहा था, एण्टोइन डिबर्बन को कैथेराइन इसलिये मुँह लगाना नहीं चाहती थी, कि राजगद्दी पर उसका दूसरा हक था, और उसकी पत्नी जीन डि-अलबर्ट की आकांक्षायें बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं। अब सिर्फ ड्यूक डि-गाईज रह गये। लेकिन कैथेराइन अभी तक यह निश्चय न कर पाई थी, कि वे उसके साथ अपना सहयोग देंगे, या नहीं। अतएव नये बादशाह के साथ होने वाले उस वार्तालाप में उसे इसी विषय में ड्यूक के असली विचारों का पता लगाना अभीष्ट था।

बादशाह और महारानी अभी बिल्कुल बच्चे ही थे। जो पहले आता, और अपनी उपयोगिता और सहृदयता का सिक्का उनके हृदय पर जमा देता, वे उसी पर विश्वास करने को प्रस्तुत थे। दोनों को ही बादशाह हेनरी की मृत्यु से सच्चा अफ़सोस हुआ

था, और जब कैथेराइन वहाँ पहुँची, तो उसने दोनों को शोक में डूबा हुआ पाया।

"बेटा," कैथेराइन ने कहा—"तुम्हारा रोना उचित ही है। मरनेवाले का सारा उत्तरदायित्व तुम्हारे कन्धों पर आ पड़ा है। तुम्हारे दुःख की एक सङ्गिनी मैं भी हूँ, लेकिन याद रक्खो, मरने वाले की सन्तान होकर भी तुम्हें रोने-धोने के अतिरिक्त बहुत-सा काम करना है; क्योंकि तुम्हारे सिर पर एक बड़े भारी राष्ट्र का उत्तरदायित्व है। अपने मृत पूर्व-पुरुष के प्रति श्रद्धाञ्जलि अपूर्ण करने के पश्चात् अब तुम्हें भविष्य पर दृष्टि-पात करना चाहिये। स्मरण रक्खो, बेटा, अब तुम बादशाह हो।"

"अफ़सोस! मैडम, फ्रान्स का राज-दण्ड एक सोलह बरस के बालक के लिये बहुत भारी है। मुझे स्वप्न में भी इसका ख़याल न था, कि इतनी जल्दी मेरे सिर पर यह भारी कर्त्तव्य आ पड़ेगा।"

"नहीं, नहीं, फ्रान्स के महाराज, घबराने की बात नहीं है। साहस और कृतज्ञता के साथ उस कर्त्तव्य का पालन करो, जिसे ईश्वर ने तुम्हें सौंपा है। तुम्हें प्यार करनेवाले बहुत हैं, और वे सच्ची भक्ति से तुम्हारा मार्ग-प्रदर्शन करेंगे।"

"मैडम, मैं आपका कृतज्ञ हूँ।" फ्रैंकोइ का गला भर आया, और एकाएक उसका हाथ ड्यूक डि-गाइ की तरफ़ उठ गया।

"ठीक है श्रीमान्!" ड्यूक ने कहा—"महारानी के साहसपूर्ण आश्वासन के लिये उन्हें धन्यवाद दीजिये, और कह दीजिये, कि जो लोग आपको प्यार करते हैं, और जिन्हें आप प्यार करते हैं, उनमें महारानी का स्थान सबसे आगे रहेगा; तथा, आप अपने दुरूह कर्त्तव्य-पालन में सदा उनकी सहायता के इच्छुक रहेंगे।"

"चचा साहब ने मेरे मनोभावों को ठीक-ठीक प्रकट कर दिया है," किशोर महाराज ने प्रसन्न होकर कहा।

कैथेराइन ने तुष्टि-पूर्ण मुद्रा से ड्यूक की तरफ देखा। तब बादशाह के प्रति कहा—"श्रीमान्! मुझमें जो थोड़ी-बहुत बुद्धि है, सब आपके चरणों पर अर्पण है। जब कभी आप मुझसे परामर्श लेंगे, मैं अपने को गौरवान्वित समझूँगी। परन्तु मैं आखिर स्त्री ही हूँ, और आपको एक ऐसे सहायक की अनिवार्य आवश्यकता है, जो तलवार का धनी हो। ऐसी राज-भक्त पुरुष-शक्ति का चुनाव आप ही के हाथ में है।"

इस प्रकार ड्यूक और कैथेराइन में समझौता हुआ, जिसकी तह में, हम अच्छी तरह समझते हैं, दोनों-ही तरफ सचाई का अभाव था, और जो अधिक समय तक टिकनेवाला न था।

बादशाह ने अपनी माता का अभिप्राय समझ लिया, और साथ ही मेरा का सङ्केत भी पाकर उन्होंने ड्यूक की तरफ हाथ बढ़ा दिया। लेकिन कैथेराइन उससे कुछ निश्चित् बातें तय कर लेने के पहले नहीं चाहती थी, कि अधिकार ड्यूक के हाथ में पहुँचे। अतएव वह बोली—

"लेकिन इससे पहले, कि आप किसी मन्त्री का चुनाव करें, मेरा एक अनुरोध है।"

"आज्ञा कीजिये।"

"श्रीमान्! मेरे अनुरोध का सम्पर्क एक औरत से है, जिसने फ्रान्स का बहुत अहित किया है। हमें अपने मान्य पुरुष की निर्बलताओं पर कटाक्ष करने का अधिकार नहीं, और तुम्हारे पिता अब जीवित नहीं हैं, इसलिये उनकी निर्बलताओं के चिह्न-स्वरूप इस औरत के अपमान-पूर्ण अस्तित्व को राजमहल से मिटा देना ही श्रेयस्कर है। बादशाह की अन्तिम रुग्णावस्था में कई बार उसे महल छोड़ने का आदेश दिया गया, किन्तु उसने सदा यही जवाब दिया, कि बादशाह के अतिरिक्त मुझे आज्ञा देने का अधिकार किसी को भी नहीं है।"

ड्यूक डि-गाई ने बीच ही में टोककर कहा—"मेरी धृष्टता क्षमा हो, किन्तु मैडम, इस विषय में महाराज की स्पष्ट इच्छा मुझे मालूम है।" कहते हुए उन्होंने तुरन्त घण्टी बजाकर एक दरबान को बुलाया, और आज्ञा दी—"मैडम डायना डि-पोतेई से जाकर कहो, कि महाराज उनसे भेंट करना चाहते हैं!"

युवक महाराज अपना अधिकार इस प्रकार छिनता हुआ देखकर पहले-पहल कुछ अप्रतिभ हुए थे, किन्तु यह देखकर कि ड्यूक ने जो कुछ किया है, उन्हीं के लिये किया है—अन्त में उन्हें प्रसन्नता हुई।

ड्यूक ने कहा—"श्रीमान्! मैंने आपकी इच्छा के विरुद्ध तो कार्य नहीं किया?"

"कदापि नहीं, चचा साहब, मुझे विश्वास है, आप जो कुछ करेंगे, ठीक ही करेंगे।"

कुछ ही देर में ला डचेजडि-वैलेंण्टिनोई बादशाह के सम्मुख उपस्थित हुईं, और लगभग उनके पीछे-ही पीछे डायना डि-पोतेई ने प्रवेश किया।

❀ ❀ ❀

५३

डायना ने थोड़ा झुककर बादशाह का, और उससे कम झुककर कैथेराइन और मैरी का अभिवादन किया। ड्यूक की तरफ उसने नजर तक न उठाई।

"श्रीमान्!" वह बोली—"महाराज ने मुझे बुलाया है?"

बादशाह के मन पर क्रोध और व्यग्रता का एक-साथ आक्रमण हुआ और चेहरे पर कई तरह का भाव आया-गया। मुँह से उन्होंने केवल यही कहा—"हमारे चचा साहब गाई-महोदय आपसे मेरा अभिप्राय प्रकट करेंगे।"

डायना ने क्रोध से उबलकर ड्यूक की ओर ताका।

"मैडम," ड्यूक ने कहा—"माननीय बादशाह हेनरी महोदय के स्वर्गवास से आपको जो अपार कष्ट हुआ है, उसकी कल्पना करते हुए महाराज ने आपके एकान्तवास में रहने की व्यवस्था कर दी है, और वे आपको राजमहल से प्रस्थान करने की अनुमति देते हैं। आज सन्ध्या तक आप अपनी सब तैयारियाँ पूरी कर सकती हैं।"

क्रोध और अपमान से डायना की आँखें भर आईं। बोली—"महाराज ने मेरे ऊपर बड़ा भारी उपकार किया। मुझे यहाँ रहकर करना भी क्या है? मैं स्वयं जल्दी-से-जल्दी इस स्थान का परित्याग करने को उत्सुक हूँ, आप विश्वास करें।"

"चलिये, यह भी अच्छा हुआ," ड्यूक ने कहा—इस बात की व्यवस्था भी महाराज करा देने का प्रबन्ध करेंगे, जिससे आप अपने एकान्त-वास में भी उसी प्रकार के सभा-सम्मेलन कर सकें, जैसे पिछले एक हफ्ते से कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेंसी के साथ करती रही हैं।"

"मोशिये, मेरा ख़याल है, अगर देश के शासन-सम्बन्धी भविष्य पर मैं सबसे बड़े राजनीतिज्ञ के साथ विचार-विनिमय कर रही थी, तो इसमें कोई पाप नहीं था"

"ठीक है," कैथेराइन ने मौका पाते ही कहा—"मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी ने वास्तव में राज्य की बहुत बड़ी सेवा की है, और और आशा करती हूँ, कि उन्हें भी अब शेष जीवन सुख और शान्ति के साथ बिताने की आज्ञा मिल जायगी।"

डायना बोली—"अपनी सेवाओं के बदले में मोशिये डि-मॉण्ट मॉरेन्सी भी मेरी ही तरह ठीक ऐसे पुरस्कार की आशा करते हैं। अभी-अभी, जिस समय मेरे पास बादशाह-सलामत का आदेश पहुँचा, वह मेरे पास ही मौजूद थे, और इस समय मेरे लौटने की

प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मैं जाकर उनसे महाराज की सदिच्छा का वृत्तान्त कह दूँगी। मेरा विश्वास है, वह तुरन्त ही महाराज से प्रस्थान की अनुमति लेने आयेंगे, और समय आने पर अपने अतुल शौर्य का परिचय महाराज और उनके न्यायकारी मन्त्रियों को देंगे, जिन्होंने स्वर्गवासी महाराज की भावनाओं को शब्दशः सम्मान किया है।"

"बादशाह मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी से भेंट करने को इसी समय तैयार हैं!" कैथेराइन ने उपेक्षा के भाव से कहा।

"मैं उन्हें अभी भेज दूँगी।" कहकर मुँह पर क्रोध और मन में क्लेश का भाव लिये हुए डायना बिदा हुई। ऊपर से अत्यन्त अभिमान दिखाने पर भी उसके हृदय में मौत का अँधेरा छाया हुआ था।

कैथेराइन ने इस बात पर लक्ष्य दिया था, कि कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी के सम्बन्ध में ड्यूक डि-गाईं ने मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाला। अतएव उसने कहा—"कॉन्सटेबिल डि-मॉण्ट मॉरेन्सी पर मैडम डि-पोतेई का बहुत अधिकार है, इसलिये मुझे सन्देह है, कि अगर कॉन्सटेबिल को शासन-प्रबन्ध में उत्तरदायित्व सौंपा गया, तो उसमें डायन डि-पोतेई का अप्रत्यक्ष हाथ अवश्य ही होगा।"

ड्यूक अब भी चुप रहे।

"बादशाह को मेरी सलाह है," कैथेराइन ने पुनः कहा—"कि वे सन्दिग्ध व्यक्तियों को विश्वास में न लें, वरन् एक ही पुरुष को अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त करें, जिसके सिर पर लगभग सम्पूर्ण उत्तरदायित्व हो। मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी, या अपने चचा ड्यूक डि-गाईं अथवा बर्बेन में से किसी को चुन लेना उनका कर्त्तव्य है। आपका क्या विचार है, ड्यूक-महोदय?"

"आपका यह विचार है, तो मेरा अवश्य ही है।"

"मोशिये, मुझे विश्वास है, कि आपका विचार मेरे साथ अवश्य ही सादृश्य रक्खेगा; क्योंकि मैं आपकी योग्यता की क़ायल हूँ, और इसीलिये आपका पक्ष-समर्थन करती हूँ। बादशाह भली भाँति जानते हैं, कि मैं न तो कॉन्सटेबिल की इस पद के योग्य समझती हूँ, और न बर्बन को।"

"मैडम," ड्यूक ने कहा—"आप मेरी हार्दिक कृतज्ञता और श्रद्धा में विश्वास रक्खें।"

"ठीक! तो अब जब पार्लियामेन्ट के सदस्य यहाँ पहुँचेंगे, तो सब में पूर्ण मतैक्य पायेंगे।"

"मैं इस निश्चय पर पहुँचकर बहुत प्रसन्न हुआ," बादशाह ने कहा—"अब, मेरी माँ मेरी सलाह पर हैं, और चचा प्रधान मन्त्री हैं, तो मैं इस भयावह शासन की तरफ से बहुत-कुछ निश्चिन्त हो सकता हूँ।"

इसी समय मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी के आगमन की सूचना मिली। उसके चेहरे पर शान्ति और शौर्य का मिश्रित भाव था। आते ही उसने आदर-पूर्वक बादशाह का अभिवादन किया, और कहा—"महाराज, मुझे यह देखकर तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ, कि आपके पूज्य पिता और पितामह का स्वामि-भक्त सेवक आपकी कृपा से वञ्चित रहा। अपने इस भाग्य-परिवर्तन पर भी मुझे अधिक खेद नहीं है। मैं अत्यन्त शान्त भाव से प्रस्थान करता हूँ। यदि मेरे बादशाह या मेरे देश को मेरी आवश्यकता पड़े, तो मैं सदा तैयार रहूँगा, मुझे केवल यही करना है।"

इन विनयशील वाक्यों ने किशोर महाराज पर बड़ा असर किया, और उन्होंने परेशान होकर अपनी माँ की तरफ ताका। परन्तु इसी समय ड्यूक डि-गाईं बोल उठे—"अब चूँकि मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी विदा हो रहे हैं, इसलिये कृपया राज-मोहर हमें दे जायेंगे, जिसकी हमें आवश्यकता पड़ेगी।"

"लीजिये, यह रही !" कॉन्सटेबिल ने क्रोध से उबलकर कहा—"मैं तो ख़ुद ही देनेवाला था; लेकिन मैं देखता हूँ, महाराज ऐसे आदमियों से घिरे हुए हैं, जिन्होंने उन लोगों का विरोध करना अपना कर्तव्य समझ लिया है, जिनके साथ सौजन्य और कृतज्ञता का व्यवहार होना चाहिए।"

"आप किनकी बात कह रहे हैं मोशिये ?" कैथेराइन ने पूछा।

"जो बादशाह-सलामत के गिर्द इकट्ठा हैं।" उसने सख्ती से जवाब दिया।

यह सुनकर कैथेराइन सहन न कर सकी, और उसने कॉन्सटेबिल के अब तक के दुर्व्यवहार की गाथा सुनानी आरम्भ कर दी। कॉन्सटेबिल ने सब-कुछ सुनकर केवल हँस दिया, जिससे क्रोध अधिक बढ़ गया। उसी समय ड्यूक-महोदय, जो तब तक बादशाह से वार्तालाप करते रहे थे, उठे,और बोले—"मोशिये, आप और आपके अन्य कुछ मित्रों,—ऑशटेल लि'आबस्पिन*—आदि के प्रति, इनकी सेवाओं के लिये कृतज्ञता प्रकट करते हुए, बादशाह उन्हें और आपके प्रस्थान की अनुमति देते हैं। केवल आपके भतीजे मोशिये डि-कौलिनी को बादशाह सलामत उनके पद पर प्रतिष्ठित रहने देना चाहते हैं। आप कृपया उन्हें इसकी सूचना दे दें।"

"बस—या और कुछ ?" कॉन्सटेबिल ने दाँत पीसते हुए पूछा।

"बस—यही।"

अपने मन का क्षोभ दबाना कॉन्सटेबिल के लिये असम्भव हो गया, परन्तु वह यह अवसर आने देना नहीं चाहता था, कि उसे राज-द्रोहियों की सूची में शामिल किया जाय, और उसके दुश्मनों के अधिक प्रसन्न होने की गुञ्जाइश मिले। अतएव उसने एकदम चल देने का निश्चय कर लिया; पर चलते-चलते पलटकर बोला—

*कॉन्टेबिल के समर्थक पदाधिकारी।

"एक शब्द—आपके स्वर्गीय पिताश्री के प्रति केवल एक अन्तिम कर्तव्य की पूर्ति करना चाहता हूँ। जिस व्यक्ति ने बादशाह के सिर पर वह घातक वार किया था—जो हमारी सारी आपत्तियों का मूल-कारण है,—वह निरपराध नहीं है। उसने किसी अज्ञात शत्रुता के कारण जान-बूझकर महाराज की हत्या की थी। मेरा विश्वास है, महाराज उसे उसके अपराध का कठोरतम दण्ड देंगे।"

जैब्री के विरुद्ध यह लांछन लगता हुआ देखकर ड्यूक डि-गाई काँप उठे। परन्तु कैथेराइन ने तुरन्त उत्तर दिया—"मोशिये, आपको इस तरफ़ हमारा ध्यान आकर्षित करने की आवश्यकता नहीं थी। इस मामले में हेनरी द्वितीय की विधवा किसी दूसरे व्यक्ति का हाथ सहन नहीं कर सकती। इसलिये, आप इस विषय में निश्चिन्त रहें।"

"तब मुझे कुछ कहना बाकी नहीं है," कॉन्सटेबिल ने क्रोधावेश से पागल होकर प्रस्थान किया।

५४

पार्लियामेण्ट के सदस्यों के आते ही बादशाह फ्रैंकोई ने ड्यूक डि-गाई को अपना प्रधान मन्त्री घोषित कर दिया। अर्थ मन्त्री कार्डिनल डि-लॉरें और राज-मुहर का मालिक ऑलिवर को नियत किया गया।

जब सब सदस्य विदा हो गये, तो निढाल-सा होकर फ्रैंकोई उठा, और बोला—"चलो, आज का काम तो ख़त्म हुआ, क्यों? माताजी, चाचा साहब! अगर आपकी राय हो, तो मैं पिताजी का मृत्यु-शोक मनाने के लिये लाइर नदी के किनारे कुछ दिन के लिए जा रहूँ। मैरी उस स्थान को बहुत पसन्द करती है।"

"बेशक!" मैरी ने कहा—"इस गर्मी के मौसम में पेरिस तो साक्षात् नर्क बना हुआ है।"

"मोशिये डि-गाई यात्रा का उचित प्रबन्ध कर देंगे।"

कैथेराइन ने कहा—"लेकिन बेटा, आज तुमसे विदा होने के पहले मुझे एक बात कहनी है। तुम्हारा एक पवित्र कर्तव्य अभी बाकी है।"

"वह क्या ?"

वह है, एक न्याय-कार्य। तुम्हारे पिता जिस व्यक्ति के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुए थे, और जो उनकी मृत्यु का कारण है, वह या तो अपराधी है, अथवा अभागा। मेरा निजी अनुमान है, कि हत्या जान-बूझकर की गई है, लेकिन तो भी इसका ठीक-ठीक निर्णय करना तुम्हारा कर्तव्य है। अगर हम ऐसी भीषण घटना को बिना खोज-बीन किये छोड़ दें, और अपराध की तह में शरारत हो, तो सभी बादशाहों का जीवन ख़तरे में रह सकता है।"

"तो मैडम, क्या आप मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी की गिरफ्तारी चाहती हैं ?"

"वह आज सुबह गिरफ्तार किया जा चुका।"

"किया जा चुका ? किसकी आज्ञा से ?"

"मेरी आज्ञा से। मैंने इसका उत्तरदायित्व अपने सिर ले लिया है। वह न-जाने कब गायब हो जाता और मैं अपने प्यारे पुत्र से प्रार्थना करती हूँ, कि वह उससे आवश्यक पूछ-ताछ करें।" कहते-कहते उसने घण्टी बजाकर दरबान को बुलाया, और आज्ञा दी—"कैदी को ले आओ।"

ड्यूक के माथे पर बल पड़ गये, बादशाह अनिश्चयता के संशय में पड़ गये, और मैरी स्टुअर्ट स्तब्ध रह गई। जैब्री ने प्रवेश किया; चेहरे पर जर्दी छाई हुई थी, लेकिन गति-विधि शान्त थी। युवक बादशाह का रंग उसे देखते ही बदल गया, और उन्होंने कैथेराइन से कहा—"माँ, मेरी तरफ से आप बोल सकती हैं।"

"मोशिये," वह क्रुद्ध होकर जैब्री से बोली—"हमने तुम्हें यहाँ

इसलिये बुलाया है, कि बादशाह स्वयं तुम्हारे दोष-निर्दोषिता का निर्णय कर सकें। आप इसके लिये तैयार हैं ?"

"मैडम, मैं सब कुछ सुनने के लिये तैआर हूँ।"

"मोशिये, बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जो आपके विरुद्ध पड़ती हैं। दो वर्ष तक राज-दरबार से अनुपस्थित रहकर एकाएक खेल के मैदान में प्रकट होना, और वहाँ का तुम्हारा व्यवहार देखनेवालों के दिलों में शक पैदा करता है। जब तुम वर्षों इन खेलों को खेलते हो, तो इस बार ही यह कैसे भूल गये, कि नेज़ा टूट जाने पर उसे फेंक देने का नियम है ? इसका उत्तर तुम्हारे पास क्या है ?"

"जी, कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं ?" कैथेराइन ने चकित होकर पूछा।

"कुछ नहीं।"

"तो अपराध स्वीकार करते हो ?"

"मैं कुछ स्वीकार नहीं करता।"

"तो इन्कार करते हो ?"

"मैडम, मैं किसी बात से इन्कार नहीं करता। मैं कुछ बोलना ही नहीं चाहता।"

"मोशिये—सावधान ! आपको अपनी कैफियत देने का पूरा प्रयत्न करना चाहिए। मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी कहते थे, कि आपको स्वर्गवासी महाराज के प्रति कुछ शिकायत थी।"

"क्या उन्होंने बताया, क्या शिकायत थी ?"

"नहीं; लेकिन वह बता सकते हैं।"

"अगर उनमें हिम्मत है, तो आकर कहें।"

"मगर तुम जवाब देने से इन्कार करते हो ?"

"अवश्य"

"शायद कष्ट पाने पर तुम्हारा निश्चय बदल जाय ?"

"मैं ऐसा नहीं समझता।"

"इस हठ से आपका जीवन ख़तरे में पड़ सकता है। सावधान !"

"कोई चिन्ता नहीं, मुझे जीवन का ऐसा मोह नहीं है, मैं अपनी कैफियत न दूँगा।"

"ठीक है!" मैरी स्टुअर्ट ने सहसा कहा—"आपकी यह स्तब्धता महापुरुषों की-सी है, जो एक गन्दे सन्देह के विरुद्ध अपना बचाव करना भी अपमान समझते हैं"

कैथेराइन ने माथे पर बल डालकर उसकी तरफ ताका।

"सम्भव है, मेरा अनुमान असत्य हो," मैरी ने कहा।

"लेकिन मेरा जो विचार है, और जो मैं अनुभव करती हूँ, वही कहती भी हूँ। मेरे कथन से राजनीति का कोई सम्बन्ध नहीं, वह तो केवल मेरी दुर्दमनीय स्वाभाविक भावनाओं का फल-मात्र है। मेरा अनुमान है, कि मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी के चुप रहने का कारण यही है, कि वह अपने-आप को उस सन्देह से ऊपर रखना चाहते हैं, तो परिस्थितिवश उन पर किया जा रहा है।"

बादशाह ने आँखों में आनन्दपूर्ण वासना भरकर मैरी की तरफ देखा, जो इस शान से बोलती-बोलती सदा से ज्यादे सुन्दर दिखाई देने लगी थी।

"आपका धन्यवाद है मैडम," जैत्री ने कहा—"आपने अपने योग्य ही बात कही है।"

"इस लड़कपन की भावुकता को मैं पसन्द नहीं करती," कैथेराइन ने क्रोधपूर्वक कहा।

"मैडम, आप प्रौढ़ा हैं, आप इस भावुकता को पसन्द न करें," मैरी ने तुरत जवाब दिया—"लेकिन हम अभी जीवन में प्रवेश कर रहे हैं, और भावुक हृदयों की सत्यता जानने की अधिक सामर्थ्य रखते हैं। क्यों, आपका क्या ख़याल है?" कहकर उसने बादशाह की तरफ देखा।

बादशाह ने कोई उत्तर न दिया, और मेरी की कोमल उँगलियों पर एक प्रेमपूर्ण चुम्बन स्थापित कर दिया।

"हाय!" कैथेराइन ने तीव्र स्वर में कहा—"मैंने अपना एक हक़ माँगा, और बदले में मुझे मिला व्यंग और अपमान! मैंने कहा कि बादशाह के घातक से जिरह की जाय, और जब उसने जवाब देने से इन्कार कर दिया, तो उसकी प्रशंसा की जाती है! अच्छी बात है, तो मैं खुल्लम-खुल्ला मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी पर अपने पति की हत्या का दोष लगाती हूँ। क्या बादशाह अपनी माँ के साथ इसीलिये न्याय नहीं करेंगे, कि वह उनकी माँ है? अभी कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी का बयान लिया जाना चाहिए, और बादशाह की निर्दयतापूर्ण हत्या का बदला लिया जायेगा।" तब ड्यूक डि-गाईज की तरफ़ घूमकर उसने कहा—"ड्यूक-महोदय, आप कुछ नहीं बोल रहे हैं, लेकिन मुझे विश्वास है, मेरे साथ आपकी सहमति है।"

"जी नहीं, मैडम, मेरी असहमति है, इसीलिये मैं चुप था।"

"हाय! आप भी मेरे विरुद्ध हो गये!"

"मैडम! खेद है, कि मुझे इस मामले में आपका विरोध करना होगा। जहाँ तक मैडम डि-पांतेई और कॉन्सटेबिल का सम्बन्ध था, मैंने हृदय से आपका साथ दिया, पर मोशिये डि मॉण्टगॉमरी-जैसे पराक्रमी पुरुष के सिर पर मैं एक कोरी दुर्घटना का उत्तरदायित्व डालने को तैयार नहीं हूँ। अगर खुली अदालत में उन पर मामला चलाया गया, तो भी जीत इन्हीं की होगी, और उन पर दोष लगाने वाले व्यक्ति को शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। रही बात बादशाहों की जान पर खतरे की, तो उसके विषय में मुझे यह कहना है कि अगर आप दुनियाँ में इस बात का ढिंढोरा पीट देंगी, कि यह अपराध जान-बूझकर किया गया है, तो और लोगों को भी इस प्रकार का अनुचित लाभ उठाने का अवसर मिल जायगा।"

"यह सब राजनीति की उलझनें हैं।"

"मुझे इनमें सत्यता की गन्ध आती है, और मेरा खयाल है, हमें मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी से उनकी गिरफ्तारी के लिये क्षमा माँगनी चाहिये। यह खुशी की बात है, कि इस गिरफ्तारी का हाल सर्व-साधारण को मालूम न हो सका। हमारा कर्त्तव्य है, कि उन्हें पहले ही की तरह प्रतिष्ठित समझकर उनके घर भेज दिया जाय।"

"और तुम्हारा क्या मत है मेरे पुत्र ?"

मेरी की एक नजर ने बादशाह की सारी हिचक दूर कर दी, और उन्होंने कहा—"मुझे चाचा साहब की सम्मति पसन्द है।"

"तो तुम अपने मृत पिता के प्रति विश्वासघात करते हो ?"

"नहीं मैडम; पिताजी की स्मृति का महान् आदर करता हूँ। घायल होने के बाद सब से पहले शब्द, जो पिताजी के मुँह से निकले थे, यह थे, कि मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी का अनिष्ट न किया जाय। अतएव मैं उनकी आज्ञा का पालन करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।"

"तो तुमने अपनी माता से घृणा करना और गैरों को मुरब्बी बनाना शुरू कर दिया ?"

"माँ, मैं वही काम कर रहा हूँ, जिसकी गवाही मेरा दिल देता है।" फ्रैंकोई ने स्वभाव-विरुद्ध दृढ़ता से कहा।

"तो, यह तुम्हारा अन्तिम निश्चय है ? सावधान ! अगर तुमने अपनी माँ का पहला अनुरोध ही न माना, तो मैं तुमसे भविष्य में कोई सम्पर्क न रक्खूँगी, और तुम्हारे राजकीय मामलात में तुम्हें कोई सम्मति न दूंगी, समझे ? सम्भव हुआ— तो मैं राज-महल छोड़-कर एकान्त-वास कर लूँगी। इस पर अच्छी तरह विचार कर लो।"

"आपके इस निश्चय का हमें खेद है मैडम, लेकिन हम अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयत्न करेंगे।"

"अच्छी बात है," कैथेराइन ने कहा—"रही उसकी बात", जैब्री

की तरफ संकेत करते हुए उसने कहा—"सो उसके लिये मैं दूसरा मौका तलाश करूँगी।" कहते-कहते उसकी आँखों में ऐसी भीषण चमक दिखाई दी, जिससे उसके समस्त आगामी पापों की छाया झलक रही थी।

५५

कैथेराइन के चले जाने पर कमरे में थोड़ी देर सन्नाटा रहा! फ्रैंकोई अपनी निर्भीकता पर आप ही डर रहा था। कैथेराइन की आतंकपूर्ण दृष्टि का स्मरण करके मैरी का हृदय भी आशंका से भर उठा था। ड्यूक को इस बात पर मन-ही मन प्रसन्नता हो रही थी, कि इतनी आसानी से एक भयङ्कर साथिनी से छुटकारा मिल गया।

सबसे पहले जैब्री ने निस्तब्धता भंग की—"महाराज, और महारानी, तथा मोशिये—मैं आपका हृदय से कृतज्ञ हूँ, कि आपने एक अभागे के प्रति ऐसी महान् अनुकम्पा प्रदर्शित की। किन्तु मेरा अब भी यह निवेदन है, कि मुझे अपदार्थ की प्राण-रक्षा के लिये पारिवारिक कलह का सूत्रपात करना अच्छा नहीं। मेरा जीवन अब किसी काम का नहीं है—न आपके लिये, न खुद मेरे लिये।"

"जैब्री," ड्यूक ने कहा—"तुमने पिछले समय में अपूर्व वीरता का परिचय दिया था, और मेरा विश्वास है, समय आने पर अब भी तुम पीछे न रहोगे। तुम एक अत्यन्त मेधावी युवक हो, और देश का शासन चलाने में हमें तुम्हारे-जैसे व्यक्तियों की अत्यन्त आवश्यकता है।"

"और," बादशाह ने कहा—"तुम्हारी पिछली सेवायें मुझे आगे भी तुम पर भरोसा रखने की प्रेरणा करती हैं। फिर अशान्ति हो सकती है, फिर युद्ध छिड़ सकता है—आपकी इस अप्रत्याशित उदारता ने मेरी आत्मा में परिवर्तन उपस्थित कर दिया। महाराज मैडम, मोशिये—मेरा यह जीवन आप लोगों के चरणों में निछावर

है। मेरे स्वभाव में कृतघ्नता नहीं है, और आप लोगों के देव-तुल्य सौजन्य ने मेरे हृदय पर मार्मिक प्रभाव किया है।"

"इस समय सब तरफ शान्ति है," ड्यूक ने कहा—"और उचित यही है, कि कुछ समय तक तुम्हारा नाम दुनियाँ के सामने न लाया जाय। लेकिन इसी वर्ष के अन्त तक मैं महाराज से प्रार्थना करूँगा, कि वे तुम्हें फिर सेना में कप्तान का पद दें।"

"मुझे मान-प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं, मैं तो किसी भी तरह उपयोगी सिद्ध होना चाहता हूँ। आप इसे कृतघ्नता न कहें, लेकिन मैं अपनी मृत्यु के उचित अवसर की प्रतीक्षा में रहूँगा।"

"जैब्री, ऐसी बात न कहो। तुम्हें केवल यही कहना चाहिये, कि जब बादशाह को जरूरत पड़ेगी, तुम उनकी सेवा के लिये प्रस्तुत रहोगे।"

"जब, जहाँ और जिस प्रकार चाहें, महाराज मुझसे सेवाएँ ले सकते हैं।"

"बस, यह काफी है।"

"और मैं," बादशाह ने कहा—"इस वादे के लिये तुम्हारा कृतज्ञ हूँ, और कोशिश करूँगा, कि तुम्हें इसके लिये कभी पछताना न पड़े।"

"हाँ," मैरी ने कहा—"आपकी भक्ति के अनुरूप आप पर हमारा भरोसा रहेगा।"

जैब्री ने महाराज और महारानी का कर-चुम्बन किया, और ड्यूक से हाथ मिलाकर विदा हुआ। उसी रात को जैब्री अपने पिता की समाधि के समीप घुटने टेक कर रोता-रोता कह रहा था—"हाँ, पिताजी, मैंने प्रतिज्ञा की थी, कि आपके हत्यारे से भीषण बदला लूँगा—न-केवल उसी के जीवन-काल में, वरन् उसकी सन्तान के रक्त का भी प्यासा रहूँगा, परन्तु क्या ऐसी प्रतिज्ञा की अपेक्षा अधिक पवित्र कर्त्तव्य नहीं होते? पिताजी, अगर आप जीवित होते, तो मेरा

विश्वास है, आप मुझे अपना क्रोध दूर करने की आज्ञा देते, और कभी विश्वासघात करने की सम्मति न देते।"

❀ ❀ ❀

५६

छः-सात महीने बीत गये। २७ वीं फरवरी का दिन था। उस दिन राज-सभा ब्लाई-नामक नगर में हुई थी। इससे पहले दिन वहाँ एक बड़ा भारी मेला हो चुका था, जिसमें बहुत-से बहादुरी के खेल दिखाए गये थे। बादशाह और महारानी में उसी विषय पर वार्त्तालाप हो रहा था।

"वास्तव में," मेरी ने कहा—"कल के खेलों से मेरा बड़ा मनोरंजन हुआ।"

"हाँ," फ्रैङ्कोई ने जवाब दिया—"खेल तो ख़ासे थे, लेकिन राग-रङ्ग का सामान फीका रहा।"

"वाह! गायन तो बड़े सुन्दर थे।"

"मगर मैं तो सुनते-सुनते ऊब गया। घण्टों अपनी तारीफ़ सुनना मुझे रुचा नहीं।"

"लेकिन कायदा ही ऐसा है।"

"ख़ैर, कुछ भी हो, मुझे गाने-बजाने का शौक़ नहीं है। तुम अवश्य इस कला में निपुण हो।"

"हम औरतों को ऐसी कलाओं में निपुणता प्राप्त करने के अतिरिक्त काम ही क्या है? आप मर्द ठहरे—आपको बहादुरी के फ़न सीखना ही सोहता है।"

"लेकिन मैं देखता हूँ, मेरा दिमाग़ मेरे छोटे भाई चार्ल्स जितना भी चलता हुआ नहीं है।"

"हाँ, उसकी याद खूब दिलाई! क्या कल के नाटक में आपने उसका पार्ट पसन्द किया?"

"मुझे तो बहुत पसन्द आया।"

"ड्यूक-महोदय ने भी उसके पार्ट को पसन्द किया था, और आपकी माँ तो उस समय इस प्रकार मुस्कराई थीं कि मैं डर गई। लेकिन कुछ भी हो, कल वे ख़ास तौर से सुन्दर दिखाई देती थीं।—कपड़े-लत्तों का ढङ्ग भी आकर्षक था।"

"हाँ, अच्छा तो था। मैंने कल ही तुम्हारे लिये वैसी एक पोशाक कुस्तुन्तुनियाँ से मँगवाने का हुक्म दे दिया है।"

"ओह ! धन्यवाद, प्यारे फ्रैङ्कोई, मेरी इस बात से आप यह न समझ लेना, कि मुझे इँग्लैण्ड की रानी एलिज़ाबेथ की तरह नित नई पोशाक बदलने का व्यसन लग गया है। अलबत्ता मेरे मन में यह वासना अवश्य है, कि फ्रान्स में मुझसे अच्छी पोशाक किसी के तन पर न हो।"

"कोई चिन्ता नहीं, तुम देश-भर की सर्व-श्रेष्ठ सुन्दरी रहोगी। कल शाम तो तुम साक्षात् स्वर्ग की देवी मालूम होती थीं। अगर तुम किसी ग़रीब किसान के घर पैदा हुई होतीं, तो भी मैं तुम्हारे सामने इस देश की महान् ऐश्वर्य शालिनी युवतियों को तुच्छ समझता।"

"और मैं भी, चाहे तुम बहुत ही ग़रीब दरबान होते, तुम्हें अपना हृदय सौंप देती।"

इसी समय सहसा दर्वाज़ा खुल गया, और बदहवास सूरत बनाये कार्डिनल डि-लॉरें ने भीतर प्रवेश किया उसके-पीछे-पीछे ही ड्यूक डि-गाईज़ थे, जिनका चेहरा शान्त होने पर भी अत्यन्त गम्भीर था।

क्या हुआ—मोंशिये लि-कार्डिनल!" फ्रैङ्कोई ने चौंककर कहा—क्या यहाँ भी मुझे क्षण-भर की शान्ति नहीं मिल सकती ?"

"महराज, आपका आज्ञोलङ्घन करने के लिये मैं क्षमा चाहता हूँ, लेकिन बात ऐसी आ पड़ी है, कि देर होने से भयानक परिणाम होने की आशङ्का है।"

"क्या हुआ ?"

"महाराज, आपके विरुद्ध एक भीषण षड्यन्त्र का अभी-अभी पता लगा है! यहाँ आपका रहना किसी प्रकार भी निरापद नहीं है, अतएव आपको तुरन्त इस स्थान का परित्याग कर देना चाहिए।"

"षड्यन्त्र! ब्लाई का परित्याग कर दूँ! इसका क्या मतलब?"

"मतलब यह है, महराज, कि दुष्ट लोग आपके ताज और प्राण पर घातक हमला करने की फिक्र में हैं।"

"क्या! वे लोग मेरा प्राण लेना चाहते हैं—इस छोटी उम्र में—बादशाहत पाने के इतना जल्दी बाद ही? मैंने तो जाने या अनजाने में कभी किसी को कष्ट पहुँचाने का इरादा तक नहीं किया। ये लोग कौन हैं मोशिये?"

"और कौन—वही 'सुधारक-दल' के पाजी लोग हैं।"

"फिर वही सुधारक-दल! मोशिये, आप कहीं भ्रम में तो नहीं पड़ गये हैं?"

"खेद की बात है, महाराज, इस बार विश्वस्त समाचार मिले हैं।"

"मैंने ऐसा कौन-सा काम किया है, कि प्रजा के लोग मेरे दुश्मन बन गये?"

"मैंने अभी कहा, कि वे लोग बेहद पाजी—राक्षस हैं।"

"लेकिन फ्रान्सीसी तो हैं। कार्डिनल-महोदय, मैंने आपको अपना प्रतिनिधित्व इसीलिये सौंपा था, कि आप मेरी प्रजा के हृदय में मेरे प्रति आदर और आशीर्वाद का भाव भर दें। परन्तु मैं इसके विरुद्ध नित्य अशान्ति और उपद्रव के समाचार सुनता हूँ।"

"हैं महाराज····!" मैरी ने विरक्त के स्वर में कहा।

"पृथ्वीनाथ, समय की बलिहारी है।—इन दुर्घटनाओं का उत्तरदायित्व मेरे सिर डालना न्याय-सङ्गत नहीं।"

"कुछ भी हो मोशिये, मैं कुछ जाँच करना चाहता हूँ—कि लोग वास्तव में आप से असन्तुष्ट हैं, या मुझसे।"

"महाराज........" मैरी ने फिर वही स्वर में बाधा दी।

बादशाह यह समझकर रुक गये, कि वे शायद हद से आगे बढ़ गये हैं। ड्यूक डि-गाई के मुँह से अब तक कोई शब्द न निकला, वे अब भी नहीं बोले। केवल कार्डिनल ने ही फिर कहा—"श्रीमान्! इस आपत्ति-काल में हमारी नीयत पर सन्देह किया जा रहा है, अतएव हम यही उचित समझते हैं, कि अपने पद का परित्याग कर दें, और शासन-शक्ति योग्य हाथों में सौंप दें। अब आप केवल कृपा करके हमारे उत्तराधिकारियों के नाम विघोषित कर दें।"

मैरी दुःख से विकल होकर दोनों हाथों में मुँह छिपा लिया। फ्रैङ्कोई को भी अपने कथन पर बड़ा परिताप हुआ, और उनकी इच्छा हुई, कि किसी प्रकार वे शब्द वापिस आ जायँ। किन्तु मुँह से कुछ बोलने की उनकी हिम्मत न हुई।

"रही भाई साहब के पद की बात," कार्डिनल ने कहा—"सो आप मोशिये डि-ब्यूसक को चुन सकते हैं!"

"नहीं, वह बड़ा धृष्ट व्यक्ति है।"

"तो मोशिये डि-मॉण्टमॉरेन्सी!"

"नहीं, वह भी बड़ा अयोग्य व्यक्ति है।—परन्तु आप मेरे निजी रिश्तेदारों को क्यों भूले जा रहे हैं—जैसे प्रिन्स डि-कॉण्डे?"

"श्रीमान्! मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है, कि आप के विरुद्ध षड्यन्त्र करनेवालों में प्रिन्स डि-कॉण्डे एक नायक की हैसियत रखते हैं।"

"क्या यह सम्भव है?"

"जी, यह निश्चित् है।"

"तब तो षड्यन्त्र बड़ा भयानक है!"

" श्रीमान् ! वह तो एक भीषण विप्लव ही है। इसीलिये मेरी प्रार्थना है, कि आप शीघ्र ही हमारे उत्तराधिकारियों के नाम घोषित करके स्थिति सम्हालिये; क्योंकि कुछ ही दिन बाद प्रॉटेस्टेण्ट-दल के लोग इस शहर के भीतर घुसकर ग़दर मचा देंगे।"

" क्या !" मैरी ने भय-विह्वल हो कर कहा।

" क्या विद्रोहियों की संख्या अधिक है ?" बादशाह ने पूछा।

" सुनते हैं, क़रीब दो हजार आदमी हैं।"

" और आप इस विपत्ति में मुझे छोड़कर जायेंगे ?"

" मैंने समझा—महाराज की यही इच्छा है।"

" नहीं, ऐसा ख़याल न करो, और बताओ—क्या करना चाहिये।"

" श्रीमान् ! यदि आपको हम पर पूर्ण विश्वास है..."

" पूरा विश्वास है मोशिये।"

" बहुत समय ख़राब हो चुका," ड्यूक ने कहा। यह शब्द उनके मुँह से पहले-पहल निकले, किन्तु अब वह आगे बढ़कर बोले—" महाराज, बात यह है, कि दो हज़ार षड्यन्त्रकारियों का दल-बादल बड़े प्रबल सरदारों के नेतृत्व में उठ खड़ा हुआ है, और उन्होंने आपको इस स्थान से उड़ा ले जाने का निश्चय किया है।"

फ्रैङ्कोई ने आश्चर्य्य और क्रोध का भाव प्रकट किया।

" बादशाह को ले जाने का !" मैरी ने कहा।

" और साथ में आपको भी मैडम ! लेकिन आप निश्चिन्त रहें, हम पूर्णतया सतर्क हैं।"

" लेकिन आप करेंगे क्या ?"

" हमें कोई एक घण्टा पहले इसका पता लगा है। लेकिन श्रीमान् ! मेरी प्रार्थना है, कि पहले आप अपनी रक्षा का प्रबन्ध करें। आप तुरन्त इस शहर को छोड़ दें; क्यों कि यह विशेष

सुरक्षित नहीं है। मेरी राय में आप एम्बोई चले जायँ, जहाँ बड़ी मज़बूत चारदीवारी है।"

"क्या !" मैरी ने कहा—"हमें उस सुनसान दुर्ग में बन्द रहना पड़ेगा ?"

"मैडम, मजबूर हो कर ऐसा करना ही पड़ेगा।"

"तो क्या हम विप्लवकारियों से डरकर भाग जायँ ?"

"श्रीमान् ! ऐसे दुश्मन से बचने का प्रयत्न करना भागना नहीं है, जिसने नियमानुसार युद्ध की घोषणा नहीं की है। अभी तक तो हमें इस सारे षडयन्त्र से अनभिज्ञ ही समझा जा रहा है। मेरा तो केवल यही विश्वास है, कि वे एम्बोई तक आपका पीछा न छोड़ेंगे।"

"यह क्यों ?"

"क्योंकि उसी अवसर पर हमें अपने कर्तब दिखाने का मौका मिलेगा, और विद्रोहियों का सर्वनाश हो जायगा !"

"अफसोस ! नतीजा वही घरू-युद्ध हुआ।"

"लेकिन इसके सिवा उपाय ही क्या है। मैंने तो यही उपाय स्थिर किया है। आपके इस स्थान को छोड़ देने के अतिरिक्त हम ऐसी कोई खबर उन लोगों तक न पहुँचने देंगे, जिससे उन्हें यह सन्देह हो सके, कि हमें उनके इरादे पता का चल गया है। जब वे हम पर अचानक धावा बोलने के इरादे से बढ़ेंगे, तो उनकी जगह हम उन्हें पकड़कर चकित कर देंगे। इसलिये, मैडम, कृपा करके व्यग्र न हूजिये। मैं प्रयत्न करूँगा, कि आपके मनोरञ्जन की आवश्यक सामग्री वहाँ पहुँच जाय, परन्तु गुप्त रूप से।"

हमारे प्रस्थान का कौन-सा समय स्थिर हुआ है ? बादशाह ने हताश-से स्वर में पूछा।

"तीन बजे। मैं तब तक सब तैयारियाँ कर लूँगा।"

"अच्छी बात है, हम तैयार रहेंगे।"

"महाराज के विश्वास के लिये धन्यवाद ! अब आप हमें आज्ञा द, क्योंकि अभी बहुत-कुछ करना शेष है।"

उन्होंने नम्रतापूर्वक सिर झुकाकर प्रस्थान किया। तब बादशाह और रानी ने दुःख-पूर्ण नेत्रों से एक-दूसरे की ओर ताका। इसी समय दासी ने प्रवेश किया, और पूछा—"क्यों मैडम, क्या यह सच है, कि हमें तुरन्त प्रस्थान करना होगा ?"

"हाँ, सच है।"

"लेकिन मैडम, एम्बोई-दुर्ग खँड़हर की हालत में है।"

"तो सजावट का सामान यहाँ से ले चलेंगे। लो, तुरन्त आवश्यक वस्तुओं की सूची बना डालो।"

दासी के जाने के बाद मैरी बादशाह से बोली—"महाराज, आप इतने हताश न हों। एम्बोई में चलकर हम एक मेले की योजना करेंगे। विद्रोहियों से भय करने की जरूरत नहीं है। सब अच्छा-ही होगा।"

५७

इसके बाद के कुछ महीनों में बादशाह का स्वास्थ्य दिन-दिन गिरने लगा। ड्यूक डि-गाईस, कार्डिनल डि-लॉरें के सम्मिलित प्रयत्नों से विद्रोह दबा दिया गया, सैकड़ों आदमियों को प्राण-दण्ड दिया गया, और कुछ दिन तक समस्त देश में भीषण रक्त-पात और अशान्ति का राज्य रहा।

नवम्बर, सन् १५६० में बादशाह की हालत इतनी खराब हो गई, कि उन्हें बिस्तर पकड़ लेना पड़ा। मैरी के ऊपर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा, रात-दिन बादशाह के पलँग के पास बैठे रोते-रोते ही बीतता था। कैथेराइन डि-मेडिसिस और कार्डिनल डि-लॉरें भी वहीं मौजूद रहते थे। पिछले सात महीनों में कैथेराइन चुप नहीं बैठी थी। गाईस बन्धुओं के प्रति उसकी द्वेष-भावना अत्यन्त प्रबल हो उठी थी, और उसने प्रिन्स डि-कॉण्डे, अण्टोइन डि-बर्बन तथा

कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी के साथ मिलकर कुचक्र रचना आरम्भ किया। इन लोगों ने कैथेराइन के सहयोग से उत्साहित होकर देश के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में षड्यन्त्र और विद्रोह की आग फिर सुलगानी शुरू की, लेकिन ऐन वक़्त पर सब पता चल जाने के कारण गाईं बन्धुओं ने प्रिन्स डि-कॉण्डे और अण्टोइन डि-बर्बन को क़ैदख़ाने में डाल दिया।

इसी समय बादशाह सख्त बीमार हो गये। अब प्रतीक्षा इसी बात की थी, कि वह कागजात पर दस्तखत कर दें, तो दोनों अपराधियों को प्राण-दण्ड दे दिया जाय, और तब फ्रान्स में गाईं-परिवार का एक-छत्र राज्य हो जाता। बादशाह की दशा देखकर उनके जीने की आशा बहुत ही कम रह गई थी, लेकिन अगर वे बिना कागजात पर हस्ताक्षर किये मर जाते, तो उनकी स्थिति बिल्कुल भिन्न हो जाती। इस प्रकार लॉरें और कैथेराइन बादशाह के समीप बैठे हुए, उनके जीवन या मृत्यु पर नहीं, अपने-अपने दल की हार-जीत पर विचार कर रहे थे।

कार्डिनल ने कुछ बोलना शुरू किया-ही था, कि मैरी ने गिड़-गिड़ाकर कहा—"चचाजान, धीमे—ऐसा न हो, महाराज की नींद टूट जाय ; यह देखो, उन्हें जगा ही दिया।"

"मैरी—तुम कहाँ हो ?" बादशाह ने अत्यन्त क्षीण स्वर में कहा।

"यहीं—तुम्हारे पास ही हूँ, फ्रैंकोई।"

"उफ़! बड़ा कष्ट है—मस्तक में आग-सी दहक रही है। सो जाने पर भी पीड़ा कम नहीं होती। हाय, मैं मरा!"

"प्यारे फ्रैंकोई, ऐसी बात मत बोलो।"

"मैं धर्म-गुरु* से बात करना चाहता हूँ।"

"वह अभी यहाँ आया चाहता है।"

---

*Confessor.

"क्या मेरे लिये प्रार्थना हो चुकी ?"

"मैं सुबह से अब तक वही कर रही थी।"

"ओह, प्यारी मेरी !"

"आपकी माँ और कार्डिनल-महोदय यहाँ मौजूद हैं—क्या आप उनसे कुछ कहना चाहते हैं ?"

"नहीं, नहीं—प्यारी मेरी, मैं केवल तुमसे बोलना चाहता हूँ।—मुझे ज़रा सरका तो दो, जिससे मैं भली प्रकार तुम्हारा चेहरा देख सकूँ।"

"प्यारे फ्रैङ्कोइ, हिम्मत न हारो। भगवान् बड़ा दयालु है। मैं बराबर तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये उससे प्रार्थना किया करती हूँ।"

"परन्तु मैं बड़े कष्ट में हूँ। ओह ! मुझे तो दिखाई भी नहीं देता। ज़रा अपना हाथ तो देना।"

"मेरा सहारा ले लीजिये।"

"मेरी, मेरी आत्मा भगवान की है—और हृदय तुम्हारा। हाय ! सत्रह वर्ष की कच्ची उम्र में मरना पड़ रहा है। रोओ मत मेरी—हम दूसरी दुनियाँ में मिलेंगे। इस दुनियाँ में तुम्हारा विछोह होने का ही दुःख है—अगर मैं अपने साथ ही तुम्हें ले जा सकता, तो मुझे मरने का ज़रा भी खेद न होता। पर तुम—मेरे बिना तुम कैसे रहोगी ?"

"नहीं प्यारे, तुम मरोगे नहीं—मुझे पूरी आशा है। अभी एक ऐसी आशा है, जिसके आधार पर तुम्हारे अच्छे हो जाने का विश्वास है।"

"वह क्या ?" कैथेराइन ने चकित होकर आगे सरकते हुए पूछा।

"मेरा विश्वास है, कि हमारे सभी हकीम-डॉक्टर गधे हैं, इसलिये मैंने अपनी समझ के एक डॉक्टर को बुलवाया है—वही, जिसने कैले में चचा साहब की जान बचाई थी।"

"मोशिये अम्ब्रोई पारे ?"

"हाँ, वही; सब लोग कहते थे, कि उसके हाथ में रोगी की जान सौंपनी उचित नहीं —क्योंकि वह सुधारक-दल का आदमी समझा जाता था।"

"सुधारक दल का आदमी तो उसे ठीक ही समझा जाता है।" कैथेराइन ने कहा।

"किन्तु मुझे उस पर पूर्ण विश्वास है, और मैंने अपना एक सच्चा शुभैषी उसे बुलाने के लिये भेजा है।"

"यह शुभैषी कौन ?"

"मोशिए डि-मॉण्टगॉमरी, मैडम !"

५८

उसने मुश्किल से वाक्य समाप्त किया होगा, कि दासी ने कमरे में प्रवेश किया, और मोशिए डि-मॉण्टगॉमरी के आने की सूचना दी। मैरी ने उसी दम उसे लाने की अनुमति दे दी।

"क्षण भर ठहरो मैडम !" कैथेराइन ने बाधा दी—"इस व्यक्ति के आने के पूर्व मुझे इस स्थान का परित्याग कर देना चाहिये। यदि उस व्यक्ति के हाथ में बादशाह की जान सौंपना चाहती हो, जो उसके पिता का हत्याकारी है, तो मेरा यहाँ ठहरना बेकार है, और मैं तुम्हारे कार्य के प्रतिवाद स्वरूप यहाँ से चली जाती हूँ।" कह कर वह मरते हुए बेटे पर एक नज़र फेंके बिना ही कमरे से बाहर हो गई। लेकिन अधिक दूर न जाकर वह केवल पास के कमरे में छिप गई, और इस अभिप्राय से किवाड़ खुला छोड़ गई, कि इस कमरे की सारी बातें उसके कमरे तक पहुँच सकें।

"कहिये ?" जब्री के प्रवेश करते ही मैरी ने पूछा।

"मैडम, वे आ पहुँचे हैं।"

"मेरे सच्चे सहायक, आपका धन्यवाद है।"

मोशिये पारे के भीतर घुसते ही मैरी दौड़कर उसके पास पहुँची,

और यह कहती हुई उसे बादशाह के पलँग के निकट लाई—"ओशिये, तुरन्त आने के लिये मैं आपको धन्यवाद देती हूँ, मुझे इस समय आपकी योग्यता का ही भरोसा है।"

फ्रैंक्वाई कष्ट और वेदना से व्याकुल, चारपाई पर शिथिल पड़े थे। उनमें कराहने तक की शक्ति नहीं थी। डॉक्टर पारे ने ध्यान-पूर्वक उनके ज़र्द चेहरे का निरीक्षण किया, और तब बहुत धीरे से उनके दाहिने कान के उस भाग का स्पर्श किया, जहाँ असली दर्द था।

"ओह, मरा !" बादशाह ने अस्फुट स्वर में कहा।

डॉक्टर पारे ने रोशनी पास लाने को कहा। मैरी स्वयं शमादान उठाकर पास ले आई, और डॉक्टर व अत्यन्त सतकतापूर्वक उस स्थान का निरीक्षण करने लगा, जहाँ दर्द था। तब गम्भीर और चिन्ताजनक मुद्रा बनाकर वह पीछे हट गया। मैरी ने काँपते हुए उसकी भाव-भंगी का निरीक्षण किया—मुँह से उसके एक शब्द भी नहीं निकल सका।

आख़िर, इस निस्तब्धता से ऊबकर वह व्यग्र स्वर में बोली—"क्यों—क्या कोई आशा नहीं है ?"

"सिर्फ़ एक आशा है—मैडम।"

"कोई है तो सही ?"

"हाँ है, और मुझे सफल होने की बहुत आशा थी, अगर....."

"अगर क्या ?"

"अगर रोगी बादशाह न होते ?"

"ओह ! आप अति साधारण व्यक्ति समझकर उनका इलाज कीजिये।"

"लेकिन अगर मैं फ़ेल हो गया—क्योंकि जीवन और मृत्यु केवल ईश्वर के हाथ में है—तो क्या दुनियाँ मुझे दोष नहीं देगी ? मुझे सुधारक-दल का आदमी समझा जाता है, लोग सन्देह कर सकते

हैं, कि मैंने बादशाह की हत्या कर डाली। इस भीषण उत्तरदायित्व का भय मेरे हाथ-पैर हिला देगा—जबकि मुझे अत्यन्त दृढ़ होना चाहिये !"

"सुनिये, अगर बादशाह बच गये, तो मैं जीवन-भर आपकी कृतज्ञ रहूँगी। अगर नहीं बचे, तो अपने अन्तिम साँस तक आपकी मान रक्षा का प्रयत्न करूँगी। इसलिये मैं प्रार्थना करती हूँ, आप इलाज कीजिये आप अभी कह रहे थे, कि इनकी प्राण-रक्षा का केवल एक ही उपाय रह गया है, तो क्या उस उपाय का प्रयोग न करना पाप न होगा ?"

"आप ठीक कहती हैं मैडम, और आपकी स्पष्ट आज्ञा पाने पर मैं अपना कार्य आरम्भ करूँगा; क्योंकि मेरे इलाज का ढंग बड़ा ही कठोर और अस्वाभाविक-सा है।"

"सचमुच !" मैरी ने काँपते हुए कहा "क्या और कोई ढंग नहीं है ?"

"न, कोई नहीं; और इसमें देर बिल्कुल नहीं होनी चाहिए; क्योंकि चौबीस घण्टे बाद वह उपाय भी बेकार हो जायगा। बादशाह के मस्तिष्क में एक विशेष प्रकार का विष इकट्ठा हो गया है, और अगर फ़ौरन् ऑपरेशन करके उसे निकाल न दिया गया, तो वह सारे दिमाग़ में फैल जायगा, और उनकी मृत्यु हो जायगी।"

"तो क्या आप तुरन्त ही ऑपरेशन करना चाहते हैं ?" कार्डिनल ने पूछा।

"अपने सिर पर सारी ज़िम्मेदारी लेते हुए मुझे भय होता है।"

"ओह ! अभी तक आपको सन्देह है ? देखिये........"

"ऑपरेशन दिन की रोशनी में ठीक होगा। मैं कल सुबह ठीक नौ बजे यहाँ पहुँच जाऊँगा। आप यहीं रहेंगी मैडम, और आप भी कार्डिनल महोदय, या ड्यूक-महोदय—या जो कोई बादशाह के सब से बड़े हितैषी हों, यहाँ मौजूद रहेंगे। अगर सम्भव हो, तो

केवल किसी हकीम-डॉक्टर को यहाँ न रहने दिया जाय। तब मैं अपना विचार प्रकट करूँगा, और आपकी आज्ञा हुई, तो कार्य्य आरम्भ करूँगा।"

"और कल तक ?"

"यह औषधि उन्हें खिला दीजिये। इसके बाद वह गहरी नींद में सो जायेंगे। इसका ख़याल रहे, कि उनकी नींद में बाधा न पड़ने पाये।"

"मैं स्वयं रात भर यहीं रहकर देख-रेख करूँगी।"

"ठीक है; मैं अब आपसे विदा लेता हूँ।"

"मोशिये, मैं आपकी कृतज्ञ हूँ—और आपकी भी, मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी,—आप भी कल ऑपरेशन के समय आयेंगे न ?"

"अवश्य, मैडम।"

"और मैं भी रहूँगी," कैथेराइन ने मन-ही-मन कहा—"क्योंकि यह मूर्ख डॉक्टर अवश्य बादशाह की रक्षा कर लेगा, जिसके परिणाम स्वरूप मेरे साथ-ही-साथ उसके दल का भी मूलोच्छेद हो जायेगा।"

५९

मैरी ने बादशाह को नींद लाने की औषधि खिला दी, और उन्हें गम्भीर निद्रा में पड़ा हुआ देखकर कहा—"अच्छा चचा साहब, मैं तो रात-भर यहीं रहूँगी ही; अब आपको कष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है।"

"जी नहीं, भाई साहब किसी आवश्यक कार्य में फँसे रहने के कारण अभी तक नहीं आ सके हैं। उन्होंने कहा था, कि बादशाह का हाल-चाल पूछने आयेंगे, और मैंने उनसे यहीं भेंट करने का वादा किया था। यह लीजिये, शायद उन्हीं के आने की आवाज है।"

"ओह! उनसे कहिये, आवाज़ न करें।" कहती-कहती मेरी कमरे से बाहर की तरफ़ दौड़ी।

ज़र्द चेहरा लिये, ड्यूक ने व्यग्र भाव से प्रवेश किया। बादशाह का हाल-चाल पूछने का भी होश न रहा, और केवल मेरी का अभिवादन करके कार्डिनल को अलग बुला कर कहा—"भयानक समाचार है।"

"क्या?"

"अभी-अभी ख़बर मिली है, कि कॉन्सटेबिल डि मॉण्टमोरेन्सी १५०० आदमियों के साथ चैन्तिली से रवाना हो गया है और कल सुबह तक ऑर्लियन्स पहुँच जायगा।"

यह तो वास्तव में बड़ी बुरी ख़बर है। मालूम होता है, वह अपने भतीजे को छुड़ाने आ रहा है?"

"और एक मुश्किल यह है, कि ऑर्लियन्स निवासियों के विद्रोही हो जाने की पूरी आशङ्का है। बादशाह कैसे हैं?"

अच्छे नहीं हैं; लेकिन डॉक्टर अम्ब्रोइ पारे ने वचन दिया है, कि असाधारण ऑपरेशन के द्वारा वे उन्हें अच्छा कर देंगे। कल नौ बजे वह आयेंगे, आपको भी यहीं रहना चाहिये।"

"अवश्य; क्योंकि यही हमारी अन्तिम आशा होगी। अहा! क्या ही अच्छा हो, अगर कॉन्सटेबिल के आगमन पर उसके भतीजे, प्रिन्स डिकॉण्डे का कटा हुआ सिर उसे भेंट किया जाय।"

"तो बादशाह के हस्ताक्षर बिना तो कुछ नहीं हो सकता।"

"उनकी भी ऐसी विशेष आवश्यकता नहीं है।"

"ख़ैर, तो यह भार आप मुझ पर छोड़ दें। इस समय दो बज चुके हैं और आपको आराम की ज़रूरत है। हमारे भविष्य की चिन्ता आप मुझ पर छोड़ दीजिए।"

"तुम्हारा क्या करने का इरादा है? बिना मुझ से सलाह लिये, कुछ गड़बड़ न कर बैठना।"

आप निश्चिन्त रहें। मैं जिस फ़िक्र में हूँ, अगर उसमें सफल हो गया तो सुबह गजरदम आप से सलाह करने आऊँगा।"

अच्छा, तो मैं अब चलता हूँ—क्योंकि वास्तव में मैं बहुत थक गया हूँ।"

उन्होंने मैरी से कुछ सहानुभूति सूचक शब्द कहे, और विदा हुए।

कार्डिनल एक मेज़ के आगे बैठकर अदालत के उस फैसले की एक नक़ल तैयार करने लगे, जिसमें प्रिंस डिकॉण्डे और उनके साथियों को प्राण-दण्ड दिया गया था, और तब खड़े हो गये।

मैरी ने उनकी तरफ बढ़कर कहा—"क्यों—आप क्या करना चाहते हैं?"

"मैडम, यह अत्यन्त आवश्यक है, कि बादशाह इस काग़ज़ पर हस्ताक्षर कर दें।"

"इस समय तो सबसे आवश्यक बादशाह का सोना है।"

"वह सिर्फ अपना नाम लिख दें—और कुछ मैं नहीं चाहता।"

"उन्हें जगाने की अनुमति मैं आपको नहीं दे सकती;—और न वह क़लम पकड़ने के लायक़ हैं हीं।"

"मैं उनकी सहायता करूँगा।"

"मैं कह चुकी, कि मैं इसकी अनुमति नहीं दे सकती।"

कार्डिनल क्षण-भर के लिये थम गये, फिर समझाते हुए कहने लगे—"सुनो, महारानी—प्यारी बेटी, मैं आपको असल बात बताता हूँ। आप इस बात का विश्वास रक्खें, कि मैं बादशाह पर अपार श्रद्धा रखता हूँ। अगर हालात ऐसे न आ पड़ते, तो मैं कदापि उनकी नींद में बाधा न डालता। इस समय हमारा और आपका भविष्य ख़तरे में पड़ा हुआ है। अगर दिन निकलने से पहले बादशाह ने काग़ज़ पर हस्ताक्षर न कर दिए, तो समझ लेना—हम तबाह हो गये।"

"कुछ भी हो—मेरे पास इसका कोई उपाय नहीं।"

"लेकिन, समझो—हमारे पतन और तुम्हारे सर्वनाश का यही कारण होगा—बेटी।"

"मेरे मन में कोई उच्चाभिलाषा नहीं है—मेरी एकमात्र अभिलाषा है, बादशाह की रक्षा करना। मुझे उनकी नींद अक्षुण्ण रखनी है, और मैं आपको ज़रा-सा भी शोर करने का निषेध करती हूँ। आप लोगों के राजकीय षडयन्त्रों की चिन्ता न करके मैं अन्तिम क्षण तक उनकी रक्षा का प्रयत्न करूँगी कल के ऑपरेशन को सहन करने के लिये इस समय बादशाह को गम्भीर निद्रा में मग्न रहना अनिवार्य है, और मैं कहती हूँ—कोई इसमें बाधक नहीं बन सकता।"

"लेकिन जब इतना आवश्यक और गम्भीर काम आ पड़े"

"चाहे कुछ भी हो, बादशाह को जगाने का अधिकार किसी को नहीं है।"

"ओह! यह काम तो होना ही चाहिये। शासन कार्य में भावुकता से काम नहीं चलता। बादशाह के हस्ताक्षर आवश्यक हैं, और......" कहते-कहते वह आगे बढ़े।

लेकिन मैरी उसके सामने तनकर खड़ी हो गई, और क्षण-भर तक दोनों तनी दृष्टि से एक-दूसरे को ताकते रहे।

कार्डिनल ने कहा—"हट जाओ—मैं बढ़ूँगा।"

"क्या मेरे ऊपर हाथ डालेंगे?"

"बेटी!"

"नहीं, रानी!" यह शब्द इतने दृढ़ स्वर में कहे गये, कि कार्डिनल सहमकर पीछे हट गये, वह कहती रही—"मैं तुम्हारी रानी हूँ, और अगर तुम बादशाह के पास गये, तो मैं इसी वक्त पहरेदारों को बुलाकर तुम्हें गिरफ़्तार करा दूँगी—चाहे तुम मेरे चचा हो, अथवा मन्त्री या सेनापति।"

"ओह! कैसी परिस्थिति है।"

मोशिये, यह सब आपके किये का फल है!" मैरी ने इतने

प्रभावशाली स्वर में कहा, कि यह फ़ौलादी आदमी भी फीका पड़ गया, और बोला—"अच्छी बात है, मैं उनके जागने तक प्रतीक्षा करता हूँ।"

कार्डिनल हारकर पीछे हट गये, और मैरी बादशाह के निकट जाकर बैठ गई। मिनट-मिनट करके रात बीत गई, और बादशाह नींद में अचेत पड़े रहे। बहुत दिन से ऐसी गहरी नींद उन्हें नहीं आई थी। एकाध बार अस्फुट ध्वनी करने के अतिरिक्त रात-भर वे हिले तक नहीं। कार्डिनल अधीरतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे क्रमशः कमरे की रोशनी फीकी पड़ने लगी! और प्रातः कालीन प्रकाश-रश्मियाँ भीतर आने लगीं। आखिर जब आठ बजे, तो बादशाह ने आँखें खोलीं, और कहा—"मैरी, तुम कहाँ हो ?"

"यहीं हूँ।" मैरी ने उत्फुल्ल होकर जवाब दिया।

हाथ में काग़ज लिये कार्डिनल उधर झपटे। अब भी समय था—षड्यन्त्र तुरन्त खड़ा हो सकता था—पर, ठीक उसी समय कैथेराइन ने प्रवेश किया। "बस, सब आशायें समाप्त हो गईं।" कार्डिनल ने मन-ही-मन कहा—"भाग्य हमारे प्रतिकूल है। अब डॉक्टर पारे ने बादशाह की प्राण-रक्षा नहीं की, तो हमारे सर्वनाश में कोई कसर नहीं।"

६०

सारी रात कैथेराइन चुप नहीं बैठी रही थी। उसने अपने अनेक पक्षपातियों और बदमाशों के समस्त डॉक्टरों को सुबह मरीज़ के कमरे में उपस्थित होने का संदेसा कहला भेजा था।

वह स्वयं एक घण्टा पहले ही वहाँ आ पहुँची, और ऐन बादशाह के निकट बैठ गई। तनिक देर बाद ही ड्यूक ड्गिाई भी आ पहुँचे।

"कुछ नहीं हो सका ?" अलग ले जाकर उन्होंने कार्डिनल से पूछा।

"अफ़सोस ! मैं सफल न हो सका। मॉण्टमॉरेन्सी की ओर कोई ख़बर मिली है ?"

"नहीं; वह इस समय शायद शहर-पनाह के फाटक पर होगा। अगर डॉक्टर पारे असफल रहे, तो हमारा भविष्य बिल्कुल नष्ट हुआ ही समझो।"

बादशाही हकीम-डाक्टरों ने क्रमशः पहुँचना शुरू किया, और सब बादशाह के बिछौने के साथ इकट्ठा हो गये। रोगी की कराहट फिर शुरू हो गई थी। उन लोगों ने आपस में परामर्श शुरू किया। किसी ने पुल्टिस बाँधने की राय दी, कुछ ने कान में इन्जेक्शन लगाने का प्रस्ताव किया, और ठीक उसी समय डॉक्टर पारे ने प्रवेश किया।

अब डॉक्टर पारे फ्रान्स के प्रसिद्ध चिकित्सकों में समझा जाने लगा था, इसीलिये शाही डॉक्टरों ने अपना-अपना मत उसके सामने प्रकट किया।

"आपका इलाज अपर्याप्त है," सुनकर उसने राय दी—"और समय इतना कम है, कि उसका प्रयोग करते-करते ही बादशाह का दिमाग़ ज़हर से भर जायगा।"

डॉक्टर चैपलिन ने कहा—"तो क्या आपके पास कोई बेहतर इलाज है ?"

"हाँ।"

"क्या ?"

"हमें बादशाह को 'डसना' * होगा।"

"बादशाह को 'डसना' होगा !" डॉक्टरों ने भय-विह्वल स्वर में चीख़कर कहा।

"यह किसी तरह का ऑपरेशन है क्या ?" ड्यूक ने पूछा।

"जी हाँ, अभी लोग उससे अधिक परिचित नहीं हैं;" पारे ने

---

* Trepan

कहा—"मैंने एक प्रकार के यन्त्र का आविष्कार किया है, जिसकी सहायता से बादशाह के सिर में शिलिंग-बराबर छेद किया जायगा। इसी का नाम मैंने 'डसना' रक्खा है।"

"हे भगवान् !" कैथेराइन ने चीख़कर कहा—"बादशाह के सिर पर तुम्हारा साहस ...."

"जी हाँ।"

"लेकिन यह तो साफ़ हत्या होगी।"

"मैडम, युद्ध क्षेत्र में हजारों मनुष्यों के सिर भीषण प्रहारों से कुचले जाते हैं, लेकिन हम उन्हें अच्छा कर देते हैं।"

"ख़ैर," कार्डिनल ने कहा—"क्या आप बादशाह के प्राणों का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं ?"

"मोशियै, मनुष्य के जीवन और मृत्यु का अधिकार केवल ईश्वर के हाथ में है। मैं तो केवल यही कह सकता हूँ, कि बादशाह की रक्षा करने का एक-मात्र यही मौका रह गया है।"

"मोशिये, क्या आप पहले भी इस ऑपरेशन में सफल हुए हैं ?"

"जी हाँ, कई दफ़ा।"

"तो मुझे आपत्ति नहीं, मेरी तरफ़ से अनुमति है।"

"और मेरी तरफ़ से भी," मैरी ने कहा।

"पर मेरी तरफ़ से नहीं," कैथेराइन ने बाधा दी।

"यह जानकर भी नहीं, कि यह आख़िरी मौक़ा है ?"

"यह तो आप ही का कथन है न, और डॉक्टर तो ऐसा नहीं कहते।"

"हर्गिज़ नहीं," डॉक्टर चैपलिन ने कहा—"हम इस धारणा का विरोध करते हैं।"

"देखा। यह लोग क्या कह रहे हैं ?"

ड्यूक डिगाईज़, जो बेहद व्यग्र हो रहे थे, कैथेराइन को अलग ले जाकर बोले—"मैडम, मैं सब समझता हूँ; आप चाहती हैं बाद-

शाह मर जायें, और प्रिन्स डि-कॉण्डे की रक्षा हो जाय। आप बर्बन और मॉण्टमॉरेन्सी के साथ मिलकर षड्यन्त्र रच रही हैं। सावधान !—मुझे सारी बात का ठीक-ठीक पता है।"

लेकिन कैथेराइन आसानी से दबनेवाली नहीं थी। वह दौड़कर रोगी के पलँग के पास पहुँची, और बोली—"मैं अपने पुत्र की जान विद्रोही-दल के एक व्यक्ति के हाथ में नहीं सौंप सकती।"

ड्यूक महोदय ने परेशान होकर कहा—"दोस्तो, बादशाह की प्राण-रक्षा का केवल एक ही उपाय रह गया है, और डॉक्टर पारे की निपुणता और विश्वस्तता का जवाबदेह मैं हूँ।"

डॉक्टर पारे ने कहा—"और बादशाह की प्राण-रक्षा का उत्तरदायित्व मेरे सिर पर है। अगर मैं असफल भी हुआ, तो अपनी जान खोने का अफ़सोस न होगा। पर समय बहुत थोड़ा रह गया है—ज़रा बादशाह का चेहरा तो देखिये।"

सचमुच फ्रैङ्कोई निश्चल और अचेत होकर पड़े थे। ऐसा जान पड़ता था, कि अपने आस पास का उन्हें तनिक होश नहीं है।

मैरी ने चिल्लाकर कहा—"ओह ! ईश्वर के लिये जल्दी करो, बस—उनकी जान बचाने का प्रयत्न करो—तुम्हारी जान बचाना मेरे ज़िम्मे रहा !"

"अच्छी बात है," डॉक्टर पारे ने कहा—"सज्जनो, मैं शुरू में कहता हूँ, आप लोग ज़रा हट जायें; क्योंकि मुझे शान्ति और एकान्त की आवश्यकता है।" कहकर उसने औज़ार निकाले, और रोगी के शरीर की तरफ़ झुका ही था, कि कमरे के बाहर बड़ा कोलाहल सुनाई पड़ा, और दूसरे ही क्षण सैकड़ों आदमियों की भीड़ के आगे-आगे कॉन्स्टेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी ने प्रवेश किया।

"मैं ठीक समय पर पहुँच गया !" आते ही उसने कहा, और तब सब लोग रोगी के बिस्तर की तरफ़ दौड़े।

अब पूरी शक्ति लगाकर भी कमरे में शान्ति और एकान्त

स्थापित कर सकना असम्भव था।

"मैं चला !" पारे ने दुःखपूर्वक कहा।

"मोशिये, मैं रानी की हैसियत से, आपको ऑपरेशन करने की आज्ञा देती हूँ," मैरी ने कहा।

"ओह मैडम! मैंने पहले ही कहा था, कि मुझे एकान्त की आवश्यकता पड़ेगी, और यहाँ देखिये—क्या हालत है! हाँ, मोशिये चैपलिन, अब आप अपने इञ्जेक्शन का प्रयोग कर सकते हैं!"

"अभी लीजिये," कहकर डॉक्टर चैपलिन ने और डॉक्टरों की सहायता से किसी मिश्रण का इञ्जेक्शन बादशाह के कान में कर दिया। मैरी काँपती हुई खड़ी रह गई।

कुछ ही क्षण पश्चात् फ्रैंकोइस सहसा पलँग पर उठकर बैठ गये, और आँखें खोलकर कुछ बोलने का प्रयत्न किया—परन्तु पलक-झपकते ही उठे गिर पड़े, और दम तोड़ दिया।

"हाय! तुमने अपने पुत्र की जान ले ली!" यह चिल्लाती हुई मैरी कैथेराइन की ओर दौड़ी।

कैथेराइन ने ऐसी घृणापूर्ण दृष्टि से मैरी की तरफ़ देखा, जिसे वह अब तक छिपाये हुए थी। मुँह से उसने कहा—"देखो, अब तुम्हें इस प्रकार बात करने का कोई अधिकार नहीं है; क्योंकि अब तुम महारानी नहीं रहीं। हाँ, स्कॉटलैण्ड की रानी ज़रूर हो—और वहाँ हम तुम्हें शीघ्र ही भेजने की व्यवस्था कर देंगे।"

मैरी स्टुअर्ट अधिक न सह सकी, और अचेतप्राय होकर अपने स्वामी के बिछौने के समीप गिर पड़ी।

"मोशिये," कैथेराइन ने ड्यूक से कहा—"देश का शासन अब तक आपके हाथ में था, अब उस पर हमारा अधिकार है। मैंने स्वयं मोशिये डि-बर्बन को राज्य का सेनापति बनाया है, और नियमानुसार आप इस क्षण तक देश के शासक हैं—इसलिये आप

बादशाह की मृत्यु-सूचना देकर अपना कर्त्तव्य-पालन करें।" फिर दासी से कहा—"ड्यूक डि-आर्लियन्स को भीतर ले जाओ।"

ड्यूक-महोदय ने भारी आवाज में ज़ोर से कहा—"बादशाह-सलामत का स्वर्गवास हो गया।"

समीप खड़े हुए राज-दरबारी लोगों ने भी चिल्लाकर कहा—"बादशाह सलामत का स्वर्गवास हो गया—उनकी आत्मा की शान्ति-कामना करो।"

साथ ही सब लोग एक साथ बोल उठे—भगवान् भला करें।"

उसी समय दासी के साथ ड्यूक डि-आर्लियन्स ने प्रवेश किया। कैथेराइन ने उनका स्वागत किया, और सब लोग फिर चिल्ला उठे—"चार्ल्स नवम चिरंजीवी हों।"

"हाय!" मैरी ने मृत फ्रैङ्कोइ का ठण्डा हाथ चूमकर कहा—"मेरे अतिरिक्त कोई तुम्हारे लिये अफसोस नहीं करता।"

"मैं करता हूं, मैडम!" जैब्री ने आगे बढ़कर कहा।

"आपको धन्यवाद!" मैरी ने कृतज्ञ नेत्रों से उत्तर दिया।

"मैडम, मैं अफसोस ही नहीं, और कुछ भी करूँगा," वह कहने लगा—"सम्भव हुआ, तो अपनी प्रतिहिंसा-पूर्ण करने में मैं आपका बदला भी ले लूँगा।"

एक मृत शरीर की उपस्थिति में भी जैब्री अपनी प्रतिहिंसा की बात न भूला था।

(६१)

फ्रैङ्कोइ की मृत्यु के आठ मास बाद, १५ अगस्त १५६१ के दिन मैरी स्टुअर्ट ने स्कॉटलैण्ड को प्रस्थान किया। यह आठ महीने उसने कैथेराइन डि-मेडसिस और अपने नये शासनाधिकारी चचाओं से दिन-रात लड़ते-लड़ते बिताये थे। वे लोग न-जाने क्यों यह चाहते थे कि वह फ्रान्स से बाहर चली जाय। मैरी आसानी से जिस देश का परित्याग नहीं कर सकती थी, जहाँ वह बचपन से लालित-पालित की गई थी।

पहले-पहल तो कुछ दिनों के लिये वह अपने चचा कार्डिनल डि-लॉरि के यहाँ जाकर रहने लगी, पर क्रमशः स्कॉटलैण्ड की अशान्ति के समाचार सुनकर और कैथेराइन की नित-नई शैतानियों से ऊब कर आख़िर उसने फ्रान्स से विदा हो जाने का निश्चय कर लिया। अपना प्यारा देश छोड़ने से उसे जो अपार कष्ट हुआ—उसका वर्णन प्रसिद्ध फ्रान्सीसी कवि ब्रैण्टोम ने अपनी कविताओं में किया है। कवि ब्रैण्टोम भी उसके साथ ही फ्रान्स छोड़ कर स्कॉटलैण्ड चला गया था।

मैरी के प्रस्थान के अगले दिन जैब्री सेण्ट-क्वैण्टिन के लिये रवाना हो गया। डायना के एक पत्र में उससे तुरन्त आश्रम में आने की प्रेरणा की गई थी। किन्तु जैब्री ने एक दिन की देर कर दी; क्योंकि उसे मैरी को अन्तिम विदा देने के लिये ठहरना अनिवार्य हो गया।

सेण्ट क्वेण्टिन के दर्वाजे पर ही जीन पिकॉय से उसकी भेंट हुई, जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। "आह! आख़िर आप आ गये, मोशिये लि-काउण्ट," उसने देखते ही कहा—"मुझे पूर्ण विश्वास था, कि आप आयेंगे, किन्तु दुर्भाग्यवश देर बहुत हो चुकी।"

"देर कैसे हो गई ?"

"क्या मैडम डि-कैस्ट्रो ने अपने पत्र में आप से तुरन्त आने की प्रेरणा नहीं की थी ?"

"हाँ, की तो थी—पर कारण कोई नहीं लिखा था।"

"ख़ैर—तो कल उन्होंने नियमपूर्वक आश्रम में प्रवेश कर लिया, और बाहरी दुनियाँ से उनके सारे सम्बन्ध टूट गये हैं।"

जैब्री का चेहरा लाश की तरह ज़र्द हो गया।

"अगर आप होते, तो शायद उन्हें रोक सकते।"

"नहीं," जैब्री ने कहा—"मैं ऐसी धृष्टता करने का साहस न कर सकता था। शायद मैं भगवान के इच्छानुसार ही कल नहीं

आया। मैडम को उनके आत्म बलिदान से न रोक सकने पर शायद हृदय टूक-टूक हो जाता, और अकेले रहने की बजाय मेरी उपस्थिति से उन्हें अधिक कष्ट होता।"

"जी, वह अकेली नहीं थीं—उनकी माँ भी उस समय उपस्थित थीं।"

"क्या ! मैडम डि-पोतेई ?"

"जी हाँ, मैडम ने स्वयं अपनी माँ को बुलाया था।"

"मगर वह कैसे गई ?"

"मोशिये आखिरकार वह उसकी माँ ही है।"

"मुझे विश्वास नहीं, कि वह कोई सद्भावना मन में लेकर आई हो—किसी कर्त्तव्य-पालन की भावना उसके मन में हो। लेकिन सब से पहले तो आश्रम में चलना है मोशिये जीन, मैं तुरन्त डायना से भेंट करना चाहता हूँ।"

जैब्री की प्रतीक्षा ही की जा रही थी, इसलिये शीघ्र ही वह भीतर जा पहुँचा। डायना और उसकी माँ दोनों साथ-साथ थीं। बीच में जालीदार किवाड़ था, और उसके दूसरी ओर माँ-बेटी बैठी हुई थीं। इतने समय के बाद डायना को देख सकने के कारण जैब्री का हृदय एक-बारगी आन्दोलित हो उठा, और वह जाली के सम्मुख घुटने टेक कर बोला—"प्यारी बहन !"

"प्यारे भाई।" कहते-कहते डायना की आँखों से दो बूँद आँसू टपक पड़े, किन्तु वह सम्हलकर देवी की तरह मुस्करा पड़ी।

मैडम डि पोतेई ने दानवों की हँसी हँसकर कहा—"निस्सन्देह मोशिये, आपका यह सम्बोधन उचित ही है, क्यों कि अब डायना ईश्वरार्पण हो चुकी है, और इस प्रकार पुरुष-मात्र की भगिनी है।"

"आपका क्या तात्पर्य्य है मैडम ?" जैब्री ने थर्राकर ऊपर उठते हुए पूछा।

डायना ने धीरेई से अपनी कन्या को लक्ष्य करके कहा—"बेटी, अब मैं तुम्हें एक भेद बताना चाहती हूँ। यहाँ आने से मेरा उद्देश्य केवल तुम्हें आशीर्वाद देना ही न था। जानती हूँ, कल एक शब्द कहने-मात्र से मैं तुम्हें शपथ लेने से रोक सकती थी, लेकिन मुझ पापिन ने यह उचित न समझा कि तुम्हें भगवान की शरण में जाने से रोककर पाप की भागिन बनूँ। इसलिये मैं चुप रह गई। लेकिन आज देखती हूँ, कि मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी के हृदय में तुम अभी तक बसी हुई हो, और अगर वे तुम्हें अपनी बहन समझते रहे, तो सदा तुम्हारे विषय में उनका मन तरह-तरह के विचारों से आलोड़ित होता रहेगा। मेरी दृष्टि में यह एक गुनाह होगा, जिसे मैं कभी सहन नहीं कर सकती; अतएव, बेटी, तुम जान लो, कि तुम वास्तव में बादशाह हेनरी द्वितीय की कन्या हो, जिन्हें मोशिये डि-मॉण्टगॉमरी ने खेल के मैदान में मार डाला।"

"ओह !" कहकर डायना ने हाथों में मुँह छिपा लिया।

"आप झूठ बोलती हैं—मैडम !" जैन्नो ने अत्यन्त उत्तेजित भाव कहा—"आपके कथन की सत्यता का क्या प्रमाण है ?"

"यह।" कहकर उसने एक काग़ज़ निकाला, और बोली—"यह पत्र तुम्हारे पिता ने अपनी गिरफ्तारी के कुछ दिन पूर्व लिखा था। देखिये, उन्होंने मेरे उपेक्षा-भाव पर क्रोध और शीघ्र ही मुझसे विवाह कर लेने का निश्चय होने के कारण सन्तोष प्रगट किया है। मैं समझती हूँ, पत्र की सब बातें स्पष्ट हैं। अतएव अब डायना के विषय में विचार भी तुम्हारे लिये पाप का कारण होगा; क्योंकि तुम्हारे साथ उसका कोई भी रिश्ता नहीं है। इस पाप से रक्षा करके मैं समझती हूँ, मैंने तुम्हारा उपकार किया है, और अपने उस सुख का उचित बदला चुका दिया है, जो तुम्हारे कारण मुझे अब एकान्त में प्राप्त हो रहा है।"

तब तक जैब्री ने ख़त पढ़ लिया था। उसमें सब बातें उसके कथानुसार ही थीं। यह ख़त मानों किसी प्रेतात्मा की आवाज़ थी। जब इस अभागे युवक ने आँखें ऊपर उठाईं तो डायना को ज़मीन पर बेहोश पड़े हुए देखा। एक बारगी वह उसकी तरफ झपटा, किन्तु जाली के छड़ों ने रोक दिया। सहसा मैडम डि-पोतेई की तरफ उसकी नज़र जा पड़ी। उसके ओठों पर पैशाचिक मुस्कान थी। उससे अब बर्दाश्त न हो सका, और "डायना–विदा!" कहता हुआ वह बाहर दौड़ गया।

आश्रम के बाहर जीन पिकोंय उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जैब्री ने उसे देखते ही कहा—"मुझ से कुछ मत बोलो, कुछ मत पूछो। तब, एकाएक जीन को अपनी व्यग्रता पर चकित भाव बनाये हुए देखकर उसने कहा—"क्षमा कीजिये, मैं क़रीब-क़रीब पागल हो रहा हूँ। मैं उसके विषय में कुछ बोलने तक का साहस नहीं कर सकता। अगर इच्छा हो, तो मेरे साथ बाहर तक चलिये—मैं भी पेरिस जाऊँगा।"

जीन पिकोंय उसके साथ-साथ शहरपनाह के फाटक तक आया, और बैबिट के विषय में जिक्र चलाकर उसका ध्यान बटाने का प्रयत्न करने लगा। वह अब सेण्ट क्वैंटिन में ही रहती थी, और खूब प्रसन्न थी। फिर उसने मार्टिन गेर का कुशल-समाचार भी सुनाया। किन्तु जैब्री ने किसी बात पर कान न दिया।

जब शहर से बाहर आये, तो जैब्री ने जीन का हाथ दबाते हुए कहा—"मेरे दोस्त, अब विदा। आपकी कृपा के लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ। सब से मेरी यथायोग्य कहना, और अपने सुखी जीवन में कभी-कभी मुझ दुखिया की याद कर लिया करना।" और जीन के आँसुओं पर दृष्टि-पात न करके, बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किये, वह घोड़े पर सवार होकर चल दिया।

पेरिस पहुँचते ही वह सीधा सेनापति कालिनी के घर गया, और बोला—"मोशिये, मेरा विश्वास है, इस अन्यायी शासन के विरुद्ध विद्रोह की आग पुनः शीघ्र ही सुलगेगी। अब से, मैं अपनी समस्त शक्तियाँ आपको अर्पण करता हूँ—मेरे हृदय और मेरी तलवार पर आपका पूर्ण अधिकार है। मेरे प्राणों का कुछ भी उपयोग आप कर सकते हैं।"

इसके आगे जैब्री की कहानी उन धार्मिक विद्रोहों के साथ सम्बद्ध है, जिनके कारण बादशाह नवम चार्ल्स का शासन-काल अत्यन्त रक्त-रञ्जित बना रहा। इन विद्रोहों में जैब्री ने महत्वपूर्ण भाग लिया, और अनेक बार उसका नाम सुनकर कैथेराइन के सिहर उठने का अवसर आया था। ड्रूक्स की लड़ाई में, जहाँ जैब्री के हाथों ने अपूर्व कौशल का परिचय दिया था, उसने कॉन्सटेबिल डि-मॉण्टमॉरेन्सी को चुटीला कर दिया था, और सेण्ट-डेविस के युद्ध में कॉन्सटेबिल को पिस्तौल की गोली से मौत के घाट उतारने वाला जैब्री ही था।

लोगों को तो ऐसा गुमान होने लगा था, कि यह बहादुर लड़ाका अजेय शक्ति प्राप्त किये हुए है। अन्त में अपने ही एक आदमी के विश्वास घात से उसे डम्फ्रोइट के गढ़ में आश्रय लेना पड़ा, और वहाँ वह केवल पचास सिपाहियों के साथ लगातार बारह दिन तक कप्तान मैटिग्ना की बहुत बड़ी सेना से मोर्चा लेता रहा। जब सब आशायें जाती रहीं, तो दुश्मनों के हाथ में जीवित पड़े रहने की बजाय उसने आत्म-हत्या करके मर जाना स्थिर किया। लेकिन मैटिग्ना ने कसम खाई, कि यदि वह आत्म-समर्पण कर दे, तो उसकी जान छोड़ दी जायगी। इस पर उसने आत्म-समर्पण कर दिया।

उसी दिन उसे जकड़-बाँधकर पेरिस भेज दिया गया। आखिरकार वह कैथेराइन डि-मैडिसिस के हाथ आ ही गया। नवम चार्ल्स

की कुछ ही दिन पहले मृत्यु हो चुकी थी, और फ्रान्स की राजगद्दी के अधिकारी हेनरी तृतीय के पोलैण्ड से लौटने की प्रतीक्षा हो रही थी। तब तक कैथेराइन ही फ्रान्स की एकछत्र स्वामिनी थी। २६ जून, सन् १५७४ के दिन जैब्री को प्राण-दण्ड की आज्ञा मिली। लगातार चौदह वर्ष तक उसने हेनरी द्वितीय के स्त्री-पुत्र के विरुद्ध विद्रोह किया था।

२७ वीं तारीख को उसका सर धड़ से जुदा किया गया। उस समय कैथेराइन स्वयं वध-स्थल पर मौजूद थी।

सेण्ट-क्रेरिटन-आश्रम की प्रधाना डि-कैस्ट्रो का देहान्त एक वर्ष पहले ही हो चुका था।